भूमिका

इस खण्डमे १ जुलाईसे १५ दिसम्बर, १९३० तकके साढे पाँच महीने लिये गये है, और इसमें मुख्यत. वे पत्र है जो गाधीजीने इस अवधिमें यरवडा जेलसे आश्रमके कार्यकर्त्ताओ तथा अन्य लोगोंको लिखे थे। इनसे पता चलता है कि गाधीजी जेलमें बैठकर भी किस प्रकार अपने प्रेरक और शिक्षाप्रद पत्रो द्वारा साधारण पुरुष और स्त्रियोंको सामान्य स्तरसे ऊपर उठाने और देशके सच्चे सेवक बनानेका सतत प्रयत्न कर रहे थे। आश्रममें होनेवाली प्रार्थनाके समय पढे जानेके लिए उन्होने 'मंगल प्रभात' शीर्षकसे जो कुछ लिखा उसमें ग्यारह व्रतोका नैतिक महत्व समझाते हुए उनका सम्बन्ध उस आध्यात्मिक उद्देश्यसे दर्शाया गया है जिनको ध्यानमे रखकर आश्रमकी स्थापना की गई थी। अपने व्यवहार द्वारा मीराबहनको अक्सर उन्होने जो पीडा पहुँचाई थी उसके प्रायश्चित्तरूप गाधीजीने मीराबहनके लाभार्थ 'आश्रम-भजनावलि' में संकलित भजनो और गीतोका अग्रेजीमें अनुवाद भी किया। मीराबहनको लिखे एक पत्रमें उन्होने कहा, "तुम्हारी खातिर भजनोका अनुवाद करते हुए मै स्वय बहुत सुख पा रहा हूँ। क्या मैंने अपने प्रेमको अक्सर स्नेहकी कोमल और मृदुल वर्षाकी अपेक्षा तूफानोके रूपमें व्यक्त नही किया है? इन तूफानोकी स्मृति अनन्य रूपसे तुम्हारे ही लिए किये जानेवाले अनुवादका सुख और बढा देती है" (पृष्ठ ५२)। दो घटनाओको छोड़कर बन्दी-जीवनके ये माह घटना-विहीन ही रहे। इनमें मे एक घटना तो थी उनका मध्यस्थताका प्रयास, जो विफल हो गया, और दूसरी घटना थी उनके अनशनकी सम्भावना, जो टल गई।

कुछ उदारपन्थी नेताओकी मान्यता थी कि सविनय अवज्ञा आन्दोलनसे देशको हानि पहुँच रही है। इनमें से दो नेताओ, तेजबहादुर सप्रू और मु० रा० जयकरने काग्रेस और सरकारके बीच सधि-विराम करानेके उद्देश्यसे पहलकदमी की, ताकि काग्रेस गोलमेज सम्मेलनमें भाग ले सके। गाधीजीने इसका जो उत्तर दिया वह महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रश्नो पर भी 'मुखर चिन्तन' करने, बुनियादी सिद्धान्तो पर आग्रह करने और तफसीलके मामलेमें समझौता करनेकी उनकी विशिष्टताओसे युक्त था। यद्यपि गाधीजी "जेलकी दीवारोके उस पार होनेवाली घटनाओके ऊपर कोई निश्चित मत" (पृष्ठ ४५) व्यक्त करनेको अनिच्छुक थे, लेकिन उन्होने अपना यह मत व्यक्त किया कि यदि भारतको स्वशासन देनेकी बात स्वीकार कर ली जाये और गोलमेज सम्मेलनमें केवल सक्रमणकालीन पूर्वोपायोकी तफसील पर ही विचार

किया जाये तो कांग्रेस उसमें भाग ले सकती है। वाइसरायको लिखे गये अपने पत्रमें गांधीजीने जो ११ शर्तें रखी थी उनकी कसौटी पर प्रत्येक स्वराज्य-योजनाको परखने का अधिकार उन्होंने सुरक्षित रखा। सविनय-अवज्ञा आन्दोलनको स्थगित करनेकी उन्होंने न्यूनतम शर्तें भी स्पष्ट कर दी जिनमें नमक-कानूनकी दण्डात्मक धाराओंको लागू न करने और सरकारी अध्यादेशोंको वापस लेनेकी माँग शामिल थी। अन्य नेताओंको उनके द्वारा अपनायी गई स्थिति वहुत कड़ी अथवा वहुत कमजोर लग सकती थी, इसलिए उन्होंने यह भी कह दिया कि यदि सम्मानजनक समझौता करनेका समय आ गया हो तो मैं उसमें वाधक नही वनूंगा, और "इससे भी अधिक सख्त स्थितिका समर्थन करनेमें मुझे कोई हिचकिचाहट नही होगी वशर्ते कि वह लाहौर-प्रस्तावकी शब्दावलीसे ज्यादा आगे न जाता हो" (पृष्ठ ४५)।

१४ और १५ अगस्तको उदारपन्थी नेताओंसे, तथा मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल तथा अन्य कांग्रेस नेताओंसे (जिन्हें इसी उद्देश्यसे विशेष रूपसे यरवडा लाया गया था) वात करनेके वाद गांधीजीने सरकारको सूचित कर दिया कि कांग्रेसके नेताओंकी रायमें "अभी ऐसा कोई समझौता करनेका समय नही आया है जो हमारे देशके लिए सम्मानजनक हो" (पृष्ठ ८२)। इस वातके कोई लक्षण नही दिखाई पड़ते थे कि "अंग्रेज अधिकारी जगत यह मानने लगा हो कि भारतके लिए क्या सर्वोत्तम है, इसके निर्णयका अधिकार भारतके स्त्री-पुरुषोंको है" (पृष्ठ ८३)। तेजवहादुर सप्रू और जयकरने एक वार फिरसे प्रयत्न किया, लेकिन समझौतेकी कोई सूरत नही वन सकी। इसपर गांधीजीने कहा, "तथापि शान्ति-वार्त्ताकी प्रकट विफलता पर निराश होनेकी जरूरत नहीं है। . . . हमारे राष्ट्रने एक ऐसे अस्त्रका सहारा लिया है हमारे शासक जिसके अभ्यस्त नही है और इसलिए जिसे समझने और जिसकी कद्र करनेमें उन्हें समय लगेगा। हमारे कुछ महीनोके कष्ट-सहनसे उनका हृदय-परिवर्तन नही हुआ है, इस वातपर हमें कोई आश्चर्य नहीं है" (पृष्ठ १२१)।

गांधीजीको अपने सह-वन्दियों और साथी-कार्यकर्त्ताओंके कल्याणकी वहुत चिन्ता रहती थी; इसके कारण एक वार तो संकटकी स्थिति उत्पन्न होते-होते वची। गांधीजीने अखवारोंमें पढ़ा था कि यरवडा जेलमें कैदियोंके साथ वहुत खराव व्यवहार किया जाता है। इसपर उन्होंने अधिकारियोंसे अनुमति माँगी कि उन्हें अन्य कैदियोंसे समय-समय पर मिलने दिया जाये या उनके साथ ही रहने दिया जाये। गांधीजीने वदलेमें वे विशेष सुविधाएँ भी छोड़ना स्वीकार किया जो उन्हें प्रदान की गई थी। उन्होंने यह संकेत किया कि यदि उनकी माँग नही मानी गई तो परिणाम गम्भीर होंगे। "इस शरीरके अन्दर रहनेवाली आत्मा जो सेवा करनेके लिए उत्कण्ठित है, यदि उसके

लिए इस शरीरका उपयोग नही किया जा सकता तो मुझे उसके परिरक्षणमें कोई दिलचस्पी नही है" (पृष्ठ १५६)। उन्होंने जेलके मुख्य अधीक्षकको फिरसे पत्र लिखा कि "अगर आगामी शनिवारकी दोपहर तक मेरी इच्छा पूरी नही की गई तो मैं अपने शरीरके परिरक्षणमें सहयोग देना बन्द करना आरम्भ कर दूंगा" (पृष्ठ १८४)। सौभाग्यसे अधिकारियोंने उन्हें इस बातकी अनुमति दे दी कि वे जिन लोगोसे "सेवा की खातिर" मिलना चाहते थे उनसे समय-समय पर मिल सकते है, और इस प्रकार संकट टल गया।

मुलाकातियोंके बारेमें सरकारने जो पाबन्दियाँ लगा रखी थी वे गांधीजीको स्वीकार नही थीं, और इसके फलस्वरूप उन्होंने अपने घनिष्ठतम रिश्तेदारो और साथी कार्यकर्ताओं सहित सभीसे मिलना अस्वीकार कर दिया और "आत्मासे आत्मा के मिलन" से ही सन्तोष करने लगे। उन्होंने मीराबहनको लिखा, "इस सुखद सम्पर्क को पृथ्वीकी कोई शक्ति नही रोक सकती" (पृष्ठ ३३)। राज-बन्दी होनेके कारण गाधीजीको अन्य कैदियोंसे अलग रखा गया था और जेलमें उनके एकमात्र साथी काकासाहब कालेलकर थे। काकासाहबकी रिहाईके बाद प्यारेलाल उनके साथ रखे गये जिनके बारेमें गांधीजीने लिखा कि मेरे पास प्यारेलालका रहना वैसा ही है जैसे "भेडियेके पास बकरी" का रहना (पृष्ठ ३६५)।

बाहरी उथल-पुथलसे दूर, जेलके शान्तिपूर्ण एकान्त जीवनमें गांधीजी अपने समयका उपयोग खूब सूत कातने और आध्यात्मिक कार्योंमें कर रहे थे। पिछले अनेक वर्षोंसे वह 'गीता' का अध्ययन-मनन करते आ रहे थे और अब 'गीता' पूरी तरह उनके दिल-दिमाग पर छा चुकी थी। "मै तो अपनी सारी कठिनाइयोमें गीता माताके पास दौड़ता हूँ और अबतक आश्वासन पाता आया हूँ" (पृष्ठ २७४)। इससे पहले १९२२-२३ में जब गांधीजी जेलमें थे तब उन्होंने अपना अधिकांश समय पढ़नेमें बिताया था। उनकी जेल-दैनन्दिनीमें उल्लिखित पुस्तक-सूचीसे पता चलता है कि कितने विविध विषयोंका उन्होने अध्ययन किया था (खण्ड २३, पृष्ठ १९१-२०२)। किन्तु इस बार जब उनसे एक पत्र-लेखकने सलाह माँगी कि कौन-सी किताब पढ़नी चाहिए, गाधीजीने जवाब लिखा: "मेरे लिए 'गीता' और तुलसीदास ही काफी है . . ." (पृष्ठ ३५)। अन्य पत्र-लेखकोको उन्होंने 'गीता' बार-बार पढने की सलाह दी और कहा: "१२वाँ अध्याय बारबार पढ़ना और उसपर विचार करना" (पृष्ठ ४)। अपने इस अध्ययनका निचोड़ गाधीजीने 'गीता' के गुजराती अनुवाद 'अनासक्तियोग' में प्रस्तुत किया जो ठीक उसी दिन प्रकाशित हुआ जिस दिन दाडी-कूच आरम्भ हुआ। उनके मनमें यह विषय इतना रमा हुआ था कि एक पत्र-लेखकके सुझाव पर उन्होने 'गीता' पर नई प्रवचन-माला लिखनी शुरू कर दी

(पृष्ठ २७३-४)। उन्होंने मीराबहनको लिखा: "इन अध्यायोमें मैं अपना हृदय उँडेलना चाहता हूँ" (पृष्ठ २९५)।

'गीता' में अनासक्तिका जो उपदेश किया गया है, उसपर से गांधीजीने हाथमें लिये हुए काममें तल्लीन होनेका पाठ सीखा। उन्होंने महादेव देसाईको लिखा: "जिसका सारा जीवन यज्ञरूप है और जो अनासक्त है, वह एक समयमें एक ही काम करेगा" (पृष्ठ २९९)। "हमें जो काम दिया गया है उससे प्राप्त होनेवाला सन्तोष ही सच्ची सिपहगरी या भक्ति या साधना है।" बिना माँगे जो सेवाका काम हमारे हिस्से आ पड़े, उसमें डूब जाना ही सच्ची समाधि है (पृष्ठ १७)। नारणदास गांधीको उन्होंने बताया कि यज्ञमय-जीवन कलाकी पराकाष्ठा है, सच्चा रस उसीमें है "क्योंकि उसमें से रसके नित्य नये झरने प्रकट होते है। मनुष्य उन्हें पीकर अघाता नही है, न वे झरने कभी सूखते हैं" (पृष्ठ २५८)। ऐसी सेवाके लिए हमारे विचार और कार्यमे जाने-अनजाने रामनामकी संगत उसी प्रकार होनी चाहिए जिस प्रकार गवैयेके गानमें तानपूरेकी संगत रहती है (पृष्ठ २९९)।

गांधीजीने अनासक्तिकी शिक्षाको यरवडाके अपने बन्दी-कालमें साकार करके दिखा दिया। उन्होंने एक प्रबल जन-आन्दोलनको जन्म दिया था। और यह आन्दोलन तीव्रसे तीव्रतर ही होता जा रहा था कि ५ मईको उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जेल पहुँचनेके बाद गांधीजी आन्दोलनकी दिशा या गतिके बारेमें सर्वथा उदासीन हो गये और अपना सारा ध्यान कताई और पत्र-व्यवहार करनेपर लगा दिया। उन्हें लगता था कि जेलसे बाहर रहते हुए उन्होंने कताईकी कला और विज्ञानमें निपुणता प्राप्त करनेकी तरफ ढिलाई बरती थी। कताईको वह "नित्यका महायज्ञ" मानते थे, दरिद्रनारायणकी सेवाके जरिये राष्ट्रीय पुनरुद्धारका चरम सामूहिक प्रयास मानते थे (पृष्ठ २४०)। "यदि दरिद्रनारायण है . . . और यदि खादी उसकी प्रसादी है . . ." तो अपनी ही शिक्षा पर मेरा खुदका अमल कितना शिथिल रहा है (पृष्ठ २९९)। अत: वह पूरे मनोयोगसे कताई और तत्सम्बन्धी प्रक्रियाओ पर अधिकार प्राप्त करनेमें जुट गये और लगातार उसी विषयमें विचार करते रहते थे (पृष्ठ ३३१)। मीराबहनके इस सुझाव पर कि वह 'अनासक्तियोग' का अंग्रेजीमें अनुवाद कर दें, गांधीजीने उत्तर दिया कि वह इस कार्यके लिए अपनी कताई नही छोड सकते क्योकि मेरी दृष्टिमें कताई 'गीता' का "व्यावहारिक अनुवाद" है (पृष्ठ २०)। मीराबहन, नारणदास तथा अन्य लोगोंको लिखे गये उनके पत्र कताईमें उनकी प्रगति और विभिन्न प्रकारके चरखोके साथ उनके विफल या सफल प्रयोगोके विवरणसे भरे हुए हैं। मीराबहनको उन्होंने लिखा: "चरखा, तकली और धुनकीने तो मेरे ऊपर सम्मोहन कर दिया है" (पृष्ठ २९६)।

गांधीजी आश्रमकी समस्याओंमें गहरी दिलचस्पी लेते थे और नारणदासको लिखे अपने प्रत्येक पत्रमें विस्तारसे अपने सुझाव रखते थे। प्रेमावहन कटकको पत्र लिखकर उन्होने स्पष्ट किया, "हिन्दुस्तानके प्रश्नोको सुलझानेमें मुझे जितना रस आता है, उससे भी ज्यादा आश्रम-सम्बन्धी और उनमें भी वहनोके प्रश्न सुलझानेमें आता है, क्योकि उनमें वडे प्रश्नोको सुलझानेकी चावी छिपी रहती है" (पृष्ठ ५३)। वर्षोंसे गाधीजी आश्रमकी स्त्रियोको स्वतन्त्रता सग्राममें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेके लिए प्रशिक्षित कर रहे थे। अव उन्होने स्त्रियोको वाहर निकल कर गाँवोमें जाने और विदेशी वस्त्रोकी दूकानो और मदिरालयो पर धरना देनेके लिए कहा। इन कार्योंमें स्त्रियोको आने-जाने और काम करनेकी पूरी स्वतन्त्रता अपेक्षित थी और इसमें खतरे भी कम नही थे। किन्तु गाधीजीको उनमें पूरा विश्वास था और स्त्रियोंके आत्म-विश्वासको सुदृढ करनेके लिए जो-कुछ कर सकते थे, उन्होने किया। आश्रमकी एक बहनको उन्होने लिखा: "मैं तो तुम सभी बहनोको हर तरहसे परिपूर्ण देखना चाहता हूँ। . . . मेरी सभी आशाएँ तुम बहनों पर निर्भर है। मुझे प्राय. ऐसा लगता रहता है कि अहिंसाकी अन्तिम विजय स्त्रियोके हाथो ही होगी" (पृष्ठ १३६-७)। गगाबहन वैद्यको उन्होने पत्रमें लिखा: "आत्मा तो दोनोकी एक-सी है। किन्तु पुरुप आत्माको न पहचाने और स्त्री ही पहचाने तो स्त्री बलवती हो जाती है, जैसे सीता। . . . आज भी संसारमें अनेक सीताएँ पडी हैं जो एक भी पुरुपकी मददकी जरूरत नही रखती और फिर भी सुरक्षित हैं" (पृष्ठ ३०५)। नारणदास गाधीको उन्होने लिखा: "स्त्री-जाति इतनी दवाई गई है कि वे बेचारी स्वतन्त्र रूपसे विचार तक नही कर सकती। इसीलिए उनके प्रति आश्रमको तो वहुत उदारतासे काम लेना है। उसमें अत्यधिक जोखिम है। वे सब [जोखिम] उनकी सेवाके लिए हम उठायें" (पृष्ठ ९२)। और फिर, "बहनोकी स्वतन्त्रताकी पूर्ण रूपसे रक्षा करनी है। चाहे रास्ता चलते भूल जायें, ठोकर लगे, कांटा चुभे या गिर पड़ें" (पृष्ठ १४८)। नारणदास गाधीको एक अन्य पत्रमें उन्होने लिखा: "बहनोके वारेमें हमने पूर्ण विश्वास की नीति ग्रहण की है। . . . हिन्दू स्त्रियोंका हिन्दू पुरुपो पर वहुत भारी कर्ज है" (पृष्ठ २७२)। अपने एक सम्वन्धी और खादी कार्यकर्त्ता जयसुखलाल गांधीको, जो अपनी पत्नीके रूढ़िवादी विचारोके कारण उसके साथ शान्तिसे नही रह पाते थे, गाधीजीने लिखा: "हम स्वय जिस स्वतन्त्रताका उपभोग करना चाहते हैं, वही स्वतन्त्रता उसे भी है। उसपर क्रोध करनेसे उसकी सच्ची भावनाएँ दव जायेंगी। मैंने भी तो ऐसा किया है, अत: यह मैं अपने अनुभवके आधार पर लिख रहा हूँ" (पृष्ठ १७९)।

गांधीजी गंगावहन वैद्यके प्रशिक्षणमें वहुत रुचि रखते थे। उनको एक पत्रमें उन्होंने लिखा: "उदासी क्यों लगती है? लगे तो उसे फौरन मेरी तरफ भेज ही देना चाहिए। . . . जिस तरह मुझमें वाप वननेकी शक्ति है, उस तरह माँ वननेकी भी है" (पृष्ठ १६३)। इस खण्डमें वहुतसे पत्र हैं जिनमें पिताकी कठोरता और माताका वात्सल्य छलकता दिखाई पड़ता है। आश्रमके संगीत-शिक्षक पंडित खरेको एक पत्र लिखते हुए गांधीजीने स्वीकार किया: "पितृपदके लिए आवश्यक योग्यता — उतना प्रेम, उतनी आत्मीयता, उतनी सजगता" मुझमें है या नहीं, इस वातकी मैं अक्सर जाँच करता हूँ (पृष्ठ १४०)। मीराबहनको लिखे अनेक पत्रोंसे मीराबहनके स्वास्थ्यके लिए उनकी चिन्ता प्रकट होती है और उनमें वरावर यह आग्रह किया गया है कि मीरावहन आवश्यक सुविधाओंका लाभ उठायें और आराम करें। नैतिक प्रश्नोंपर गांधीजीने बहुत दृढ़ स्थिति अपनाई लेकिन साथ ही व्यक्तियोंके प्रति उन्होंने उदारताका रुख रखा और उनकी कमजोरियोंको सदा ध्यानमें रखा। प्रेमावहन कंटकके बारेमें कहा जाता था कि वह आश्रमकी पाठशालामें वच्चोंको पीटती है। इसपर गांधीजीने उन्हें लिखा: " . . . गोलीके बिना . . . काम हो सकता है — इस बातको सिद्ध करनेके लिए ही हमारा अर्थात् आश्रमका अस्तित्व है" (पृष्ठ ३४२-३)। उन्होंने प्रेमाबहनको सलाह दी: "तू बच्चोंकी सभा कर। . . . उन्हें मारना और वे जैसा कहें, उसी तरह मारना। जो मना करें, उन्हें मत मारना। . . . इस विषयकी चर्चा मेरे साथ करती रहना" (पृष्ठ ३७४)। नारणदास गांधीके भतीजेने नारणदासके विरुद्ध जो आरोप लगाये थे उनके वारेमें नारणदासका स्पष्टीकरण पढ़नेके बाद गांधीजीने लिखा: "मैंने तो केशुको लिखा है कि . . . तुम्हारे विरुद्ध कोई वात मेरे मनमें नहीं आती। . . . अव तुम ही उसे बुलाकर जो शिकायतें मैंने लिखी हैं, उनकी बात करना। . . . वादमें तुम उसे सन्तुष्ट कर सको तो करना" (पृष्ठ ३६७)।

निश्चय ही यह जरूरी था कि लोग अपने-आपको सुधारें और दूसरोंको सुधारने में मदद दें, लेकिन परिवर्तनकी आवश्यकताकी अनुभूति और फिर उस दिशामें प्रयत्न भी व्यक्तिको ही करना था। अतः गांधीजीने यह सलाह दी कि हमारे गुणोंको दूसरे देखें। हमें तो अपने दोषोंका ही दर्शन करना चाहिए (पृष्ठ २६६)। उन्होंने यह भी कहा, "अहिंसाके मानी हैं कि हम अपने प्रति कृपण और दूसरोंके प्रति उदार रहें। . . ." (पृष्ठ ९)। महालक्ष्मी ठक्करको लिखे एक पत्रमें गांधीजीने विस्तार-पूर्वक समझाया कि हमें अपनी कमजोरियोंके प्रति कठोर और दूसरोंकी कमजोरियोंके प्रति उदार दृष्टि रखनी चाहिए (पृष्ठ ३५८)। भूलका पता चलते ही उसे सुधार लेनेका एक छोटा-सा किन्तु महत्त्वपूर्ण दृष्टान्त हमें उस पत्रमें मिलता है जो उन्होंने

वालजी देसाईको लिखा था (पृष्ठ १६८)। इसमें गांधीजीने स्वीकार किया कि अंग्रेजी कलेन्डरकी जगह गुजराती तिथिके ऊपर वह जो आग्रह पहले करते थे वह गलत था, और फिर उन्होने लिखा: "विदेशी-मात्रसे हमें कोई द्वेष थोड़े ही है"। यही नही, उन्हें इस मामलेमें अपने निर्णय पर स्वयं सन्देह था इसलिए उन्होंने वालजी देसाईकी राय माँगी और पूछा कि उनके विचारसे क्या करना ठीक रहेगा।

जो चिन्तन कर्मके लिए उन्मुख न करे ऐसे चिन्तनको वह विचार-विलास मानते थे और उसे "विषाक्त तत्त्व" मानते थे। अपरिग्रहके सिद्धान्तको वह वस्तु और विचार–दोनो पर लागू मानते थे। उनके विचारसे "जैसे चीजोंका वैसे ही विचारो-का भी अपरिग्रह" आवश्यक है (पृष्ठ १०४)। इसे वह 'गीता' के मुख्य सिद्धान्त, अनासक्तिका स्वाभाविक निष्कर्ष मानते थे। उन्होंने मीराबहनको एक पत्रमें सलाह दी: "अच्छी खबर हो या बुरी . . . उसे अपने ऊपरसे यों गुजर जाने दो जैसे बत्तखकी पीठ परसे पानी फिसल जाता है। जब हम कोई खबर सुनें तो हमारा कर्त्तव्य मात्र इतना पता चलाना है कि क्या कुछ करनेकी जरूरत है, और यदि हो तो हम अपने-आपको प्रकृतिके हाथका एक साधन मानकर . . . उसे कर दें। . . . अतः मस्तिष्कको मात्र सम्प्रेषणका साधन मानकर . . . उपयोग किया जाना चाहिए। वहाँ जो भी चीज ग्रहण की जाये उसे या तो तत्काल कार्रवाईके लिए हृदयको सम्प्रेषित कर देना चाहिए, या फिर सम्प्रेषणके लिए अनुपयुक्त मानकर उसी वक्त रद कर देना चाहिए" (पृष्ठ ३७०-१)। प्रेमाबहन कटकको उन्होंने लिखा: "जो निर्णय मैं करता हूँ उनके सभी कारण मुझे हमेशा याद नही रहते" (पृष्ठ ३२७)। तर्कमूलक अथवा असम्बद्ध चिन्तन मनुष्यके एक अंश विशेषका कार्य है जबकि कर्मकी उद्भावना हृदयसे होती है और वह हमारे समूचे व्यक्तित्वको प्रतिबिम्बित करता है। गांधीजीका झुकाव यद्यपि कठोर बाह्य कार्यकी ओर था, लेकिन वह अपने मस्तिष्ककी क्रियाओका भी बारीकीसे अध्ययन करते रहते थे। इसकी झलक उस "सुखद स्वप्न" के विवरणमें मिलती है जिसमें उन्होने मणिलालके लिए एक पाठ्यक्रम तैयार किया था और जो रामदास और देवदासके लिए भी लाभप्रद होता; लेकिन इस स्वप्नका विवरण देनेके बाद उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि स्वप्नमें व्यक्त किये गये मतके बजाय महादेव देसाईके मार्गनिर्देशनमें पढाई करना ज्यादा ठीक रहेगा।

आश्रमके व्रतोके विषयमें गांधीजीने जो व्याख्यात्मक लेख लिखे वे उनके दीर्घ अनुभवो पर आधारित थे और इनका उद्देश्य यह था कि आश्रममें उनका श्रवण करनेवाले भी तदनुसार आचरण करते हुए वैसे ही अनुभव स्वयं भी प्राप्त करें। स्वदेशी-व्रतके सम्बन्धमें वह कुछ भी नही लिखना चाहते थे क्योकि इस विषयकी चर्चामें राजनीतिक प्रश्नोका स्पर्श होना सम्भव था, जो कि वह नही चाहते थे। एक कैदीके नाते उनका

एक आत्म-धारित व्रत यह था कि राजनीतिक प्रश्नोकी चर्चा नही करेंगे (पृष्ठ १८६)। इन सभी प्रवचनोमें विषयोको बड़ी गहराईके साथ लेकिन बहुत ही सरल और स्पष्ट ढंगसे समझाया गया है और ये अत्यन्त लोकप्रिय हो गये है। धर्मोकी समानता (नवाँ व्रत) और यज्ञ तथा विनम्रता (जिन्हें व्रतोंमे शामिल नही किया गया है) के ऊपर गांधीजीके प्रवचन गांधीवादी नैतिकताके अध्येताओके लिए विशेष दिलचस्पी रखते हैं। "ईश्वरदत्त धर्म अगम्य है। . . . सब अपनी-अपनी दृष्टिसे, जबतक वह दृष्टि बनी है तबतक, सच्चे हैं। पर झूठा होना भी असम्भव नही है। . . . इन सभी धर्मोंके मूल सिद्धान्त एक ही है। सभीमे सन्त स्त्री-पुरुष हो गये है, आज भी मौजूद हैं" (पृष्ठ १६७)।

सत्य और प्रेमका संवर्धन किया जा सकता है, किन्तु विनम्रताका आचरण सोच-समझकर नही किया जा सकता। विनम्रताका आचरण करना ढोंग करनेके समान है। किन्तु नम्रताकी अनुभूति अहिंसाकी अपरिहार्य कसौटी है। सचमुच विनम्र व्यक्ति जानता है कि वह कुछ नहीं के समान है। "समुद्रमे रहनेवाला बिन्दु समुद्रकी महत्ता का उपभोग करता है, परन्तु उसका उसे ज्ञान नही होता। समुद्रसे अलग होकर ज्यो ही अपनेपनका दावा करने चला कि वह उसी क्षण सूखा। . . . इसलिए सच्ची नम्रता हमसे जीवमूर्तिकी सेवाके लिए सर्वार्पणकी आशा रखती है। . . . जो सेवा प्राप्त हो जाये वही करते-करते किसी दिन यह हमारे हाथ लग जायेगा। केवल उसीको खोजने जानेसे यह अनुभव प्राप्त नही होता" (पृष्ठ २०४-५)। समुद्र और बूंद "बहुत ही सुन्दर ढंगसे परस्पर निर्भर हैं। और यदि यह बात भौतिक जगतके बारेमें सच है तो आध्यात्मिक जगतके मामलेमें कितनी सच न होगी" (पृष्ठ १३१)। अहिंसाकी भावना मनमे विकसित करनेके साथ विनम्रता अपने-आप आती है और एक स्थिति वह होती है जब 'मै'को भूलकर व्यक्ति केवल शून्य बन जाता है।

'सत्य' ही गांधीजीके आश्रमका आधारभूत सिद्धान्त है, और आश्रमके अन्य सब व्रतोंका अर्थ व्यापक रूपसे एक ही है—सत्य, "जिसका पालन विचार, वाणी आचारमें करे" (पृष्ठ ४१)। आश्रमका लक्ष्य सत्य और सत्याचरण पर आग्रह था। सत्यको ही "मध्य-बिन्दु मानकर सारी रचना की गई है। उद्देश्य ससारमे बहुत नही होते, होने भी नही चाहिए। जो बहुत दिखाई देता है वह सत्य पर आच्छादित सोनेका ढक्कन है। उसके हट जाने पर एक ही वस्तु दिखाई देगी" (पृष्ठ २४५)। यह सत्य व्यक्तित्वहीन और अनिर्वचनीय है और इसे वाणीकी अपेक्षा कर्मके जरिये ही समझा और व्यक्त किया जा सकता है, और सो भी आंशिक रूपसे ही।

गांधीजीने, विशेष रूपसे अपने ईसाई पत्र-लेखकोंको, निर्गुण ब्रह्म अर्थात् शुद्ध ज्ञानकी स्थितिकी संकल्पना समझानेका विशेष प्रयत्न किया, और साथ ही धर्मके

द्वारा मोक्ष प्राप्त करनेकी अर्थात् आत्मानुशासन द्वारा मुक्ति प्राप्त करनेकी सापेक्षिक धारणाको भी स्पष्ट किया। उन्होने पी० जी० मैथ्यूको लिखा: "मनुष्य तो एक व्यक्ति होता है। ईश्वर उस अर्थमें व्यक्ति नही है। . . . हम अपने तुच्छ पैमानोसे ईश्वरको नापनेकी कोशिश करते है, यही हमारी कठिनाइयोका कारण है। वह तो सभी पैमानोसे परे है" (पृष्ठ १६९)।

जे० सी० कुमारप्पा तथा अन्य लोगोके साथ हुए अपने पत्र-व्यवहारमें गाधीजीने व्रतोकी आवश्यकता पर बल दिया। नारणदास गाधीको उन्होने लिखा: "व्रतका अर्थ है अटल निश्चय। अड़चनोको पार कर जानेके लिए ही तो व्रतकी आवश्यकता है। . . . शरीर-रक्षाके लिए भी शराब न पीनेके दृष्टान्तका चमत्कारिक प्रभाव शराबकी लतमें फँसे हुए लोगो पर पड़े तो ससारका कितना लाभ है। . . . व्रत लेना निर्बलतासूचक नही, वरन बलका सूचक है। . . . व्रतकी आवश्यकताके विषयमें हमारे मनमें कभी शका उठनी ही नही चाहिए" (पृष्ठ २१९-२०)। व्रत लेनेका अर्थ पहले ही से "सकटके क्षणोमें ईश्वरसे हमें शक्ति प्रदान करने"की प्रार्थनाके समान है (पृष्ठ ३०८)। जे० सी० कुमारप्पाको लिखे एक अन्य पत्रमें यही बात उन्होने रोचक ढगसे समझाई है, "हमें अपने अन्तरमें निवास करनेवाले दो तत्वोसे निपटना है: राम और रावण, अल्लाह और शैतान, अहुरमज्द और ऑरिमान। पहला तत्व हमें वास्तवमें मुक्त करनेके लिए बाँधता है, जबकि दूसरा अपने चँगुलमें और अधिक कसकर जकड़नेके लिए हमें मुक्त करता प्रतीत होता है। 'वाउ' . . . एक प्रतिज्ञा है जो हम रामसे करते है . . . जिसे जबतक हम बँधे नही . . ." तब तक निबाह नही सकते। हम सूरजसे ऊँचे भले न हो लेकिन "कमसे-कम सूरजके समान सच्चे और आस्थावान हो। . . . व्रतबद्ध जीवन विवाहकी भाँति है, वह एक परम पवित्र सस्कार है। व्रत धारण करना ईश्वरके साथ अविच्छेद्य विवाह-सम्बन्ध स्थापित करना है। आओ, हम उससे विवाह कर ले" (पृष्ठ २६२-३)। उत्तमोत्तम बननेकी स्वतन्त्रता असीमित है, किन्तु आत्म-भोगकी प्रवृत्तिको प्रकृतिके नियमो जैसे अनुल्लंघनीय व्रतो द्वारा नियन्त्रित करना चाहिए। "ईश्वर स्वय निश्चयकी, व्रतकी सम्पूर्ण मूर्ति है। उसके नियमोंका एक अणु भी इधर-उधर हो जाये तो वह ईश्वर न रह जाये। सूर्य महाव्रतधारी है, . . ." (पृष्ठ २२०)। इससे देखा जा सकता है कि गांधीजीका धर्म प्रकाशका धर्म था, सामान्य बुद्धि पर आधारित धर्म था। वह विज्ञानके विपरीत नही, बल्कि स्वय वैज्ञानिक धर्म था जो ज्यादासे-ज्यादा लोगोमें आनन्द और शान्तिका प्रसार कर सकता है।

जेलमें ही गांधीजीने मीराबहनकी खातिर 'आश्रम-भजनावलि'के भजनो और गीतोका अंग्रेजीमें अनुवाद भी किया। (हिन्दी खण्डमें 'आश्रम-भजनावलि'को परि-

शिष्टमें ज्यों-का त्यों दिया गया है। गांधीजी द्वारा किये गये अंग्रेजी अनुवादके लिए अंग्रेजीका खण्ड ४४ देखा जा सकता है)। यह स्मरण रखना चाहिए कि 'भजनावलि' में केवल संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी और अन्य भारतीय भाषाओंसे ही अनुवाद किये गये है, जबकि वास्तवमें आश्रमकी प्रार्थनाओंमें 'कुरान,' 'बाइबिल,' 'जंद अवेस्ता' तथा अनेक विदेशी प्रार्थनाओंके भी अंश होते थे। खुले आकाशके नीचे आयोजित होनेवाली गांधीजीकी प्रार्थना-सभाएँ सचमुच सार्वदेशिक होती थीं और इनसे "जाति, वर्ग और बँधे हुए विश्वासोंके बन्धनोंको" तोड़नेमें सहायता मिलती थी (पृष्ठ २१)। प्रार्थनाके दौरान गाये जानेवाले भजनोंमें 'राम' के स्थान पर 'होरमज्द' अथवा 'वैष्णव' के स्थान पर 'क्रिश्चियन' लगा देनेमें उन्हें कुछ भी गलत नहीं लगता था (पृष्ठ १८९)। मीराबहनके लाभार्थ किये गये इन अनुवादोंके बारेमें गांधीजीने लिखा: "सिवाय इसके कि यह प्रेमका काम है, उसमें और कोई गुण नही है—साहित्यिक गुण तो है ही नहीं" (पृष्ठ ३६४)। भजनों और लोक-गीतोंके जरिये प्रह्लाद, द्रौपदी और हरिश्चन्द्र आदिके चरित्र जन-मानसमें अमिट रूपसे बस गये हैं। गांधीजीकी दृष्टिमें प्रह्लाद, द्रौपदी और हरिश्चन्द्र जिन चरमोत्कृष्ट अनुभवों और अनुभूतियोंके प्रतीक हैं उन्हें इन चरित्रोंके माध्यमसे ही व्यक्त किया जा सकता है, और किसी भी प्रकार नहीं। इसीलिए गांधीजीको इनसे सम्बन्धित गीत और भजन प्रिय थे। "हरिश्चन्द्रकी कथा भले ही मनगढ़न्त हो, लेकिन उसमें सब आत्मार्थियों (आत्माका कल्याण चाहनेवालों)का अनुभव भरा हुआ है; इसलिए उस कथाकी कीमत किसी ऐतिहासिक कथासे अनन्त गुनी है और हम सबको उसे अपने मनमें रखना चाहिए और उसपर गौर करना चाहिए" (पृष्ठ ११५)। ये भजन वास्तविकतासे पलायनका पाठ नहीं पढ़ाते बल्कि पुरुषार्थको प्रेरित करते हैं। गांधीजीकी दृष्टिमें पुरुषार्थका अर्थ था एक आदर्शकी संकल्पना करना और "वह चाहे कितना कठिन क्यों न हो तो भी उसमें सफल होनेका जी-जानसे प्रयत्न करना . . . आदर्शको अपनी सुविधाके अनुसार ढालनेमें असत्य है; हमारा पतन है" (पृष्ठ ८१)। भजनोंका उपयोग और उनका अनुवाद इस बातका एक और उदाहरण है कि गांधीजी एक विनम्र और परम्परानिष्ठ हिन्दू थे और उनका विश्वास था कि धर्म का उद्देश्य मनुष्यको सद्विचार और पुरुषार्थके लिए प्रेरित करना है और मनुष्य धर्मसे शक्ति प्राप्त करता है। केवल कर्मकाण्ड और विधि-विधानोंका उनकी दृष्टिमें कोई मूल्य नहीं था। प्रार्थनाओंमें सम्मिलित न होना किन्तु कहीं आग लगे तो उसे बुझानेमें मदद करना उनकी दृष्टिमें "सच्चा भजन" था और "कर्ममें अकर्मका उदाहरण" था (पृष्ठ ३६१)।

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित संस्थाओं, व्यक्तियो, पुस्तकोंके प्रकाशकों तथा पत्र-पत्रिकाओंके आभारी हैं:

संस्थाएँ: साबरमती आश्रम सरक्षक तथा स्मारक न्यास और संग्रहालय, नव-जीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ ग्रथालय, अहमदाबाद; गाधी स्मारक निधि व संग्रहालय, नई दिल्ली तथा आफ्रिकन म्यूजियम, जोहानिसबर्ग।

व्यक्ति: श्रीमती मनुबहन मशरूवाला, श्री सुरेन्द्र मशरूवाला, अकोला; श्रीमती लक्ष्मीबहन खरें, श्री कपिलराय मेहता, श्रीमती शारदाबहन जी० चोखावाला, अहम-दाबाद; श्रीमती प्रेमाबहन कंटक, सासवड; श्रीमती मीराबहन, गाडेन, आस्ट्रिया; श्री भगवानजी पुरुषोत्तम पण्डचा, सेवाग्राम; श्री ईश्वरलाल जोशी, श्री पी० डी० सरैया, श्री शान्तिकुमार मोरारजी, श्रीमती प्रेमलीला ठाकरसी, बम्बई; श्रीमती गंगाबहन वैद्य, बोचासण; वालजी गो० देसाई, पूना; श्री नारणदास गांधी, राजकोट; श्री प्रकाशनारायण सप्रू; श्री घनश्यामदास बिडला, कलकत्ता; श्री बनारसीलाल बजाज, बनारस; श्रीमती राधाबहन चौधरी, श्री परशुराम मेहरोत्रा; श्री द० बा० कालेलकर, नई दिल्ली; श्रीमती वसुमती पण्डित, सूरत; श्री वेणीलाल गांधी, नासिक; तथा प्रो० जे० बी० गैलविन, किंगस्टन, कनाडा।

पुस्तकें: 'बापूकी विराट वत्सलता', 'बापुना पत्रो–७: श्री छगनलाल जोशीने', 'बापुना पत्रो–६: ग० स्व० गगाबहनने', 'बापुना पत्रो–४: मणिबहेन पटेलने', 'बापुना पत्रो–९: श्री नारणदास गांधीने', भाग १, 'बापुनी प्रसादी', 'कन्या आश्रम रजत जयन्ती स्मृतिग्रन्थ', 'महात्मा गांधी: सोर्स मैटीरियल फॉर ए हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, खण्ड ३, भाग ३, 'पाँचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद', तथा 'गीताबोध'।

पत्र-पत्रिकाएँ: 'बॉम्बे क्रॉनिकल' और 'हिन्दू'।

अनुसन्धान और संदर्भ सम्बन्धी सुविधाओंके लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी पुस्तकालय, इडियन कौंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स पुस्तकालय, सूचना और प्रसारण मत्रा-लयका अनुसधान और सदर्भ विभाग, नई दिल्ली, राष्ट्रीय अभिलेखागार (नेशनल आर्काइव्ज ऑफ इडिया), नई दिल्ली तथा श्री प्यारेलाल नैयर, नई दिल्ली, हमारे धन्यवादके पात्र हैं। कागज-पत्रोंकी फोटो-नकल तैयार करनेमें सहायता देनेके लिए हम सूचना और प्रसारण मत्रालय, नई दिल्लीके फोटो-विभागके आभारी हैं।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री गांधीजीके स्वाक्षरोमें मिली है उसे अविकल रूपमें दिया गया है। किन्तु दूसरों द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमें हिज्जोकी स्पष्ट भूलोको सुधारकर दिया गया है।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करनेमें अनुवादको मूलके समीप रखनेका पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषा सुपाठ्य बनानेका भी पूरा ध्यान रखा गया है। छापेकी स्पष्ट भूलें सुधारनेके बाद अनुवाद किया गया है। और मूलमें प्रयुक्त शब्दोके सक्षिप्त रूप यथासम्भव पूरे करके दिये गये है। नामोको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखनेकी नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोके उच्चारणमें संशय था उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गांधीजीने अपने गुजराती लेखोंमें लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोमें दी गई सामग्री सम्पादकीय है। गांधीजी ने किसी लेख, भाषण आदिका जो अंश मूल रूपमे उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़कर गहरी स्याहीमें छापा गया है, लेकिन यदि कोई ऐसा अश उन्होने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोड़कर साधारण टाइपमें छापा गया है। भाषणकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गांधीजीके कहे हुए नही है, बिना हाशिया छोड़े गहरी स्याहीमें छापे गये है। भाषणों और भेंटकी रिपोर्टके उन अंशोंमें जो गांधीजीके नही है, कुछ परिवर्तन किया है और कही-कही कुछ छोड़ भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि जहाँ उपलब्ध है वहाँ दायें कोनेमें ऊपर दे दी गई है। परन्तु जहाँ वह उपलब्ध नही है वहाँ उसकी पूर्ति अनुमानसे चौकोर कोष्ठकोमें की गई है, और आवश्यक होनेपर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोंमें केवल मास या वर्षका उल्लेख है उन्हें आवश्यकतानुसार मास या वर्षके अन्तमें रखा गया है। शीर्षकके अन्तमे साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशन की है। गांधीजीकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ़ आधार पर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नही हुआ वहाँ उनकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये है।

साधन-सूत्रोंमें 'एस० एन०' सकेत साबरमती संग्रहालय, अहमदाबादमें उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' गांधी स्मारक निधि और संग्रहालय, नई दिल्लीमें उपलब्ध कागज-पत्रोंका, 'एम० एम० यू०' गांधी स्मारक निधि और संग्रहालय, नई दिल्लीमें उपलब्ध मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिटकी रीलोंका, तथा 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी) द्वारा संगृहीत पत्रोका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमि देनेके लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट भी दिये गये है। अन्तमें साधन-सूत्रोकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई है।

विषय-सूची

१. पत्र : अमीना कुरैशीको

यरवडा मन्दिर[1]
मंगलवार [१ जुलाई, १९३०][2]

चि० अमीना,

मै तुझे रोज याद कर लेता हूँ। अब तो तुझे सूतिकागृहसे मुक्ति मिल गई होगी।

बापूकी दुआ

गुजराती (जी० एन० ६६७०) की फोटो-नकलसे।

२. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
१ जुलाई, १९३०

प्रिय भगिनि,

अब तुमारी मानसिक स्थिति कैसी है? शरीर कैसा है? सतीशबाबुको कब मिली थी?[3] उनकी प्रकृति कैसी है? सोदपुरमें कौन कौन है? क्या पढ़ती है? रोज क्या करती है?

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः[4]

याद करो।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

आश्रमके मार्फत लिखो।

जी० एन० १६६७ की फोटो-नकलसे।

१. गांधीजीको ५ मई, १९३० को गिरफ्तार किया गया था और यरवडा सेंट्रल जेल, पूनामें रखा गया था।

२. अमीना कुरैशीको ६ जुलाई, १९३० को लिखे पत्रमें गांधीजीने अमीनाको बच्चा होनेका उल्लेख किया है। अतः यह पत्र सम्भवतः उससे पहले मंगलवारको लिखा गया होगा।

३. सतीशचन्द्र दासगुप्तको सत्याग्रह बुलेटिनोंके प्रकाशनके सम्बन्धमें राजद्रोहके आरोपमें गिरफ्तार कर लिया गया था और उन्हें एक सालकी सख्त कैद हुई थी।

४. भगवद्‌गीता, १२, १७।

३. पत्र : गंगाबहन झवेरीको

यरवडा मन्दिर
३ जुलाई, १९३०

चि० गंगाबहन झवेरी,

मईके महीनेमें प्राप्त पत्र मुझे अभी हाल ही मे दिये गये है। तुम्हारी शक्ति और भक्तिपर मुझे विश्वास है। भगवान तुम्हें अवश्य सन्मति देगा। अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

छोटूभाईसे मेरे वन्देमातरम् कहना।

गुजराती (जी० एन० ३१०१) की फोटो-नकलसे।

४. पत्र : नानीबहन झवेरीको

यरवडा मन्दिर
३ जुलाई, १९३०

चि० नानीबहन (झवेरी),

तुम्हारा २७-५-१९३० का पत्र, एक महीने बाद, अभी हालमें ही मिला। इसका नाम जेलखाना है। पत्र मिल गया, इसे भी अधिकारियोंका अनुग्रह कहना चाहिए।

यदि तुम पचा सको तो अनाज अवश्य खाने लगो। किन्तु स्वादके लिए कभी नही। तुम्हारा शरीर तो दूध और दहीसे ही पनपेगा। हर तरहकी चिन्ता करना छोड़ देना। हम जिस श्लोकका रोज पाठ' किया करते थे उसपर मनन करना। 'अनासक्तियोग'[१] को बार-बार पढ़ना, उसपर विचार करना और अमल करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३१००) की फोटो-नकलसे।

१. गांधीजी द्वारा भगवद्गीताका गुजराती अनुवाद; देखिए खण्ड ४१, पृष्ठ ९२-१६७।

५. पत्र : मनु गांधीको[1]

यरवडा मन्दिर
३ जुलाई, १९३०

चि० मनुडी,

आखिर बलीबहन[2] तुझे फुसलाकर भगा ही ले गई। कोई बात नही। किन्तु अब रानी बेटी बनना और काम करना। खूब कातना, पीजना और मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५०२)की फोटो-नकलसे। सौजन्य : मनुबहन मशरूवाला

६. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
३ जुलाई, १९३०

चि० वसुमती,

अब जबकि मैंने रामदास, देवदास आदिको 'तू' लिखना शुरू कर दिया है तो तुझे 'तुम' लिखनेमें मेरी कलम अटकेगी ही। अब मुझसे 'तुम' लिखा ही नही जाता। अतः आजसे जो उपयुक्त सर्वनाम है वही लिखना शुरू करता हूँ। जबसे तू मेरे सम्पर्कमें आई है तभीसे मैंने तुझे बेटीके रूपमें अपने हृदयमें स्थान दिया है और तूने उक्त पदको शोभान्वित भी किया है। इससे अधिक और क्या लिखूँ? भविष्यमें भी शोभान्वित करना। मैं जिन्हें अपनी लड़कियाँ मान बैठा हूँ यदि उनके उपयुक्त पिता बन सकूँ तभी बात बनेगी। इसे शिष्टताकी भाषा मत समझना। आज इतना ही। मैं ठीक ही हूँ। काकासाहब[3] मेरे साथ ही हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२७६) की फोटो-नकलसे।

१. हरिलाल गांधीकी कन्या।
२. बलीबहन वोरा, मनु गांधीकी मौसी।
३. दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर।

७. पत्र : लक्ष्मीबहन खरेको

यरवडा मन्दिर
५ जुलाई, १९३०

चि० लक्ष्मीवहन,

तुम्हारा मई महीनेका लिखा पत्र मुझे जुलाईमें दिया गया। ऐसा ही होता है। तुम जैसी गुजराती लिखती हो यदि मैं वैसी ही मराठी लिखने लगूँ तो वात बन जाये। मैं काकासाहब से सीख तो रहा हूँ।

जितने भी वच्चे वसन्तकी उम्रके हैं वे सभी वसन्त हैं, इसमें तनिक भी सन्देह नही है।

मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २८५)से। सौजन्य : लक्ष्मीबहन खरे

८. पत्र : मोतीबहन चोकसीको

यरवडा मन्दिर
५ जुलाई, १९३०

चि० मोतीबहन,

काफी दिन पहले लिखा तुम्हारा पत्र मुझे अभी-अभी मिला है। मैंने जो पत्र तुम्हें लिखे थे वे मिले होंगे। १२वाँ अध्याय[1] वार-वार पढ़ना और उसपर विचार करना। आशा है तुम्हें कोचीनसे बाल-बच्चोंके समाचार तो मिलते ही रहते होंगे। मेघजीकी चिन्ता बिलकुल मत करना। वे तो शान्ति पा ही चुके हैं। मृत्युके समय जिसके ओठों पर श्रद्धापूर्वक रामनाम रहा हो उसके विषयमें चिन्ता कैसी?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७३७) की फोटो-नकलसे।

१. भगवद्गीताका।

९. पत्र : अमीना कुरैशीको

यरवडा मन्दिर
६ जुलाई, १९३०

चि० अमीना,

तेरा पत्र पढकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। बालकके जन्मका समाचार मिल गया था। खुदा उसे लम्बी उम्र दे और वह तेरे और कुरैशी-जैसा बहादुर बने। क्या लडकियाँ मुझे याद करती हैं? उम्मीद है तेरी तबीयत अच्छी रहती होगी।

बापूकी दुआ

गुजराती (जी० एन० ६६५६) की फोटो-नकलसे।

१०. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
६ जुलाई, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा १ जुलाईका पत्र मुझे दिया गया है। खुराकमें फल मिलते हैं, यह अच्छा हुआ।

धुरन्धरको मैंने इसलिए लिया क्योंकि नियम-पालनमें मैंने उसे दृढ़ पाया। उसका खरापन मुझे अच्छा लगा। यह बात अखबारमें नहीं छापी जा सकती।

फूलों और पेड़ोंके साथ मेरी ओरसे बात करना। उनके भाई-बहन यहाँ भी हैं। इससे हमें सन्तोष मानना चाहिए न?

कुल मिलाकर तेरे दो ही पत्र मुझे मिले हैं। अंग्रेजी पत्र तो नहीं ही मिला।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६७२) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२२४ की फोटो-नकलसे भी।

११. पत्र : डाहीबहन पटेलको

यरवडा मन्दिर
६ जुलाई, १९३०

चि० डाहीबहन (रावजीभाई),

तुम्हें मुझे लिखना चाहिए। तुम डाहीबहनोंकी मुझे प्रायः याद आती है। आशा है अब तुम्हें हिस्टीरियाके दौरे बिल्कुल नहीं आते होंगे। तुम्हारे आसपास जो बहनें हों उन सबको मेरे आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९२०४)की फोटो-नकलसे।

१२. पत्र : महालक्ष्मी ठक्करको

यरवडा मन्दिर
६ जुलाई, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

तुम्हारा पत्र मिला। सब बहनोंका काम अच्छी तरह चल रहा है, यह जानकर मुझे खुशी होती है। रमाबहनसे कहना कि उसका पत्र मिला है। इस बार मै उसे नही लिख रहा हूँ। जिन बहनोंको मैं नहीं लिखता वे यह न समझें कि मै उन्हे बिसार बैठा हूँ। जितनी बहनों तक पत्र द्वारा पहुँचा जा सकता है उन तक पहुँचता हूँ। लेकिन एकको लिखा सो सबको लिखा, ऐसा समझना चाहिए। बच्चोंके बारेमें मालूम हुआ। उनके जानेसे मुझे दुःख हुआ है। माधवजीकी खबर मुझे मिलती रहती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८२६)की फोटो-नकलसे।

१३. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
७ जुलाई, १९३०

चि० मीरा,

मुझे तुम्हारा पत्र ठीक हालतमें और समयसे मिल गया। अब दोनो तरफके पत्रोके जल्दी पहुँचनेमें किसी कठिनाईकी सम्भावना नही है।

लन्दनसे तुम्हे अच्छा समाचार मिला, इसकी मुझे खुशी है। स्पष्टत: यह आपरेशन पूरी तरह सफल रहा।[1] पश्चिमने शल्य-चिकित्साके क्षेत्रमें जो आविष्कार किये हैं और उस दिशामें जो चहुँमुखी प्रगति की है उसका मै हमेशा प्रशंसक रहा हूँ।

अपनी आहार-सूचीमें तुमने मुझे यह नही बताया है कि तुम कितना घी ले रही हो और सन्तरे लेती हो या नही। घी की तुम्हें आवश्यकता है और सन्तरोकी भी। मैं चाहूँगा कि तुम इन दो चीजोको मत छोड़ो और न इनमें कमी करो।

अगर तुमने अभी तक रुई न भेजी हो तो तत्काल भेज दो। मै तुम्हें बता चुका हूँ कि १५ जुलाई अन्तिम दिन है।

मै ठीक हूँ। ३७५ तार कातना आजकल मुझे कुछ भारी महसूस होता है। मै इसका कारण पता चलानेकी कोशिश कर रहा हूँ। ऐसी स्थितिमें तकलीका अभ्यास काफी धीमा पड़ गया है।

मेरे पत्रोके अंश प्रकाशित न होनेकी शिकायतें मुझे मिली हैं। इसलिए तुम सामान्य बातोवाले पत्राश प्रकाशित करना फिरसे शुरू कर दो। मैंने इस विषयमें सुपरिंटेंडेंटसे बात कर ली है। यदि लोगोको मेरे पत्रोका कोई भी अंश देखनेको नही मिला तो उन्हे बहुत असन्तोष होगा।

मुलाकातोंके बारेमें अभी तक कुछ तय नही हुआ है।[2]

उन सब लोगोको मेरा प्यार कहना जिन्हें मै पत्र नही लिखत लेकिन जिनकी याद बराबर करता हूँ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४००)से। सौजन्य: मीराबहन, जी० एन० ९६३४ से भी।

१. मीराबहनकी माताका आपरेशन हुआ था।

२. जबतक मुलाकातकी अनुमति अधिकार रूपमें न मिले, तबतक गांधीजीने यरवडा जेलमें किसीसे भी मिलनेसे इनकार कर दिया था, यहाँ तक कि मित्रों और सम्बन्धियोंसे भी; देखिए "पत्र: आर० वी० मार्टिनको", ८-७-१९३० तथा खण्ड ४३, पृष्ठ ४५७-८ भी।

१४. पत्र : नारणदास गांधीको

यरवडा मन्दिर
७ जुलाई, १९३०

चि० नारणदास,

भणसाली लीलाबहनके[1] बारेमें क्या लिखता है? क्या वह आश्रमसे अलग हो गई है?

तुम्हारा २ जुलाईका पत्र इस बार तो फौरन मिल गया। रेवाशकर भाईके बारेमें तार मिल गया था। उन्हें मैंने सीधे ही जवाब दे दिया था।

रतिलाल अब शान्त होगा।

मेरे पत्रोंमें से कुछ अंश तो जरूर छापे जा सकते है। जिस मर्यादाका पालन किया जाना है, सो मैंने सुझा दिया है।

अमीना अब तो ठीक होगी। जब कभी जरूरत हो और जब जी चाहे मुझे पत्र लिख सकते हो। बहुत करके तो वह फौरन मिल जायेगा।

शम्भुको कहाँ चोटें आई थीं?

तुम्हारी ठीक परीक्षा हो रही है। बाबाका उपद्रव[2] सहन किये बिना छुटकारा कहाँ था। किन्तु वह बाबा है इसलिए नही। हमारे लिए तो राजा या बाबा दोनो एकसे है। राजा भी ऐसा उपद्रव करे तो भी हम क्या ऐसा ही व्यवहार न करेंगे? हम जानते हों और हमारे पास समय हो तो ऐसे उपद्रव करनेवालोंका सहवास प्राप्त करके उन्हें विवेकी बनना सिखायें। उनके पास जाकर उनसे विनती करे। उनकी परेशानी समझें। उनके रहन-सहनका पता लगायें। मैं जानता हूँ यह सब करना कठिन है। रास्ता तो यही है। बाबा हमारा सगा भाई हो तो क्या करें? जितना हो सके उतना समय उसके लिए लगायेंगे और उसकी विनती ही करेंगे न? दूसरे इस या इस तरहके उपद्रवके ध्यानसे हम यथाशक्ति कमसे-कम चीजें काममें लायें। दूधके बारेमें तो ऐसा कुछ हो ही नही सकता। क्योंकि दुग्धालय चलानेके कामको हमने कर्त्तव्य माना है और किया है, इसलिए उसको छोड़ा नही जा सकता। उसकी रक्षाका हमें जो शोभा दे ऐसा उपाय ढूंढ़ना बाकी है। इतना मैंने चर्चा करनेकी खातिर ही लिखा है। उसमें उपयोग करने लायक जो हो उसका उपयोग कर लेना।

चोरोका पकड़ा न जा सकना बाबाकी समस्यासे ज्यादा कठिन है। उसके लिए हम अपने आसपासके गाँवोमें जायें, यही उपाय हमारे पास है। ये बाह्य उपचार है और आवश्यक है। अन्तमें और फिर शुरूमें यह प्रार्थना तो है ही "जब लग गज बल

१. भणसालीकी विधवा साली जो आश्रममें अपने तीन बच्चोंके साथ रहती थी।

२. बाबाने आश्रममें दूधका नुकसान करना शुरू कर दिया था।

अपनो वरत्यो नेक सरो नही काम, निर्बल होय वल राम पुकारयो आये आधे नाम।"
यह महान सत्य है और श्रद्धाके प्रमाणमें फल मिलता है।

जो उपद्रव होते हैं उनके बारेमें मुझे जानकारी तो देते ही रहा करो। उससे मेरी आध्यात्मिक कसरत हो जाती है। ऐसे संयोगोमें मन क्या कहता है और क्या कराता है इसका विचार कर पाता हूँ।

प्रभुदासके चरखे सम्बन्धी प्रयोगके परिणाम लिखते रहना।

'अनासक्तियोग' का उर्दूमें अनुवाद करना हो तो कर ले।

ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी निबन्ध कही ठीक ही रखा है। कहाँ है, यह तो प्यारेलाल अथवा कुसुम कह सकते हैं। जहाँ कागज जमा करके रखे हुए हैं, वही मिलेगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

आज ४७ पत्र हैं, तुम्हारी सूचीके अनुसार कनुका और शारजाका पत्र नही देखता।

रुई न भेजी हो तो अब लौटती डाकसे भेज देना। आज बहुत जल्दी है, इसलिए कुछ-एक बातें रह गई है।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

१५. पत्र : भगवानजी पण्ड्याको

७ जुलाई, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम परिताप न करो। प्रयत्नशील हो इसलिए अन्तत: सब-कुछ ठीक ही होगा। हमारा शरीर हमारे काबूमें है इसलिए हमें उसपर अकुश अवश्य रखना चाहिए और मनको नियन्त्रित करना चाहिए। जो मनुष्य दिखावा करनेके लिए शरीर पर काबू रखता है और मनसे विषय-सेवन करता है वह दम्भी है, मिथ्याचारी है। जो मनुष्य शरीर पर काबू रखता है और मनको रोकनेका सतत प्रयत्न करता है वह प्रयत्नशील साधक है। और जिसका मन और शरीर पर पूर्णत: अधिकार है वह भगवान है। हम सब मध्यम वर्गके प्रयत्नशील साधक हैं, अथवा हो तो पर्याप्त है। मनको कभी मलिन न रहने दें। मनमें मलिन विचार आयें तो उन्हे हर सूरत निकाल देना चाहिए। जिस तरह शरीर पर रोज मैल चढती है और उसे हम रोज निकालते हैं, ऐसा ही मनके विषयमें भी समझना चाहिए। शकरभाईके पिता अथवा उनके-जैसे अन्य लोगोको हम अपने साथ रखें, ऐसा करते हुए हम अपने धर्मका पालन ही करते है। अहिंसाके मानी है कि हम अपने प्रति कृपण और दूसरोके प्रति उदार रहे। यही सहिष्णुताका लक्षण है। जो लोग नियमादिका पालन

नही करते वे दयाके पात्र हैं; द्वेषके पात्र कदापि नही। हमने चाय आदि छोड़ दी है, नियमका पालन करते है सो इसलिए कि ऐसा करना हमें अच्छा लगता है। यदि कुछ लोग इनका पालन नही करते तो उससे हम क्यो विचलित हो? हम आशा तो यह करते हैं कि हमारे विनम्र और दृढ व्यवहारको देखकर शकरभाईके पिता-जैसे लोगोका दिल पिघल जाये और वे अपनी बुरी आदतोंको छोड़ दें।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२०) से। सौजन्य: भगवानजी पुरुपोत्तम पण्ड्या

१६. पत्र: आर० बी० मार्टिनको

यरवडा सेंट्रल जेल
८ जुलाई, १९३०

प्रिय मेजर मार्टिन,

मुलाकातोंके सम्बन्धमें अपने पत्रके ही सन्दर्भमें मैं यहाँ परीक्षार्थ एक सूची अपने इस कथनका अर्थ स्पष्ट करनेके लिए संलग्न कर रहा हूँ कि मैं श्रीमती गांधी तथा अपने परिवारके अन्य सदस्योंसे तभी मुलाकात कर सकता हूँ जब मैं उन्ही शर्तोपर उन लोगोंके साथ भी मुलाकात कर सकूं जो मेरे लिए अपने सगे सम्बन्धियोंकी तरह हैं। इस सूचीमें उल्लिखित व्यक्ति ऐसे ही लोग है।

सरकार द्वारा प्रस्तावित विकल्प मेरे लिए अस्वीकार्य है और उसकी सीधी-सादी वजह यह है कि मैं नही चाहता कि मेरी पत्नी और मेरे बच्चे जब मुझसे मुलाकात करना चाहें तब उन्हें हर बार अनुमति प्राप्त करनेके लिए सरकारको अर्जी देनेकी जिल्लत उठानी पड़े।[1] मै यह मानता हूँ कि सरकारके लिए यह जरूरी नही है कि वह किसीको मुझसे मुलाकात करने दे। लेकिन यदि वह मुझे किसीसे मुलाकात करनेकी अनुमति दे, और उसमें शालीनताका अभाव हो, जैसाकि मेरी रायमें मुलाकातो के बारेमें इस समय है, तो मुझे ऐसी अनुमतिका लाभ उठानेसे इनकार है।

मै जानता हूँ कि सरकारके पास और तमाम काम है, और सरकारकी दृष्टिमें इस अपेक्षतया छोटेसे सवाल पर उसका समय वर्बाद करते हुए मुझे दुख होता है। मै उसकी दुबारा चर्चा सिर्फ इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मेरी आपसे इस विषयमें बात हुई थी, और इसलिए भी कि मैं चाहूँगा कि इसका इधर या उधर कोई फैसला कर दिया जाये।

यदि यह सूची स्वीकार कर ली जाती है तो मै और नई सूची देनेका अधिकार अपने पास रखूंगा। मेरे लिए इस समय उन सभी लोगोंके नाम याद कर पाना

१. देखिए खण्ड ४३, पृष्ठ ४५७-८ की पाद-टिप्पणी ३।

सम्भव नही है जिनका मुझसे घनिष्ट सम्बन्ध है लेकिन जिनकी कोई राजनीतिक ख्याति नही है। मै यह भी कहना चाहूँगा कि मैंने ऐसे [कई] नामोको जानबूझकर छोड दिया है। इनमें से बहुतसे १६ वर्षसे कम आयुके लडके और लडकियाँ है। मैंने अपने सम्बन्धियोके नाम छोड दिये है क्योकि उन्हें तो पहले ही से अनुमति है और उन लोगोको भी छोड़ दिया है जो मेरी जानमें पहलेसे ही जेलमें है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[सलग्न]

पत्रमें उल्लिखित परीक्षणात्मक सूची।

दामोदरदास और उनकी पत्नी
मणिबाई गलिआरा और उनके बच्चे
लक्ष्मीदास आसर
लक्ष्मीबहन बार
मोतीबहन चोकसी
मणि आसर
लीलावती आसर
अमीना कुरेशी
मथुरादास पुरुषोत्तम
मोतीबाई मथुरादास
जानकीबाई
लक्ष्मीबाई खरे
बालकृष्ण
हरिहर शर्मा
बेगम तैयबजी
रेहाना तैयबजी
हमीदा तैयबजी
प्यार अली
नूरबानू
अब्दुल्लाभाई
गोमतीबाई मशरूवाला
नौरोजी बहनें
खम्भाता
तहमीना खम्भाता
रामभाऊ
छगनलाल जोशी
वेलाबाई आसर
रमाबाई जोशी
मोतीबाई रणछोडलाल
रमाबहन रणछोडलाल
सरला देवी अम्बालाल
निर्मलाबाई
अम्बालाल साराभाई और लडकियाँ
लडके
अनसूयाबाई साराभाई
शंकरलाल बैंकर
विनोबा
गोपालराव
कमलाबहन पटेल
कमला हरिदास
वसुमतीबहन
कुसुम देसाई
जेठालाल गाधी
मगनभाई पटेल
कपिलराय
महावीर
मैत्री
दुर्गा
कृष्णमैया देवी
सरोजिनी देवी
मीठूबाई पेटिट
गंगाबहन (बड़ी)

गंगाबहन झवेरी
मणिलाल झवेरी
गुलाबबहन मणिलाल
रतिलाल मेहता
चम्पाबहन मेहता
नानीबहन झवेरी
नानीबहन बुधाभाई
भणसाली
मैथ्यू
कुमारप्पा
चन्द्रशंकर शुक्ल
मणिबहन परीख
मणिबहन पटेल
नन्दाबहन कानूगा
शारदाबहन मेहता
डाहीबहन पटेल
डाहीबहन सोमाभाई
ईश्वरलाल
टापू
शिवाभाई पटेल
रावजीभाई पटेल
शारजाबहन
प्रेमाबाई
शारदा कोटक
हरजीवन कोटक
पार्वती
ललिता
लीलाबहन
शान्ताबाई
शान्ताबहन
जानकीबाई बजाज और बच्चे
कमलनयन
नाथजी
कुँवरजी पटेल
सत्यवती
कान्ताबहन

कृष्णकुमारी
कस्तूरबहन
पृथुराज
लक्ष्मी दादाभाई
लालजी
विट्ठल
जेठालाल भाटिया
बबलभाई
केवलराम
निर्मला केवलराम
गोडसे
सोमाभाई
हसमुखराय
गिरिराज
मन्नालाल
जगन्नाथ
शम्भु
दिलखुश दीवानजी
नन्दलाल शाह
पूंजाभाई
बुधाभाई
करसनदास चितालिया
सूरजबहन मणिलाल
गंगाबहन रामजी
मोतीबहन रामजी
चेलीबहन शाह
केशवराव देशपांडे
रमीबाई कामदार
लेडी विट्ठलदास
कमलाबाई
विट्ठलदास जेराजाणी
छोटेलाल
कीकीबहन लालवानी
गिरधर
पंडित सुखलाल
बेचरदास

वी० सुन्दरम
एम्मा हारकर
पद्मजा नायडू
कृष्णाबाई सन्तानम
लक्ष्मी राजगोपालाचारी
डाह्याभाई पटेल
नर्मदा डाह्याभाई
शान्तिकुमार नरोत्तमदास
नरसिंहप्रसाद
मामा फड़के
हरिभाई फाटक
रामचन्द्रन
जूठाभाई
पूंजाभाई जूनियर
मंगला
पुष्पा
महालक्ष्मी
निर्मला पण्ड्या
दुर्गाबहन देसाई
निर्मला देसाई
बलभद्र
दूदाभाई मोटजी
आनन्दी
इंदु पारेख
कान्तिलाल पारेख
अमृतलाल नानावटी
सामलभाई
चिमनलाल
गुलाब बजाज
काकू
बापूभाई शेलत

मो० क० गांधी

अंग्रेजी (जी० एन० ३८५०) की फोटो-नकलसे; एस० एन० १९९७५ से भी।

१७. पत्र : कपिलराय मेहताको

यरवडा मन्दिर
८ जुलाई, १९३०

चि० कपिलराय,

यह बीमारी फिर कहाँसे आ टपकी? जल्दी ही चंगे हो जाना प्रत्येक विद्यार्थीका कर्त्तव्य है। बीमार पड़ना गुनाह है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १९५९५) से। सौजन्य : कपिलराय मेहता; जी० एन० ३९७३ की फोटो-नकल से भी।

१८. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
८ जुलाई, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरी ओरसे कोई पत्र नहीं है; यह क्यों? तू कैसी है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३८९) की फोटो-नकलसे।

१९. पत्र : ईश्वरलाल जोशीको

यरवडा मन्दिर
८ जुलाई, १९३०

चि० ईश्वरलाल,

तेरी गाड़ी कैसी चल रही है? तूने कितनी प्रगति की है? तेरी अंग्रेजीकी पढ़ाई चल रही है न? क्या तेरी प्रगतिसे लक्ष्मीदासभाई सन्तुष्ट हैं?

क्या इन्दु वहाँ है? वह क्या कर रही है? उससे पत्र लिखनेको कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९३११) से। सौजन्य : ईश्वरलाल जोशी

२०. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

८ जुलाई, १९३०

चि० गंगाबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। काकू कैसा है? रमीबाई क्या कर रही है?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ६ : गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७५२से भी। सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

२१. पत्र : शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
मौनवार, ९ जुलाई, १९३०

चि० शारदा (बबु)[1]

यदि हम मन्दिरमें रहते हुए आनन्दपूर्वक हो तो इसमें कौन-सी विचित्र बात है? किन्तु तुझे दमेका दौरा क्यो पडता है? जो बच्चे या बडे बीमार पडते है क्या वे अपनी ही गलतीसे बीमार नही पडते? यदि यह बात सच हो तो तुझे अपनी गलती ढूंढ निकालनी चाहिए और उसे दुहराना नही चाहिए। अच्छी हो जानेके बाद यदि तू भलीभाँति प्राणायाम, सूर्यस्नान, मालिश आदि और खान-पानके नियमोका पालन करेगी तो दमा फिर दिखाई नही देगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८८५) से। सौजन्य : शारदाबहन; जी० चोखावाला

२२. पत्र : विल्फ्रेड वेलॉकको[2]

यरवडा सेंट्रल जेल
११ जुलाई, १९३०

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। जेलकी कोठरीमें बैठकर किसी बहसमें पड़ना मेरे लिए उचित नही होगा। लेकिन आप विश्वास रखें कि मै सहयोग करनेका एक भी सच्चा मौका हाथसे नही जाने दूंगा। लेकिन म स्वीकार करता हूँ कि आज सत्तारूढ़ व्यक्तियोके कितने ही कार्योंके पीछे मै धोखाधड़ी, झूठ और पाशविक बलका जो जाल फैला देखता हूँ उसके बीच सहयोगकी कोई सम्भावना मुझे दिखाई नही पड़ती।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे सीक्रेट एब्सट्रैक्ट्स, ७५० (३४), पृष्ठ ११७

१. चिमनलाल और शकरीबहनकी पुत्री।
२. ब्रिटिश संसदके सदस्य।

२३. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
११ जुलाई, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने उसमें अपना हृदय उंडेलकर अच्छा किया। तुमने जिस दोषका वर्णन किया उससे मैंने बहुत ही कम लोगोंको मुक्त देखा है। जिस वातावरणमें हम रहते हैं, वह इतना हलका है कि उसके प्रभावसे अधिकांश नवयुवक बच ही नहीं सकते। किन्तु अब भूतकालके बारेमें पश्चात्ताप न करके उचित रूपसे वर्तमान पर ध्यान दो और ऐसा प्रयत्न करते हुए उसमें जरा-सी भी कमी न आने दो।

कलावतीको डाक्टरको अवश्य दिखाओ। चाहे तो वह महिला डाक्टर उसकी जाँच करे। इसके लिए मेरी चिट्ठीकी जरूरत नहीं है। यहाँसे ऐसी चिट्ठी भेजना उचित भी नहीं है। यदि उसकी जरूरत जान ही पड़े तो नारणदासकी चिट्ठी ले लेना ही काफी होगा। वह भली स्त्री है।

'गीताजी' के बारेमें तुमने जो लिखा है उसे मैं समझता हूँ। मैं कलकत्तेवाला अनुवाद पढ़नेका प्रयत्न करूँगा। महावीरप्रसाद के लिए लिखा पत्र तो आज इसके साथ भेज ही रहा हूँ। उसे देख लेना। उसे तुमने विनोबाको दिखाकर ठीक किया।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२४७)की फोटो-नकलसे।

२४. पत्र : कलावती त्रिवेदीको

११ जुलाई, १९३०

चि० कलावती,

तुमारा खत मिला।

इच्छा एक हि रखनी — सेवाकी। सेवाकार्य वहार मिले तो या आश्रममें दोनों एक समजो। चीज अपनी इच्छानुसार होनेसे हि आनंद मिले उसे सेवा नहिं कह सकते हैं। इसका अर्थ सेवा नहिं परंतु स्वेच्छाचार हुआ। हममें यह कभी न हो। तुमारे दर्दकी बात काशीनाथने लिखी है। तुमारे कटीस्नानकी आवश्यकता है। चित्त शुद्धिकी तो है हि। मन निर्विकर रखनेकी चेष्टा करो।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२४६ की फोटो-नकलसे।

२५. पत्र : कमलनयन बजाजको

यरवडा मन्दिर
१२ जुलाई, १९३०

चि० कमलनयन,

तेरा पत्र मिला। फिलहाल तेरा कर्त्तव्य शरीरको बलिष्ठ बनाना है। तेरी खुराक ठीक है। कसरत बराबर करते रहना। यथाशक्ति खादीका कार्य करते रहना। मुझे पत्र लिखते रहना। कमला कैसी है? मदालसा क्या करती है? जानकी बहनसे पत्र लिखनेको कहना। पिताजीकी खुराक क्या है? तू रोज कितना कातता है? क्या तुझे कुछ पढ़नेका समय मिलता है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

काकासाहब आशीर्वाद भेजते हैं।[1]

गुजराती (जी० एन० ३०४३)की फोटो-नकलसे।

२६. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
१३ जुलाई, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। कार्यका अर्थ क्या है? क्या कातना, पीजना ये कार्य नहीं हैं? शुद्ध हृदयसे किये गये सभी कार्योंका मूल्य एक-जैसा ही होता है। हमें जो काम दिया गया है उससे प्राप्त होनेवाला सन्तोष ही सच्ची सिपहगरी या भक्ति या साधना है। हमें जो सेवा करनेका अवसर मिला है उसमें तन्मय हो जाना ही सच्ची समाधि है। यह ठीक है कि इस स्थिति तक पहुँचनेमें समय लगता है। अतः हम तो प्रयत्न करते ही रहें; उसका परिणाम ईश्वरके हाथमें है। हम दोनोंकी तबीयत अच्छी है। इस सम्बन्धमें और अधिक समाचार तो मैं आश्रमके सामान्य पत्रमें दूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२८३)की फोटो-नकलसे।

१. यह पंक्ति हिन्दीमें है।

२७. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
१३ जुलाई, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। निर्मलाके पत्रमें उसकी हिन्दीकी सुन्दर झलक दिखाई देती है, तेरे पत्रमें मराठीकी, जैसेकि 'वेत रहित कर्यो।'[1] भाषामें होनेवाली ऐसी वृद्धि मुझे अच्छी लगती है। कुछ अरसे बाद तो मैं मराठी अच्छी तरह समझ लेनेकी आशा रखता हूँ। मैं रोज इसका अभ्यास करता हूँ।

मैंने अंग्रेजी पत्र प्राप्त करनेकी उम्मीद अब छोड़ दी है।

कृष्णन नायरके बारेमें मुझे मालूम है।

तेरे गुजराती अक्षर उत्तरोत्तर सुधर रहे हैं।

संवेदनशीलता कई बार कष्टप्रद सिद्ध होती है। लेकिन उसके बिना मनुष्य पशुतुल्य है। उसे सही दिशामें ले जाना हमारा परम कर्त्तव्य है।

कच्चे करेले खाकर तो देखने ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६७३) से। सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२२५की फोटो-नकलसे भी।

२८. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

यरवडा मन्दिर
१३ जुलाई, १९३०

चि० मथुरादास,

तुम्हारे पत्र मिले। पिंजाई सुधारने सम्बन्धी नियम तुमने मुझे लिख भेजे सो अच्छा किया। 'नवजीवन' तो अब यहाँ कहाँ मिलनेवाला है? सप्तपदी[2] की प्रतिज्ञाकी प्रति मेरे पास नहीं है। यदि तुम उसकी नकल भेज दो तो मैं काकाके साथ बैठकर उसे सुधारनेका प्रयत्न करूँगा।

जहाँ-तक अहिंसा सम्बन्धी ग्रन्थका प्रश्न है, उसपर तो मैं फिलहाल आचरण कर रहा हूँ। यदि मैं उसे अपने जीवनमें उतार सकूँ तो ग्रन्थका सच्चा अभ्यास तो

१. अर्थ है 'इरादा मुल्तवी रखा'।

२. देखिए खण्ड ३०, पृष्ठ ९२-३।

वही होगा। लिखा हुआ ग्रन्थ एक दिन जीर्ण हो जायेगा। किन्तु अपने जीवनमें उतारा हुआ गुण सदा बढ़ता रहेगा। और फिर मैंने जब-तब इस सम्बन्धमें क्या कुछ कम लिखा है? अब और नया क्या लिखूं? और कुछ सूझता भी तो नही है। फिर भी जैसाकि तुम चाहते हो, कुछ अन्य लोग भी वही चाहते है। अतः यदि किसी दिन अन्तर्प्रेरणा हुई तो शायद मै भविष्यमें कुछ लिखूं। मेघजीकी मृत्युका दुःख करना छोड़ देना। हमारे पास तो असख्य मेघजी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७३९) की फोटो-नकलसे।

२९. पत्र : दुर्गा गिरिको[1]

यरवडा मन्दिर
१३ जुलाई, १९३०

चि० दुर्गा,

तेरा पत्र अच्छा है। अक्षर भी अच्छे है। सिलाईमें तुम सब मेरी परीक्षा लोगी या मुझे परीक्षा दोगी? तुम सब तो वहाँ ब्योंतना भी सीखती हो। यहाँ यह सब मुझे कौन सिखाये? लेकिन देखूंगा। मेरी लाठियाँ[2] (मुझसे) चढ़ती है या मै? मैंने तेरे अक्षरोकी तारीफ इस आशासे की है कि तू उन्हे और अच्छा बनायेगी। राधाबहनके अक्षरोका नमूना तो तुम सब लड़कियोके सामने है ही। लिखे हुए पत्रको दुबारा पढ़ जानेसे बेध्यानमें रही भूल सुधारी जा सकती है।[3]

बापूके आशीर्वाद

बापूकी विराट् वत्सलता

१. दलबहादुर गिरिकी कन्या जो अपने भाइयों, बहनों तथा विधवा माँ के साथ आश्रममें रह रही थी।
२. लड़कियाँ, जिनके कन्धोंका गांधीजी चलते समय सहारा लेते थे।
३. मूल पत्र गुजरातीमें था।

३०. पत्र : मीराबहनको

१४ जुलाई, १९३०

दुबारा नहीं पढ़ा

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। आश्रमकी डाक मुझे अब नियमित रूपसे मिलनेकी सम्भावना है।

अगर शरीर पर तुरन्त अच्छा प्रभाव पडे तो मुझे तुम्हारे ठंडे जलसे स्नान करनेमें कोई आपत्ति नहीं है। ठिठुरन नहीं लगनी चाहिए। भारतीय पद्धतिके अनुसार ठंडे जलसे स्नानका पूरा लाभ तभी होता है जब जल डालते समय शरीरको जोर-जोरसे रगड़ा जाये। और स्नानके बाद शरीरको सूखे तौलिएसे तबतक खूब रगड़ना चाहिए जबतक सभी अंग बिलकुल सूख न जायें। लेकिन कृपया बिना उबला पानी मत इस्तेमाल करना। मेरी बात भिन्न है। मुझे वही पानी मिलता है जो छानकर एक अलग मिट्टीके बर्तनमें रखा जाता है। सारे जेलमें छने हुए जलकी व्यवस्था है।

मेरा कब्ज लगभग दूर हो गया है। इसकी वजह यह है कि मैंने सुबह दहीकी जगह फिर दूध लेना शुरू कर दिया है। यदि मुझे लगा कि दूधको गर्म करना या गर्म पानी लेना जरूरी है तो मैं गर्म दूध या दोनों ही चीजें लेनेमें हिचकूँगा नहीं। लेकिन मैं आशा करता हूँ कि इसकी जरूरत नहीं होगी। मेरे लिए ताजा फल जरूरी नहीं मालूम पड़ता। मेरा वजन घट नहीं रहा है। पिछले सप्ताह यह १०३ और १०४ पौंडके बीच था। मैं इतने वजनको बुरा नहीं समझता। इस तरह तुम देखोगी कि मेरे लिए चिन्ता करनेका कोई कारण नहीं है।

तुमने 'गीता'का अनुवाद करनेको कहा है। मैं करना भी चाहूँगा। लेकिन इस समय मुझे जो थोड़ा-बहुत समय मिलता है वह 'भजनावलि'[1] के अनुवादमें लगता है। इसे भी मैं तुम्हारे लिए ही कर रहा हूँ। मेरी रफ्तार बहुत धीमी है। इसलिए मैं नहीं जानता कि यह कब तक खत्म होगा। 'गीता'का अनुवाद बड़ा काम है। तुम मानोगी कि मुझे उसके लिए कातना स्थगित नहीं करना चाहिए। कारण, यदि कहा जा सके तो सूत कातना 'गीता'का व्यावहारिक अनुवाद है। यदि मुझे यह शान्ति काफी लम्बे अरसे तक मिल सकी तो मैं अनुवादका काम अवश्य उठाऊँगा।

जिस प्रकारकी पूजाका तुमने जिक्र किया है वैसी पूजा हम आश्रममें नहीं कर सकते। निःसन्देह मगन कुटीरके निकट वह छोटी-सी समाधि है। लेकिन चन्द लोगोंको छोड़कर उसकी ओर कोई देखता तक नहीं। उस प्रकारकी पूजामें आश्रमवासियोंकी कोई जीवन्त आस्था नहीं है। अदृश्यकी पूजाके लिए बुद्धि तैयार है लेकिन हृदय

१. देखिए परिशिष्ट ६।

नही। तथापि हमें उस दिशामें धीरे-धीरे बढना है। जैसाकि १२वे अध्यायमे बताया गया है, इस मार्ग पर चलना कठिन जरूर है लेकिन असम्भव नही। आ जरूर जायेगा। हर व्यक्ति अनजाने आश्रम-प्रार्थनाका मूल्य समझ रहा है। बहुतोके लिए तो यह सान्त्वनाका एकमात्र स्रोत है। इस प्रार्थनामें शामिल होनेवाले लोग इसका उपहास नही उडाते। वे जानबूझकर श्रद्धाहीन भी नही हैं। आत्मा तो चाहती है, शरीर ही दुर्बल है। वे सभी लोग प्रयत्नशील है। और ईमानदारीसे प्रयत्न करने-वालेको कभी विफल होते नही सुना गया। तुम्हे याद रखना चाहिए कि हमारा प्रयत्न कुछ नये ढगका है। हमारे पास प्रार्थनाके लिए कोई भव्य इमारत नही है। हमारे पास केवल खुला मैदान है। लेकिन यह ठीक चीज है, विशेष रूपसे इस-लिए कि हम करोडो क्षुधा-पीडित लोगोका प्रतिनिधित्व करते है। हमारे लिए आकाश ही सर्वथा सन्तोषप्रद छत और चार दिशाएँ निस्सीम दीवारे हैं। लेकिन युगोसे न भी कहे तो पीढियोसे चली आ रही आदतोसे मुक्त होनेमें हमें समय लगेगा। इसके साथ ही यदि हमें जाति, वर्ग और बँधे हुए विश्वासोके बन्धनोको तोड़ना है तो हमारे लिए एक बिलकुल वैसे ही खुले हुए प्रार्थना-गृहकी आवश्यकता है, जैसा कि हमारे पास है। क्या मेरी बात स्पष्ट हो गई?

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४०१) से। सौजन्य: मीराबहन, जी० एन० ९६३५ से भी।

३१. पत्र : कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
१४ जुलाई, १९३०

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र बहुत दिनों बाद मिला। तू ठीक स्थान पर पहुँच गई है। अन्तमें तो तुझे आश्रम पहुँचना ही है। अपना शरीर न बिगाडना। मुझे लिखती रहना। पीजन, चरखा और तकली पर पूरा काबू पाये बिना सिलाई पर न जाना। यह आसान है। अनिवार्य भी नही। जब तू कातनेकी क्रियामें सम्पूर्णता प्राप्त कर लेगी तो मैं बहुत सन्तोष मानूँगा। पुराणी अभी बाहर है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८००) की फोटो-नकलसे।

३२. पत्र : मणिबहन पटेलको

यरवडा मन्दिर
१४ जुलाई, १९३०

चि० मणि (पटेल),

वाह! असली बापू[1] आ गये, तो नकली बापूको भूल गई क्या? और अब तो व्याख्यान देनेवाली हो गई, फिर क्या पूछना? तेरा शारीरिक या मानसिक स्वास्थ्य कैसा है? मेरे पत्र तो मिल गये न?

डाह्याभाई कैसे हैं? यशोदाका अब क्या हाल है? बिल्कुल अच्छी हो गई क्या?

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
डा० कानूगाका बंगला
एलिस ब्रिज
अहमदाबाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो-४ : मणिबहेन पटेलने

३३. पत्र : हरिप्रसादको

यरवडा मन्दिर
१४ जुलाई, १९३०

चि० हरिप्रसाद,

तुम वापिस आ गये अच्छा हुआ। अब मुझे दिनचर्या बता दो और मानसिक स्थिति भी लिखो।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० २५४९ की फोटो-नकलसे।

१. वल्लभभाई पटेल, जो २६ जून, १९३० को जेलसे छूटे थे।

३४. पत्र : नारणदास गांधीको

यरवडा मन्दिर
१३/१५ जुलाई, १९३०[1]

चि० नारणदास,

इस बार सभी पत्र आते ही दे दिये गये थे; और आगेसे भी इसी तरह मिलते रहनेकी सम्भावना है।

पिछली बार मैंने ४७ पत्र लिखकर अन्तिम घड़ीमें दो और लिख दिये थे, पर तुम्हारे पत्रमें फेरफार नही कर सका। क्योंकि मुख्य अधिकारी आ गया था, इसलिए वे दोनो कागज यों ही खोसकर लिफाफा उसे दे दिया।

मेरी गति ४०० तार या गज भी नही हुई। होना सम्भव भी नही है। शरीरमें इतनी ताकत नही, ऐसा मानता हूँ। मैं पहले पूरे दिनमें १६० तारके लगभग कातता था। अब लगभग ३७५ तार कातता हूँ। पर ऐसा करनेके लिए औसतन कमसे-कम चार घंटे लग जाते है। जिस दिन सब-कुछ ठीक चले उस दिन भी तीन घटेसे कम नही लगते। औसतन रोजके ४०० तार होते होगे। गति १६० फी घंटा थी; उसके बदले २०० तार तक चली गई है। किन्तु वह भी ऐसे दिन जब शरीरमें काफी स्फूर्ति हो और माल आदि ठीकसे व्यवस्थित हों। पत्रमें इतना सुधार कर देना। तकलीका काम अभी ढीला पडने दिया है। चरखेको चलाते ही शरीर अच्छा खासा थक जाता है। चार घटे लगातार बैठनेकी शक्ति तो बीमारीके बाद खो बैठा हूँ, इसलिए यहाँ यह आदत डालना मुश्किल तो है ही। किन्तु अभी यही मेरी साधना है इसलिए उसपर अडा हुआ हूँ। शरीरका ध्यान रखनेका प्रयत्न तो करता ही हूँ। वजन टिका हुआ है इसलिए कोई हानि नही दिखाई देती। बराबर सो लेता हूँ। तकलीको थोड़ा-सा समय तो देता ही हूँ। हाथसे अभी बिल्कुल बढ़िया तकली नही बना सकता और ज्यादा समय न मिलनेके कारण उसका अभ्यास नही कर पाता। जितना ज्यादा सूत कात सकूँ उतना अच्छा है, यह सोचकर इसी कामको प्रमुखता दी है। सिलाईका काम तो ठीक चल रहा है। मशीन पर हाथ अच्छा बैठ गया है। अभी उसका हिसाब-किताब तो मालूम नही हुआ। यहाँ कोई बतानेवाला भी नही है। इस बारेमें ज्यादा बात मीराबहनको लिखे पत्रमें देखोगे।

काकासाहब का स्वास्थ्य अच्छा है। यहाँ आनेके बाद दो रतल वजन बढा है। रोज लगभग अढ़ाई घंटे चलते है। कामके सम्बन्धमें जितना चलना पड़े सो अलग। खानेके लिए सारा दूध दहीके रूपमें ही लेते हैं। इससे वह सभी पच जाता है। रोटीको सेंक लेते हैं। सामान्य तौर पर सब्जी बदल-बदल कर मिलती है। मूली,

१. यह पत्र कई दिनोंमें लिखा गया था। यहाँ इसे समाप्तिकी तिथिके अनुसार दिया गया है। नारणदास गांधी और मीराबहनको लिखे ऐसे पत्रोंको आगे भी अन्तिम तिथिके अनुसार ही रखा गया है।

बैंगन; कभी-कभी तुरई या गवारफली मिलती है। मूलीको उबालते नही है। १० तोला मक्खन पच जाता है। अभी तो तकलीसे ही कातते है। हाल ही में सूरतसे गाण्डीव चरखा आया है। उसपर आजसे कातना शुरू किया है। [काका] मुझे मराठी सिखानेका काम तो कर ही रहे है। मेरे लिए फल भिगोने या धोनेका काम और शामके बर्तन धोनेका काम भी वही करते हैं। उनसे दूसरी छोटी-छोटी सेवाएँ तो कई लिया ही करता हूँ।

हम दोनोमें से किसीके बारेमें भी चिन्ता करनेका कोई कारण नही है।

भरवाड़ लोगोंका बन्दोबस्त हो गया सो ठीक हुआ।

आज तक वहाँसे रुई नही मिली। यह शनिवारकी रातको लिख रहा हूँ। यदि यह पत्र पहुँचने तक न भेजी हो तो फौरन डाकसे भेज देना। इस पत्रके जवाबमें वापसी डाकसे भी मिल जाये तो मानता हूँ कि कोई हानि नही होगी। मुझे उम्मीद तो है ही कि मैंने १५ तारीखको अन्तिम दिन बताया है इसलिए मंगलवार तक तो आ जायेगी। दिन बीतते जा रहे है इसलिए मुझमें धैर्य थोड़ा कम तो जरूर हो गया है।

शारजाका पत्र नही मिला। इस बार कनुका पत्र मिल गया है।

पूंजाभाईकी खबर देना। वे कैसे रहते है? कहाँ रहते है? समय कैसे बिताते है?

१४ जुलाई, १९३०

किसी लड़केके पत्रमें प्रश्न है कि मैं कागजके टुकड़े क्यों इस्तेमाल करता हूँ? जवाब है, पहले तो कैदीको सभी चीजें कमसे-कम इस्तेमाल करनी चाहिए इस कारणसे; तथा दूसरा जो अपरिग्रहके व्रतका पालन करता है वह सारी ही सम्पत्ति का ट्रस्टी — रक्षक है। इसलिए मुझे तो यहाँकी सम्पत्ति भी कंजूसकी तरह इस्तेमाल करनी चाहिए। तीसरे यह सम्पत्ति भी तो अपनी ही है न? किसके पैसेसे ली है? चौथा, इस गरीब देशमें ऐसी चीजोंको जितना कम इस्तेमाल किया जाये उतना अच्छा है। पाँचवाँ, ऐसे समय किसी भी चीजका ज्यादा उपयोग करनेसे जी दुखता है।

आज खबर मिली है कि दफ्तरमें रेलकी रसीद आई है; इसलिए सम्भव है रुई आ गई हो। अन्तमें [हर] पत्र पर संख्या न लिख सकूँ तो भी तुम अन्तिम अंक तो देख ही लोगे न?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

अभी मंगलवार[1] सुबहके ५-३० बजे है। पत्रोंको बन्द कर रहा हूँ। सब मिला कर ५२ है। किसीको लिखना भूल गया होऊँ और उसे आशा हो तो उसका नाम लिखना। बड़े कुटुम्बवाला किसे लिखे, किसे न लिखे। सुब्बैया कहाँ है।

बापू

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

१. १५ जुलाई।

३५. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
१५ जुलाई, १९३०

चि० प्रभावती,

आश्रमसे दो डाकें मिली है, उनमें तेरा पत्र नही है। तू तो नियमपूर्वक लिखनेवाली है इसलिए पत्रके न आनेसे चिन्ता होती है। पिताजीकी तबीयत कैसी रहती है? जयप्रकाश क्या करता है? मै अच्छी तरहसे हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३९०) की फोटो-नकलसे।

३६. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

यरवडा मन्दिर
१५ जुलाई, १९३०

चि० ब्रजकिसन,

तुमारी मानसिक और शारीरिक स्थितिका वर्णन दो। आश्रमके मार्फत खत लीखा जा सकता है? देवदासको मिलनेका होता है?[1] कृष्ण नायर कहाँ है?

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० २३८२ की फोटो-नकलसे।

३७. पत्र : एच० एस० एल० पोलकको

यरवडा सेन्ट्रल जेल
१६ जुलाई, १९३०

प्रिय हेनरी,

तुम्हारा तार मुझे कल दिया गया था।

कैदीकी हैसियतसे मैं जितने विस्तारसे लिखना चाहता हूँ, उतने विस्तारसे नही लिख सकता। इसलिए मैं इतना ही कह सकता हूँ कि यदि तुम्हे भी परिस्थितियोका उतना ज्ञान होता जितना मुझे है तो तुम मुझसे गोलमेज सम्मेलनमें जानेका आग्रह

१. देवदास गांधीको अप्रैलके शुरूमें सविनय अवज्ञा करते हुए दिल्लीमें गिरफ्तार कर लिया गया था और उन्हें सजा हो गई थी।

न करते। मेरा वहाँ जाना बिलकुल व्यर्थ होगा। मुझे वाइसरायके वक्तव्यमें कोई आशाजनक चीज नहीं दिखाई पड़ती। तथ्य यह है कि स्वराज्य तो हमें खुद लेना है। वह दानके रूपमें नहीं आ सकता।

मिली, सेलिक, लिऑन और जिनको हम जानते थे उन सबोंको मेरा प्यार कहना। मॉड आजकल कहाँ है? एण्ड्रयूजको मेरा प्यार कहना और कहना कि जेल पहुँचनेके तुरन्त बाद ही मुझे उसका तार मिला था।

तुम्हारा,
भाई

[अंग्रेजीसे]

महात्मा गांधी: सोर्स मैटीरियल फॉर ए हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, खण्ड ३, भाग ३, पृष्ठ १८२

३८. पत्र: गोविन्द पटेलको

यरवडा मन्दिर
१७ जुलाई, १९३०

चि० गोविन्द,

सुन्दर अक्षरोंमें लिखा तेरा पत्र पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। अब भविष्यमें मुझे पत्र लिखते रहना। मैं तो तेरी याद भूल ही गया था। बड़े कुटुम्बवालोंका शायद यही हाल होता होगा! जो मेरी नजरके सामनेसे हटा कि मैं उसे भूला।

स्वास्थ्यमें सुधार हुआ है, यह जानकर मुझे बहुत सन्तोष हुआ है। तू अपना काम जतनसे करता है, इस बारेमें मेरे मनमें तनिक भी शंका नहीं है। ईश्वर तुझे दीर्घायु करे और सच्चा सेवक बनाये।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३९४४) की फोटो-नकलसे।

३९. पत्र : मीराबहनको

[१८ जुलाई, १९३०][1]

चि० मीरा,

इस सुखसे अपने-आपको वंचित करते मुझे तकलीफ होती है, लेकिन इस सम्बन्ध में मैंने जो स्थिति अख्तियार की है यदि मुझे उसका सुसंगत रूपसे पालन करना है तो मुझे ऐसा करना ही चाहिए।[2] कृपया चरखा आदि छोड़ जाओ, और मैं जो करना है उसे भरसक अच्छी तरह करनेकी कोशिश करूँगा। ऐसे ही अवसरों पर हम अपनी कसौटी करते हैं। ईश्वर तुम्हारे साथ रहे।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४०२) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६३६ से भी।

४०. पत्र : रावजीभाई पटेलको

यरवडा मन्दिर
१८ जुलाई, १९३०

चि० रावजीभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। जेल जानेकी तैयारी करना हमारा कर्त्तव्य है। जेल जानेकी इच्छा करना मोह है। एक ही कामकी इच्छा की जा सकती है और वह है सेवा। जिस स्थितिमें सेवा बन सकती हो, हमारे लिए वही स्थिति इष्ट है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ८९८८)की फोटो-नकलसे।

१. २४-७-१९३०के यंग इंडियामें प्रकाशित मीराबहनकी एक टिप्पणीके अनुसार वह शुक्रवारको चरखा लेकर गांधीजीसे मिलने गई थीं। उस दिन तारीख १८ जुलाई थी। देखिए "पत्र : मीराबहनको", २०-७-१९३० भी।

२. बापूज लेटर्स टु मीरा, पृष्ठ १०१ में इस पत्रके साथ मीराबहनकी निम्नलिखित टिप्पणी भी दी हुई है : "मैंने बिहारके नमूनेपर एक चरखा तैयार किया था और उसे लेकर यरवडा जेल गई थी क्योंकि मैं जानती थी कि यदि मैं उसे जोड़नेका तरीका खुद समझाऊँगी नहीं तो बापूके लिए वैसा करना मुश्किल होगा। लेकिन ऐसा सम्भव नहीं हुआ और बापूने मुझे सुपरिंटेंडेंटके कमरेमें यह पत्र भेजा।"

४१. पत्र : नारणदास गांधीको

यरवडा मन्दिर
१८ जुलाई, १९३०

चि० नारणदास,

इस सप्ताहके प्रेमपत्रोंका पुलिंदा कल शामको मिला। और पत्रोंका जवाब तो मौनवारको ही लिखूंगा। यह तो इसलिए लिख रहा हूँ कि पत्रोंको या तो कपड़ेके लिफाफेमें डाला करो या उसके चारों ओर मजबूत डोरी बांधो। सब पत्र निकल कर गिरनेकी हालतमें थे। रुई १६ तारीखको मिली।

बापूके आशीर्वाद

चि० नारणदास गांधी
सत्याग्रह आश्रम
साबरमती
बी० बी० [ऐंड] सी० आई० रेलवे

गुजराती (एम० एम० यू०/१)की माइक्रोफिल्मसे।

४२. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
१८ जुलाई, १९३०

चि० प्रभावती,

अनेक सप्ताह बाद मुझे तेरा पत्र मिला, निश्चिन्त हुआ।

मेरी तबीयत अच्छी है। वजन १०३-४ तक रहता है। भोजनमें दूध, दही, मुनक्का, खजूर और खट्टा नीबू है। मेरी चिन्ता न करना। मैं रोज ३७५ तार कातता हूँ। सीना भी सीख लिया है। काकासाहब साथ हैं।

तू जो लिखना चाहे सो लिखना।

पिताजी गाँव-गाँव जाते हैं क्या?

जयप्रकाशको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३६५) की फोटो-नकलसे।

४३. पत्र: शिवाभाईको

यरवडा मन्दिर
१९ जुलाई, १९३०

चि० शिवाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। भगवानका यह निरपवाद वचन है कि जो जिसे भजता है वह उसे प्राप्त होता है। हम निर्विकार और पूर्ण त्यागमय सेवाभाव पानेकी कामना करते हैं। इसलिए यदि यह भावना हमारे मनमें जाग्रत नहीं होती तो भगवानका वचन मिथ्या हो जाता है; या फिर हमारी भावना ही सच्ची नहीं होगी। अतः हम तो श्रद्धापूर्वक अपनी साधनामें तन्मय रहें।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९४९९) की फोटो-नकलसे।

४४. पत्र: दूधीबहन देसाईको

१९ जुलाई, १९३०

चि० दूधीबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। अब तुम आश्रम पहुँच गई होगी। क्या तुम वालजीसे मिलती हो? उनकी तबीयत कैसी रहती है? अब जब मिलो तो उनसे कहना कि मुझे उनकी बहुत याद आती है। अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना।

हरिइच्छा तथा अन्य लोग क्या कर रहे हैं?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७४०४) की फोटो-नकलसे। सौजन्य: वा० गो० देसाई

४५. पत्र : अमीना कुरेशीको

यरवडा मन्दिर
१९ जुलाई, १९३०

चि० अमीना,

तेरा पत्र मिला। अब्बा और कुरेशी जेलमें हैं। तू भी वहाँ जाना चाहती है; किन्तु तू आश्रममें है, अत: यही समझ कि तू भी इस लड़ाईमें शामिल है। खुदा हमें जहाँ और जिस हालतमें रखे हम उसीमें सन्तोष मानें, इसमें बहुत-कुछ आ जाता है। तुझे उर्दूकी अपनी पढ़ाई नहीं छोड़नी चाहिए। गिरिराजजी तुझे सिखा सकेंगे। अब्बा या कुरेशी, जिनसे भी तू मिले उनसे कहना कि मैं किसीको भूल नहीं सकता।

बापूकी दुआ

गुजराती (जी० एन० ६६५७) की फोटो-नकलसे।

४६. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
१९ जुलाई, १९३०

चि० गंगाबहन (बड़ी),

तुम्हारा पत्र मिला। काकूको ठीक अनुभव हो रहा है। रमीबाईको पत्र लिखना और मुझे लिखनेको भी कहना। उसे और कामदार[1] को अक्सर याद करता हूँ।

शंकरलालसे तुमने ठीक ही कहा। अन्त्यज आयें तो हम उन्हें अवश्य लें।

फल लेनेमें कंजूसी करके स्वास्थ्य न बिगाड़ लेना।

काकासाहब की खुराक तो तुमने देखी होगी। उसमें किसी तरहके फेरफारका सुझाव देना हो तो लिखना। उनका स्वास्थ्य तो अच्छा ही रहता है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ६ : गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७५३ से भी। सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

१. रमीबाईके पति।

४७. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
१९ जुलाई, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा विनोदपूर्ण और समाचारोंसे भरा हुआ पत्र मिला। ऐसे ही लिखती रहना। मुझे उम्मीद है मैं यहाँ बीमार नहीं ही होऊँगा। मुझे कुछ हो गया है, यह मानकर कठिन समयमें मेरी सहायता करनेवाली प्रेमा और वसुमतीको कहाँसे लाऊँगा? मेरा वजन कम हो जानेकी बातको गलत समझना। मेरी तबीयत निस्सन्देह अच्छी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६७४) से। सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२२६ की फोटो-नकलसे भी।

४८. पत्र : लालजी परमारको

यरवडा मन्दिर
१९ जुलाई, १९३०

चि० लालजी,

मैं और काकासाहब तेरा लम्बा पत्र पढ़कर प्रसन्न हुए। भविष्यमें स्याहीसे लिखना। खूब मेहनत करना। सत्य तथा अपनी मर्यादा कभी मत छोड़ना। तुझे खुद तो सुबह ठीक चार बजे उठनेकी आदत बना लेनी चाहिए। इसका पूरा लाभ तू भविष्यमें समझ सकेगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मामासाहब से मुझे पत्र लिखनेको कहना।

गुजराती (जी० एन० ३२९४) की फोटो-नकलसे।

४९. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

यरवडा मन्दिर
१९ जुलाई, १९३०

चि० मथुरादास,

हम दोनों तुम्हारा पारिभाषिक कोष पढ़ गये। मैं एक सशोधन सुझाना चाहता हूँ। बैठकमें पींजनको पालथीके दायी ओर रखना ही काफी नही है। दायें पैरके पंजेको बायें पैरके बीच तक ले लेना जरूरी है, नही तो पैर ताँत या मुठियासे टकरायेगा। इस बारेमें विचार करना। यदि हो सका तो अन्य व्याख्याके सम्बन्धमें भी विचार करूँगा। परिपूर्णता तक पहुँचनेका तुम्हारा उत्साह मुझे बहुत रुचता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७४०)की फोटो-नकलसे।

५०. पत्र : रमाबहन जोशीको

यरवडा मन्दिर
१९ जुलाई, १९३०

चि० रमा,

तुम्हारा पत्र मिला। सुन्दर है। तुमने अपने ऊपर बहुत बडी जिम्मेदारी ली है। लेकिन मैं जानता हूँ कि यह तुम्हारी शक्तिके बाहर नही है। और हम वह श्लोक भी तो जानते हैं जिसमें कहा गया है कि जो अनन्य भावसे भगवानका चिन्तन करते हैं उनके कुशलक्षेमकी चिन्ता भी वही करता है।[1] फिर हमें किस बातकी चिन्ता? वहाँ तुम्हें प्रार्थनाका समय बदलना पड़ा है, सो ठीक ही है। सब बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५३२२)की फोटो-नकलसे।

१. भगवद्गीता, ९, २२।

५१. पत्र : मीराबहनको

२० जुलाई, १९३०

दुबारा नहीं पढ़ा

चि० मीरा,

तुमसे मिलनेसे इनकार करते हुए मुझे कष्ट हुआ था।[1] लेकिन मैंने ठीक किया था, इसका प्रमाण अगले दिन सुबह मिला। सरकारने मेरा प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया है और इसलिए अब मुलाकातें नही हो सकती। अपने दृष्टिकोण पर आग्रह करना मेरे लिए अशोभनीय होगा। उन्हें, जैसाकि दुनिया भरमें अभी सौ साल पहले या उसके काफी बाद तक किया जाता था, कैदियोको हर सुविधासे वचित करनेका अधिकार है। पत्रोके आदान-प्रदानकी अनुमति है, यही काफी है। लेकिन तुम मानोगी कि यह भी अनिश्चित ही है। किसी भी क्षण वे पत्र-व्यवहार रोक सकते है या ऐसी शर्ते लगा सकते है जो स्वीकार्य न हो। आत्म-त्यागसे हमारा तो लाभ ही हो सकता है। इसलिए मुलाकातें बन्द होनेसे किसी प्रकारका क्षोभ होनेकी जरूरत नही है। आत्माका आत्मासे मिलन हो, यह ज्यादा अच्छा है। इस सुखद सम्पर्कको पृथ्वीकी कोई शक्ति नही रोक सकती।

अब तुम जो उपहार छोड गई हो, उसकी बात। इसमें छोटीसे-छोटी चीजके मामलेमें भी जो असाधारण सावधानी बरती गई है, वह मैंने देखी। मैंने नये चरखेका इस्तेमाल तुरन्त ही शुरू कर दिया था। इसलिए आज उसके इस्तेमालका दूसरा दिन था। आज रविवार है, मौन आरम्भ कर चुका हूँ। यह प्रेम गहरा तो है, लेकिन जितना बुद्धिमत्तापूर्ण होना चाहिए उतना नही है। तुम्हारे चरखेसे परिश्रम कम नही हुआ है। जैसाकि मैंने मथुरादासको बताया, यह श्रम लगभग एक ही आसनमें पाँच घटे तक बैठनेमें है। यदि मैं घटोंमें कमी करके उतना ही उत्पादन कर सकूँ तो वह दूसरी बात होगी। यह चीज नये चरखेसे सम्भव नही लगती। नये चरखेको चलानेमें बायें हाथ पर मेहनत पड़ती है क्योंकि इसे चलाते समय हाथको दूर ले जाना पडता है और उठाना भी पड़ता है। इसके विपरीत पेटी चरखेमें हाथ सम स्तर पर रहता है और शरीरकी ओर आता है। इसके सिवा, जबतक मैं न चाहूँ तवतक तुम्हें ऐसी चीजों पर अपना समय और कुशल कारीगरोंका समय नही लगाना चाहिए। मुझे इतना सक्षम तो होने ही देना चाहिए कि मैं अपनी देखभाल कर सकूँ और अपनी जरूरतें बता सकूँ। तीसरे, पेटी चरखे पर मैं जितना बारीक सूत निकाल सकता हूँ उतना इसपर अभी नही निकाल सका हूँ। परिणाम है ५० अधिक पूनियोका इस्तेमाल — यह राष्ट्रीय अपव्यय है। तथापि आलोचना बहुत हो चुकी। इतने प्रेममें

१. देखिए "पत्र : मीराबहनको", १८-७-१९३०।

पगी चीजको मै यों ही नही छोड़नेवाला हूँ। इसलिए मैं इस चरखेका उपयोग जारी रखूँगा और समय-समय पर तुम्हें सूचित करूँगा। तुम होल्डर और धुरीमें किस तेलका प्रयोग करती हो? मालमें तुम कितने-कितने दिनमें राल लगाती हो?

तकलियाँ चला कर मैंने देखी है। ये उतनी अच्छी नही है जितनी कि यहाँ बनाई हुई मेरी तकली है। चकरियाँ बहुत बड़ी है और बाँस पर अच्छी पालिश नहीं है। तकलीके छड़की मोटाई और चकरीकी परिधिके बीच एक निश्चित अनुपात दिखाई पड़ता है। यदि वजनकी कमी हो तो इसकी कमी चकरीको मोटा बनाकर पूरी की जानी चाहिए। अगली बार जब तुम तकली बनाना तो इन बातोंको ध्यानमें रखना और अपनी राय मुझे लिखना।

मेरे स्वास्थ्यके बारेमें बतानेको नया कुछ नही है। वजन स्थिर है।

दौरेमें अपने शरीरके साथ मनमानी मत करना।

भजनोके अनुवादमें मै और अधिक समय लगा रहा हूँ। मैंने अब सस्कृत श्लोकोंका अनुवाद खत्म कर दिया है और भजनोका कर रहा हूँ।

हरिप्रसादको मेरा प्यार कहना।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४०३) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६३७से भी।

५२. पत्र : पैट्रिक क्विनको[1]

२० जुलाई, १९३०

प्रिय श्री क्विन,

संलग्न पोस्टकार्ड, आप देखेंगे, प्राप्ति-सूचना मात्र है। क्या आप इसे डाकमें डलवा देंगे? क्या आपने सेचक मँगवानेके लिए आर्डर दे दिया था?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

महात्मा गांधी : सोर्स मैटीरियल फॉर ए हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, खण्ड ३, भाग ३, पृष्ठ २८४

१. यरवदा सेंट्रल जेलके सुपरिंटेंडेंट।

५३. पत्र : पैट्रिक क्विनको

[२० जुलाई, १९३०][1]

प्रिय श्री क्विन,

क्या आप कृपया २ पौंड खजूर और २ पौंड किशमिश मँगवा देंगे?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

महात्मा गांधी : सोर्स मेटीरियल फॉर ए हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, खण्ड ३, भाग ३, पृष्ठ २८५

५४. पत्र : रतिलाल शाहको

२० जुलाई, १९३०

भाईश्री ५ रतिलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। घटना दुःखद है किन्तु यह सिलसिला तो चलता ही रहता है। मैं तो इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि हमने अकारण ही मृत्युको दुःखका विषय मान लिया है। जिस प्रकार अन्य प्राकृतिक क्रियाएँ आवश्यक और लाभदायक है वैसी ही यह क्रिया भी है। अतः आत्माके अस्तित्व या उसके गुणोको स्वीकार न करनेवालेके लिए भी मृत्युसे डरनेका कोई कारण नही है। और जो व्यक्ति आत्मा और उसकी अमरतामें विश्वास रखता है, उसके बारेमें तो कहना ही क्या? बहन जबकने जिस देहका उपयोग पूरा हो चुका था उसका त्याग किया इसलिए हमें इसे दुःखद बात नही माननी चाहिए।

पढने और मनन करने लायक बहुत पुस्तकें दुनियामें मुझे नही मिली। मेरे लिए 'गीता' और तुलसीदास ही काफी है और आधुनिक लेखकोमें रायचन्दभाई के लेख। किन्तु यदि कोई नई चीज पढनेकी इच्छा हो तो किशोरलालका 'जीवन-शोधन' देख जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४६५८) से। सौजन्य : नारणदास गाधी, जी० एन० ७१६४ की फोटो-नकलसे से भी।

1. साधन-सूत्रमें इस पत्रको जिस क्रममें रखा गया है, उस परसे इसकी तिथि निर्धारित की गई है।

५५. पत्र : पुरुषोत्तम डी० सरैयाको

यरवडा मन्दिर
२० जुलाई, १९३०

चि० काकू,

तूने कहीं पत्र न लिखनेकी प्रतिज्ञा तो नहीं ले ली? या मेरे पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा है। तू खूब बच निकला। किन्तु शायद भगवान तुझसे और भी अच्छा काम लेना चाहता होगा। यदि हम तत्परायण रहे तो समझना चाहिए कि हमने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। तू मुझे लिखेगा तो मुझे और काकासाहब दोनोंको प्रसन्नता होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २८०५) से। सौजन्य : पी० डी० सरैया

५६. पत्र : रामेश्वरदास पोद्दारको

यरवडा मन्दिर
२० जुलाई, १९३०

भाई रामेश्वरदास,

हम दोनोंके नाम लिखा आपका पत्र मिला। आप यथाशक्ति सेवा करते जा रहे हैं, बस इतना ही पर्याप्त है। उससे और अधिक शक्ति उत्पन्न होगी। यदि रामनामको कण्ठसे हृदयमें उतार लें तो असन्तोष मिट जायेगा।

बापू तथा काकाके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २१७) की फोटो-नकलसे।

५७. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

यरवडा मन्दिर
२१ जुलाई, १९३०

प्रिय कुमारप्पा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे भाई जब लौटें तो उन्हें पहले विद्यापीठ आकर सब-कुछ खुद देख-समझ लेना चाहिए। उसके बाद वह निर्णय लेनेको स्वतन्त्र हैं, लेकिन उससे पहले नहीं। उनके बारेमें कराड़ीसे भेजा गया मेरा पत्र तुम्हें मिल गया था कि नहीं? जब वह आयें तो उनसे मेरा प्यार कहना। और अपनी बहनको पत्र लिखो तो उन्हें मेरी याद दिला देना।

'थोडसो' शब्द 'दोढसो' का तमिलमें विकृत रूप है।

हम दोनोंकी ओरसे प्यार सहित,

तुम्हारा,
बापू

[पुनश्च :]

हाँ, तुम्हारी पुस्तक यथासमय मिल गई थी। धन्यवाद।

अंग्रेजी (जी० एन० १००८७) की फोटो-नकलसे।

५८. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२१ जुलाई, १९३०

चि० मनु (त्रिवेदी),

मगनभाईने तेरे बारेमें पूरे समाचार दिये हैं, जिसे पढ़कर हम दोनोंको प्रसन्नता हुई। भगवान तुझे स्वस्थ रखे और तेरे सेवाभावमें दिन-दिन वृद्धि करे। मैं यह बात भूला नहीं हूँ कि तू मेरे लिए ताजे अंगूर लाया करता था। जब पिताजीको पत्र लिखे तो उन्हें लिखना कि उनके बहुतसे मधुर संस्मरण मेरी स्मृतिमें हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७५८) की फोटो-नकलसे।

५९. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
२१ जुलाई, १९३०

चि० भगिनी,

तुमारे दो खत एक साथमें मिले है।

कई भक्तोकी परीक्षा बहौत कडी रहती है। तुमारी परीक्षा भगवान ऐसे हि ले रहा है। परंतु साथ साथ सहन करनेका बल भी देता है यह उसकी कृपा है। अब अरूण[1] कैसे है? तारीणी और चारूकी प्रकृतिमें कुछ अच्छा मालुम होता है क्या? सोदपुरमें कितने आदमी काम करते हैं। ईश्वरका इतना अनुग्रह है कि क्षितिशबाबु[2] तुमारे साथ है और ईश्वरने उनको शरीर अच्छा दिया है मन दृढ बनाया है। दाक्तर रॉयका भी तो सहारा है हि। दोनोको मेरे वंदेमातरम दे दो।

सतीशबाबुको खानेमें दूध इ० मिलता है? सोने बैठनेका सुभिता है? सब हाल लिखो।

ईश्वर तुम्हें आरोग्य, शांति, और धैर्य देवे।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६६८ की फोटो-नकलसे।

६०. तार : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको[3]

[यरवडा सेंट्रल जेल
२२ जुलाई, १९३०][4]

तारके लिए धन्यवाद। आश्वस्त रहिए, मैं भरसक कोशिश करूँगा। 'प्रकाश' की प्रार्थना कर रहा हूँ। सप्रेम।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे सीक्रेट एब्सट्रैक्ट्स, ७५० (५६), पृष्ठ २१

१. हेमप्रभा दासगुप्तका सबसे छोटा और एकमात्र जीवित बालक।

२. सतीशचन्द्र दासगुप्तके छोटे भाई।

३. श्रीनिवास शास्त्रीने गांधीजीको तार देकर अनुरोध किया था कि वह सप्रू और जयकरके प्रस्तावोंपर सहानुभूतिके साथ विचार करें।

४. गांधीजीको भेजे गये उक्त तारके ठीक नीचे दी गई एक टिप्पणीके अनुसार इस तारके साथ भेजे गये मेजर डॉयलके पत्रपर २२ जुलाई, १९३० तारीख थी; देखिए अगला शीर्षक भी।

६१. पत्र : जी० ए० नटेसनको

यरवडा सेंट्रल जेल
२२ जुलाई, १९३०

प्रिय मित्र,

मुझे आपका पत्र और उसके साथ सलग्न कागजात दे दिये गये हैं। धन्यवाद। आप विश्वास रखें कि मैं भरसक जो हो सकेगा करूँगा। मुझे शास्त्रियरका एक तार मिला था। मैं प्रकाशकी प्रार्थना कर रहा हूँ लेकिन इस अभेद्य अधकारमें एक किरण भी नही दिखाई पडती।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत जी० ए० नटेसन
'इंडियन रिव्यू'
जॉर्ज टाउन
मद्रास

अंग्रेजी (जी० एन० २२३६) की फोटो-नकलसे।

६२. पत्र : नारणदास गांधीको

१८/२२ जुलाई, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा पुलिंदा कल मिला। इतने पत्र हलके लिफाफेमें नही आ सकते। सारा लिफाफा फट गया था। तुम या तो कपड़ेका लिफाफा इस्तेमाल करो या पत्र टिकटो के लिहाजसे चौड़ा हो तो भी चारो ओर डोरीसे अच्छी तरह बाँध दो ताकि पत्र डोरीको तोडे बिना निकले ही नही।

रुई आखिर १६ तारीखको मिली। किन्तु कोई कठिनाई नही हुई।

प्रभुदास और मुन्नालालके पत्रमें प्रार्थनाके शुष्क होनेका उल्लेख है। क्या बालकृष्ण भजन नही गाता? 'गीता' या किसी दूसरे विषयपर तुममें से कोई कुछ नही कह सकता? बालकृष्ण निश्चय करे तो कर सकता है। अनिवार्य हो तो सिर्फ संस्कृत श्लोकोंका पाठ करके ही काम चलायें। किन्तु सम्भव हो तो और कुछ शुरू तो करना ही चाहिए; या गुजरातीसे ही कुछ पढ़ा जाये। पहले प्रभुदास और मुन्नालालके साथ

चर्चा करना, बालकृष्णसे बात करके जो ठीक लगे वह करना। मै मानता हूँ कि तुम्हारे पास इसका विचार करनेका तनिक भी समय नही है। ऐसा होते हुए भी सुझाव दे देता हूँ। जो सम्भव हो वह करना।

भरवाड़ लोगोंको अपनानेका प्रयत्न करना चाहिए।

१९ जुलाई, १९३०

इस पत्रका अधिकाश हमारे सारे समाजके लिए होता है इसलिए इसकी बातें अलग पत्रोंमे नही देता। ऐसी एक बात काकासाहब का आशीर्वाद है। सभी पत्रोमें वह है, ऐसा सभी लोग समझें। काकासाहब को सबका प्रणाम तो पहुँचता ही है क्योकि वे सब पत्र पढ़ते है और सब पत्रोमे उनका नाम जरूर होता है। यह देख कर कि हमारे समाजमें विनय है और उसका अनुभव करके हम दोनो आनन्दित होते हैं।

दैनन्दिनीका विचार करने पर देखता हूँ कि मेरे लिए तो वह एक अमूल्य वस्तु बन गई है। जो सत्यकी आराधना करता है उसके लिए वह चौकीदार सिद्ध होती है, क्योकि उसमे सत्य ही लिखना है। आलस किया हो तो उसका उल्लेख किये बिना छुटकारा नही। काम कम किया हो तो वह लिखे बिना छुटकारा नही। इस तरह वह अनेक प्रकारसे सहायक बन गई है। इससे सब उसकी कीमत समझें, यह आवश्यक है। नियमित रूपसे उसे लिखना शुरू करने पर हमें अपने-आप सूझता है कि उसे किस तरह लिखें। एक शर्त जरूर है कि हमें सच्चा बनना है। यदि ऐसा न हो तो दैनन्दिनी खोटे सिक्केकी तरह हो जाती है। यदि उसमें सत्य ही लिखा हो तो वह सोनेकी मुहरसे भी कीमती है।

६० नम्बरका पत्र श्रीमती जोलिगर[1] का है, उसे पढ लेना। उस बहनको क्या परेशानी है, यह मालूम करना।

तुम्हें पत्रोंकी सूची बनानी पड़ती है। देखता हूँ उसमें तकलीफ तो है ही। यदि उसमें बहुत समय लगता हो तो छोड़ देना। सिर्फ संख्या दे देना ही काफी है। आसानीसे सूची बन सके तो बना देना।

मुलाकातोंके लिए अभी तो मनाही ही करनी है। इसका कारण मीराबहनको लिखे पत्रमें देखोगे। यहाँ दुबारा नही लिखता। पत्र भी न लिख सकें तो कैसे चले? आत्म-सम्मानकी रक्षा करते हुए न लिख सकें तो वह भी छोड़ दें। भक्तिका पथ कठिन है, पर हमारे सामने तो दूसरा मार्ग है ही नही।

पत्रोंकी संख्या बढ़ रही है, उसकी चिन्ता नही। जो लिखना चाहे उसे अपनी इच्छानुसार लिखने देना। जेलके नियमोंकी मर्यादाका पालन हो, इतना ही काफी है। राजनैतिक प्रश्नोंकी चर्चा न हो, मुझसे उस बारेमें कुछ न पूछें। सबको खबर देनेमें न हानि है, न होगी।

डा० हरिभाईको कहना कि उनको कई बार याद करता हूँ। डा० कानूगा अब बिल्कुल ठीक हो गये होंगे?

१. आश्रममें रहनेवाली स्विटजरलैंडकी एक महिला।

२२ जुलाई, १९३०
सुबहकी प्रार्थनाके बाद

विश्वनाथके पत्रमें सुझाव है कि मुझे हर सप्ताह थोड़ासा प्रवचन प्रार्थनाके समय पढ़ा जानेके लिए भेजना चाहिए। विचार करनेपर मुझे उसकी यह माँग उचित लगी है। प्रार्थनाके समय थोड़ी और चेतनता डाल देनेमें यह मेरा योगदान मानना। दूसरे छः दिनोंके लिए भी पढ़ने लायक कुछ भेजा जा सकता हो तो भेजनेकी योजना काकाके साथ बना रहा हूँ। यह तो इस सप्ताहके लिए है।[1]

हमारी संस्थाके मूलमें सत्यका आग्रह है इसलिए पहले सत्यको ही लेता हूँ।

'सत्य' शब्द सत्से बना है। सत् अर्थात् होना। सत्य अर्थात् अस्तित्व। सत्यके सिवा दूसरी किसी चीजकी हस्ती ही नहीं। परमेश्वरका सच्चा नाम ही 'सत्' अर्थात् 'सत्य' है। इसलिए ईश्वर 'सत्य' है, ऐसा कहनेके बदले 'सत्य' ही ईश्वर है, यह कहना ज्यादा योग्य है। राजकर्त्ताके बिना या सरदारके बिना हमारा काम चलता नहीं, इसलिए ईश्वर नाम ज्यादा प्रचलित है और रहेगा। किन्तु विचार करके देखें तो 'सत्' या 'सत्य' यही ठीक नाम है और यही पूर्ण अर्थका सूचक है।

और जहाँ सत्य है वहाँ ज्ञान, शुद्ध ज्ञान है ही। जहाँ सत्य नहीं, वहाँ शुद्ध ज्ञान सम्भव नहीं। इसलिए ही ईश्वरके नामके साथ चित् अर्थात् ज्ञान शब्द जोड़ा है। और जहाँ सच्चा ज्ञान है वहाँ आनन्द ही होगा। शोक हो ही नहीं सकता। और सत्य शाश्वत है तो आनन्द भी शाश्वत होगा। इसीसे हम ईश्वरको सच्चिदानन्द (सत्-चित्-आनन्द) के नामसे भी पहचानते हैं।

हमारा अस्तित्व ही सत्यकी आराधनाके लिए है। हमारे प्रत्येक कामका वही कारण हो, हमारे प्रत्येक साँस लेनेका वही कारण हो, ऐसा करना सीख ले, तो दूसरे सभी नियम आसानीसे हमारे हाथ आ जायें और उनका पालन भी आसान हो जाये। सत्यके बिना किसी भी नियमका शुद्ध पालन असम्भव है।

सामान्य तौर पर सत्य अर्थात् सत्य बोलना इतना ही हम समझते हैं। किन्तु हमने सत्य शब्दका विस्तृत अर्थ लिया है। सत्य वही है जिसका पालन विचार, वाणी और आचारमें करें। इस सत्यको सम्पूर्ण रूपमें समझ लेनेवालेके लिए संसारमें और कुछ जाननेके लिए नहीं रहता, क्योंकि हमने ऊपर देखा है कि ज्ञानमात्र उसमें समाया हुआ है। उसमें जो नहीं समाता वह सत्य नहीं, ज्ञान नहीं, फिर उसमें सच्चा आनन्द हो भी कहाँसे? इस कसौटी पर परखना सीख ले तो हमें फौरन मालूम पड जायेगा कि कौन-सी प्रवृत्ति ग्रहण करने योग्य है और कौन-सी त्याज्य। क्या देखने योग्य है, क्या नहीं? क्या पढने लायक है, क्या नहीं?

किन्तु सत्य जो पारसमणि-जैसा है, जो कामधेनु-जैसा है, वह कैसे मिले? उसका जवाब भगवानने दिया है: अभ्यास और वैराग्यसे। सत्यकी ही लगन, यही अभ्यास

१. इन प्रवचनोंका अनुवाद गांधीजी द्वारा पुनः सम्पादित नवजीवन प्रकाशनकी पुस्तिका **मंगल-प्रभातसे** लिया गया है।

है। उसके बिना दूसरी सभी चीजोंके प्रति अतीव उदासीनता, यही वैराग्य है। ऐसा होते हुए भी हम देखते हैं कि जो एकके लिए सत्य है वही दूसरेके लिए असत्य है। उससे घबरानेका कोई कारण नहीं है। जहाँ शुद्ध प्रयत्न है वहाँ विभिन्न दिखाई देनेवाले सभी सत्य एक ही वृक्षके अलग-अलग दिखनेवाले असंख्य पत्तोंके समान हैं। ईश्वर भी क्या प्रत्येक मनुष्यको भिन्न नहीं दिखाई देता? तो भी वह एक ही है, यह हम जानते हैं। किन्तु सत्य ईश्वरका ही नाम है, इसलिए जिसे जो सत्य लगे उसीके अनुसार वह व्यवहार करे तो उसमें दोष नहीं है। इतना ही नहीं, बल्कि यही कर्त्तव्य है। फिर ऐसा करते हुए भूल हो तो वह भी सुधर ही जायेगी, क्योंकि सत्यकी शोधके पीछे तपश्चर्या होगी। इसलिए स्वयं दुख-सहन करना होगा; उसके लिए प्राण देने होंगे। इसलिए उसमें स्वार्थकी तो गन्ध भी न होगी। ऐसी निःस्वार्थ शोध करते हुए आज तक कोई अन्त तक उल्टे मार्ग पर नहीं गया। उल्टे मार्ग गया कि ठोकर लगी। इसलिए वह फिर सीधे मार्गकी ओर बढ़ जाता है। इसीलिए सत्यकी आराधना ही भक्ति है। और भक्ति "सिरका सौदा" है; वह तो हरिका मार्ग है और उसमें कायरताका स्थान नहीं, उसमें हारने जैसी कोई बात ही नहीं। वह तो मरकर जीनेका मन्त्र है।

किन्तु अब हम अहिंसाके किनारे आ पहुँचे हैं। इसका विचार अगले सप्ताह करेंगे।

इस मौके पर हरिश्चन्द्र, प्रह्लाद, रामचन्द्र, इमाम हसन और हुसैन, ईसाई सन्तों आदिके दृष्टान्तों पर विचार करना चाहिए। अगले सप्ताह तक सभी बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष उठते-बैठते, खाते-पीते, खेलते और सभी काम करते इसे रटते रहें और रटते-रटते निर्दोष नींद ले पायें तो कितना अच्छा हो।

यह सत्य-रूपी ईश्वर मेरे लिए रत्न चिन्तामणि सिद्ध हुआ है। हम सबके लिए ऐसा ही हो।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

पत्र ६६ हैं। यदि सभी पत्र देनेसे पहले नहीं पढ़े तो अबसे पहले पढ़कर देना। इनमें कई लोगोंके बारेमें सुझाव हैं।

गुजराती (एम० एम० यू० १)की माइक्रोफिल्मसे।

६३. ज्ञापिका: मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरूको[1]

यरवडा सेंट्रल जेल
२३ जुलाई, १९३०

संवैधानिक प्रश्न[2]

१ जहाँतक इस प्रश्नका सम्बन्ध है, मेरी व्यक्तिगत स्थिति यह है कि यदि गोलमेज सम्मेलनमें सक्रमणकालके दौरान पूर्ण स्व-शासनके सिलसिलेमें [अमुक हितोकी रक्षाके लिए] जो पूर्वोपाय आवश्यक हों, केवल उन्ही पर विचार किया जाये, और यदि कोई स्वतन्त्रताका प्रश्न उसमें उठाये तो उसपर भी विचार किया जाये, तो मुझे सम्मेलन पर कोई आपत्ति नही है। सम्मेलनमें कांग्रेसके शामिल होनेकी बातका समर्थन मै तभी करूँगा जब सम्मेलनके गठनके बारेमें मुझे तसल्ली हो जायेगी।

सविनय अवज्ञा और उसकी समाप्ति[3]

२. यदि कांग्रेस गोलमेज सम्मेलनके बारेमें सन्तुष्ट हो जाती है तो स्वाभाविक है कि सविनय अवज्ञा, अर्थात् केवल अवज्ञाके लिए कतिपय कानूनोकी अवज्ञाका आन्दोलन, खत्म करना होगा। लेकिन यदि सरकार स्वय शराब और विदेशी कपडे पर निषेध नही लगवा सकती तो विदेशी कपडे और शराबके खिलाफ शान्तिपूर्ण धरना जारी रखा जायेगा। लेकिन जनता द्वारा नमक-निर्माण जारी रखना होगा और नमक अधिनियमकी दण्डात्मक धाराएँ लागू नही की जानी चाहिए। नमकके सरकारी या निजी भण्डारो पर धावे नही किये जायेंगे। यदि इस धाराको एक धारा का रूप न दिया जाये लेकिन लिखित रूपमे उसे एक आपसी समझौतेकी तरह स्वीकार कर लिया जाये तो भी मै सहमत हो जाऊँगा।

३ (क) सविनय अवज्ञा आन्दोलन समाप्त करनेके साथ ही उन सभी सत्या-ग्रही कैदियो और अन्य राजनीतिक कैदियो या अभियुक्तोको जो हिंसा करने या हिंसा भडकानेके अपराधी नही है, छोडनेका आदेश जारी किया जाये, और

(ख) नमक अधिनियम, प्रेस अधिनियम और राजस्व अधिनियम आदिके अन्त-र्गत जब्त की गई सम्पत्तियाँ वापस कर दी जानी चाहिए, और

१. सामान्य स्थिति स्थापित करने और "वर्तमान स्थितिको बातचीतके जरिये" सुधारनेकी दृष्टिसे सर तेज बहादुर सप्रू और श्री मु० रा० जयकरने १३ जुलाईको वाइसरायको पत्र लिख कर यरवडा जेलमें गांधीजीसे और नैनी जेलमें मोतीलाल नेहरू और जवाहरलाल नेहरूसे मुलाकात करनेकी अनुमति माँगी थी। २३ और २४ जुलाईको उन्होंने गांधीजीसे भेंटकी। गाधीजीने उन्हें यह पत्र मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरूको देनेके लिए दिया था।

२ और ३. ये उप-शीर्षक एस० एन० १९९७६ में गांधीजीके स्वाक्षरोंमें दिये हुए है।

(ग) दण्डित सत्याग्रहियोसे या प्रेस अधिनियमके अन्तर्गत लिये गये जुर्माने और जमानतें वापस कर दी जायें।

(घ) ग्राम-अधिकारियों सहित ऐसे सभी सरकारी अधिकारियोको जिन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलनके दौरान स्वयं इस्तीफा दे दिया था या जिन्हें बर्खास्त कर दिया था, और जो सरकारी नौकरीमें फिर आना चाहें, बहाल कर दिया जाना चाहिए।

टिप्पणी : पूर्वोक्त बात असहयोग आन्दोलनकी अवधि पर भी लागू होगी।

(ङ) वाइसराय द्वारा जारी किये गये अध्यादेश रद कर दिये जाने चाहिए।[1]

मेरी यह राय बिलकुल अस्थायी है क्योंकि मेरी रायमे किसी कैदीको उन राजनीतिक गतिविधियोंके ऊपर राय देनेका कोई अधिकार नही है जिनके बारेमें वह अन्य लोगोके साथ सम्पर्क न रख पानेके कारण पूरी तरह कुछ नही जानता। इसलिए मुझे लगता है कि मेरी रायका उतना वजन नही माना जा सकता जितना कि मेरी निगाहमें तब होता जब मैं आन्दोलनके सम्पर्कमें रहता।

श्री जयकर और डा० सप्रू इसे पण्डित मोतीलाल नेहरू, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, श्री वल्लभभाई पटेल तथा उन लोगोंको दिखा सकते है जिनके हाथमें आन्दोलनकी बागडोर है। प्रेसमें कुछ नही छपना चाहिए।

इसे इस अवस्थामें वाइसरायको नही दिखाया जाना चाहिए।

उपरोक्त शर्तें स्वीकार कर ली जायें तो भी मै सम्मेलनमे तबतक भाग नही लूँगा जबतक कि, जेलसे छूट जानेकी स्थितिमें, मुझमें आत्म-विश्वास नही पैदा हो जाता, जोकि इस समय मेरे अन्दर नही है, और जबतक कि सम्मेलनमें बुलाये जानेवाले भारतीयोके बीच प्रारम्भिक बातचीत नही हो जाती और न्यूनतम माँगोके बारेमें ऐसा समझौता नही हो जाता जिस पर वे सभी आग्रहपूर्वक डटे रहेंगे।

मैं यह अधिकार अपने पास रखता हूँ कि अवसर आनेपर मैं प्रत्येक स्वराज्य-योजनाको कसौटी पर रखकर देखूँ कि वे उस उद्देश्यको पूरा करते है या नही जो वाइसरायको लिखे गये मेरे पत्रमें उल्लिखित ग्यारह सूत्रो[2]का आधार है।[3]

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधी-सप्रू करेस्पांडेंस। सौजन्य : पी० एन० सप्रू; एस० एन० १९९७६ से भी।

१. इन धाराओंको "पत्र: सप्रू और जयकरको", १५-८-१९३० में शामिल कर लिया गया था।

२. देखिए खण्ड ४२, पृष्ठ ४४७-५०।

३. इस पत्रको मोतीलालजीके नाम लिखे गये एक पत्र (देखिए अगला शीर्षक) के साथ सप्रू और जयकरको दे दिया गया था।

६४. पत्र : मोतीलाल नेहरूको

यरवडा मन्दिर
२३ जुलाई, १९३०

प्रिय मोतीलालजी,

मेरी स्थिति मूलतः अटपटी है। जैसाकि मेरा स्वभाव है, मै जेलकी दीवारोके उस पार होनेवाली घटनाओके ऊपर कोई निश्चित मत नही दे सकता। इसलिए मैंने अपने मित्रोको जो दिया है वह उस चीजका एक अत्यन्त मोटा मसविदा है जिससे मुझे व्यक्तिगत तौर पर सन्तोष होनेकी आशा है। आपको शायद पता न हो कि मै स्लोकोम्बको कोई चीज देना नही चाहता था और मेरी इच्छा थी कि वह आपसे बात कर ले। लेकिन मै उसकी अपीलको नही टाल सका और भेंट-वार्ता[1] को आपसे मिलनेसे पूर्व ही छापनेकी अनुमति दे दी।

साथ ही यदि सम्मानजनक समझौतेके लिए समय उपयुक्त हो तो मै उसके रास्तेमें बाधा भी नही बनना चाहता। मुझे इसमें गम्भीर शंका है। लेकिन अन्ततः जवाहरलालका निर्णय ही अन्तिम होना चाहिए। आप और मै तो उसे अपनी सलाह ही दे सकते हैं। सर तेजबहादुर और श्री जयकरको दी गई अपनी ज्ञापिकामें मैंने जो-कुछ कहा है वह अन्तिम सीमा है जहाँ तक मै जा सकता हूँ। लेकिन जवाहर और वैसे आप भी ऐसा मान सकते हैं कि कांग्रेसकी अन्तर्भूत नीति अथवा जनताकी वर्तमान मनोदशासे मेरी स्थितिकी संगति नही बैठती। इससे भी अधिक सख्त स्थितिका समर्थन करनेमें मुझे कोई हिचकिचाहट नही होगी बशर्ते कि वह लाहौर-प्रस्तावकी शब्दावलीसे ज्यादा आगे न जाता हो। इसलिए अगर मेरी ज्ञापिका आप दोनोके हृदयको ठीक न जँचे तो आप उसको कोई महत्त्व न दें।

मै जानता हूँ कि न आप और न जवाहरको ही वे ग्यारह सूत्र बहुत पसन्द थे जो मैंने वाइसरायको लिखे अपने पहले पत्रमें स्पष्ट किये थे। मुझे पता नही कि आपकी अब भी वही राय है या नही। खुद मेरा मन उनके बारेमें बिलकुल साफ है। मेरे लिए वे स्वराज्यका सार हैं। मै ऐसी किसी चीजसे अपना वास्ता नही रख सकता जो राष्ट्रको यह शक्ति न दे कि वह उन्हें तुरन्त लागू कर सके। ज्ञापिकामें मैंने उनमें से केवल तीन सूत्रोका ही जिक्र किया है लेकिन शेष आठ मैंने छोड़े नही है। लेकिन ये तीन सूत्र सविनय अवज्ञाके सन्दर्भमें स्पष्ट किये गये है। मै ऐसे किसी

१. देखिए खण्ड ४३, पृष्ठ ४३७-८।

युद्ध-विराममें शामिल नहीं होऊँगा जो उस स्थितिको व्यर्थ करता हो जिसपर हम आज पहुँचे हैं।'

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधी-सप्रू करेस्पांडेंस। सौजन्य: पी० एन० सप्रू; एस० एन० १६१३६ से भी।

६५. पत्र: हरिइच्छा देसाईको

यरवडा मन्दिर
२६ जुलाई, १९३०

चि० हरिइच्छा,

मुझे प्राय: तेरी याद आती है, किन्तु पत्र लिखनेकी प्रेरणा हरिभाईके पत्रमें तेरा उल्लेख देखकर मिली। तुम सब बहनें अपने स्वास्थ्यको तो ठीक रखती हो न? तू आजकल क्या कर रही है? यदि तू स्वीकृति दे और तेरी इच्छा हो तो मैं तुझे आश्रममें खींच ले जाऊँ। यदि तेरी इच्छा हो तो प्रयत्न करना। मुझे पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७४६४) की फोटो-नकलसे।

६६. पत्र: बली और कुमीको

यरवडा मन्दिर
२६ जुलाई, १९३०

चि० बली, कुमी,

तेरा पत्र मिला। कुमीको भी लिखना चाहिए। तूने मनुको ले जाकर ठीक किया। तुम बहनोंके सन्तोषमें ही मेरा सन्तोष है। इन बालकोंके प्रति तुम्हारा प्रेम देखकर तो कभी-कभी मेरी आँखोंमें खुशीके आँसू उमड़ आते हैं। मैं समय-समय पर जो चेतावनी देता रहता हूँ, उसका कारण यह है कि तुम्हारा उक्त प्रेम केवल अन्धा प्रेम ही न हो। किन्तु तुम्हारे स्वभावको जानते हुए मुझे इतना करते भी संकोच होता है। मैं तुम्हें कैसे दुःख दे सकता हूँ? क्या तुम दोनों बहनोंमें मेल है?

१. इस पत्रके साथ तथा मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरूके नाम लिखी टिप्पणीके साथ सर तेजबहादुर और श्री मु० रा० जयकरने २७ और २८ जुलाईको मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरूसे भेंट की थी। उनके संयुक्त पत्र तथा जवाहरलाल नेहरूके पत्रके लिए देखिए परिशिष्ट १ (क) और १ (ख)।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुलसीदास अच्छा हो गया।

कुसुम तो अब बिलकुल ठीक हो गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५०६०) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : सुरेन्द्र मशरूवाला

६७. पत्र : रामी गांधीको

यरवडा मन्दिर
२६ जुलाई, १९३०

चि० रामी,

तेरा पत्र मिला। मुझे तेरे बारेमें बा ने लिखा था। कुसुम क्योंकर इतनी सख्त बीमार पड गई? कुँवरजीसे मुझे पत्र लिखनेको कहना। मैं उसे अलगसे पत्र नही लिख रहा हूँ। मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५०६१) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : सुरेन्द्र मशरूवाला

६८. पत्र : मनु गांधीको

यरवडा मन्दिर
२६ जुलाई, १९३०

चि० मनुडी,

तेरा पत्र मिला। यदि तू अपनी इच्छासे गई थी तो ठीक ही गई थी। मैं तो सिर्फ यही चाहता हूँ कि तू खरी सेविका बने और तेरा शरीर दृढ़ बने। अब भविष्यमें स्याहीसे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५०३) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : मनुबहन मशरूवाला

६९. पत्र : भगवानजी पण्ड्याको

२६ जुलाई, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। मणिबहनके सम्बन्धमें तुमने जो किया वह उचित ही है। एक बहन जो हमारे साथ रह रही हो और जिस तरह तटस्थभावसे उसे उसके दोषोंके बारेमें बताकर हम निश्चिन्त हो जाते हैं वैसे ही हमें यहाँ भी करना चाहिए। तुम्हारा शक उपवाससे दूर नहीं होगा, ऐसा तुम्हें उसे समझाना चाहिए। यदि उसने अपराध नहीं किया तो उपवास किसलिए। और यदि किया हो तो उसका निवारण उपवास नहीं है अपितु अपराधको स्वीकार करना और भविष्यमें कभी वैसा काम न करनेका दृढ़ संकल्प करना ही हो सकता है। ऐसा करने पर भी यदि वह न माने तो फिर जो हो सो होने दें। लेकिन मेरी ओरसे मणिबहनसे कहना कि मेरी अनुमतिके विना उपवासकी मनाही है, अतः यदि उसने उपवास न छोड़ा हो तो अब छोड़ दे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२१) से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या

७०. पत्र : गंगाबहन झवेरीको

यरवडा मन्दिर
२७ जुलाई, १९३०

चि० गंगाबहन (झवेरी),

तुम्हारा पत्र मिला। आशा है तुम अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखती होगी। कानजीभाईका त्याग महान् है। उन्हें और उनके कुटुम्बियों तथा तुम्हारे साथ रहनेवाली बहनोंको मेरा आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३१०२) की फोटो-नकलसे।

७१. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
२७ जुलाई, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। तेरे साथ कितनी बहनें रहती है? क्या उन्होंने प्रार्थना सीख ली है? क्या तुझे 'अनासक्तियोग' के अध्ययनका समय मिलता है? क्या तेरा चित्त शान्त है? मैं ठीक हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२७७) की फोटो-नकलसे।

७२. पत्र : कलावती त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२७ जुलाई, १९३०

चि० कलावती,

तेरा पत्र मिला। तू गुजराती सीख रही है अतः यह पत्र गुजरातीमें लिख रहा हूँ। यदि तू गुजरातीमें लिखनेको मना करेगी तो मैं भविष्यमें हिन्दीमें लिखूंगा। तुझे तो हिन्दीमें ही लिखना चाहिए। तू अपने अक्षर सुधारना। अब जबकि तू प्रभुभाईके चरखे पर कातने लगी है तो इस काममें जी-जानसे जुट जाना। चरखेकी सफाई आदि करना सीख लेना। जो-कुछ भी करे उसे ध्यानसे और अच्छी तरह करना। ऐसा करनेसे हृदय और बुद्धि दोनो विकसित होते हैं। शान्ताबहनको किसी डाक्टरको दिखाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२४२)की फोटो-नकलसे।

७३. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२७ जुलाई, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुम्हारा पत्र मिला। अपने पिछले पत्रमें मैंने प्रार्थनाकी जो वात उठाई थी, उससे तुम्हारे पत्रका आंशिक उत्तर तो तुम्हें मिल ही गया। मूर्तिपूजाके वारेमें जो लोग अपने पास मूर्ति रखते हैं हम उन्हें वैसा करनेसे मना नही करते। किन्तु सामूहिक प्रार्थनामें मूर्तिको स्थान नही दिया जा सकता।

शान्ताबहनको डाक्टरको दिखानेकी वात मैंने सुझाई है। किन्तु यहाँ वैठे हुए मैं भली-भाँति मार्गदर्शन नही कर सकता।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

हिन्दी अनुवादको देखनेका मुझे समय ही नही मिल पाता।

गुजराती (जी० एन० ५२४३)की फोटो-नकलसे।

७४. पत्र : जानकीदेवी बजाजको

यरवडा मन्दिर
२७ जुलाई, १९३०

चि० जानकीबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। अब उत्साह क्यों न होगा? अव तो तुम भापण देती हो, अखबारोंमें भी तुम्हारा नाम आता है। समय-समय पर जव जानकीवाई वजाजका नाम अखबारोंमें देखता हूँ तो सोचता हूँ कि क्यो न जमनालाल और हम सभी गिरफ्तार हों और जेलमें रहें। मुझे तो विश्वास था ही कि तुम्हारे दिखाई देनेवाले अविश्वासके पीछे पूरा आत्मविश्वास था। ईश्वर उसमें वृद्धि करे। कमलनयनको जल्दी नही करनी है। फिलहाल वह चाहे तो खादी-उत्पादनके कार्यमें ही लगा रहे। टुकड़ीके वाहर निकलने पर वह वालजीभाईको लिखे।

वापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २८८८)की फोटो-नकलसे।

७५. मथुरादास त्रिकमजीको लिखे पत्रका अंश

२७ जुलाई, १९३०

मुलाकात करनेके बारेमें तुम समझ गये हो न? सरकारको मेरी सूची[1] बड़ी लगी है। अब ज्यादा झंझटमें नही पड़ूँगा। पत्र-व्यवहारसे ही सन्तोष कर ले।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी

७६. पत्र: विट्ठलदास जेराजाणीको

यरवडा मन्दिर
२७ जुलाई, १९३०

भाई विट्ठलदास,

अप्रैल, मई और जूनके आँकडे मिले। इन आँकड़ोको देखनेसे ज्ञात होता है कि अब भी पर्याप्त मात्रामें कोई सूत नही देता। इस बारेमें तुम मुझे सविस्तार लिखो।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९७७५)की फोटो-नकलसे।

७७. पत्र: हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
२७ जुलाई, १९३०

प्रिय भगिनि,

तुमारे दो पत्र मिले। उन्हें मैं प्रसादी सुरूप समझता हुं। तुमारा आत्मविश्वास दिन प्रति दिन बढता हुआ देख मुझे बडा आनद होता है। ईश्वर उसमें वृद्धि करे। सतीशबाबुका तो क्या लिखु? उनका विकास तो मै कई दिनोसे देखहि रहा था।

खादी कार्यमें तुमारी श्रद्धा ऐसी है कि आवश्यक सहाय भगवान भेजता हि रहेगा। जैसी जिसकी श्रद्धा ऐसा उसको होय ऐसा भगवद्-वचन है। वह मिथ्या नहि हो सकता है।

चारूको भगवान शाति दें। अरूण कहा है?

१. देखिए "पत्र: आर० वी० मार्टिनको", ८-७-१९३०।

सतीशबाबूको मेरे आशीर्वाद पहोंचा दो। चारु अरुणको और तारिणीको भी।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

खादीके बारेमें सब कुछ लिख सकती है।

जी० एन० १६६९ की फोटो-नकलसे।

७८. पत्र : मीराबहनको

[२८ जुलाई, १९३०][1]

चि० मीरा,

मुझे तुम्हारा पत्र मिला। मैं तुम्हारा ही चरखा चला रहा हूँ। अब उसमें कम मेहनत पड़ती है। मालने किसी प्रकारकी कोई तकलीफ नहीं दी है। उस लिहाजसे तुम्हारा चरखा कहीं ज्यादा अच्छा है। मुझे अभी भी अपेक्षित बारीकीका सूत निकालनेमें कठिनाई होती है। किसी भी हालतमें मैं उसे आसानीसे नहीं छोड़ूँगा। रफ्तार अभी भी बहुत कम है। आज पहली बार मैंने ६५ मिनटमें १५४ तार निकाले। यह मेरे लिए उत्साहवर्धक था। सफरी चरखेको बिना रुके चलाने पर मैं उससे प्रति घंटे २०० तार निकालने लगा था।

तुम्हारी खातिर भजनोंका अनुवाद करनेमें मैं स्वयं बहुत आनन्द पा रहा हूँ। क्या मैंने अपने प्रेमको अकसर स्नेहकी कोमल और मृदुल वर्षाकी अपेक्षा तूफानोंके रूपमें व्यक्त नहीं किया है? इन तूफानोंकी स्मृति अनन्य रूपसे तुम्हारे लिए किये जानेवाले अनुवादका सुख और बढ़ा देती है। लेकिन यह लम्बा काम है। आज मैंने १०वाँ भजन किया। श्लोकोंमें मुझे बहुत समय लगा। भजन मैं प्रतिदिन एकके हिसाबसे कर रहा हूँ। और अभी भी मुझे करीब १७० करने हैं। इसलिए अभी तो मेरे 'गीता' पर पहुँचनेकी सम्भावना बहुत कम ही है।

तुम्हारे बुखारसे चिन्ता है। अभी भी तुम पर परिवर्तनोंका असर जल्दी होता है। कृपया अपना ध्यान रखो और अगर तुम्हें जरा भी जरूरी लगे तो दूसरे दर्जेमें सफर करनेमें हिचकिचाओ मत। मैं इस सप्ताहके पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४०४)से। सौजन्य: मीराबहन; जी० एन० ९६३८ से भी।

१. इस पत्रमें उल्लिखित १०वें भजनका इसी तारीखको अनुवाद किया गया था; देखिए परिशिष्ट लेकिन पत्रपर मीराबहनके स्वाक्षरोंमें "२७ जुलाई, १९३० के" तारीख दी हुई है।

७९. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
मौनवार [२८ जुलाई, १९३०][1]

चि० गगावहन (वड़ी),

लगता है कि तुम अव पूर्णतया शान्तचित्त हो। यह वहुत अच्छा हुआ है। सहज प्राप्त सेवामें पूर्ण सन्तोप मान लेनेमें ही आत्माका विकास है और वही उसे पहचाननेका साधन है।

वापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

वापुना पत्रो - ६ : गं० स्व० गंगावहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७५४ से भी। सौजन्य : गंगावहन वैद्य

८०. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
२८ जुलाई, १९३०

चि० प्रेमा,

तुझे लिखनेमें मुझे कष्ट नही होता। तेरा निदान ठीक है। हिन्दुस्तानके प्रश्नोको सुलझानेमें मुझे जितना रस आता है, उससे भी ज्यादा आश्रम-सम्वन्धी और उनमें भी वहनोके प्रश्न सुलझानेमें आता है। क्योकि उनमें वड़े प्रश्नोको सुलझानेकी चावी छिपी रहती है। जैसा पिण्डमें वैसा व्रह्माण्डमें। व्रह्माण्डको जानने जायें तो रास्ता भूलेंगे, परन्तु पिण्ड तो हमारे हाथमें है।

वाल-वर्ग व्यवस्थित ढगसे चल रहा दीख पडता है।

शीला अव ठीक हो गई होगी।

मैंने जान-वूझकर करेले खानेकी सलाह दी है।

भावनाको सीधे मार्ग पर ले जाया सकता है। उसे सीधे मार्ग पर ले जाना परमार्थ है। पुरुषार्थ शब्द एकागी है। और कोई तटस्थ शब्द जवान पर आता है?

धुरन्धर 'अनासक्तियोग' का अनुवाद जरूर करे।

वापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६७५) से। सौजन्य : प्रेमावहन कंटक; जी० एन० १०२२७ की फोटो-नकलसे भी।

१. वापुना पत्रो - ६ : गं० स्व० गंगावहेनने में दी गई तिथिके अनुसार।

८१. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
२८ जुलाई, १९३०

चि० गंगाबहन (बड़ी),

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा कुटुम्ब तो बढ़ रहा लगता है। यह ठीक भी है। हममें सेवाभाव होगा तबतक तो लोग आते ही रहेंगे।

नाथको खुजली कैसे हुई थी?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-६ : गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७५५ से भी। सौजन्य: गंगाबहन वैद्य

८२. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
२८ जुलाई, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। मृत्युंजय कहाँ रहता है? क्या करता है? माताजी[1] के लिए राजेन्द्रबाबूका वियोग कष्टकर है? विद्यावतीकी तबीयत कैसी रहती है?

मैंने अपनी खुराकके बारेमें लिखा था; अभी तक वही ले रहा हूँ। वजन १०३-४ के बीच रहता है। इसे खराब नहीं कहा जा सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३९१) की फोटो-नकलसे।

१. डा० राजेन्द्रप्रसादकी पत्नी।

८३. पत्र : रेहाना तैयबजीको

यरवडा मन्दिर
२८ जुलाई, १९३०

बिस्मिल्लाह[1]

चि० रेहाना,

खुदा हाफिज[2]

तेरा गुजरातीमें लिखा पत्र देखकर तो मै खुशीसे पागल हो गया। अक्षर भी अच्छे ही माने जायेंगे और भाषाके बारेमें तो कहना ही क्या। निर्दोष व्यक्तिकी प्रार्थना भी सार्वजनिक कार्यके बराबर ही नही, उससे भी अधिक काम करती है। अतः यदि तू शरीरसे काम न कर सके तो उससे क्या होता है? इस बातका दु.ख मत करना। वालिदकी तबीयत तुझे कैसी लगी? वे खुश तो है न? श्रीमती लुकमानी अब कैसी है? तैयबजी परिवारने तो हद कर दी। अम्माजानसे कहना कि उनका हँसमुख नम्र चेहरा रोज मेरी आँखोमें घूमता रहता है।

मुझे फिर पत्र लिखना।

यदि इस पत्रको पढ़नेमें कठिनाई हो तो मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९६१८) की फोटो-नकलसे।

८४. पत्र : मणिबहन पटेलको

यरवडा मन्दिर
२८ जुलाई, १९३०

चि० मणि (पटेल),

तेरे पत्रकी प्रसादी कई सप्ताहमें मिली। तू काममें लगी है, अच्छा कर रही है और तुझे वांछित कार्य मिल गया, यह तो जानता हूँ। फिर भी तेरे पत्रकी अपेक्षा रखता हूँ।

खूब जियो, खूब सेवा करो।

बापूके आशीर्वाद

चि० मणिबहन पटेल
श्रीराम मैन्शन
सैंडहर्स्ट रोड, बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने

१ व २. मूलमें ये शब्द उर्दूमें हैं।

८५. पत्र : शूरजी वल्लभदासको

यरवडा मन्दिर
२१ जुलाई, १९३०

भाईश्री शूरजी वल्लभदास,

आपका अंग्रेजीमें लिखा पत्र तथा पुस्तक मिली। गुजराती पत्र अभी तक नहीं मिला। प्रस्तावना यहाँसे लिखकर भेजनेकी अनुमति देनेका सुपरिंटेंडेंटको तो अधिकार ही नहीं है। सुपरिंटेंडेंटको सरकारसे पूछना होगा और सरकार इसकी कदापि अनुमति नहीं देगी। यदि आपको सरकारसे पूछना उचित जान पड़े तो आप पूछ देखें।

मोहनदासके आशीर्वाद

श्री शूरजी वल्लभदास
२२०-२३०, शेख मेमन स्ट्रीट
बम्बई

गुजराती (जी० एन० ४०९४) की फोटो-नकलसे।

८६. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

यरवडा मन्दिर
२१ जुलाई, १९३०

भाई घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मीला है। अब तो करीब २ सब पत्र दे देते हैं। तो भी इंग्रेजीमें लिखा वही अच्छा किया। पुने नहि आये वह तो अच्छा हि हुआ क्योंकि किसीको मिलनेका होना हि नहि है। जिस शख्सने मुलाकात करने देते हैं मुझे कबूल नहि है इसलिये एक हि मुलाकात आज तक हुई है। दूसरी होनेका संभव नहि है। मुझे इसका कोई दुःख नहि है। वस्तुतः कैदीको कुछ हक तो है हि नहि। कैद एक प्रकारका भावमृत्यु है और कैदका यहि अर्थ हो सकता है।

स्वप्नका बयान पढ़कर मैं खूब हसा। यह स्वप्न प्रेमकी निशानी है। अपरिचित लोगोंके लिये हमको स्वप्न नहीं आते हैं।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। यहांका पानी हि ऐसा है जिससे कुछ बंधकोष सा रहता है। परंतु उससे कोई उपाधि नहि है।

जब तकली कोई-कोई वखत चलाते हैं तो नियमबद्ध क्यों न चलाई जाय? मैंने अनुभव किया है कि जो चीज हम अनियमित करते हैं उसीको यदि नियमबद्ध

कर दी जाय तो उसकी किम्मत सौगुनी तो अवश्य बढ जाती है। सारा जगत् नियमके वशमें है। ऐसे अनुभवोसे 'अव्यवस्थित चित्तानाम् प्रसादोपि भयकरः' जैसे वचनकी उत्पत्ति हुई है।

खादी प्रवृत्तिका बयान सुन कर हर्ष हुआ। आपके पुत्रको अब तो बिल्कुल आराम होगा।

आपका स्वास्थ्य कैसा रहता है? क्या खाते है? मेरा खोराक दूध दही मनक्का, खजूर और खट्टे लिंबु है। लिंबुका रस सोडाके साथ पी जाता हु अथवा गरम पानी और नमकके साथ।

भाई मनमोहन गाधीसे कहना उनका पुस्तक मिल गया है और खत भी। पुस्तक पढनेका समय बहौत कम रहता है। जितनी शक्ति है करीब सबकी सब कातने धुननेमें दे देता हुं।

आपका,
मोहनदास

सी० डब्ल्यू० ६१८६ से। सौजन्य: घनश्यामदास बिडला

८७. पत्र : नारणदास गांधीको

२८/३१ जुलाई, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। काकासाहब बताते है कि तुम जिस स्याहीसे लिखते हो वह लिखे गये कागज परसे फूट निकलती है। इसलिए दोनो तरफ लिखनेसे वह पढा नही जाता। यह बात सच है। जब ऐसा हो तो कागजके एक ही ओर लिखना ठीक होता है।

इस बार पत्र ठीक बँधे हुए थे। ये लिफाफे सँभाल कर रख रहा हूँ। जरूरत होगी तो इनका उपयोग कर लूँगा। रुई मिल जानेके बारेमें लिख चुका हूँ। पीज तो आज ही सका हूँ। बरसातके कारण बहुत नमी थी। चरखा चलानेमें मेहनत नही पडती; देर तक बैठनेमें पडती है। धीरे-धीरे कोई युक्ति निकल आयेगी। आसानीसे हार नही मानूँगा। इसमें विचारमें पड़ जानेकी कोई बात नही। बाहर मैं चार-पाँच घंटे चरखा चलाने कहाँ बैठता था?

केशुकी उँगली ठीक हो गई होगी। क्या बालकृष्णका स्वास्थ्य चौकीदारी करने के लायक है? शरीर पर बलात्कार न करे।

हम दोनोकी तबीयत ठीक है। काकासाहब का वजन कमानीदार तराजू पर १०९ हो गया है। कामकाजके सम्बन्धमें जितना चलना पड़ता है, उसे मिलाकर

रोज ८ मील जरूर चल लेते होंगे। कताईमें जो परिश्रम करते हैं सो अलग। खुराक तो अभी वही है।

मैंने जिनको पत्र नही लिखा है, लेकिन जो इसकी आशा करते है ऐसे कोई भाई-बहन हों तो उनके नाम लिखना। रमावहन (रणछोडभाईवाली)का पत्र आना चाहिए था। उसे तो मेरा पत्र मिल ही गया होगा।

अब अहिंसाके बारेमे।

मंगल प्रभात

इस लेखका आरम्भ मनोरंजक और दुखद है। कपड़ेके लिफाफेको किस तरह बचायें और उसीको बार-बार किस तरह इस्तेमाल करे, इसका विचार हम दोनोंके बीच हुआ था। सवाल यह था: पूरे कवर पर कोरा कागज चिपकायें या जहाँ-जहाँ लिखा हो वही कागजका टुकड़ा चिपकायें। यह संवाद निरर्थक था। उसमे प्रार्थनाके बादके सुन्दर समयके १५ मिनट बेकार गये। परिणाममे हमारी मूर्खता सिद्ध हुई। इसमें सत्य, अहिंसा और विवेककी हानि हुई। सत्यको चोट लगी; क्योंकि इस सवाद-के पीछे सत्यके शोधका उत्साह न था। अहिंसाका मुँह मलिन हुआ, क्योंकि जिसका प्रत्येक क्षण वर्तमान दुखोंके दर्शन करनेमें और उनके उपायोका ध्यान करनेमें जाना चाहिए, उसने १५ मिनटका अमूल्य समय निरर्थक संवादमे गँवा दिया। विवेकका पालन नही किया क्योंकि सारासारका विचार किया होता तो यह सवाद एक क्षण भी न चल पाया होता। प्रजाके १५ मिनट चोरी करनेके बाद दोनोंने अपनी मूर्खता को समझा; और सावधान कर देनेके लिए प्रभुका आभार माना।

यह प्रस्तावना मैंने जान-बूझकर दी है।

सत्यका, अहिंसाका मार्ग जितना सीधा है उतना ही संकरा है। दोधारी तलवार पर चलने-जैसा है। नट जिस डोरी पर एक नजर टिका कर चल सकता है, सत्य और अहिंसाकी डोरी उससे भी सूक्ष्म है। जरा असावधान हुए नही कि नीचे गिरे। प्रतिक्षण साधना करनेसे ही उनके दर्शन हो सकते हैं।

किन्तु सत्यका सम्पूर्ण रूपसे दर्शन तो इस देहसे कर पाना सम्भव नही है। उसकी कल्पनामात्र की जा सकती है। क्षणभंगुर देह द्वारा शाश्वत धर्मका साक्षात्कार सम्भव नही। इसलिए अन्तमें श्रद्धाका उपयोग तो करना ही पड़ता है।

इसीलिए जिज्ञासुके हाथ अहिंसा लगी। मेरे मार्गमे जो मुसीबतें आयें उन्हें सहन करूँ या उनके कारण थोड़ा-बहुत जो-कुछ नाश करना ही पड़े उतना करता जाऊँ और अपना मार्ग तय करूँ? यह प्रश्न जिज्ञासुके सामने उपस्थित हुआ। जो नाश करते हुए चलता है, उसका मार्ग तय नही होता; वह तो जहाँ है वही बना रहता है; ऐसा उसने देखा। यदि संकट सहन करता है, तो वह आगे बढ़ता है। पहले ही नाश-कर्मके समय उसने देखा कि वह जिस सत्यकी शोध कर रहा है वह बाहर नही, अन्तरमें है। इसलिए जैसे-जैसे वह किसी वस्तुका नाश करता है, वैसे-वैसे पीछे हटता जा रहा है, सत्य उससे दूर होता जा रहा है।

हमारे यहाँ चोर उपद्रव करते है, उससे बचनेके लिए हमने उन्हें दण्ड दिया। उस समय वे वहाँसे तो जरूर भाग गये; लेकिन दूसरी जगह जाकर हमला कर

दिया। दूसरी जगह भी तो हमारी ही है; इसलिए हम तो अँधेरी गलीमे भटक गये। चोरोका उपद्रव वढता ही जा रहा है; क्योकि उन्होने तो चोरी करना कर्त्तव्य मान लिया है। हमने देखा कि इससे तो अच्छा यह है कि चोरोका उपद्रव सहन करे। ऐसा करेगे तो धीरे-धीरे चोरको भी समझ जायेंगे। इतना सहन करके हम देख पाते है कि चोर हमसे जुदा नही है। हमारे तो सभी सम्बन्धी हैं। उन्हे दण्ड नही दिया जा सकता। किन्तु उपद्रव सहन करते जायें, इतना ही काफी नही है। उससे तो कायरता आती है। इसलिए हमने अपना दूसरा विशेष धर्म भी देखा। चोर हमारे सगे-सम्वन्धी हो तो उनमें भी हमें यही भावना पैदा करनी चाहिए। इसलिए हमे उन्हे अपनानेके लिए उपाय खोजनेकी पूरी तरह मेहनत करनी है। यह है अहिंसाका मार्ग। इसमें उत्तरोत्तर दुख सहन करनेकी वात ही आती है। अटूट धीरज सीखनेकी ही बात उठती है। और यदि वह हो तो अन्तमें चोर साहूकार वन जाता है। हमें सत्यके और भी ज्यादा दर्शन होते हैं। ऐसा करते हुए हम जगतको अपना मित्र वनाना सीखते है। ईश्वरकी, सत्यकी महिमा और ज्यादा महसूस करते है, सकट सहन करते हुए भी शान्ति और सुखमें वृद्धि होती है। हममें साहस और हिम्मतके गुण वढते हैं। हम शाश्वत और अशाश्वतका भेद और अच्छी तरह समझ पाते हैं। हमें कर्त्तव्य-अकर्त्तव्यका ज्ञान होता है। अभिमान दूर होता है, नम्रता वढ जाती है। परिग्रह सहज ही कम हो जाता है। और देहमें भरे हुए दोष नित्य कम होते जाते है।

अहिंसाको जिस स्थूल रूपमें हम आज देखते है, अहिंसा वैसी स्थूल नही है। किसीको न मारे, यह तो अहिंसा है ही; किन्तु कुविचार-मात्र हिंसा है। उतावली हिंसा है, मिथ्या भाषण हिंसा है, द्वेष हिंसा है, किसीके अहितकी कामना हिंसा है। जिसकी जरूरत जगतको है उसपर अधिकार कर लेना भी हिंसा है। किन्तु हम जो खाते है, जगतको उसकी जरूरत है। जहाँ खड़े होते है वहाँ सैकडो सूक्ष्म जीव पडे है और उन्हें इससे कष्ट होता है। वह जगह उनकी है। तव फिर क्या आत्महत्या कर ले? उपाय यह नही है। देहके मोहका विचार पूरी तरह छोड दें तो अन्तमें देह हमें छोड देगी। यह उस सत्यनारायणका जागृत स्वरूप है। यह दर्शन अधैर्यसे नही हो सकता। देह हमारी नही, वह तो हमें मिली हुई धरोहर है, ऐसा समझ कर उसका जो उपयोग कर सके सो करते हुए अपना मार्ग तय करते जायें।

मुझे लिखना तो था सरल, पर लिख गया कठिन वात। तो भी जिसने अहिंसा के बारेमें जरा भी विचार किया होगा, उसे यह समझनेमें कोई कठिनाई नही होनी चाहिए।

इतना सव जान लें: अहिंसाके विना सत्यकी शोध असम्भव है। अहिंसा और सत्य एक दूसरेसे उसी तरह संलग्न है जैसे एक सिक्के के दो पहलू या कहो किसी चिकनी फिरकीके दो पहलू। उनमें सीधा किसे कहे और उलटा किसे कहे? तो भी अहिंसाको साधन मानें और सत्यको साध्य। साधन अपने हाथकी वात है, इसीसे अहिंसा परम धर्म हुआ। सत्य ईश्वर हुआ। साधनकी चिन्ता करते रहेंगे तो किसी दिन साध्यके दर्शन तो होगे ही। इतना निश्चय किया तो मानो जगको उस हदतक

जीत लिया। हमारे मार्गमें चाहे जो संकट आयें, बाह्य दृष्टिसे देखते हुए हमारी चाहे जितनी हार होती दिखाई पड़े, तो भी हम विश्वास न छोड़े और एक यही मन्त्र जपें कि सत्य ही सब-कुछ है; वही ईश्वर है, उसका साक्षात्कार करनेका एक ही मार्ग है, एक ही साधन है — और वह है अहिंसा; मैं उसे कभी न छोड़ूँगा। जिस सत्य रूपी ईश्वरके नाम यह प्रतिज्ञा की है, वही इसका पालन करनेका बल दे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

५७ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

८८. टिप्पणी : मु० रा० जयकरको[1]

२ अगस्त, १९३०

(१) श्री गांधीको ऐसी कोई संवैधानिक योजना स्वीकार्य नहीं होगी जिसमें एक धारा ऐसी न हो जिसमें भारतको अपनी इच्छा पर साम्राज्यसे अलग होनेका अधिकार न दिया गया हो, और एक दूसरी धारा ऐसी न हो जिसमें भारतको उनके ग्यारह सूत्रोंको कार्यान्वित करनेका अधिकार और शक्ति न दी गई हो।

(२) वाइसराय महोदयको श्री गांधीकी इस स्थितिसे अवगत करा देना चाहिए ताकि बादमें जब गोलमेज सम्मेलनमें श्री गांधीके इन विचारोंको आगे रखा जाये तो वाइसराय ऐसा न मानें कि वह इन विचारोंसे सर्वथा अनभिज्ञ थे और उनके लिए तैयार नहीं थे। वाइसरायको इस बातसे भी अवगत करा देना चाहिए कि गोलमेज सम्मेलनमें श्री गांधी उस धारा पर आग्रह करेंगे जिसमें भारतको इस बातका अधिकार दिया गया हो कि विगतकालमें अंग्रेजोंको जो सम्पत्ति और रियायतें दी गई थीं उनकी जाँच वह एक स्वतंत्र न्यायाधिकरण द्वारा करा सके।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ५-९-१९३०

१. ३१ जुलाई, तथा १ और २ अगस्तको मु० रा० जयकरने गांधीजीसे फिर भेंट की। इस अवसरपर गांधीजीने उक्त टिप्पणी बोलकर लिखवाई थी, जिसके आधारपर वाइसरायसे आगे बातचीत होनी थी।

८९. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
२ अगस्त, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। सिर्फ सेवाकी खातिर जहाँ सरदारी करना आवश्यक हो वहाँ हमें सरदार बनकर भी काम चला लेना चाहिए। श्रद्धा भले ही कर्त्ताके कारण उत्पन्न हुई हो किन्तु उस श्रद्धाको कार्य पर केन्द्रित कर देना चाहिए। तभी हम निश्चिन्त हो सकेंगे। कर्त्ता क्षणभंगुर है, निमित्त-मात्र है। कार्य शाश्वत है। अब [राजा] हरिश्चन्द्र कहाँ है? किन्तु सत्य तो सदा रहा है, अब है और भविष्यमें भी रहेगा। हरिश्चन्द्रको जो अमरपद मिला वह सत्य-कार्यके द्वारा मिला है। सत्य तो हरिश्चन्द्रके पहले भी था। हरिश्चन्द्र तो निमित्त-मात्र थे। अन्य दृष्टान्तोकी सहायतासे इस विचारको अपने मनमें जमा लोगी तो निराशारूपी डाइन निश्चय ही भाग जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२९८) की फोटो-नकलसे।

९०. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
२ अगस्त, १९३०

चि० प्रेमा,

निर्दोष अर्थात् स्वप्नरहित नींदके लिए जाग्रत अवस्थामें हमारे आचार-विचार निर्दोष होने चाहिए। निद्रावस्था जाग्रतावस्थाकी स्थितिको जाँचनेका दर्पण है। भावना को गलत मार्गपर जानेसे रोकनेकी शक्ति हम सबमें होती ही है। यह उत्कृष्ट प्रयत्न है। इस प्रयत्नमें पराजयके लिए कोई स्थान नहीं है।

कृष्णकुमारी कमलाबहनसे किस बातमें अलग दिखाई देती है?

यहाँ बादल तो पिछले डेढ़ महीनेसे छाये हुए हैं, लेकिन बरसात बहुत कम होती है। लेकिन अहमदाबादमें सामान्यतया जितनी बारिश होती है उससे यहाँ बहुत कम नहीं होती।

कृष्ण नायरको मेरा आशीर्वाद देना और कहना कि कैदियोंको पत्र न लिखनेके लिए मैं अधिकारियोंसे वचनबद्ध हूँ। उससे मुझे बड़ी आशाएँ हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६७६) से। सौजन्य: प्रेमाबहन कटक; जी० एन० १०२२८ की फोटो-नकलसे भी।

९१. पत्र: कमलनयन बजाजको

यरवडा मन्दिर
२ अगस्त, १९३०

चि० कमलनयन,

तेरा पत्र मिला। मेरे गुजराती अक्षर पढ़ सकेगा क्या? यदि नहीं पढ़ पायेगा तो मैं हिन्दीमें लिखूंगा। जिस प्रकार तूने इस बार मुझे पत्र लिखा, वैसे ही लिखते रहना। जो कोई पिताजीसे मिलने जाये वह उनसे कहे कि वे अपना वजन बढ़ाकर बाहर आयें।

तुझे साफ और सुन्दर अक्षर लिखने चाहिए। तुझे अपना स्वास्थ्य खूब अच्छी तरह सुधार लेना चाहिए।

काकासाहब के आशीर्वाद।

ओम कहाँ है? मदालसासे पत्र लिखनेको कहना। कमला और रामेश्वरको पत्र लिखनेके लिए कहना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

राधाकिशन कहाँ है? वह कैसा है?

गुजराती (जी० एन० ३०४४) की फोटो-नकलसे।

९२. पत्र: शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
३ अगस्त, १९३०

चि० शारदा (बबु),

तेरे पत्र नियमित रूपसे मिलते रहते हैं। तू जो-कुछ लिखे उसे दुहरानेकी आदत डाल लेनी चाहिए। पत्रको दुहराये बिना उसे पूरा हुआ कभी नही समझना चाहिए। चिमनलालसे मुझे लिखनेको कहना। अब दमा तो नही उखड़ता न?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८८६) से। सौजन्य: शारदाबहन जी० चोखावाला

९३. पत्र: कुसुम देसाईको

३ अगस्त, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

तेरा पत्र मिला। किसीके शुभ प्रयत्न आजतक व्यर्थ नही गये। इन्दुलालके[1] बारेमें निश्चित समाचार तो पहले तू ही दे रही है। अच्छा हुआ।

सबके साथ तू अच्छी तरह पत्र-व्यवहार रख रही है। सुशीला (पंजाबन) को पत्र लिखती है? यदि उसका पता जानती हो तो उससे कहना कि वह मुझे लिखे। वह क्या कर रही है?

सबको यथायोग्य।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८०१) की फोटो-नकलसे।

१. इन्दुलाल याज्ञिक।

९४. पत्र : भगवानजी पण्ड्याको

३ अगस्त, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। मणिबहन जबतक बाह्य नियमोंका पालन करती है तबतक उसे छोड़नेके लिए नहीं कहा जा सकता। तुम व्यर्थ ही चिन्ता करते हो। उसका जो पतन हुआ हो उसमें तुम्हारा भी पूरा भाग था, यह जानकर धीरज धरो। पूरा भाग इसलिए था क्योंकि तुमने सन्तानोत्पत्ति-सम्बन्धका पूरी तरहसे त्याग नहीं किया था। जबतक पुरुष स्त्रीके साथ विकारी सम्बन्ध रखता है तबतक यदि स्त्री किसी अन्यके प्रति विकारवश हो तो वह क्षंतव्य माना जाना चाहिए, ठीक उसी तरह जिस तरह स्त्री अपने पतिके सम्बन्धमें सहन करती है।

जब वह सम्बन्ध खत्म हो जाये तब अगर स्त्री व्यभिचार करे तो पुरुषको उसे अलग कर देना चाहिए और आवश्यक हो तो उसका भरण-पोषण करना चाहिए।

शान्त होना। भजन अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२२) से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या

९५. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
४ अगस्त, १९३०

चि० मीरा,

मैं इस सप्ताह संक्षिप्त पत्र लिखना चाहता हूँ। इसका कोई विशेष कारण नहीं है। तथ्य तो यह है कि सामान्य पत्र काफी लम्बा है।

मैं आशा करता हूँ कि सफरके दौरान तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहा है।[1]

मुझे खुशी है कि तुम परशुरामसे मिली। पता नहीं उसे मेरा पत्र मिला था कि नहीं।

तुम्हारा चरखा पहलेसे ज्यादा अच्छा काम कर रहा है। आज मैंने एक घंटेमें १६० से ज्यादा तार काते। मैंने धुनकीको नये ढंगसे लगाया है और इससे वह ज्यादा अच्छा काम करती है। मैं दिनोंदिन महसूस करता हूँ कि कताईमें गति लानेके लिए

१. मीराबहन ने खादी-कार्यके सिलसिलेमें व्यापक दौरा किया था।

लिए अच्छी पूनियाँ अत्यावश्यक है। यह आश्चर्यकी बात है कि हर तफसील पर ध्यान देना कितना महत्त्वपूर्ण है।

स्वास्थ्य ठीक चल रहा है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४०५) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ८६३८से भी।

९६. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
४ अगस्त, १९३०

चि० गगाबहन (बड़ी),

तुम्हारे अक्षर अच्छे होते जा रहे हैं। जिस तरह सूत अच्छा कातें तभी माना जाता है कि हमने कताई की है, वैसा ही लिखाईके बारेमें भी है। चाहे एक ही पक्ति लिखें पर साफ लिखी हो। जहाँ हर साँस ईश्वर प्रीत्यर्थ लेना है, वहाँ तो छोटेसे-छोटा काम भी इस तरह करे कि वह शोभा बढ़ानेवाला हो।

बहुत करके तो वह काकासाहब से मिल ही सकेगा, ऐसा मैंने बाल को लिखा है। तुम्हारे भेजे हुए कपड़े मिल गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - ६ : गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७५६ से भी। सौजन्य : गगाबहन वैद्य

९७. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
४ अगस्त, १९३०

चि० मनु,

तेरा पत्र हम दोनोको अच्छा लगा। तेरे काममें निश्चयात्मकता तो है ही, इसलिए तू जो काम करेगा वही चमक उठेगा। जब शकर छूटे तो कहना कि मैं उसके विस्तृत पत्रकी प्रतीक्षामें हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७५९)की फोटो-नकलसे।

९८. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

यरवडा मन्दिर
४ अगस्त, १९३०

चि० रुक्मिणी,

आश्रम पहुँच जानेके बाद तुझे क्या दो पंक्तियाँ लिखनेकी फुरसत भी नही मिली? क्या तेरा चित्त शान्त है, क्या तू सन्तुष्ट और सुखी है? यदि तू इतना लिख सके तो मुझे सन्तोष हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९३१२) से। सौजन्य : बनारसीलाल बजाज

९९. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

यरवडा मन्दिर
४ अगस्त, १९३०

चि० ब्रजकिसन,

तुमारे खतकी मैं राह देख रहा था — देवदास कृष्ण नेर[1] इ० कैदीयोंको मैं पत्र न लीखुं ऐसा संकेत हुआ है — सब को मेरे आशीर्वाद कहो —

चित प्रसन्नता कभी मत छोड़ो, जो कर्तव्य हाथमें आ जावे उसीको करो। शरीरको अच्छा रखो और चिंता छोड़नेसे अच्छा रहेगा भी।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० २३८३ की फोटो-नकलसे।

१. यह मूलमें अस्पष्ट है। सम्भवतः कृष्ण नायर है।

१००. पत्र : एक आश्रमवासीको

[५ अगस्त, १९३० मे पूर्व][1]

. . . [2]जेल जानेकी तैयारी करना हमारा कर्त्तव्य है किन्तु जेल जानेकी इच्छा करना मोह है। . . .[3] जिसे अपने जिस काममें ढिलाई नजर आये उसे अपना वही काम [अधिक] करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति यथाशक्ति कार्य न करे, तो वह चोर माना जायेगा और हमने तो चोरी न करनेका व्रत लिया है। जो व्यक्ति काम तो करता हो किन्तु उसे भली-भाँति न करता हो तो वह भी चोर माना जायेगा। यदि हमारी मनोवृत्ति शुद्ध होगी तो हम आखिरकार काम करने ही लगेंगे। प्रतिदिन प्रात और रातको सोते समय ईश्वरसे यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु! मेरा आलस्य दूर करो, मेरी मनोवृत्तिको शुद्ध करो तथा मुझे अच्छा बननेकी शक्ति दो।

गुजराती (एस० एन० १६८६५)से।

१०१. पत्र : नारणदास गांधीको

यरवडा मन्दिर
३/५ अगस्त, १९३०

चि० नारणदास,

हाथमें इतनी तकलीफ होते हुए भी तुमने पत्र लिखा, इसकी जरूरत नही थी। जरूरी लगा था तो राधा आदि किसीसे लिखवा लेना था। तुम्हारा चरखा-यज्ञ इस स्थितिमें भी चालू रह सका, यह प्रभुकी कृपा है। क्या करते हुए हाथ फिसल गया? अबतक तो बिलकुल ठीक हो गया होगा।

हमारी रोटी कैसे बनती है, यह पकानेवालेसे लिखवा कर भेजना। खमीर कैसे बनाया जाता है? और कितने आटेमें कितना खमीर डालता है? आटा कब गूँधा जाता है, गूँधनेके बाद कितनी देर रहने दिया जाता है, आदि सब जानकारी लिख भेजना। जहाँ हम हैं वही रोटीकी भट्टी है। मैंदेकी रोटी तो वे अच्छी बना लेते है। किन्तु हमारे जैसा खमीरदार आटा तैयार न कर पानेसे उनके आटेकी रोटी ठीक फूलती नही है, इसलिए मुझसे पूछ रहे थे। इसे प्रकाशित करनेकी जरूरत नही है।

मीराबहनका पत्र देरसे पहुँचा, यह परवशताका सूचक है। जबतक बज पाये तबतक इस बीनको बजाते रहना है।[4] इसलिए पत्र बन्द कर दिये जायें तो इसमें

१. ५-८-१९३० की आश्रम पत्रिकासे।
२ व ३. साधन-सूत्रमें ये अंश छोड़ दिये गये हैं।
४. एक गुजराती कहावत।

कोई आश्चर्य नही। आत्म-सम्मानकी रक्षा करते हुए जबतक लिख सकूँगा, लिखता रहूँगा। वाकी कैदी पत्रमें लिख ही क्या सकता है? कैदीको वाह्य अधिकार तो कोई है ही नही। यह उसे तथा उसके सम्वन्धियोको जान लेना चाहिए। किन्तु हम दोनो तो मजेमें ही है।

. . .[1] बहनका किस्सा दुःखद है। मुझे ऐसी घटनाओसे अब आश्चर्य तो नही ही होता। हमारे प्रयोगोंमें ऐसे जोखिम तो रहते ही है। . . .[2] बहन आदिको लिखे मेरे पत्र तो तुम देखोगे ही, इसलिए मुझे यहाँ और कुछ लिखनेकी जरूरत नही है। हम ऐसे समय पूर्ण उदारतासे काम लें। छुपे पापका एकमात्र साक्षी तो ईश्वर है। जिसका पाप प्रकट हो गया हो उसे हम कभी लज्जित न करें। हमें जो सूझे वह धर्म उसे सुझाकर फिर ईश्वर पर छोड़ दें। तुमने . . .[3] बहनको छुट्टी नही देकर ठीक ही किया। मेरी आशा तो यह है कि . . .[4] बहन और . . . .[5] दोनोंकी आँखोसे पर्दा हटेगा।

भाई अमीदासको अपनेमें विश्वास हो और प्रयोगकी जानकारी हो तो बीचमें पड़नेकी आवश्यकता नही है। मुझे तो यही लगता है कि ७२ पौंड वजन बहुत कम माना जायेगा। एक खजूर ही काफी नही है। लगता है कि दही अथवा दूध साथमें लें तो कोई हानि नही। यह उन्हें पढ़ा देना। अनुभव न हो तो मेरी सलाह मानें। ठण्ड लगे तो हठपूर्वक कपड़ा ओढ़ना न छोड़ें। ठण्ड न लगे तो खुले बदन रहनेमें भी कोई हानि नही है। मुझे पत्र लिखनेके लिए कहना।

दामोदरदास को रक्तस्राव होता रहे तो उसे पंचगनी-जैसी जगह ले ही जाना चाहिए। ठीक हो जाये तो सुविधानुसार लौट आये। मेरा अनुभव है कि ऐसा बीमार सावरमतीकी जलवायुमें ठीक नही हो पाता। स्वास्थ्य एकदम विगड़नेके वाद पंचगनी आदि स्थानो पर जायें उससे अच्छा यह है कि शरीरमें शक्ति रहते अभी जायें और फिर थोड़े समयमें स्वस्थ होकर सावरमती लौट आयें।

गिरिराजके वारेमें उसको जो पत्र लिखा है उसमें पढ़ लेना।

जमनालाल, किशोरलाल आदिको लिखना कि मै दूसरे कैदियोको न लिखूँ, यह वन्धन है। किशोरलालका पत्र मिल गया है। उसका भोजन-सम्वन्धी प्रयोग सफल हो जाये तो मुझे ईर्ष्या होगी। रमणीकलाल का मामला तो वहुत ही अच्छा रहा। उसे भी मै नही लिख सकता। नरहरिको लिखना कि उसपर ईश्वरके चार हाथोंकी छाया है, नही तो ऐसे सेवाकार्यका अवसर वार-वार क्यों मिलता रहता है।

मुझे वाँसका चरखा भेजनेसे किसी लाभकी सम्भावना नहीं दिखती। कताईके काममें तो मैं मूर्ख और निरा विद्यार्थी ही हूँ। उसके प्रति भक्ति है, उद्यम है, सतर्क हूँ तो भी गति नहीं वढ़ा पाता। इसमें चरखेका दोष क्यों निकाले? मेरी मूर्खता कहाँ है, यह मै नहीं देख पाया हूँ। वाहर था तव मुझे वतानेकी हिम्मत किसीको नही होती थी। १६० तार कत जाते थे इसलिए मै सन्तोष करके वैठ जाता था।

१ से ५. नाम नहीं दिये गये हैं।

इस तरह गति बढ़ानेकी ओर जितना ध्यान देना चाहिए था उतना नही दिया। अपना यह दोष मुझे अब दिखाई देता है। किन्तु मूर्खके मस्तक पर सदा "देरी" की पर्ची चिपकी होती है। अब यदि बाँसका चरखा भेजनेको कहूँ तो यह "नौसिखुएके अनेक कलम" जैसा होगा। ऐसा नही करना है। अपना किया मै आप भुगतूं इसीमें छुटकारा है। मै धीरे-धीरे देख रहा हूँ। जहाँ सुधार हो सके वहाँ सुधार लेता हूँ। फिर शरीरमें ज्यादा ताकत आ जाये तो गति जरूर बढ़ा सकता हूँ। न बढ़े तो जैसे राम रखे वैसे रहेगे। अन्तमे दोषके लिए जिम्मेदार तो उसे ही बनाना है। मेरे यथाशक्ति प्रयत्न करनेके बाद वह मुझे दोष तो नही दे सकता। इस नियमका अपवाद तो है ही नही। और इस नियमका प्रथम और सम्पूर्ण रूपसे पालन करनेवाला वह स्वय है। इसलिए हम निर्भय रह सकते है। वह इतना महान होते हुए भी स्वेच्छाचारी बने तो हम तो बिलकुल ही न उड जायेंगे?

मगल प्रभात

हमारे व्रतोमें दूसरा व्रत ब्रह्मचर्यका है। ठीक तरहसे देखें तो दूसरे सभी व्रत सत्यके व्रतमें से ही उत्पन्न होते है और उसीके सहायक होते है। जिस मनुष्यने सत्य का वरण किया है और उसीकी उपासना करता है वह दूसरी किसी वस्तुकी आराधना करे तो व्यभिचारी ठहरेगा। फिर किसी विकारकी आराधना कैसे की जा सकती है? जिसकी सभी प्रवृत्तियाँ सत्य-दर्शनके उद्देश्यसे है वह सन्तानोत्पत्ति या गृहस्थीके झझटमें कैसे पड सकता है? कोई भोगविलासी सत्यको पा सका है, इसका एक भी उदाहरण हमारे पास नही है।

अथवा अहिंसा-पालनको ले तो उसका पूर्ण पालन ब्रह्मचर्यके बिना असम्भव है। अहिंसा अर्थात् सर्वव्यापी प्रेम। जहाँ पुरुषने एक स्त्रीको या एक स्त्रीने एक पुरुषको प्यार किया वहाँ उनके पास दूसरोके लिए रहा क्या? इसका यही अर्थ हुआ "हम दोनों पहले और दूसरे सब बादमें।" पतिव्रता स्त्री पुरुषके लिए और पत्नीव्रती पुरुष स्त्रीके लिए सर्वस्व बलिदान करनेको तैयार होगा। इसलिए वे सर्वव्यापी प्रेमका पालन कर ही नही सकते, यह स्पष्ट है। वे सारी सृष्टिको अपना कुटुम्ब बना ही नही सकते, क्योकि उनके पास अपना माना हुआ एक कुटुम्ब पहले ही मौजूद है अथवा तैयार हो रहा है। उस कुटुम्बमें जितनी वृद्धि होगी उनके सर्वव्यापी प्रेममें उतना ही विक्षेप होगा। हम देख सकते है कि ऐसा सारे संसारमें हो रहा है। इसलिए अहिंसा-व्रतका पालन करनेवाला विवाह नही कर सकता। विवाहके बाहरके विकारोका तो पूछना ही क्या?

तब जिनका विवाह हो गया है उनका क्या हो? क्या उन्हे सत्य किसी दिन नही मिलेगा? वे कभी सर्वार्पण न कर सकेगे? हमने उनके लिए रास्ता निकाला ही है। विवाहित भी अविवाहित-जैसे हो जायें। इस दिशामें मुझे इतनी सुन्दर और किसी बातका अनुभव नही हुआ। इस स्थितिका आनन्द जिन्होने लूटा है वे साक्षी दे सकेगे। आज तो कह सकते है कि यह प्रयोग सफल सिद्ध हुआ है। विवाहित स्त्री-पुरुष एक दूसरेको भाई-बहन मानने लगें तो इस तरह सभी जजालोसे मुक्त हो

जाये। जगतमें सभी स्त्रियाँ बहनें है, माताएँ है और बेटियाँ हैं। यह विचार ही मनुष्यको एकदम ऊँचा ले जानेवाला है और बन्धनसे मुक्त करनेवाला बन जाता है। इसमें पति-पत्नी कुछ खो नही बैठते बल्कि अपनी पूंजीमें वृद्धि करते हैं, कुटुम्बमे वृद्धि करते है। विकार रूपी मैल निकाल देनेसे प्रेम भी बढता है। विकार चले जानेसे एक-दूसरेकी सेवा ज्यादा अच्छी हो सकती है। आपसी क्लेशका अवसर कम हो जाता है। जहाँ प्रेम स्वार्थी है, एकांगी है, वहाँ क्लेशका ज्यादा अवकाश रहता है।

ऊपरके प्रधान विचार पर मनन करने तथा उसे हृदयमे उतार लेनेके बाद ब्रह्मचर्यसे होनेवाले शारीरिक लाभ, वीर्य-लाभ आदि बहुत गौण हो जाते हैं। जान-बूझकर भोगविलासकी खातिर वीर्यहानि करने तथा शरीरको निचोडनेको कैसी मूर्खता माना जायेगा? वीर्यका उपयोग दोनोंकी शारीरिक और मानसिक शक्तिको बढानेके लिए है। विषय-भोगमें उपयोग करना उसका दुरुपयोग है। और उसके कारण अनेक रोग जड़ पकडते है।

इस ब्रह्मचर्यका पालन मन, वचन और कायासे करना चाहिए। व्रतमात्रके लिए यही समझें। जो शरीरको काबूमे रखता दिखाई देता है किन्तु मनसे विकारोका पोषण करता है वह मूढ मिथ्याचारी है, ऐसा हमने 'गीता' मे पढा है।[1] सबने अनुभव भी किया होगा। मनको विकारी रहने देनेमें और शरीरको दबानेके प्रयत्नमें नुकसान ही है। जहाँ मन है वहाँ अन्ततः शरीर भी जबरदस्ती चला जाता है। यही एक भेद समझ लेनेकी आवश्यकता है। मनको विकारवश होने देना एक बात है। मन अपने-आप अनिच्छासे या जबरदस्ती विकारवश हो जाये या हुआ करे, यह अलग बात है। इन विकारोमें हम सहायक न हो तो अन्तमें जीत ही है। शरीर हाथमे रहता है किन्तु मन नही रहता, ऐसा हम हर क्षण अनुभव करते है। इसलिए शरीरको तुरन्त काबूमे करके मनको नित्य काबूमें रखनेका प्रयत्न करे तो इस तरह हमने कर्त्तव्य-पालन कर लिया। हम मनके वशमे हो जाये तो शरीर और मनका विरोध शुरू होगा और मिथ्याचारका आरम्भ हो जायेगा। जबतक मनोविकारोंको दबाते ही रहेंगे तबतक मन और शरीर दोनों साथ-साथ चल रहे है, ऐसा माना जायेगा।

इस ब्रह्मचर्य-व्रतका पालन बहुत कठिन, लगभग असम्भव माना गया है। उसके कारण ढूँढते हुए यह देखा गया है कि ब्रह्मचर्यका बहुत सकुचित अर्थ किया गया है। जननेन्द्रिय-विकारका निरोध ही ब्रह्मचर्यका पालन माना गया है। मुझे लगता है कि यह अधूरी और सदोष व्याख्या है। विषयमात्रका निरोध ही ब्रह्मचर्य है।

जो दूसरी इन्द्रियोको यहाँ-वहाँ भटकने दे और एक ही को रोकनेका प्रयत्न करे वह निष्फल प्रयत्न कर रहा है। इसमे क्या शक है? कानसे विकारपूर्ण बाते सुने, आँखसे विकार उत्पन्न करनेवाली वस्तु देखे, जीभसे विकारोत्तेजक वस्तुका स्वाद ले, हाथसे उसका स्पर्श करे और ऐसा होते हुए भी जननेन्द्रियको वशमे रखनेका इरादा रखे तो ऐसे व्यक्तिका प्रयत्न तो अग्निमें हाथ देने पर उसे न जलने देनेका प्रयत्न करने जैसा ही हुआ। इसलिए जो जननेन्द्रियको रोकनेका निश्चय करे उसे

१. अध्याय ३, ६।

इन्द्रिय मात्र और उसके विकारोंको रोकनेका निश्चय पहले ही कर लेना चाहिए। मुझे हमेशा ऐसा लगा है कि ब्रह्मचर्यकी संकुचित व्याख्यासे नुकसान हुआ है। मेरा तो दृढ़ मत है और अनुभव है कि यदि हम सभी इन्द्रियोंको एकसाथ वशमें करनेका अभ्यास करें तो जननेन्द्रियको वशमें रखनेका प्रयत्न तत्काल सफल हो सकेगा। इसमें मुख्य चीज स्वादेन्द्रिय है। और इसीलिए उसके संयमको हमने अलग स्थान दिया है। उसपर बादमें विचार करेंगे।.

ब्रह्मचर्यका मूल अर्थ सब याद रखें। ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्मकी – सत्यकी – शोधमें चर्या अर्थात् तत्सम्बन्धी आचार। इस मूल अर्थमें से सर्वेन्द्रिय संयम, यह विशेष अर्थ निकलता है। मात्र जननेन्द्रिय जैसा अधूरा अर्थ तो हम भूल ही जायें।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

४५ पत्र है।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

१०२. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

यरवडा मन्दिर
५ अगस्त, १९३०

प्रिय कुमारप्पा,

मैंने तुम्हारा निबन्ध[1] पढ़ा। बहुत अच्छा है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १००८८) की फोटो-नकलसे।

१. यह उपलब्ध नहीं है।

१०३. पत्र: राधाबहन गांधीको

यरवडा मन्दिर
८ अगस्त, १९३०

चि० राधिका,

तेरा छापे-जैसे अक्षरोंमें लिखा पत्र मिला। काश, मै भी ऐसा लिख पाता! तू यह मत मान बैठना कि मैंने सत्यकी जो व्याख्या की है, उसतक पहुँचा ही नही जा सकता।

रुक्मिणीकी मानसिक स्थितिके बारेमें तू यदि कुछ लिख सके तो लिखना।

कविता तो मैं सर्वथा भूल ही गया हूँ। यदि तू ग्रे की 'एलिजी', 'होरेशियस' और 'साम्स ऑफ डेविड' खूब ध्यानसे पढ़ जाये तो मै बादमें अन्य नाम सुझाऊँगा। ये तीनों अलग-अलग ढगकी हैं और उत्तम है। ये तेरी समझमें आने लायक भी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६८३) से। सौजन्य: राधाबहन चौधरी

१०४. पत्र: बलीबहन वोराको

यरवडा मन्दिर
८ अगस्त, १९३०

चि० बली,

तुम दोनों बहनों और मनुडीके पत्र मिले। रामीको प्रसूतिसे छुटकारा मिलनेका समाचार मिला। आशा है, शिशु दिन-दिन बढ़ रहा होगा। तुम दोनो बहनें उसकी सेवामें डटी हुई हो, अत: रामीके बारेमें मुझे कोई चिन्ता नही है। जिनसे तुम्हें स्नेह हो, उनकी सेवा करनेमें कोई तुम्हारी बराबरी नही कर सकता।

यह जानकर मुझे बहुत सन्तोष होता है कि तुम दोनोंमें मेल है।

इस बार मै मनुड़ीको नहीं लिख रहा हूँ, क्योंकि और बहुतसे पत्र लिखने है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५०५९)की फोटो-नकलसे। सौजन्य: सुरेन्द्र मशरूवाला

१०५. पत्र : मैत्री गिरिको

यरवडा मन्दिर
८ अगस्त, १९३०

चि० मैत्री,

तेरा पत्र मिला। भूले होती है, उसकी कोई चिन्ता नही करनी चाहिए। तू सावधानीसे मुझे पत्र लिखती रहना। यह बहुत अच्छा हुआ कि तेरा शरीर स्वस्थ हो गया।

तेरी यह बात बिलकुल सच है कि जैसे भोजनमें मिताहार अच्छा होता है, वैसा ही मानसिक आहारके बारेमें होना चाहिए। प्रभुभाई बड़े सुयोग्य व्यक्ति हैं, तू उनसे सीखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६२१६) की फोटो-नकलसे।

१०६. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
८ अगस्त, १९३०

चि० प्रेमा,

पिछले वर्षके रक्षा-बन्धनकी याद मुझे अच्छी तरह है। तेरे राखी बाँधने पर सबको आश्चर्य हुआ था, यह भी याद है। इस राखीके पवित्र धागेसे तू बँध गई, यह याद रखनेकी जरूरत नही है, क्योंकि यह बन्धन तो सदा बना हुआ है। इस बार तेरे अधिकारका उपयोग काकासाहब करेंगे। लेकिन इस तरह यदि वे भी बँध गये तो? लेकिन जो कभीके बँध चुके हो उन्हें किस बातका भय? इसलिए कोई कठिनाई नही है; जो बाँधे उसकी स्थिति तो ठीक है, लेकिन जो बँधवाये उसका क्या हाल होगा?

तू पुस्तकालय सँभालती है, यह मुझे अच्छा लगता है।

शीलाकी तबीयत अच्छी हो जानी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६७७) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक, जी० एन० १०२२९ की फोटो-नकलसे भी।

१०७. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

यरवडा मन्दिर
८ अगस्त, १९३०

चि० रुक्मिणी,

आखिर तेरा पत्र मिला तो सही। जल्दीसे जल्दी अपना शरीर सँभाल लेनेकी चेष्टा करना। अपनेको हल्का रखना। जो काम तू कर सके वह करना; या अध्ययनमें जुट जाना। यदि तू मुझे मुक्त मनसे, निःशंक होकर लिखे तो मुझे प्रसन्नता होगी। अब डाक्टर क्या कहता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९३१३) से। सौजन्य : बनारसीलाल बजाज

१०८. पत्र : शारदा सी० शाहको

यरवदा मन्दिर
९ अगस्त, १९३०

चि० शारदा (बबु),

तेरा सुन्दर पत्र मिला। यदि हम स्वप्नमें भजन गायें, ईश्वरको देखें या सत्-जनोंसे मिलें तो हमारे ये स्वप्न निर्दोष होंगे। यदि हम स्वप्नमें स्वादका आनन्द उठायें, किसीको धोखा दें, क्रोध करें या हमारे मनमें दूषित विचार उठें तो वे बुरे स्वप्न होंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८८७) से। सौजन्य : शारदाबहन जी० चोखावाला

१०९. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
९ अगस्त, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। मेरे पत्र तुझे क्यो नही मिलते, यह बात मेरी समझमें नही आती। किसी भी डाकमें मै तुझे पत्र लिखना भूल गया होऊँ, ऐसा मुझे याद नही आता। लेकिन किसी समय तुझे पत्र न मिले, तो समझ लेना कि मै पराधीन हूँ। बहुत करके अब तो यहाँसे भी सब पत्र भेजे जाते है। मेरी चिन्ता न करना। तेरा शरीर क्षीण नही होना चाहिए। शेष उत्तर मैंने पिछले पत्रमें दे दिये है। पिताजीकी क्या बात करे? बिस्तरमें पड गये है फिर भी उनमें सिंहका-सा उत्साह और साहस है। तूने उनके घर जन्म लिया है, तू भी उनके इन गुणोको अवश्य ग्रहण करेगी। भगवान तुझे सिंहनी बनायेगा!

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

काकासाहब आनन्दसे है। तुझे आशीर्वाद भेजते हैं।

गुजराती (जी० एन० ३३६६) की फोटो-नकलसे।

११०. पत्र : सत्यादेवी गिरिको[1]

यरवडा मन्दिर
९ अगस्त, १९३०

चि० सत्य देवी,

तेरा पत्र मिला। तूने पेड़ अच्छे निकाले है। अब तुझे चाहिए कि तू जिन्दा पेडोको देखकर अपने चित्रोसे उनकी तुलना करे, जिससे तेरा चित्र देखनेवालेको ऐसा लगे, मानो वह असल पेड देख रहा हो। अक्षरोको ठीक-सा मोड़ देनेसे पहले सही अक्षर निकालनेका पक्का अभ्यास कर लेना चाहिए। तुझे अच्छी बातें सीखनेका शौक है। इसलिए कहता हूँ कि तू अपने हिज्जे अभीसे सही लिखना सीख ले। कातनेमें आलस मत करना।[2]

बापूके आशीर्वाद

बापूकी विराट् वत्सलता

१. दलबहादुर गिरिकी दूसरी कन्या।
२. मूल पत्र गुजरातीमें था।

१११. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
९ अगस्त, १९३०

प्रिय भगिनि,

सतीशबाबूकी दिनचर्या पढ़कर बड़ा आनंद होता है। तकली पर एक दिनमें एक आदमी १००० गज नीकालता है तो एक घंटेका कितना कातना है? इतनी गति मैं तो नहिं ला सकता हुं। जो बहिन गिरफ्तार हुई उनके लड़कोंकी देखभाल कौन करता है?

कृष्णदासका कुछ पता है? उनके तरफसे कुछ खत आते हैं।

तारीणीको मेरे आशीर्वाद दो। अरुण कहां है? चारु साथमें है क्या? दोनोंको आशीर्वाद।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६७० की फ़ोटो-नकलसे।

११२. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
१० अगस्त, १९३०

चि० मीरा,

मुझे पटनासे भेजा तुम्हारा प्रेम-पत्र मिला। तुम्हारे अनुभव मूल्यवान हैं। मैं आशा करता हूँ कि पेचिशके लक्षण अब बिलकुल दूर हो गये हैं।

मैं नये चरखेको ही चला रहा हूँ। गति अभी भी वही है। लेकिन मैं इसे छोड़नेवाला नहीं हूँ। यह एक अमूल्य निधि है।

भजनोंका अनुवाद-कार्य घड़ीकी गतिके समान नियमित रूपसे चल रहा है, लेकिन मैं उसे और अधिक समय नहीं दे पाया हूँ। इसलिए जैसाकि मैंने अपने एक पत्रमें लिखा है, समय-सीमा वही है।

श्री हसन इमामको पत्र लिखना तो मेरी याद दिला देना और उन्हें बता देना कि दस वर्ष पहलेकी बातचीत उनको स्मरण है, यह जानकर मुझे बहुत आनन्द हुआ।

मेरा वजन दो पौंड कम हुआ है, लेकिन चिन्ताकी कोई बात नहीं है। कब्ज दूर ही नहीं होता, इस कारण दूधकी मात्रामें कमी करनी पड़ी। जितनी मात्रा लेता था उतनी ही फिर लेने लगा तो वजन फिर बढ़ जायेगा। स्वास्थ्य खोनेकी अपेक्षा

वजन खोना ज्यादा अच्छा है। शक्ति वैसी ही बनी हुई है। यह समाचार प्रकाशनके लिए नही है। मैंने सत्यकी खातिर यह सूचना तुम्हे दी है। मै तुम्हें अपने स्वास्थ्यके बारेमें बतानेको वचनबद्ध हूँ, और इसीलिए वजन कम होनेकी बात छिपा नही सकता।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४०६) से। सौजन्य : मीराबहन, जी० एन० ९६४० से भी।

११३. पत्र : शिवाभाई पटेलको

यरवडा मन्दिर
१० अगस्त, १९३०

चि० शिवाभाई,

मुझे यह याद नही पड़ता कि तुम्हारा अलगसे लिखा हुआ पत्र मुझे मिला था या नही। क्या लिखा था उसमें?

अपनी कमजोरीको दूर करनेका एक रास्ता तो यह है कि जिस दिन 'गीता' के जिस अध्यायका पाठ हो, उस दिन उस अध्यायमें से जो भी श्लोक रुचे, कोई भी काम करते हुए पूरे दिन उस श्लोकका निरन्तर पाठ करे। ऐसा करनेसे अन्य हानिकर विचार दूर हो जाते है। यह उपाय मेरा आजमाया हुआ है। मै जानता हूँ कि रायचन्दभाई ऐसा ही किया करते थे। अन्य बहुतसे लोगोका भी यही अनुभव है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९५००)की फोटो-नकलसे।

११४. पत्र : हरिइच्छा देसाईको

यरवडा मन्दिर
१० अगस्त, १९३०

चि० हरिइच्छा,

तेरा पत्र पढ़कर मुझे वहुत प्रसन्नता हुई। तूने इतने खराव अक्षर क्यों लिखे हैं? अक्षर वनानेके वारेमें रामदास स्वामीकी[1] छन्दोवद्ध कड़ियाँ हैं जिनका अनुवाद मैंने आश्रमको भेजा है। हरिभाई उसकी नकल तुझे भेज देंगे।

कताई प्रतियोगितामें किसी वहनको जीतना चाहिए। तेरी तवीयत कैसे विगड़ गई? मैं तो तुझे खासी स्वस्थ मानता था। वुखारको भगाना। तेरी आँख कैसी है? यदि तुम सव तुरन्त आश्रम चली जाओ तो मुझे प्रसन्नता होगी। चन्दन, तारा और वसन्त भी मुझे पत्र लिखें।

काकासाहव का आशीर्वाद।

वापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७४६५)की फोटो-नकलसे।

११५. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
१० अगस्त, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुम्हारा पत्र मिला। मै समझता हूँ कि तुम्हें आश्रम नही छोड़ना पड़ेगा। किन्तु तुम यज्ञका महत्त्व और दैनन्दिनी रखनेकी आवश्यकता समझ नही सके। ऐसे ही समयमें नियमन — अनुशासन — हमारे लिए कल्पद्रुम सिद्ध होता है। सभी लोग सदा सव चीजोंकी एक-सी कीमत नही आँक सकते। इसलिए सहज रास्ता यह हुआ कि जिस संस्थामें रहा जाये उसके नियमोंका आँख मूँदकर पालन किया जाये। भले ही दैनन्दिनीमें एक ही वात प्रतिदिन क्यों न लिखनी पड़े। दैनन्दिनीकी यही महत्ता है, वशर्ते कि उसमें लिखी गई वातें सत्य हों। जिसका जीवन सौर-मण्डलकी भाँति घूमता है यदि वह पुरुष सचाईसे अपनी दैनन्दिनी लिख सके तो वह धन्य है। इसलिए तुम्हें

१. महाराष्ट्रके १७वीं सदीके सन्त कवि।

मेरी यह सलाह है कि जो-कुछ नारणदास कहे उसे श्रद्धापूर्वक करो। मुझे उसके निर्णय पर पूरा विश्वास है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२४८)की फोटो-नकलसे।

११६. पत्र : लक्ष्मीबहन खरेको

यरवडा मन्दिर
११ अगस्त, १९३०

चि० लक्ष्मीबहन (खरे),

तुम्हारे पराक्रमकी बात छगनलालने मुझे लिखी है। ईश्वर तुम्हें अटूट बल दे और तुम दीर्घायु हो।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७५) से। सौजन्य : लक्ष्मीबहन खरे

११७. पत्र : वा० गो० देसाईको

यरवडा मन्दिर
११ अगस्त, १९३०

भाईश्री ५ वालजी,

आपको लिखा हुआ यह पत्र पूरी टुकड़ीके लिए है। आप लोगोमें से कौन-कौन छूटे और सब लोग कैसे हैं, लिखें। सबने [जेलमें] क्या किया? आपका स्वास्थ्य कैसा रहता है? क्या शरीर कुछ और बना?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

जो मुझे पत्र लिखना चाहे वे लिखें।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७४०५) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : वा० गो० देसाई

११८. पत्र : नारणदास गांधीको

मंगल प्रभात, १२ अगस्त, १९३०

चि० नारणदास,

अस्वाद : इस व्रतका ब्रह्मचर्यके साथ बहुत निकट सम्बन्ध है। मेरा यह अनुभव है कि इस व्रतमें सफल हो जायें तो ब्रह्मचर्य अर्थात् जननेन्द्रिय-संयम बिल्कुल आसान हो जाये। किन्तु सामान्य तौर पर इसे व्रतोंमें अलग स्थान नहीं दिया जाता। स्वादको बड़े-बड़े मुनि भी नहीं जीत सके, इसलिए इस व्रतको अलग स्थान नहीं मिला। यह तो मेरा अनुमान मात्र है। ऐसा हो या न हो, हमने इस व्रतको अलग स्थान दिया है और उसपर स्वतन्त्र रूपसे विचार कर लेना ठीक होगा।

अस्वाद अर्थात् स्वाद न लेना। स्वाद अर्थात् रस। जिस तरह औषधि लेते समय हम वह स्वादिष्ट है या नहीं इसका विचार किये बिना, उसे शरीरके लिए जरूरी मानकर आवश्यक मात्रामें खा लेते हैं, वैसा ही अन्नके बारेमें समझें। अन्न अर्थात् खानेकी सभी वस्तुएँ; इसलिए उसमें दूध, फल भी शामिल हैं। जिस तरह दवा [आवश्यकतासे] कम मात्रामें लेने पर असर नहीं करती अथवा थोड़ा असर करती है और ज्यादा लेने पर हानि करती है, वैसा ही अन्नके बारेमें भी है। इसलिए कोई चीज स्वाद लेनेके लिए खाना व्रतका भंग करना है। सुस्वादु लगनेवाली वस्तु अधिक लेना इस व्रतका तो सहज भंग हुआ ही। इससे समझा जा सकता है कि किसी वस्तुका स्वाद बढ़ानेके या बदलनेके लिए, अस्वाद दूर करनेके लिए नमक मिलाना व्रत भंग है। किन्तु अमुक प्रमाणमें अन्नमें नमककी जरूरत है यह हम जानते हों और तब फिर उसमें नमक डालें तो व्रत भंग नहीं होता। शरीर-पोषणके लिए आवश्यकता न होने पर भी मनको धोखा देनेके लिए आवश्यकता का आरोपण करके कोई वस्तु लेना तो मिथ्याचार माना जायेगा।

इस तरह विचार करनेपर हम देखेंगे कि जो अनेक वस्तुएँ हम लेते हैं वे शरीर-रक्षाके लिए आवश्यक न होनेके कारण त्याज्य हो जाती हैं। जिसके लिए इस तरह असंख्य वस्तुओंका त्याग आसान हो जाये उसके विकारमात्र शान्त हो जाते हैं। 'एक हाँड़ीके लिए तेरह वस्तुएँ!' 'पेट बेगार कराता है!' 'पेट नाच नचाता है!' इन सभी वचनोंमें बहुत सार है। इस विषय पर इतना कम ध्यान दिया गया है कि व्रतकी दृष्टिसे खुराकको तय करना लगभग असम्भव हो गया है। फिर बचपनमें ही माँ-बाप झूठे लाड़-दुलारमें पड़ कर अनेक प्रकारकी स्वादिष्ट वस्तुएँ खिला-खिला कर बच्चोंके शरीरको बिगाड़ डालते हैं और जीभको कुतिया बना डालते हैं; जिससे समझदार बनने तक वे संसारमें शरीरकी दृष्टिसे रोगी और स्वादकी दृष्टिसे महा-विकारी बन जाते हैं। इसका कटु परिणाम हम हर जगह पग-पगपर देखते हैं। लोग अनेक प्रकारके खर्चमें पड़ जाते हैं; उन्हें वैद्य और डाक्टरोंका इलाज करवाना पड़ता

है और वे शरीर तथा इन्द्रियोंको वशमें रखनेके बदले उनके गुलाम बनकर अपंग-जैसे हो जाते हैं। एक अनुभवी वैद्यका कहना है कि जगत्‌में उसने एक भी नीरोग व्यक्ति नहीं देखा। जरा भी स्वाद लेनेकी आदत पड़ी, तो शरीर भ्रष्ट हुआ; और तभी शरीरके लिए उपवासकी आवश्यकता पैदा हुई।

किन्तु इन विचारोंसे घबरानेकी जरूरत नहीं है। अस्वाद-व्रतकी कठिनाईको देखकर उसे छोड़ देना भी जरूरी नहीं है। व्रत लेनेका अर्थ व्रत लेते ही उसका सम्पूर्ण रूपसे पालन करने लगना नहीं है। व्रत ले और ईमानदारीसे उसका सम्पूर्ण पालन करनेका दृढ़ प्रयत्न मन, वचन और कर्मसे मृत्युपर्यन्त करे। अमुक व्रत कठिन है, इसलिए उसकी जरा ढीली व्याख्या करके मनको धोखा न दें। आदर्शको अपनी सुविधाके अनुसार ढालनेमें असत्य है, हमारा पतन है। आदर्शको स्वतन्त्र रूपसे जानें; वह चाहे जितना कठिन क्यों न हो, तो भी उसमें सफल होनेका जी-जानसे प्रयत्न करना ही परम अर्थ है — पुरुषार्थ है; 'पुरुष' शब्दका अर्थ केवल नर न करके उसका मूल अर्थ ले। पुरमें अर्थात् जो शरीरमें है वह पुरुष। ऐसा अर्थ करने पर पुरुषार्थ शब्दका उपयोग नर-नारी दोनोंके लिए हो सकता है। महाव्रतोंका तीनों काल सम्पूर्ण रूपसे पालन करनेमें जो समर्थ है उसे इस जगतमें कुछ भी करनेकी जरूरत नहीं। वह भगवान है, मुक्त है। हम तो क्षुद्र, मुमुक्षु, जिज्ञासु, सत्यके आग्रही, उसकी शोध करनेवाले प्राणी हैं। इसलिए 'गीता'की भाषामें धीरे-धीरे किन्तु अतन्द्रित रहकर प्रयत्न करते रहें। ऐसा करेंगे तो किसी दिन प्रभु-प्रसादीके लायक बनेंगे और तब हमारे रसमात्र यानी लालसाएँ जल जायेंगी।

यदि हम अस्वाद-व्रतके महत्त्वको समझ गये हों तो हम उसके पालनके लिए नया प्रयत्न करें। उसके लिए चौबीस घंटे खानेका ही विचार करनेकी आवश्यकता नहीं रहती। सावधान और जागृत रहनेकी अवश्य ही बहुत आवश्यकता रहती है। ऐसा करनेसे थोड़े समयमें हमें अन्दाज लग जायेगा कि हम क्या चीज स्वादके वश होकर और क्या शरीरका पोषण करनेके लिए खाते हैं। यह मालूम हो जाने पर हम दृढ़तापूर्वक स्वाद कम ही करते जायें। इस दृष्टिसे विचार करते हुए अस्वाद-वृत्तिसे की गई संयुक्त रसोई बहुत सहायक होती है। यहाँ हमें रोज यह विचार नहीं करना पड़ता कि क्या खायेंगे या क्या बनायेंगे। किन्तु जो तैयार किया गया हो और जो हमारे लिए त्याज्य न हो, उसे ईश्वरका अनुग्रह मानकर मनमें उसकी आलोचना किये बिना, जितना शरीरके लिए आवश्यक हो उतना खाकर सन्तोषपूर्वक उठ जायें। ऐसा करनेवाला सहज ही अस्वाद-व्रतका पालन करता है। संयुक्त रसोई करनेवाले हमारा बोझ हलका करते हैं। वे हमारे व्रतके रक्षक बन जाते हैं। वे स्वादके लिए कोई चीज न बनायें। केवल समाजके शरीरके पोषणके लिए ही खाना तैयार करें। अच्छी तरह देखें तो आदर्श स्थितिमें अग्निका उपयोग कमसे-कम या बिलकुल न किया जाये। सूर्य रूपी महाग्निसे जो वस्तुएँ पकती हैं उन्हींमें से हमें खानेके लिए चीजें प्राप्त करनी चाहिए। इस तरह विचार करें तो यह सिद्ध होता है कि मनुष्य केवल फलाहारी प्राणी है, किन्तु यहाँ इतनी गहराईमें जानेकी जरूरत नहीं। यहाँ तो अस्वाद-व्रत क्या है, उसमें क्या कठिनाइयाँ हैं और क्या नहीं है तथा उसका

ब्रह्मचर्य-पालनके साथ कितना निकटका सम्बन्ध है, यही विचार करना था। इतना मनमें उतारनेके बाद सभी यथाशक्ति इस व्रतमें सफल होनेका शुभ प्रयत्न करें।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो–९: श्री नारणदास गांधीने; सी० डब्ल्यू० ८१२१ से भी। सौजन्य: नारणदास गांधी

११९. पत्र: सप्रू और जयकरको[1]

यरवडा सेंट्रल जेल
१५ अगस्त, १९३०

प्रिय मित्रो,

ब्रिटिश सरकार और कांग्रेसके बीच शान्तिपूर्ण समझौता करानेकी कोशिश करनेका जो भार आपने उठाया है उसके लिए हम आपके हृदयसे कृतज्ञ हैं। आप दोनों तथा वाइसराय महोदयके बीच हुए पत्र-व्यवहारको पढ़ने तथा आपके साथ लम्बी बातचीत करने और आपसमें विचार करनेके बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अभी ऐसा कोई समझौता करनेका समय नही आया है जो हमारे देशके लिए सम्मानजनक हो। हालाँकि पिछले पाँच महीनोमें शानदार जन-जागृति हुई है और विभिन्न धर्मोंके सभी श्रेणी और वर्गोंके लोगोने जबर्दस्त कष्टसहन किया है, तथापि हमें लगता है कि उद्देश्यकी तात्कालिक प्राप्तिके लिए जितने व्यापक पैमाने पर और जैसा अखण्डित कष्टसहन आवश्यक है उतना व्यापक या अखण्ड यह नही रहा है। यह कहनेकी जरूरत नही है कि हम आपके या वाइसरायके इस विचारसे तनिक भी सहमत नही हैं कि सविनय अवज्ञासे देशको हानि पहुँची है अथवा यह गलत वक्त पर शुरू किया गया है या अवैधानिक है। इंग्लैंडका इतिहास ऐसे रक्तरंजित विद्रोहोंके उदाहरणोंसे भरा पड़ा है जिनकी प्रशंसा अंग्रेजोंने मुक्त कंठसे की है और हमें भी वैसा ही करना सिखाया गया है। इसलिए वाइसराय महोदय अथवा किसी भी प्रबुद्ध अंग्रेजके लिए एक ऐसे विद्रोहकी भर्त्सना करना शोभाजनक नही है जिसका इरादा तो शान्तिपूर्ण है ही, क्रियात्मक रूपमें भी जो बहुत बड़ी हदतक शान्तिपूर्ण रहा है। लेकिन वर्तमान सविनय अवज्ञा अभियानकी सरकारी या गैर-सरकारी भर्त्सनाके विरुद्ध हम कुछ नहीं कहना चाहते। हम ऐसा मानते हैं कि इस आन्दोलनको जो अद्भुत जन-समर्थन प्राप्त हुआ है उससे इस आन्दोलनका औचित्य स्वयंसिद्ध है। यहाँ तो जो

१. १४ और १५ अगस्त, १९३०को यरवडा जेलमें एक ओर सर तेज बहादुर सप्रू और मु० रा० जयकर तथा दूसरी ओर गांधीजी, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, डा० सैयद महमूद आदिके बीच बातचीत हुई थी। बातचीतके बाद सप्रू और जयकरको यह पत्र दिया गया था और उन्हें अनुमति दी गई थी कि वे यह पत्र वाइसरायको भी दिखा सकते हैं। देखिए परिशिष्ट २।

मुद्दा है वह यह तथ्य है कि हमे आपके साथ कामना करते खुशी होती है कि यदि किसी भी प्रकार सम्भव हो तो सविनय अवज्ञा आन्दोलनको समाप्त अथवा स्थगित कर दिया जाये। हमारे लिए यह खुशीकी बात नही हो सकती कि हम देशके पुरुषों, स्त्रियो और यहाँ तक कि बच्चोको भी नाहक ही ऐसी स्थितिमे डाले जिसमें उन्हे जेल जाना पड़े, तथा पुलिसकी लाठियाँ और इनसे भी खराब चीजें सहनी पड़ें। आप विश्वास करे, और आपके जरिये हम वाइसराय महोदयसे भी विश्वास करनेकी आशा रखते है, कि हम सम्मानपूर्ण शान्ति स्थापित करनेके लिए हर सम्भव उपाय पर विचार करनेमें कोई कसर नही छोडेंगे। लेकिन हम यह स्वीकार करते हैं कि अभी तक हमें क्षितिज पर इसके कोई चिह्न नही दिखाई पडते। इस बातके कोई लक्षण हमें नही दिखाई पड़ते कि अग्रेज अधिकारी-जगत यह मानने लगा हो कि भारतके लिए क्या सर्वोत्तम है इसके निर्णयका अधिकार भारतके स्त्रियो और पुरुषोको है। अधिकारियो द्वारा नेकनीयतीके दावोको, जो अक्सर सद्भावपूर्वक किये जाते है, हम अविश्वासकी दृष्टिसे देखते हैं। अग्रेज लोग एक लम्बे समयसे इस प्राचीन देशका जो शोषण करते रहे हैं, उसके कारण अब उनकी आँखें यह देखनेमें असमर्थ हो गई है कि इस शोषणके कारण इस देशकी कितनी नैतिक, आर्थिक और राजनीतिक पामाली हो चुकी है। वे यह नही देखना चाहते कि उनके लिए जो चीज करनी सबसे अधिक जरूरी है वह यह कि वे हमारी पीठपर से उतर जायें और सौ सालके ब्रिटिश आधिपत्यके दौरान हमारे देशको हर दृष्टिसे हीन बनानेकी जो प्रक्रिया चलती रही है उससे उबरनेमें हमारी मदद करके अपनी पिछली गलतियोकी कुछ क्षतिपूर्ति करे। लेकिन हम जानते हैं कि आप तथा हमारे कुछ विद्वान देशवासी ऐसा नही मानते। आप मानते हैं कि हृदय-परिवर्तन हो चुका है, या कमसे-कम इतना तो हो ही गया है जिससे प्रस्तावित सम्मेलनमें भाग लेना उचित ठहरता है। अत. जिन सीमाओके भीतर हमें काम करना पड रहा है उनके बावजूद हम अपनी क्षमता-भर आपके साथ खुशी-खुशी सहयोग करेंगे।

हमारी जो परिस्थितियाँ हैं उनको देखते हुए हम आपके मैत्रीपूर्ण प्रयत्नोका जो अधिकसे-अधिक प्रत्युत्तर दे सकते है, वह निम्नलिखित है।

हमें लगता है कि प्रस्तावित सम्मेलनके सम्बन्धमें आपके पत्रका जो उत्तर वाइसरायने दिया है उसकी भाषा इतनी अस्पष्ट है कि पिछले साल लाहौरमें निर्धारित राष्ट्रीय माँगकी दृष्टिसे हम उसका मूल्य निश्चित नही कर सकते और न ही हम आधिकारिक रूपसे तबतक कुछ कहनेकी स्थितिमें हैं जबतक कि इस प्रश्नको समुचित रूपसे गठित कार्य-समितिकी बैठकमें और यदि आवश्यक हो तो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके सामने पेश नही किया जाता। लेकिन हम यह कह सकते हैं कि हमारे लिए व्यक्तिगत रूपसे कोई हल तबतक सतोषजनक नही होगा जबतक कि (क) उसमें स्पष्ट रूपसे भारतका यह अधिकार नही स्वीकार किया जाता कि वह इच्छा होनेपर ब्रिटिश साम्राज्यसे अलग हो सकता है, (ख) वह भारतको ऐसी एक पूर्णत. राष्ट्रीय सरकार नही प्रदान करता जो भारतकी जनताके प्रति उत्तरदायी हो और जिसमें आर्थिक नियंत्रण और प्रतिरक्षा सेनाओंका नियंत्रण भी शामिल हो और जिसमें वे ग्यारह मुद्दे भी शामिल हों जिन्हें गाधीजीने वाइसरायको लिखे अपने पत्रमें

उठाया है, और (ग) वह भारतको यह अधिकार नही देता कि वह ऐसे सभी ब्रिटिश दावों, रियायतों तथा ऐसी ही अन्य चीजोंको – जिनमें भारतका सार्वजनिक ऋण भी शामिल है – जिन्हे राष्ट्रीय सरकार अनुचित समझे या भारतकी जनताके हितोंके विपरीत समझे, आवश्यक होनेपर एक स्वतंत्र न्यायाधिकरणके सामने रख सके।

टिप्पणी: सत्ता-हस्तांतरणके दौरान भारतके हितमें जो भी समंजन करना आवश्यक हो जाये उसका निर्धारण भारतके निर्वाचित प्रतिनिधिगण करेंगे।

(२) यदि पूर्वोक्त बातें ब्रिटिश सरकारको व्यवहार्य लगें और इस आशयकी एक सन्तोषजनक घोषणा कर दी जाती है तो हम कार्य-समितिको सविनय अवज्ञा, अर्थात कतिपय कानूनोंकी अवज्ञाकी खातिर अवज्ञाका आन्दोलन समाप्त करनेकी सलाह देंगे, लेकिन विदेशी वस्त्रो और शरावकी दूकानों पर शान्तिपूर्ण धरना तबतक जारी रखा जायेगा जबतक सरकार स्वयं शराव और विदेशी वस्त्रो पर निषेध लागू नही करती। जनता द्वारा नमकका निर्माण जारी रखा जायेगा और नमक अधिनियमकी दण्डात्मक धाराओंको लागू नही किया जाना चाहिए। सरकारी या निजी नमक-भण्डारों पर धावा नही किया जायेगा।

(३) सविनय अवज्ञा समाप्त करनेके साथ ही (क) ऐसे सभी सत्याग्रही कैदी और अन्य राजनीतिक कैदी जिन्हें सजा दी जा चुकी है या जिन पर मुकदमा चल रहा है लेकिन जो हिंसा करने या हिंसा भड़कानेके अपराधी नही है, छोड़ दिये जायें, (ख) नमक अधिनियम, प्रेस अधिनियम, राजस्व अधिनियम आदिके अधीन जब्त की गई सम्पत्ति लौटा दी जानी चाहिए, (ग) सजा-प्राप्त सत्याग्रहियोसे, या प्रेस अधि-नियमके अधीन किये गये जुर्माने और जमानतोंकी रकम वापस कर दी जानी चाहिए, (घ) सविनय अवज्ञा आन्दोलनके दौरान जिन अधिकारियोंने, जिनमें ग्राम-अधिकारी भी शामिल हैं, इस्तीफा दे दिया हो अथवा जिन्हें बर्खास्त कर दिया गया हो, उनमें से जो लोग फिरसे सरकारी नौकरीमें आना चाहें उन्हे बहाल कर दिया जाना चाहिए।

टिप्पणी: पूर्वोक्त उपधाराएँ असहयोग आन्दोलनकी अवधि पर भी लागू होती हैं।

(ङ) वाइसराय द्वारा जारी किये गये सभी अध्यादेश रद कर दिये जायें।

(४) प्रस्तावित सम्मेलनमें किन्हें शामिल किया जायेगा, यह प्रश्न और उसमें कांग्रेसके शामिल होनेका सवाल तभी तय किया जा सकता है जब पहले पूर्वोक्त आरम्भिक बातें सन्तोषजनक रूपसे तय हो जायें।[1]

हृदयसे आपके,

मो० क० गांधी

मोतीलाल नेहरू जयरामदास दौलतराम
सरोजिनी नायडू सैयद महमूद
वल्लभभाई पटेल जवाहरलाल नेहरू

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ५-९-१९३०

१. इस पत्रको लेकर सप्रू और जयकर २१ और २८ अगस्तके बीच शिमलामें वाइसरायसे मिले थे।

१२०. पत्र : राधाबहन गांधीको

यरवडा मन्दिर
१८ अगस्त, १९३०

चि० राधिका,

तेरा पत्र मिला। तू कितना दूध पीती है और कौन-कौनसे फल लेती है? क्या तुझे कब्ज रहता है? यदि तू पर्याप्त दूध पिये तो तुझे थकावट होगी ही नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६८४) से। सौजन्य : राधाबहन चौधरी

१२१. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
१८ अगस्त, १९३०

चि० प्रेमा,

तू अधीर मत होना। मनको जीतना सहल नही है। लेकिन प्रयत्नसे वह जीता जा सकता है, ऐसी अटल श्रद्धा रखनी चाहिए।

करेलोका शरीर पर कैसा असर हुआ? उनका रस निकाल देनेकी कोई जरूरत नहीं होती। उन्हें पीस कर अथवा कस करके ज्यो-का-त्यों नीबू और नमकके साथ लिया जा सकता है।

प्रार्थनाकी आवश्यकताके बारेमें सारे जगतका अनुभव है। उसपर विश्वास रखें तो मन लगता है।

बहुत जल्दी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६७८) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कटक; जी० एन० १०२३० की फोटो-नकलसे भी।

१२२. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
१८ अगस्त, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। हमें तो हर स्थितिमें शान्त रहना सीखना चाहिए। आज तो मुझे पत्र लिखनेका बहुत कम समय मिला और आखिरी मिनटमें यह पत्र लिख पाया हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२८५) की फोटो-नकलसे।

१२३. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

१८ अगस्त, १९३०

चि० रुक्मिणी,

तेरा पत्र मिला। सबके पत्र कौन पढता है? जिन पत्रो पर यह लिखा हो "इस पत्रको अन्य कोई न पढ़े", उन पत्रोंको कदापि नही पढ़ना चाहिए। अपना स्वास्थ्य बहुत अच्छा कर लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९०५१)की फोटो-नकलसे।

१२४. पत्र : कुँवरजी पारेखको

१८ अगस्त, १९३०

चि० कुँवरजी,

तुम्हारा पत्र मिला। आखिर टोपीके वारेमें क्या हुआ, लिखना। मुझे पत्र लिखते रहना।

मेरी ओरसे भाई हीरजीको धन्यवाद पहुँचा देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९७१६)की फोटो-नकलसे।

१२५. पत्र: रेहाना तैयबजीको

यरवडा मन्दिर
१८ अगस्त, १९३०

चि० रेहाना,

खुदा हाफिज[१],

तू अपने गुजराती पत्रोंमें तो कमाल कर रही है। मुझे पत्र लिखती रहना। श्रीमती लुकमानीकी वानर-सेनाको तू भजन सिखाती है, यह तो बहुत ही अच्छा है। तू जो-कुछ भी करे, अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखते हुए करना। तेरा पत्र और खुली चिट्ठी मेरे देखनेमें नहीं आये।

बाबाजान किसकी लिखी शरीअतका तर्जुमा कर रहे हैं? अम्माजान और जो अन्य कुटुम्बी वहाँ हों उन सबको मेरा वन्देमातरम्।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९६१९)की फोटो-नकलसे।

१२६. पत्र: रोहिणी कन्हैयालाल देसाईको

१८ अगस्त, १९३०

चि० रोहिणी,

तेरा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। मौका निकालकर हमीदाबहनको गुजराती सिखा देना। ईश्वर तुम सबको लम्बी उम्र दे और सच्ची सेविका बनाये।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २६५१)की फोटो-नकलसे।

१. ये शब्द उर्दूमें हैं।

१२७. पत्र : मणिबहन पटेलको

यरवडा मन्दिर
१८ अगस्त, १९३०

चि० मणि (पटेल),

तेरा पत्र मिला। बापू मेरे साथ चार-पाँच दिन रहकर गये। तेरे समाचार मिले। ईश्वर तेरा भला ही करेगा। मुझे लिखती रहना। डाह्याभाईसे लिखनेको कहना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो - ४ : मणिबहेन पटेलने

१२८. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
१८ अगस्त, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। इस समय देशमें जो परिस्थितियाँ हैं उनको देखते हुए सूखे मेवे अनावश्यक ही लेता रहूँ, ऐसी इच्छा नहीं होती। आज अधिक लिखनेका समय नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३४२७) की फोटो-नकलसे।

१२९. पत्र : जयप्रकाश नारायणको

यरवडा मन्दिर
१८ अगस्त, १९३०

चि० जयप्रकाश,

तुमारा खत मीला। तुमारे शातिके खबर सुनकर मुझको आनंद होता है। आजकल तो जवाहरलाल मेरे साथ हि है। तुम दोनोका शरीर अच्छा रहता होगा।

मुझे लीखते रहो।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ३४२८ की फोटो-नकलसे।

१३०. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
१८ अगस्त, १९३०

चि० मीरा,

इस बार मुझे पिछले सप्ताहसे भी ज्यादा सक्षेपमें लिखना होगा। इस समय रातके दस बज रहे हैं — जो मेरे लिए अत्यन्त असामान्य है। और यदि मुझे समय की पावन्दी रखनी है, जैसीकि मुझे रखनी चाहिए, तो यह अन्तिम रात है। लेकिन ज्यादा कहनेको कुछ है भी नही।

कल मैंने फिर सफरी चरखेका इस्तेमाल किया। मेहनतमें फौरन कमी पड़ी और उतने ही समयमें ज्यादा उत्पादन हुआ — हालाँकि वहुत नही। लेकिन मैं जानता हूँ कि मैं उसपर ज्यादा सूत निकाल सकूँगा। मैंने देखा कि जिस उद्देश्यसे तुमने चरखा भेजा है यदि वह उससे पूरा नही होता तो उस चरखेका आग्रहपूर्वक इस्तेमाल करते जाना प्रेमकी अनुचित अभिव्यक्ति होगी। इतना ही है कि मैं उसे पूरी तरह परखे वगैर छोड़ना नही चाहता था। मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है, लेकिन वजन अभी भी कम है। लेकिन यह कुछ भी नही है। कब्ज कावूमें आते ही वजन वढ जायेगा। मैं इस सप्ताह उसके वढ़नेकी आशा करता हूँ।

सप्रेम,

वापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४०८) से। सौजन्य : मीरावहन; जी० एन० ९६४२ से भी।

१३१. पत्र : नारणदास गांधीको

दुबारा नहीं पढ़ा

यरवडा मन्दिर
मंगल प्रभात, १९ अगस्त, १९३०

चि० नारणदास,

अब हम अस्तेय व्रत पर आते हैं। गहराईमें जायें तो हम देखेंगे कि सभी व्रत सत्य और अहिंसा अथवा सत्यके गर्भमें समाहित हैं। यह बात इस प्रकार व्यक्तकी जा सकती है:

जितना बढ़ा सकें उतना बढ़ायें।
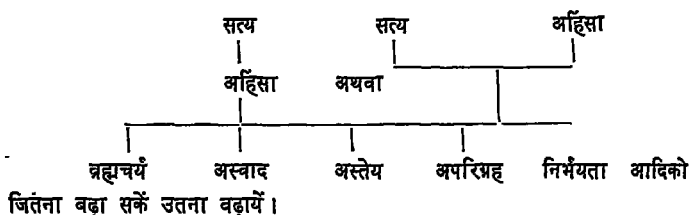
या तो सत्यमें से अहिंसा निकलती है, ऐसा मानें, या सत्य-अहिंसाकी एक जोड़ी मान लें। दोनों एक ही चीज है; फिर भी मेरा मन पहलेकी ओर झुकता है। और आखिरी हालत तो जोड़ीसे — द्वन्द्वसे — परे है। परम सत्य अकेला टिकता है। सत्य साध्य है, अहिंसा साधन है। अहिंसा क्या है, यह हम जानते हैं; उसका पालन मुश्किल है। सत्यका तो हम सिर्फ कुछ अंश ही जानते हैं; उसे पूरी तरह जानना देहधारीके लिए कठिन है, जैसेकि अहिंसाका पूरा-पूरा पालन देहधारीके लिए कठिन है।

अस्तेयके मानी हैं चोरी न करना। कोई ऐसा नही कहेगा कि जो चोरी करता है वह सत्यको जानता है या प्रेमधर्मका पालन करता है। फिर भी चोरी करनेका थोड़ा-बहुत अपराध हम सब जाने-अनजाने करते ही हैं। बगैर इजाजतके किसीकी कोई चीज लेना, यह तो चोरी है ही। लेकिन जिसे अपना माना है उसकी भी चोरी इन्सान करता है — जैसे कोई बाप, अपने बच्चोंके न जानते हुए, उनको न जतानेके इरादेसे, उनसे छुपकर कोई चीज़ खा लेता है। आश्रमका भण्डार हम सबका है, ऐसा कह सकते है, परन्तु उसमें से कोई चुपचाप गुड़की एक डली भी ले ले तो वह चोर है। एक बालक यदि दूसरेकी कलम ले लेता है तो वह चोरी करता है। दूसरा आदमी जानता हो, तो भी उसकी इजाजतके बगैर उसकी कोई चीज लेना भी चोरी है। फलाँ चीज किसीकी भी नहीं है, ऐसा मानकर उसे लेना भी चोरी है; यानी रास्तेमें पड़ी मिल जानेसे हम किसी वस्तुके मालिक नहीं हो जाते; उस प्रदेशका

राजा या तन्त्र उसका मालिक है। आश्रमके नजदीक मिली हुई कोई भी चीज आश्रमके मन्त्रीके सुपुर्द करनी चाहिए। अगर वह चीज आश्रमकी न हो तो मन्त्री उसे पुलिसके हवाले कर दे। यहाँतक समझना तो प्रमाणमें सहल ही है। लेकिन अस्तेय इससे बहुत आगे जाता है। किसी चीजकी हमें जरूरत नही है; फिर भी हम अगर, जिसके कब्जेमें वह है, उससे उसकी इजाजत लेकर ही क्यो न हो, उसे ले, तो यह चोरी है। जिसकी जरूरत न हो ऐसी कोई भी चीज हमे नही लेनी चाहिए। ऐसी चोरी जगतमें ज्यादातर तो खानेकी चीजोके बारेमें होती है। मुझे अमुक फलकी आवश्यकता नही है, फिर भी मै उसे खाता हूँ, या जितना खाना चाहिए उससे ज्यादा खाता हूँ, तो वह चोरी है। अपनी आवश्यकता वास्तवमें कितनी है, यह इन्सान सदा ही नही जान पाता है, और लगभग हम सभी जितनी चाहिए अपनी हाजतें उससे ज्यादा बना डालते हैं। इससे हम अनजानमें ही चोर बन बैठते है। विचार करनेसे स्पष्ट हो जायेगा कि हम अपनी बहुतसी जरूरतें कम कर सकते हैं। अस्तेयका व्रत पालनेवाला एकके बाद एक अपनी हाजतें कम करता जायेगा। इस जगतमें बहुत लोगोके अभावग्रस्त होनेका कारण अस्तेयका पालन न होना ही है।

ऊपर बताई गई सारी चोरियाँ बाहरी या शरीरकी चोरियाँ हुई। इससे भी बारीक — सूक्ष्म और आत्माको नीचे गिराने या रखनेवाली चोरी मानसिक, मनसे की जानेवाली चोरी है। मनसे हम किसीकी चीज पानेकी इच्छा करे या उसपर बुरी नजर डाले, यह चोरी है। बडे हो या बच्चे हो, अच्छी चीज देखकर ललचाएँ तो वह मनकी चोरी है। उपवास करनेवाला शरीरसे तो नही खाये, लेकिन दूसरेको खाते देखकर मनसे स्वादका मजा ले, तो वह चोरी करता है और अपने उपवासका भंग करता है। उपवास रखनेवाला जो आदमी उपवास छोडने पर क्या खायेगा इसका विचार किया करता है, कहा जा सकता है कि वह अस्तेय और उपवासका भंग करता है। अस्तेय-व्रत पालनेवालेको भविष्यमें पानेकी चीजके विचारोंके भँवरमें नही पड़ना चाहिए। बहुत-सी चोरियोके मूलमें ऐसी बद-दियानत पाई जायेगी। आज जो चीज सिर्फ खयालमें ही है, उसे पानेके लिए कल हम भले-बुरे उपाय काममें लाना शुरू कर देंगे। और जैसे वस्तुकी चोरी होती है, वैसे विचारकी चोरी भी होती है। अमुक अच्छा विचार अपने मनमें न उठा हो, फिर भी खुद हमने ही सबसे पहले यह सोचा, जो ऐसा अहंकारसे कहता है, वह विचारकी चोरी करता है। ऐसी चोरी बहुतसे विद्वानोने भी दुनियाकी तवारीखमें की है और आज भी चल रही है। खयाल कीजिए कि मैंने आन्ध्रमें एक नई किस्मका चरखा देखा। वैसा चरखा मै आश्रममें बनाऊँ और फिर कहूँ कि यह मेरी खोज है, तो इसमें मै साफ तौर पर दूसरेकी खोजकी चोरी करता हूँ, झूठ तो बरतता ही हूँ।

इसलिए अस्तेय-व्रतका पालन करनेवालेको बहुत नम्र, बहुत विचारशील, बहुत सावधान और बहुत सादा रहना पडता है।

आज तो मैंने आश्रमकी डाक बहुत कामके बीचमें लिखी है। मोतीलालजी आदि साथमें हैं। पिछला सप्ताह तो पूरा ही उनके साथ बातचीतमें बीता समझो।

सामान्य तौर पर अब भी उन्हें समय देना जरूरी है। इसलिए कल रातकी प्रार्थनाके ठीक बाद ही पत्र लिखना शुरू कर सका और यह पत्र सुबहकी प्रार्थनाके बाद लिखना शुरू किया। इसलिए आज कमसे-कम पत्र लिख रहा हूँ और उनमें कमसे-कम बातें लिख कर डाक निबटा रहा हूँ। . . .[1] बहनके बारेमें गंगाबहन और भणसालीको लिखे पत्र देख लेना। जो ठीक लगे, सो दृढ़तापूर्वक कर डालना। . . .[2] बहनका मन स्थिर और विकाररहित हो गया हो तो बाहर रहनेकी प्रतिज्ञा भंग करनेकी बातको क्षमा किया जा सकता है। फिलहाल विचार करने पर तो मुझे ऐसा ही लगता है। इस समय देखनेकी सबसे बड़ी चीज तो यह है कि विकारोंको जीतनेमें उसकी मदद करें और दूसरी ओर उसकी स्वतन्त्रताकी रक्षा करें। स्त्री-जाति इतनी दबाई गई है कि वे बेचारी स्वतन्त्र रूपसे विचार तक नहीं कर सकती। इसीलिए उनके प्रति आश्रमको तो बहुत उदारतासे काम लेना है। उसमें अत्यधिक जोखिम है। वे सब [जोखिम] उनकी सेवाके लिए हम उठायें। तुम यथाशक्ति इस विचार पर अमल करना। . . .[3] बहनका चेहरा मेरी आँखोंके सामने आता है तो उसमें मुझे निर्दोषता और भय ही दिखाई देता है। अपने पतनका कारण वह खुद ही नहीं है। यह दोष सुननेके बाद . . .[4] के चेहरे पर विकार मैं देख सकता हूँ। . . .[5] बहनके मुखपर मुझे वैसे चिह्न नहीं दिखते। उसके मुखपर तो भोलापन नजर आता है। अज्ञान तो है ही। . . .[6] बहनकी तुलना कुछ-कुछ ऋष्यशृंगके साथ की जा सकती है। सिर्फ यही बड़ा भेद है कि . . .[7] बहनने विकारका अनुभव किया था। उसे (ऋष्यशृंगको) तो उसका बिलकुल अनुभव नहीं हुआ था। किन्तु कविने उसका चित्रण इस प्रकार किया है मानों वह स्पर्श-मात्रकी बाट जोहते हुए ही बैठा हो। ऐसी स्थिति असंख्य निर्दोष स्त्री-पुरुषोंकी आज भी है। "संगका अवसर आने पर इच्छा पनपती है", इसलिए हमें किसीकी निन्दा करनेका अधिकार नहीं है। केवल प्रेम करना, स्वयं सावधान रहना ही हमारा स्पष्ट धर्म है। आज इतना ही काफी है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

सब मिलाकर ३० पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१)की माइक्रोफिल्मसे।

१ से ७. साधन-सूत्रमें नाम नहीं दिये गये हैं।

१३२. पत्र : रमाबहन जोशीको

यरवडा मन्दिर
२१ अगस्त, १९३०

चि० रमाबहन,

बहुत दिनो बाद तुम्हारा पत्र मिला। मै बाट तो जोह ही रहा था। धीरू और विभुके बारेमें मैंने कभी कोई चिन्ता नही की। मैंने देखा है कि ऐसे शैतान बच्चे अन्तमें जाकर बहुत शान्त हो जाते हैं। बच्चोसे मिलने जानेके लोभका तुमने संवरण किया, सो ठीक किया। तुम्हे जो बच्चे दिखाई दें उन्हे धीरू और विभुका ही प्रतिरूप समझकर उन्हें स्नेह दो। इस तरह धीरू और विभुके प्रति तुम्हारा प्रेम निर्मल हो जायेगा तथा वे अच्छे बनेंगे।

सब बहनोको मेरा आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५३२३)की फोटो-नकलसे।

१३३. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२१ अगस्त, १९३०

चि० मनु,

तूने अच्छा 'लम्बा' पत्र लिखा; किन्तु मैं उसे लम्बा नही मानता। मेरी सलाह तो यह है कि जबतक काकासाहब वहाँ न पहुँचे तबतक तू वहाँ बैठकर तुझसे जो सेवा बन पड़े सो करता रह। इसीमें तेरी साधना और परीक्षा है। जन-सेवकको धैर्य रखनेका पाठ भी सीख लेना चाहिए। यह सोचनेका काम नायकका है कि कार्यकर्त्ता अच्छी सेवा किस रूपमें कर सकता है। जो काम हमें सौंपा जाये यदि हम उसे निष्ठापूर्वक करते है तो इसका यह मतलब है कि हमने अपने कर्त्तव्यका पालन किया। यह तो सभी अपने अनुभवसे समझ सकते हैं कि कौन-सा कार्य हमारी सामर्थ्यके बाहर है। जहाँ मोह नही है वहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्यकी सीमा खोज सकता है। काकासाहब के साथ विचार-विमर्श करनेके बाद मैंने उपर्युक्त सुझाव दिया है। यदि इससे भी मानसिक शान्ति न मिले तो मुझे फिर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७६०) की फोटो-नकलसे।

१३४. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

यरवडा मन्दिर
२१ अगस्त, १९३०

भाई पण्डितजी,

आपका पत्र पढ़कर हम दोनोंको प्रसन्नता हुई। ऐसा सुननेमें आया था कि आप कुछ कमजोर हो गये हैं। आप कोई बीमारी नही लाये है, इसलिए धीरे-धीरे आपका शरीर स्वस्थ हो जायेगा। आप अपने स्वास्थ्यकी ओर ध्यान दें। रामभाऊ[1] और मथुरी[2] मुझे जब-तब लिखते तो रहते है। एक-दो पत्रोमें इस बातका उल्लेख था कि लक्ष्मीबहनने बहुत बहादुरी और धीरज दिखाया है। बहादुरी तो उसके चेहरेसे ही झलकती है। प्रार्थनाके समय आपके कण्ठसे निकला हुआ स्वर तो मेरे कानोंमें रोज ही गूँजता रहता है। हम भजन तो गा ही नही पाते इसलिए रामधुनसे ही सन्तोष कर लेते हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २३१) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : लक्ष्मीबाई खरे

१३५. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
२१ अगस्त, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। धीरे-धीरे अभ्यास कर लेने पर किसी भी व्यक्तिके हाथके नीचे जन-सेवा करनेसे हमें क्षोभ नही होता। हम ऐसा करना सीख जायें तभी यह कहा जा सकता है कि हमें सच्ची सेवा करना आ गया। अहंभाव मिट जाने पर हमें पराधीनताका अनुभव ही नही होगा। शून्यवत् होकर रहनेवाला किसी भी स्थितिमें शान्ति अनुभव करता है। ऐसी स्थिति एकदम नही आ जाती; किन्तु इसमें कोई शंका नही कि प्रयत्न करने पर उक्त स्थितिको प्राप्त कर लेना सभीके लिए साध्य है। तू किसी-न-किसी दिन इस स्थितिमें पहुँच जायेगी; इस सम्बन्धमें मुझे कोई सन्देह नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२८४) की फोटो-नकलसे।

१ व २. ना० मो० खरेके पुत्र (रामचन्द्र) और पुत्री (माधुरी)।

१३६. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

यरवडा मन्दिर
२१ अगस्त, १९३०

चि० मथुरादास,

तुम्हारा पत्र और पिंजाई-सम्बन्धी प्रकरण मिला। तेल अभी तक नही मिला। क्या तुमने मिट्टीके तेलका प्रयोग करके देखा है? उससे भी मच्छर भाग जाते है। जहाँ मच्छर वैठते हो वहाँ मिट्टीका तेल चुपड देनेसे मच्छर नही आते। विनौलेके तेलके बारेमें मुझे पता नही था। यहाँ तो हमें खुलेमें सोनेको मिलता है, अतः मच्छरो का उपद्रव नही है।

पिंजाई-सम्बन्धी तुम्हारे सभी लेख मुझे पसन्द आये है। कुछ स्थानो पर भाषामें अनावश्यक रूपसे दावेकी झलक आ गई है। मेरा अपना अनुभव है कि अच्छी तरह पिंजी हुई रुई होने पर भी इस बातका भरोसा नही दिलाया जा सकता कि सूत समान ही निकलेगा। मै बहुत ही सावधानीसे कातनेवाला हूँ किन्तु पिंजाईके भली-भाँति किये जाने पर भी हमेशा सूत समान नही निकलता। एक-समान सूत निकालना भी एक कला है और वह अँगुलियोके कौशल पर निर्भर है। जिनकी अँगुलियाँ जड़-सी हो गई हैं, उन्हें एक-समान सूत निकालनेमें अवश्य कठिनाई होगी। खराव पिंजी हुई रुईसे मैंने कुशल कातनेवालोको एक-समान सूत निकालते हुए देखा है। किन्तु यह कहकर मै पिंजाईको कम महत्त्व नही देना चाहता। मेरा उद्देश्य इस बातको स्पष्ट करना है कि अच्छी पिंजाईके कारण कातनेवालेकी सभी मुश्किलें हल नही हो जाती। जैसाकि मैंने कहा, कताईकी कलामें कपास चुननेसे लेकर पूनियाँ वनाने तककी सभी क्रियाएँ आ जाती हैं और सभी पर कातनेवालेका अधिकार होना चाहिए। इनमें से यदि एक भी क्रिया कच्ची होगी तो उस कमीको सावधानीसे कातकर कदापि पूरा नही किया जा सकता। जिस बातके बारेमें हमें सोलह आने भरोसा न हो उसे हमें विश्वासपूर्वक नही कहना चाहिए। तुम अपने लेखोको छपवानेसे पहले लक्ष्मीदासको दिखा लेना। इस कलाको जाननेवाला यदि कोई अन्य व्यक्ति हो तो उसे पढवा देना अच्छा होगा। सम्भवतः शंकरलाल तुम्हारी मदद कर सकेगा। पुस्तक यथासम्भव परिपूर्ण होनी चाहिए। मोतीबहनके पत्र फिर नही मिल रहे हैं। अब वह कैसी है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७४२) की फोटो-नकलसे।

१३७. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

[२१ अगस्त, १९३० के पश्चात्][1]

चि० मथुरादास,

तुम्हारा पत्र मिला। पुस्तकके वारेमें तुमने काफी सतर्कता वरती है। मैं अव तक अन्तिम अंश पढ़ नही पाया हूँ। चरखेके कारण मेरे पास अतिरिक्त समय वहुत ही कम वचता है। और जो-कुछ वचता भी है उसमें से अधिकांश समय पत्र लिखनेमें चला जाता है। अपनी आँख खराव मत कर लेना। यदि आवश्यक हो तो डा० हरिभाईको दिखाना। उन्हें इस विषयका अच्छा ज्ञान है। विनौलेका तेल कार्यालयमें आ गया है। मोतीवहनने मेरे पिछले पत्रका उत्तर अवतक नही दिया है।

सप्तपदीके वारेमें अगले पत्रमें।[2] . . .

गुजराती (जी० एन० ३७४३)की फोटो-नकलसे।

१३८. पत्र : राधावहन गांधीको

यरवडा मन्दिर
२२ अगस्त, १९३०

चि० राधिका,

मैं तेरे पत्रकी प्रतीक्षा करूँगा। केशु वीमार रहता है, यह वात मुझसे सहन नहीं होती। तू ध्यानसे उसकी देख-भाल करना। फिरसे वुखार क्यो आया? वह क्या खाता है? मुझे पूरे समाचार देना।

वापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तेरा पत्र अभी-अभी मिला। मै सव समझता हूँ।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६८५)से। सौजन्य : राधावहन चौधरी

१. विनौलेके तेलका उल्लेख होनेसे ऐसा जान पड़ता है कि यह पत्र पिछले शीर्षकके वाद लिखा गया होगा।

२. शेष अंश उपलब्ध नहीं है।

१३९. पत्र : मणिबहन पटेलको

यरवडा मन्दिर
२२ अगस्त, १९३०

चि० मणि (पटेल),

अपना अनुभव तूने ठीक-ठीक बताया है। तू बापूसे मिल गई, यह भी मालूम हुआ। बापू मुझे तो [तबसे] नही मिले। मुझे बराबर लिखती रहना। जब तू बम्बईमें पहुँचे तब पेरीनबहन और लीलावतीसे मिलना।

मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो — ४ : मणिबहेन पटेलने

१४०. पत्र : महावीर गिरिको

यरवडा मन्दिर
२२ अगस्त, १९३०

चि० महावीर,

तेरा पत्र मिला। धनुर्धारीकी टुकडी तो देखने लायक होगी। जो काम हमारे हिस्सेमें आये उसमें दक्षता प्राप्त करके हमें सन्तोष अनुभव करना चाहिए। यदि तू अभ्यास करे तो तेरे अक्षर सुधर जायेंगे। जन्माष्टमीको तूने कौन-सी प्रतिज्ञा ली? दैनन्दिनी लिखनेमें आलस्य मत करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६२१७)की फोटो-नकलसे।

१४१. पत्र : कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
२२ अगस्त, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

तेरा पत्र मिला। तेरे पत्रका उत्तर देनेमें मैं तनिक भी देर नहीं करता। सुशीलासे जो सीखा जा सके, सीख लेना। परन्तु पढ़ने-लिखनेका समय मिलता है? डायरी लिखती है? प्रार्थना जारी है? मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

वहाँ कितनी बहनें काम करती हैं? कपड़वजकी क्या खबर है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८०२)की फोटो-नकलसे।

१४२. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
२२ अगस्त, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। श्रावणी पूर्णिमाके दिन तेरी राखी काकाने बाँधी थी और तेरी ओरसे प्रणाम भी किया था।

पण्डितजीका धैर्य और उनका त्याग तूने जैसा लिखा, वैसा ही है। उन्होंने सहनशक्ति भी बहुत ऊँचे दरजेकी दिखाई है।

अबसे आगे न तो तू दस बजे तक जागना, न दूसरेको जगाना। नौ बजे हमें बिस्तर पर लेट ही जाना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६७९) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२३१ की फोटो-नकलसे भी।

१४३. पत्र : कपिलराय मेहताको

यरवडा मन्दिर
२२ अगस्त, १९३०

चि० कपिल,

तू चाहे तो विले पार्लेमें रह सकता है। वहाँ और कौन-कौन हैं? अब्दुल्ला सेठ क्या करते हैं? तू अपना स्वास्थ्य सुधारना। काकासाहब का स्वास्थ्य अच्छा है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

काकासाहब के आशीर्वाद।

गुजराती (जी० एन० ३९७४)की फोटो-नकलसे।

१४४. पत्र : सत्यादेवी गिरिको

यरवडा मन्दिर
२२ अगस्त, १९३०

चि० सत्यदेवी,

मैं तेरे पत्र भूलचूक सुधारकर पढ़ूँ, इससे अच्छा तो यह है कि तू ही वहाँ से अपनी भूलें सुधारकर पत्र लिखे। इससे दोहरा लाभ है। तुझे तेरी भूलें मालूम हो जायें और मुझे कुछ सुधारना न पड़े। है न अच्छी बात?

माताजीसे[1] कहना, मुझे लिखें और बतायें कि आजकल क्या-क्या कर रही हैं।[2]

बापूके आशीर्वाद

बापूकी विराट् वत्सलता

१. कृष्णमैया देवी।
२. मूल पत्र गुजरातीमें था।

१४५. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२३ अगस्त, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुम्हारा पत्र मिला। शान्ता और कलावतीको डाक्टरने जो दवा दी है, उसे आजमाने के बाद मुझे लिखना कि उसका क्या असर हुआ। कलावतीने यदि इस लड़ाईमें भाग लेनेकी प्रतिज्ञा ली हो, तो में समझता हूँ कि वह अब नही जा सकेगी। तुम पिताजीको तो लिख ही चुके हो। अब तुम दोनोकी अन्तरात्मा जो कहे सो करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२४९) की फोटो-नकलसे।

१४६. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
२४ अगस्त, १९३०

चि० मीरा,

तुम्हारी मद्रास-यात्राके दौरान लिखा गया तुम्हारा प्रेम-पत्र मुझे मिला। मैं आशा करता हूँ कि यह मेहनत तुम्हारे लिए बहुत ज्यादा सावित नही होगी। तुम्हारे सभी विवरण मूल्यवान है। हाँ, नेहरुओके[1] यहाँ आने पर बहुत व्यस्तता रही। बड़ी कठिनाईसे मैं ३७५ तार सूत कात सका, जिसे न करने पर मै बहुत दुखी अनुभव करूँगा। पेटी चरखा बहुत अच्छा काम दे रहा है और निस्सन्देह उसमें कम मेहनत पड़ती है। तुमने जो पतली माल भेजी थी उसे उसपर लगा देनेके वादसे अब वह और सन्तोषजनक रूपसे काम करती है। मोटी मालसे दिक्कत पैदा हो रही थी। धुनकी बिलकुल ठीक काम कर रही है। उसमें मुझे कोई मेहनत नही पड़ती। काकासाहब पूनियाँ बनाते है। उन्हें धुनाई अभी सीखनी है और वह जल्दी ही उसे शुरू करनेवाले हैं। भजनोंका अनुवाद पहलेकी तरह ही नियमित रूपसे लेकिन धीरे-धीरे चल रहा है और मैं इससे ज्यादा तेजीसे अनुवाद कर सकनेकी सम्भावना निकट भविष्यमें नही देखता। मैं अच्छा हूँ। वजन घटता-बढ़ता रहता है। मेरा जो दो या तीन पौंड वजन कम हुआ लगता था उसमें से एक पौंड पिछले हफ्ते फिर

१. मोतीलाल नेहरू और जवाहरलाल नेहरू।

बढ गया। शक्तिमें कोई कमी नहीं हुई है। यहाँका पानी भारी है इसलिए कब्जके मामलेमें थोड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

तुम्हें जानकर खुशी होगी कि तांत एक बार भी नहीं टूटा है।

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४०९)से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६४३से भी।

१४७. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
२४ अगस्त, १९३०

चि० प्रभावती,

इस सप्ताह तेरा कोई पत्र नहीं आया। जयप्रकाशको और तुझे लिखे मेरे पत्र मिले होंगे। पिछले दिनों मेरा वजन कम हो रहा था लेकिन अब दो पौंड बढ गया है। तू आजकल क्या करती है? वल्लभभाईने बताया कि जयप्रकाशकी तबीयत कुछ ढीली है। क्या यह बात सच है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३६७)की फोटो-नकलसे।

१४८. पत्र : सुशीला गांधीको

यरवडा मन्दिर
२४ अगस्त, १९३०

चि० सुशीला (मणिलाल),

तू सूख गई है क्या? ऐसा मुझपर तरस खानेके कारण हुआ है या आलस्यवश? यदि तू मुझपर तरस खाती हो तो मुझे लिखना। सीता कैसी है? वह बीमार क्यों पड़ती रहती है? तू उसे फल खिलानेमें कंजूसी तो नहीं करती है न? तेरा कान कैसा है? तेरी तबीयत कैसी रहती है? तारा क्या करती है? नानाभाईका स्वास्थ्य कैसा रहता है? अन्य प्रश्न तू स्वयं ही सोच लेना। मणिलाल हँसी करता रहता है न? वह जेलमें क्या पढता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७७०) की फोटो-नकलसे।

१४९. पत्र : रसिक देसाईको

यरवडा मन्दिर
२४ अगस्त, १९३०

चि० रसिक (देसाई),

क्या तूने मेरी लाज रखी? तूने जो व्रत लिये थे, क्या उनका पालन किया था? मुझे पूरे समाचार देना। तूने अपना समय कैसे बिताया? क्या तू आलस्य करता था? क्या बहुत बक-बक करता था? क्या तेरा शरीर स्वस्थ रहा? ये और इन-जैसे अन्य प्रश्नोंके उत्तर देना। तूने किन-किनको अपना मित्र बनाया?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६६१७) की फोटो-नकलसे।

१५०. पत्र : नारणदास गांधीको

यरवडा मन्दिर
२४/२६ अगस्त, १९३०

चि० नारणदास,

इस बार डाक हमेशासे जल्दी मिली है। अर्थात् गुरुवारके बदले बुधवारको। पत्रोंमें सतीश बाबू — कृष्णदासके गुरु सतीश मुखर्जी — का पत्र है। उनका पता हाजरा रोड, कलकत्ता है। नम्बर भूल गया हूँ। शायद सुरेन्द्रको मालूम होगा या पत्रोंमें कहीं होगा। देवदासका स्वास्थ्य कैसा है? उससे कहना कि उसका यशोगान होता ही रहता है। क्या रामदासकी तबीयत ठीक हो चुकी है? जो छूट गये हैं उनके नाम तो मैंने माँगे हैं, साथ ही उन्होंने कितना काता-पीजा यह भी लिख भेजो तो अच्छा हो। कपड़ेका लिफाफा न मिले तो बुक-पोस्टकी तरह रस्सीसे कसकर बाँध भेजनेमें कोई हानि नहीं है। केशुका स्वास्थ्य फिर बिगड़ गया मालूम होता है। उसका जल्दी इलाज करवाना। गिरिराजकी बीमारी भी लम्बी चली है। जान पड़ता है, उसका खून खराब हो गया है। सिंगरकी गाइड नहीं मिली। मिलनेमें बहुत कठिनाई हो तो जाने देना। हसमुखरायके बारेमें समझ गया हूँ। ठीक लगे तभी उसे पत्र देना। जोलिंगरको लिखा पत्र पढ़कर उसे देना। यहाँ इस बारेमें इससे ज्यादा नहीं लिखता। धनगोपालको तो तुमने पहुँच लिखी होगी। जमनादासका स्वास्थ्य कैसा रहता है? उसे समय-समयपर मिलने देते हैं क्या?

मंगल प्रभात, २६ अगस्त, १९३०

अपरिग्रहका सम्बन्ध अस्तेयसे है। जो असलमें चुराया नहीं है उसे जरूरत न होनेपर भी जमा करनेसे वह चोरीका माल-सा बन जाता है। परिग्रहके मानी हैं संचय यानी इकट्ठा करना। सत्यकी खोज करनेवाला, अहिंसा बरतनेवाला परिग्रह नहीं कर सकता। परमात्मा परिग्रह नहीं करता। अपने लिए जरूरी चीज वह रोजके-रोज पैदा करता है। इसलिए अगर हम उसपर भरोसा रखते हैं, तो हमें समझना चाहिए कि हमारी जरूरतकी चीजें वह रोजाना देता है, देगा। औलियाओंका, भक्तोंका यही अनुभव है। रोजकी जरूरत जितना ही रोज पैदा करनेका ईश्वरीय नियम हम नहीं जानते, या जानते हुए भी पालते नहीं। इसलिए जगतमें असमानता और उसमें से पैदा होनेवाले दुःख हम भुगतते हैं। अमीरके यहाँ जो उसको नहीं चाहिए, ऐसी चीजें भरी पड़ी होती हैं, वे लापरवाहीसे खो जाती हैं, बिगड़ जाती हैं, जब कि इन्हीं चीजोंकी कमीके कारण करोड़ों लोग भटकते हैं, भूखों मरते हैं, ठंडमें ठिठुर जाते हैं। सब अगर अपनी जरूरतकी चीजोंका ही संग्रह करें, तो किसीको तंगी महसूस न हो और सबको सन्तोष हो। आज तो दोनों (तंगी) महसूस करते हैं। करोड़पति अरबपति होना चाहता है; फिर भी उसको सन्तोष नहीं होता। गरीब धनवान होना चाहता है। कंगालको भरपेट मिल जानेसे ही सन्तोष होता हो, ऐसा नहीं देखा जाता। फिर भी उसे भरपेट पानेका हक है, और वह उतना पाये, यह देखना समाजका फर्ज है। इसलिए उस (गरीब) के और अपने सन्तोषकी खातिर अमीरको पहल करनी चाहिए। अगर वह अपना ज्यादा परिग्रह छोड़े तो गरीबको अपनी जरूरत-भरके लिए आसानीसे मिल जाये और दोनों पक्ष सन्तोषका सबक सीखें। आत्यन्तिक आदर्श अपरिग्रह तो जो मन और कर्मसे दिगंबर है उसीका हो सकता है। मतलब कि वह पछीकी तरह बगैर घरके, बगैर कपड़ेके और बगैर अन्नके चलता-फिरता रहेगा। अन्न तो उसे रोज चाहिए, जो भगवान देता रहेगा। इस अवधूत दशाको विरला ही आदमी पहुँच सकेगा। हम मामूली दरजेके सत्याग्रही जिज्ञासु (जाननेकी इच्छा रखनेवाले) लोग आदर्शको खयालमें रखकर जैसा बन पड़े, हमेशा अपने परिग्रहकी जाँच करते रहें और उसे कम करते जायें। सही प्रगति, सच्ची सभ्यताका लक्षण परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि सोच-समझकर और अपनी इच्छासे उसे कम करना है। ज्यों-ज्यों हम परिग्रह घटाते जाते हैं, त्यों-त्यों सच्चा सुख और सच्चा सन्तोष बढ़ता जाता है, सेवाकी शक्ति बढ़ती जाती है। इस तरह सोचनेपर और बरतनेपर हम देखेंगे कि आश्रममें हम बहुत-सा संग्रह ऐसा करते हैं, जिसकी जरूरत साबित नहीं कर सकेंगे; और ऐसे बिना जरूरी परिग्रहसे पड़ोसीको चोरी करनेके लालचमें फँसाते हैं। अभ्याससे, आदत डालनेसे आदमी अपनी जरूरतें घटा सकता है, और ज्यों-ज्यों उन्हें घटाता जाता है त्यों-त्यों वह सुखी, शान्त और सब तरहसे तन्दुरुस्त होता जाता है। महज सत्यकी यानी आत्माकी नजरसे सोचने पर शरीर भी परिग्रह है। भोगकी इच्छासे हमने शरीरका आवरण पैदा किया है और उसे हम टिकाये रखते हैं। अगर भोगकी इच्छा बिलकुल कम हो जाये तो

शरीरकी आवश्यकता समाप्त हो जाये; यानी मनुष्यको नया शरीर लेनेकी जरूरत न रहे। आत्मा सब जगह फैलनेवाली, सर्वव्यापी होनेसे शरीर-रूपी पिंजरेमें क्योंकर कैद होगी? उस पिंजरेको बनाये रखनेके लिए बुरा काम क्यों करे? औरोंको क्यों मारें? इस तरह विचार करते हुए हम आखिरी त्याग तक पहुँच जाते हैं, और जबतक शरीर है तबतक उसका उपयोग सिर्फ सेवाके लिए करना सीखते हैं; यहाँ तक कि सेवा ही उसकी असली खुराक हो जाती है। वह खाता है, पीता है, लेटता है, बैठता है, जागता है, सोता है; यह सब सेवाके लिए ही होता है। इसमें से पैदा होनेवाला सुख सच्चा सुख है, और ऐसा करते-करते मनुष्य अन्तमें सत्यकी झाँकी करता है। हम सब अपने-अपने परिग्रहके बारेमें इसी निगाहसे सोचें।

इतना याद रखने लायक है कि जैसे चीजोंका, वैसे ही विचारोंका भी अपरिग्रह होना चाहिए। जो आदमी अपने दिमागमें बेकारका ज्ञान भर रखता है वह परिग्रही है। जो विचार हमें ईश्वरसे विमुख करते हैं, फेर लेते हैं या ईश्वरकी ओर नहीं ले जाते, वे सब परिग्रहमें गिने जायेंगे और इसलिए छोड़ने लायक हैं। ज्ञानकी ऐसी व्याख्या भगवानने 'गीता' के तेरहवें अध्यायमें दी है। वह इस मौके पर सोचने लायक है। अमानित्व वगैराको गिना कर भगवानने कह दिया है कि उसके अलावा जो-कुछ है वह सब अज्ञान है। अगर यह सही वचन है — और सही तो है ही — तो आज जो हम बहुत कुछ ज्ञानके नामसे जमा करते हैं वह अज्ञान ही है और उससे लाभके बजाय नुकसान होता है; उससे सिर घूमता रहता है, और आखिर वह खाली हो जाता है; उससे असन्तोष फैलता है और बुराइयाँ बढ़ती हैं।

इसमें से कोई जड़ताका अर्थ कभी न निकाले। हमारा हरएक पल और क्षण प्रवृत्तिपूर्ण होना चाहिए। लेकिन वह प्रवृत्ति सात्विक हो, सत्यकी ओर ले जानेवाली हो। जिसने सेवाधर्मको अपनाया है वह एक पलके लिए भी जड़ दशामें नहीं रह सकता। यहाँ तो सार-असारका विवेक सीखनेकी बात है। सेवापरायणको यह विवेक आसानीसे हासिल होता है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

काकासाहब का वजन एक पौंड फिर बढ़ गया है और उत्साह भी बढ़ा है। मेरा जो वजन कम हुआ था उसमें एक पौंडकी वृद्धि हो गई है। तीन दिनसे दहीके साथ उबली हुई सब्जी लेने लगा हूँ। आजके पत्र तुम्हारे भेजे हुए लिफाफे पर नया कागज चिपका कर भेजे हैं, यह देखोगे ही। तुम यही वापस भेज सकते हो।

बापू

[पुनश्च :]

५३ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

१५१. पत्र: प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
२९ अगस्त, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। कागजकी कतरनो पर लिखे पत्रोंको देखकर कोई हँसे नही, न रोप ही करे। मुझे यही शोभा देता है। ऐसी कतरनो पर पत्र लिखते समय भी मैं उसे जितना सुन्दर और दिलचस्प बना सकता हूँ, बनाता हूँ।

तेरे शरीरमें रोग है, ऐसी शंकासे तू भयभीत क्यो होती है? रोग हो तो भी क्या? और वह रोग गम्भीर हो तो भी क्या? 'देह जावो अथवा राहो पाडुरगी दृढ भावो'।[1] आश्रममें हमने कमसे-कम इतना तो सीखा ही है। कुछ दिन उपवास करनेसे तेरा शरीर स्वच्छ हो जायेगा। 'कूने बाथ', कटि-स्नान और विशेष रूपसे इन्द्रिय-घर्षण-स्नान (फ्रिक्शन सिट्ज बाथ) आवश्यक है। तुझे इनकी जानकारी न हो तो कान्ता या राधासे पूछना। सम्भवत उन्हे इसकी जानकारी है। कूनेकी पुस्तकसे इनके विषयमें पढ भी लेना। स्त्रियोको यदि कोई रोग हो तो मासिकधर्म के बारेमें जानना जरूरी हो जाता है। मासिकधर्म तुझे ठीक आता है? नियमसे होता है? तकलीफ होती है? डाक्टरकी सलाह लेनेकी जरूरत हो तो लेना।

अरविन्दबाबू की पुस्तक मैंने पढी है। मैंने कितनी कम पुस्तकोंका अध्ययन किया है, सो तो मै ही जानता हूँ। मेरा धन्धा तो मुख्यत प्रकृतिकी पुस्तकको पढनेका ही रहा है और यह कभी खत्म हो ही नही सकता।

नीद तुझे पूरी लेनी ही चाहिए। ९ से ४ का नियम पालना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८०) से। सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२३२ की फोटो-नकलसे भी।

१. मराठी सन्त नामदेवकी पंक्तियाँ, जिनका अर्थ है कि शरीर रहे अथवा नष्ट हो जाये, पाण्डुरङ्ग (भगवान) के प्रति भक्ति बनी रहे।

१५२. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

यरवडा मन्दिर
२९ अगस्त, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

किसी पत्रका उत्तर देना रह गया था क्या? मैं तुम सभी बहनोंको याद तो कर ही लेता हूँ। यदि तुम लोग मेरे साथ कुछ महीने रही होती तो मुझे भी अच्छा लगता। इसके बावजूद तुम दोनोंने इतनी दूर बैठे हुए भी स्वयंको इस तरह तैयार कर लिया है कि यदि तुम मेरे पास ही रही होती तो मुझसे और अधिक क्या ले पाती, यह मुझे नही सूझता। बच्चे अब भी फलादि पर रहते हैं और तुम भी फलों पर रहने लगी हो, यह ठीक किया। डाहीबहनने मुझे क्यों नही लिखा? सभी बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६७९७) की फोटो-नकलसे।

१५३. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२९ अगस्त, १९३०

चि० मनु (त्रिवेदी),

गंगाबहन लिखती है कि तू बाहर निकलनेको अधीर है। यह तो मेरा पत्र मिलनेके पहलेकी बात है। मुझे आशा है कि मेरे पत्रसे तेरा मन शान्त हुआ होगा। सिपाहीके मुँहसे 'क्यों' निकल ही कैसे सकता है? उसे जो काम मिलता है, वह मूक भावसे और प्रफुल्लित मनसे किये चला जाता है। काकासाहब की शर्त पूरी हो लेने दो। अब क्या काकासाहब के छूटनेमें कोई बहुत देर है? इसके बावजूद यदि मनको शान्ति न मिले तो मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७६१) की फोटो-नकलसे।

१५४. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
२९ अगस्त, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। यदि कमलाबहन खुशी-खुशी तुझे अनुमति दे और बिहारमें काम करनेकी सुविधा हो तो वहाँ जाना तेरा पहला धर्म है। जयप्रकाशकी तबीयत तो अच्छी रहती है न? अपनी सेहतका ध्यान रखना। मृत्युंजयका पत्र मिला है।

मैं चंगा हूँ। खुराकमें अब खजूर और मुनक्के के स्थान पर हरी सब्जियाँ लेनी शुरू की हैं। देखता हूँ, उसका क्या असर होता है? मेरी चिन्ता न करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३६८) की फोटो-नकलसे।

१५५. पत्र : मैत्री गिरिको

यरवडा मन्दिर
२९ अगस्त, १९३०

चि० मैत्री,

तू मुझे पत्र लिखती रहना। गंगाबहनने तेरे बारेमें सन्तोष व्यक्त किया है, जिससे मुझे आनन्द हुआ। तेरा शरीर तो स्वस्थ है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६२१८) की फोटो-नकलसे।

१५६. पत्र : गुलाम रसूल कुरेशीको

यरवडा मन्दिर
३० अगस्त, १९३०

चि० कुरेशी,

तुम्हारा पत्र पढ़कर प्रसन्नता हुई। तुमने कुरान शरीफका अध्ययन करके ठीक किया। 'मिस्टिक्स ऑफ इस्लाम' नामक पुस्तक खोजकर पढ डालना। मुझे जो लिखना चाहो सो लिखना। दहीका सेवन करनेसे बहुत करके तुम ठीक हो जाओगे। आवश्यक व्यायाम करते रहना। तुम जब इमामसाहबसे मिलो तो कहना कि हम दोनो उन्हें खूब याद करते हैं और प्रायः आपसी बातचीतमें उनका नाम तो आता ही रहता है। अमीनासे मुझे पत्र लिखनेको कहना। तुम दोनोंको हमारा आशीर्वाद और दुआ।

बापू

गुजराती (जी० एन० ६६५१) की फोटो-नकलसे।

१५७. पत्र : शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
३१ अगस्त, १९३०

चि० शारदा,

तेरे पत्र सर्वथा नियमित रूपसे मिलते रहते हैं। ऐसे समय भी यदि मन आनन्द मनाना चाहे तो शायद शारीरिक रूपसे उसका उपभोग करना उचित होगा। किन्तु यदि मन ही ऐसा न करना चाहे और उस दिन कोई विशेष कार्य मनःपूर्वक किया जाये तो निश्चय ही ज्यादा अच्छा होगा। ऐसे मामलोंमें बालकोंसे जबरदस्ती कुछ भी नहीं कराया जा सकता। उद्योगमें आलस्य अनुभव होनेपर उसे निकालनेकी सतत चेष्टा करनेसे वह चला जाता है। तुझे उद्योगकी आवश्यकता समझनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८८८) से। सौजन्य : शारदाबहन जी० चोखावाला

१५८. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

यरवडा मन्दिर
३१ अगस्त, १९३०

चि० ब्रज कृष्ण,

तुमारा खत मिला। आलमोडा जानेका मौका मिल जाय तो अवश्य जाओ। अब मानसिक स्थिति कैसी रहती है? कृष्ण नायर को मेरे आशीर्वाद भेजो। मुझे खत लीखते रहो।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० २३८४ की फोटो-नकलसे।

१५९. पत्र : मीराबहनको

[३१ अगस्त, १९३० के लगभग][1]

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र हालांकि हिलती हुई रेलगाड़ीमें लिखा गया था लेकिन खूब साफ था। अगर तुमने इस ओर मेरा ध्यान न दिलाया होता तो मुझे कोई फर्क नही लगा होता।

मैं समझता हूँ कि सफरी चरखेके ऊपर मेरी अच्छी पकड हो गई है और मैं आगे और अधिक गतिसे काम कर सकनेकी आशा करता हूँ। उस पर कातनेसे मैं आज भी एक घटा बचा पा रहा हूँ और थकावट कम होती है। लेकिन तुम्हारी मेहनत बेकार नही गई है। काकासाहब गाण्डीवका इस्तेमाल कर रहे हैं। लेकिन उससे उन्हें सन्तोष नही मिला है। और वह एक इकाई अर्थात् १६० तार भी हमेशा कभी नही निकाल पाते थे। तुम्हारे चरखे पर उन्हे दो घटेमें एक इकाई सूत निकालनेमें कोई कठिनाई नही है। चरखेको कमसे-कम इतना समय देनेका उन्होंने व्रत लिया है।

१. सफरी चरखेके उल्लेखसे ऐसा लगता है कि यह पत्र १८ अगस्तके बाद किसी समय लिखा गया था; देखिए "पत्र : मीराबहनको", १८-८-१९३०। अपने ५ अक्टूबरके पत्रमें गांधीजीने मीराबहनको लिखा था कि एक भी ऐसा सप्ताह नहीं गुजरा है जब उन्होंने उनको (मीराबहनको) पत्र न लिखा हो। चूँकि २४ अगस्त और ७ सितम्बरके बीचकी तिथिका कोई पत्र उपलब्ध नहीं है, इसलिए इस बातकी सम्भावना है कि यह पत्र ३१ अगस्तको या उसके आसपास लिखा गया होगा।

तुमने दूसरे दर्जेमें बदली करवा कर ठीक किया। जब तीसरे दर्जेमें चलना असम्भव या लगभग असम्भव हो उस समय दूसरे दर्जेमें सफर करनेमें कोई हर्ज नहीं है और शर्मकी तो निश्चय ही कोई बात नही है।

मुझे खुशी है कि कुमारी पीटरसनके साथ तुमने ३६ घंटेका समय शान्तिपूर्वक बिताया। क्या तुम्हारी बहन मद्रास ही में कही नही है?

एण्ड्रयूज, रेजिनाल्ड तथा मेरी याद करनेवाले अन्य लोगोंको मेरा प्यार भेजना।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४०७) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६४१से भी।

१६०. पत्र : अमृतलाल ठक्करको

यरवडा मन्दिर
१ सितम्बर, १९३०

भाई ठक्कर बापा,

आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि चूंकि आपने मेरा कभी कोई काम नहीं किया है, अतः आपको मुझे पत्र लिखनेका अधिकार नही है। सच कहा जाये तो मेरा काम नामकी कोई चीज ही कहाँ है? हम सबको भगवानका काम यथाशक्ति यथामति करना है। और यह काम आप प्रतिक्षण कर रहे है। मैं और काका आपके बारेमें प्रायः बातें करते हैं। यदि आपको कुछ लिखना आवश्यक जान पड़े तो अवश्य लिखें। मै आपसे यह नही कहता और न चाहता ही हूँ कि आप सिर्फ लिखनेकी खातिर मुझे लिखें। मै जानता हूँ कि आप प्रत्येक क्षणका हिसाब रखने और देनेके लिए तैयार रहते है।

बापू

[गुजरातीसे]

कन्या आश्रम रजत जयन्ती स्मृतिग्रंथ

१६१. पत्र : मोतीबहन चोकसीको

मौनवार [१ सितम्बर, १९३०][1]

चि० मोतीबहन,

बा कह रही थी कि तुम उद्विग्न रहती हो। ऐसा क्यों है? जो 'गीता' का पाठ करता है वह कभी उद्विग्न नहीं हो सकता। जो प्रतिदिन ईश्वरका ध्यान करता है, जो ईश्वरको अपने हृदयमें स्थित मानता है उसे उद्वेग कैसा? उद्वेगको अपने मनसे निकाल देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७३६) की फोटो-नकलसे।

१६२. पत्र : गंगाबहन झवेरीको

यरवडा मन्दिर
१ सितम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन (झवेरी),

मुझे ऐसा याद पड़ता है कि तुमसे और नानीबहनसे मुझे एक पत्रका उत्तर पाना है। आज कोई विशेष बात लिखनेको नहीं है। किन्तु मैं तुम सब लोगोंको रोज याद करता हूँ, इतना ही बतानेके लिए यह पत्र लिख रहा हूँ। मैं यह जानता हूँ कि तुम सदा अपने कर्त्तव्यमें प्रवृत्त रहती हो। यही उचित भी है और इसीसे उचित परिणाम निकलेगा। कर्त्तव्यके प्रति तन्मयता कल्पद्रुम है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३१०१) की फोटो-नकलसे।

१. मूल पत्रपर किसी अन्य व्यक्तिने "१-९-३० के आसपास" लिखा है। १ सितम्बरको सोमवार था।

१६३. पत्र : प्रभावतीको

[१] सितम्बर, [१९३०][1]

चि० प्रभावती,

तू लोभी है। मैं कितना ही लम्बा पत्र क्यों न लिखूं तो भी वह तुझे छोटा ही लगेगा। मैं हर सप्ताह लगभग ५०-६० पत्र आश्रम भेजता हूँ और यह तभी सम्भव हो सकता है जब मुझे चरखेसे फुरसत मिले। फिर रोज लिखनेको रहता भी क्या है, इसीलिए संक्षिप्त पत्र लिखता हूँ लेकिन उसमें कह देने योग्य सब बातें होती है। यदि एक-दो पत्र ही लिखनेको हों तो कुछ ज्यादा लिखा जा सकता है और फिर सारे आश्रमकी दृष्टिसे जो पत्र लिखता हूँ वह तो लम्बा होता ही है। मीरा बहन गुजराती नही समझती, इससे उसे कुछ लम्बा पत्र लिखता हूँ। बाकी पत्र तो संक्षिप्त ही होते हैं। लो, इस तरह संक्षिप्त पत्र लिखनेका कारण बताते-बताते ही आधा पन्ना भर ही गया। शुक्रवारको मेरा और काका का वजन लिया गया था; मेरा १०४ और उनका ११४ निकला; वजनमें यह वृद्धि अच्छी कही जा सकती है। हम प्रार्थना नित्य नियमपूर्वक करते है। 'गीता'का पाठ भी होता ही है। मैंने आजकल मुनक्का और खजूर लेना भी बन्द कर दिया है तथा इनके स्थान पर अब मैं उबली सब्जियाँ लेता हूँ। मैं रोज आलू तथा कच्चे टमाटर और कोई हरी सब्जी, जैसे गोभी आदि लेता हूँ। इससे कोई नुकसान नही हुआ। वजन बढ़ गया और दस्त आनेकी शिकायत दूर हुई। सरकारके साथ सलाह-मशविरा करनेके सम्बन्धमें तूने सारी रिपोर्टें तो पढ़ी ही होंगी। उनमें कोई सार नही था। अपने भविष्यके कार्यक्रमके बारेमें लिखना, जयप्रकाशका भी लिखना। तेरी सास अच्छी हो गई या नही? सेवा तो तू मनसे करती है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३७०)की फोटो-नकलसे।

१. मूल पत्रमें तिथि मिट गई जान पड़ती है इसीलिए साधन-सूत्रमें केवल सितम्बर लिखा हुआ है। तथापि बापुना पत्रो-१०: श्री प्रभावतीबहेननेमें यही तारीख दी हुई है।

१६४. पत्र : दुर्गा गिरिको

यरवडा मन्दिर
१ सितम्बर, १९३०

चि० दुर्गा,

क्या तू रूठ गई है? तू पत्र भी न लिखे और रूठ भी जाये, यह कौनसा न्याय है? आश्रमका या पहाड़का? या रूठनेका वहाना करके लिखनेका आलस करती है? तू रोज कितना कातती है? दूसरा क्या काम करती है? नियमित रूपसे सवेरे उठती है? कितने अध्याय कण्ठ किये हैं?[1]

वापूके आशीर्वाद

वापूकी विराट् वत्सलता

१६५. पत्र : वा० गो० देसाईको

यरवडा मन्दिर
२ सितम्बर, १९३०

भाईश्री ५ वालजी,

तुम्हारा पत्र मिला। मसूडोसे खून निकलता है तो दिनमें तीन-चार वार नमकके पानीसे कुल्ले करने चाहिए। सुवहके वक्त वारीक पिसा हुआ अच्छा नमक मसूडो पर रगडना चाहिए और लारको थूकना नही चाहिए। नमकके वदले तुम नारियलका तेल भी इस्तेमाल कर सकते हो। लाल दवाके पानीसे कुल्ले करने चाहिए। यदि इससे भी खून निकलना वन्द न हो तो मसूड़े डाक्टरको दिखाने चाहिए। कभी-कभी वदहजमीसे भी ऐसा हो जाता है। कुछ थोडी-सी कच्ची हरी सब्जी भी खाना आवश्यक है।

तुम्हे ज्वार-वाजरेकी रोटियाँ मजवूर होकर खानी पड़ी थी या अन्य कैदियोका साथ देनेके खयालसे तुमने खाई थी? हरे-भरे वृक्षके पास रहकर भी मैंने तुम्हे उसकी छायाका अनादर करते देखा है। यदि मिल सके तो मैं किसने कितना काता, कितना पीजा, इसका हिसाव देखना चाहूँगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७४०६) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : वा० गो० देसाई

१. मूल पत्र गुजरातीमें था।

१६६. पत्र : नारणदास गांधीको

[२ सितम्बर, १९३०][1]

चि० नारणदास,

आश्रमका बंडल गुरुवारको मिला। प्रवचन छपवायें तो एक-दो प्रतियाँ यहाँ भी भेजना। पिछले प्रवचनकी नकल भी हो तो अच्छा है। आश्रम नियमावली भी भेजना। सुरेन्द्र, माधवजी और माधवलालने अभी पत्र न लिखा हो तो मुझे लिखें। दूसरे भी लिखें। कुसुमका हाथ ठीक हो गया होगा। श्रीमती जोलिगर कुछ शान्त हुईं? उनको प्रसन्न करनेका प्रयत्न करना।

स्वीडिशमे 'आत्मकथा' का अनुवाद करनेके लिए किसीको लिखनेकी बात याद है। ११ पौंड ले लेना और जिस खातेमें ठीक समझो, डाल देना।

रक्षा-बन्धनका अच्छा उपयोग किया। लीलावतीका ध्यान रखना। दौरे आते रहते हो तो आश्रममे आ जाये और मनको शान्त रखे। देवदासका वजन मालूम हो तो लिखना। वहाँ तो स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए। जमनालालजीके सूतकी माला मिल सकेगी। मेरा चरखा अब तग नही कर रहा है। गति बहुत नही बढ़ी है, किन्तु ठीक है। यह चरखा यात्राके लिए है और उसके वास्ते पतली मालकी जरूरत थी। माल बनानेकी सरल रीति किसीको मालूम हो तो लिख भेजें। अब्बासने बताई थी। किन्तु मै वह भूल गया हूँ। रुईका एक बंडल काममें आ चुका है। दूसरेको देखते हुए पूनियाँ एक महीना तो चलेंगी। किन्तु काकासाहब से मिलने तो कोई आयेगा ही। उसीके हाथ एक बंडल भेज देना। वल्लभभाईसे मिलनेके लिए भी हर सप्ताह या पखवाड़े कोई आता है, उसके हाथ भी भेज सकते हो। यदि ऐसा न हो सकता हो तो जिस तरह डाकसे भेजा था उसी तरह भेज देना। कुछ जल्दी नही है। साथ ही चप्पलकी एड़ीकी मरम्मत करने लायक चमड़ेके टुकड़े भेजना या उसका प्रबन्ध न हो सके और मेरी चप्पलकी जोड़ी मिल जाये तो वही भेज देना। यात्रामें एक जोड़ी ज्यादा थी, कान्तिको मालूम होगा। आश्रममें भी एक थी, कुसुमको मालूम होगा; या जिसको उसने सब कुछ सौंपा होगा उसे।

<u>अभय</u>: इसकी गिनती गीताजीके सोलहवें अध्यायमें दैवी सम्पतका जिक्र करते हुए भगवानने प्रथम की है।[2] यह श्लोककी रचनाकी सुविधाकी खातिर है या अभयका पहला स्थान होना चाहिए इसलिए है, इस बहसमें मै नही उतरूँगा; ऐसा निर्णय करनेकी मुझमें लियाकत भी नही है। मेरी रायमें अभयको सहज ही पहला स्थान मिला हो तो भी वह उसके लायक ही है। बिना अभयके दूसरी ऋद्धियाँ नही मिलेंगी।

१. बापुना पत्रो — ९: श्री नारणदास गांधीनेमें दी गई तिथिके अनुसार।
२. "अभयंसत्त्वसंशुद्धि. . ." इत्यादि।

बिना अभयके सत्यकी खोज कैसे हो? बिना अभयके अहिंसाका पालन कैसे हो? 'हरिनो मारग छे शूरानो, नहीं कायरनु काम जोने' (हरिका मार्ग शूरका है, उसमे कायरका काम नही)। सत्य ही हरि, वही राम, वही नारायण, वही वासुदेव है। कायर यानी डरा हुआ, बुजदिल, शूर यानी भयसे मुक्त, तलवार वगैरासे लैस नही। तलवार बहादुरकी निशानी नही है, डरकी निशानी है।

अभयका मतलब है तमाम बाहरी भयोंसे मुक्ति। मौतका डर, धन-दौलत लुट जानेका डर, कुटुम्ब-कबीलेके बारेमें डर, रोगका डर, हथियार चलनेका डर, आबरूका डर, किसीको बुरा लगानेका, चोट पहुँचानेका डर, इस तरह डरकी फेहरिस्त जितनी बढाना चाहे हम बढा सकते हैं। एक सिर्फ मौतका भय जीता कि सब भयोको जीत लिया, ऐसा आम तौर पर कहा जाता है। लेकिन वह ठीक नहीं लगता। बहुत-से लोग मौतका डर छोड देते है, फिर भी वे तरह-तरहके दु:खोसे भागते रहते हैं। कुछ लोग खुद मरनेको तैयार होते है, लेकिन सगे-सम्बन्धियोका बिछोह बरदाश्त नही कर सकते। कोई कजूस यह सब छोड देगा, देह भी छोड देगा, लेकिन जमा किया हुआ धन छोडते झिझकेगा। कोई आदमी अपनी मानी हुई इज्जत-आबरू बनाये रखनेके लिए बहुत-कुछ स्याह-सफेद करनेको तैयार हो जायेगा और करेगा। कोई जगतकी निन्दाके भयसे सीधी राह जानते हुए भी उसे पकडते हिचकिचायेगा। सत्यकी खोज करनेवालेको इन सब भयोको छोडे बिना चारा नही। हरिश्चन्द्रकी तरह पामाल होनेकी उसकी तैयारी होनी चाहिए। हरिश्चन्द्रकी कथा भले ही मनगढत हो, लेकिन उसमें सब आत्मार्थियो (आत्माका कल्याण चाहनेवालो) का अनुभव भरा हुआ है; इसलिए उस कथाकी कीमत किसी ऐतिहासिक कथासे अनन्तगुनी है और हम सबको उसे अपने मनमें रखना चाहिए और उसपर गौर करना चाहिए।

अभय-व्रतका पूरी तरह पालन करना लगभग नामुमकिन है। तमाम भयोसे मुक्ति तो वही पा सकता है जिसे आत्माके दर्शन हुए हो। अभय अमूर्च्छ दशाकी आखिरी हद है। निश्चय करनेसे, लगातार कोशिश करनेसे और आत्मामें श्रद्धा बढनेसे अभयकी मिकदार बढ सकती है। मैंने शुरूमें ही कहा कि हमें बाहरी भयोसे मुक्ति पानी है। अन्दर जो दुश्मन हैं उनसे तो डरकर ही चलना है। काम, क्रोध वगैराका भय सच्चा भय है। उसे जीत ले तो बाहरी भयोकी परेशानी अपने-आप मिट जायेगी। तमाम भय देहको लेकर हैं। अगर देहकी ममता छूटे तो आसानीसे अभय प्राप्त हो जाये। इस तरह सोचते हुए हम देखेंगे कि तमाम भय हमारी खयाली पैदावार है। पैसेमें से, कुटुम्बमें से, शरीरमें से 'मेरापन' निकाल दें, तो भय कहाँ रहा? "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा."[1] (उसे तजकर भोगो) — यह रामबाण वचन है। कुटुम्ब, पैसा, देह ज्योके त्यो रहे; उनके बारेमें हमारी कल्पना बदलनी होगी। वे 'हमारे' नही है, 'मेरे' नही है। वे ईश्वरके हैं; 'मै' भी उसीका हूँ, इस जगत् में 'मेरा' कहनेकी चीज कुछ है ही नही। फिर मुझे भय काहेका? इसीलिए उपनिषदकारने कहा : "उसे तजकर भोगो"। इसलिए हम उसके रखवाले बनें, वह उसकी

१. ईशोपनिषद्, ५, १।

रखवालीके लिए जरूरी सामान और शक्ति हमें देगा। यों हम स्वामी मिटकर सेवक बनें, शून्य जैसे (कुछ नही) होकर रहें, तो आसानीसे तमाम भयोंको जीत लेंगे, आसानीसे शान्ति पायेंगे और सत्यनारायणका दर्शन करेंगे।

काकासाहब ने चरखेके बारेमें स्पष्ट व्रत नहीं लिया था; अब लिया है। रोज कमसे कम दो घंटे कातेंगे और उसमें भी कमसे-कम १६० तार। पिंजाई भी शुरू की है। उनका बहुत-सा समय तो शारीरिक प्रवृत्तियोंमें जाता है। उनकी शरीरकी शक्ति बराबर बनी हुई है। मैंने चार दिनसे मुनक्का और खजूर छोड़ दिये है। उबली हुई सब्जी और कच्चे टमाटर आदि लेता हूँ। इससे काम नही चलेगा तो फल लेना शुरू करूँगा। यह परिवर्तन कब्ज कम करनेके लिए किया है। इससे सहज ही अर्थलाभ होता हो, तो और भी अच्छा है। इसमें किसी तरहका आग्रह नही करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

५८ पत्र है।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८१२३) से। सौजन्य : नारणदास गांधी; बापुना पत्रो - ९ : श्री नारणदास गांधीनेसे भी।

१६७. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
३ सितम्बर, १९३०

चि० वसुमती,

तेरे दोनों पत्र एक-साथ मिले। सरभोणमें तेरे साथ और कौन-कौन है? सर्वथा अभिमान रहित तो केवल एक ईश्वर है। हम सब अभिमानसे मुक्त होनेका रोज प्रयत्न करते रहें।

"शूर संग्रामको देख भागे नहिं . . .
काम और क्रोध मद लोभसे जूझना।"

कल ही जब मैं इस भजनका अनुवाद कर रहा था[1], तो इसका अर्थ और अच्छी तरह समझमें आया। हमारे लिए यही वास्तविक लड़ाई है। यदि हम जूझते रहें तो आखिरकार हमारी जीत होगी ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५३१) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : वसुमती पण्डित; एस० एन० ९२८६से भी।

१. गांधीजी द्वारा किये गये कबीरके इस भजनके अंग्रेजी अनुवादके लिए देखिए अंग्रेजीका खण्ड ४४।

१६८. पत्रका अंश

३ सितम्बर, १९३०

यदि आश्रमकी बहनें तूफानमें फँस जानेपर भी पार हो जायें तभी यह कहा जा सकता है कि हमारा प्रयोग सफल हुआ। चोटें लगनी होंगी तो लगेंगी। ऊपर चढते हुए गिरनेका भय तो बना ही रहता है। हमारा निस्तार यह खतरा उठाने पर ही होगा। हम जान-बूझ कर ऐसी जोखिम न उठाये, किन्तु यदि जोखिम सामने आ जाये तो पीछे न हटे। पुरुषोंके बारेमें हमारे मनमें जितनी उदारता है, उतनी ही स्त्रियोंके बारेमें रखें। हमारी लाज रखनेवाला तो गिरिधारी ही है न? और जैसा हम गाते हैं उसीके अनुसार आचरण भी करें।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६७९८) की फोटो-नकलसे।

१६९. पत्र : सप्रू और जयकरको[1]

५ सितम्बर, १९३०

प्रिय मित्रो,

वाइसराय द्वारा आपको लिखे गये २८-८-१९३० के पत्रको हमने बहुत ध्यान-पूर्वक पढा है। पत्रमें जिन मुद्दोंका जिक्र नहीं है, उन मुद्दों पर वाइसरायके साथ हुई आपकी बातचीतका विवरण भी आपने कृपापूर्वक हमें इसके साथ दे दिया है। पण्डित मोतीलाल नेहरू, डा० सैयद महमूद और पण्डित जवाहरलाल नेहरू द्वारा हस्ताक्षरित और आपके जरिये भेजी गई उनकी टिप्पणी भी हमने उतने ही ध्यानके साथ पढी है। इस टिप्पणीमें उक्त पत्र और बातचीतके सम्बन्धमें उनकी सुविचारित राय दी हुई है।

१. सर तेज बहादुर सप्रू और श्री मु० रा० जयकरसे मिलनेके बाद वाइसरायने २८ अगस्तको उन्हें एक पत्र लिखा था, देखिए परिशिष्ट ३। इसके बाद सप्रू और जयकरने नैनी जेलमें ३० और ३१ अगस्तको मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू और सैयद महमूदसे भेंट की और उन्हें वाइसरायका पत्र तथा वाइसरायके साथ अपनी बातचीतका विवरण भी दिखाया, देखिए परिशिष्ट ४। इसके बाद मोतीलाल और जवाहरलाल नेहरूने सप्रू और जयकरको गांधीजीके नाम अपनी अन्तिम टिप्पणी दी, देखिए परिशिष्ट ५। इन कागजातोंके साथ सप्रू और जयकरने ३, ४ और ५ सितम्बरको यरवडा जेलमें गांधीजी तथा अन्य नेताओंसे बातचीत की। गांधीजीकी हस्तलिपिमें इस पत्रका जो मसविदा एस० एन० १९२७ में प्राप्त है उसमें किसी अन्य व्यक्तिकी हस्तलिपिमें कुछ परिवर्तन और परिवर्द्धन हैं।

हमने इन कागजातोका ध्यानपूर्वक अध्ययन करनेमें दो राते गुजारी है और इनसे उठनेवाले सभी मुद्दों पर आपके साथ दिल खोल कर पूरी तरह वातचीत करने का लाभ भी हमें मिला। और जैसाकि हमने आपको वताया है, हम सब इस निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचे है कि सरकार और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके वीच — बाहरी जगतके साथ सम्पर्क न रहनेके कारण हम जिस हद तक कांग्रेसकी तरफसे बोल सकते है उस हद तक — ऐसी कोई बात नही है जिसपर दोनोके दृष्टिकोण मिल सके। नैनी सेंट्रल जेलमें बन्द विशिष्ट कैदियों द्वारा भेजी गई टिप्पणीमें जो मत व्यक्त किया गया है हम उसके साथ पूरी तरह सहमत है, लेकिन ये मित्र हमसे अपेक्षा करते है कि आप दोनोने देशभक्तिकी भावनासे अपने समयका बलिदान कर और काफी असुविधा उठाकर भी पिछले दो महीनोके दौरान जो शान्ति-वार्ता जारी रखी है, उसमें अन्ततः जिस स्थिति पर हम पहुँचे उसके बारेमे हम अपने ही शब्दोमे अपनी राय प्रकट करे। इसलिए हम यथासम्भव संक्षेपमे उन कठिनाइयोकी चर्चा करेंगे जो शान्ति स्थापित करनेके मार्गमे बाधक रही है।

हमने ऐसा माना है कि वाइसरायका दिनाक १६ जुलाई, १९३० के पत्रका उद्देश्य, जहाँतक हो सके, पण्डित मोतीलाल नेहरू द्वारा २० तारीखको जार्ज स्लोकोम्ब-को दी गई भेंटकी शर्तों और श्री स्लोकोम्ब द्वारा २५ जूनको पण्डित मोतीलाल नेहरू को प्रस्तुत किये गये और उनके द्वारा स्वीकृत वक्तव्यकी शर्तोको पूरा करनेका है। वाइसरायने अपने १६ जुलाईके पत्रमें जिस भाषाका प्रयोग किया है उससे हम ऐसा कोई अर्थ नही निकाल सके कि वह भेंटकी या वक्तव्यकी शर्तोंको पूरा करता है। भेंट और वक्तव्यके सम्बन्धित अंश इस प्रकार हैं।

> भेंटमें कहा गया था : "गोलमेज सम्मेलनकी शर्तें यदि निर्धारित नहीं की जातीं और हमसे यह आशा की जाती हो कि हम औपनिवेशिक दर्जा पानेकी अपनी माँगका औचित्य सिद्ध करनेके लिए लन्दन जायें, तो मैं अस्वीकार कर दूँगा। लेकिन यदि यह बात स्पष्ट कर दी जाये कि सम्मेलनकी बैठकमें भारतकी विशेष आवश्यकताओं और परिस्थितियों तथा हमारे पिछले सम्बन्धोंकी दृष्टिसे आवश्यक हमारे पारस्परिक सम्बन्धोंके समायोजनका ध्यान रखते हुए एक स्वतन्त्र भारतका संविधान बनाया जायेगा, तो मैं व्यक्तिगत तौरपर कांग्रेसको सम्मेलनमें शामिल होनेका निमन्त्रण स्वीकार करनेकी सलाह दूँगा। हमें अपने घरमें मालिक होना चाहिए, लेकिन भारतमें ब्रिटिश प्रशासन द्वारा एक जिम्मेदार भारतीय सरकारको सत्ता हस्तांतरित किये जानेकी अवधि भरके लिए हम उचित शर्तोंको स्वीकार करनेके लिए तैयार हैं। सम्मेलन इसलिए होना चाहिए कि हम ब्रिटिश जनताके साथ इन शर्तोंके सम्बन्धमें बराबरीके दर्जेपर उसी तरह बात कर सकें जैसेकि एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रसे बातचीत करता है।"[१]

१. मसविदेमें यह अनुच्छेद नहीं था।

वक्तव्यमें निम्नलिखित बात कही गई थी :

"सरकार खानगी तौर पर यह आश्वासन देगी कि वह भारतकी विशेष आवश्यकताओं और परिस्थितियों तथा ग्रेट ब्रिटेनके साथ उसके लम्बे सम्बन्धको देखते हुए समायोजन और सत्ताके हस्तान्तरणकी जो शर्तें आवश्यक होंगी तथा गोलमेज सम्मेलन जैसा तय करेगा, वैसी पारस्परिक समायोजना तथा सत्ता-हस्तांतरणकी शर्तोंके साथ पूर्ण उत्तरदायी सरकारकी माँगका समर्थन करेगी।"[1]

वाइसरायके पत्रका प्रासगिक अग निम्नलिखित है :

मेरी और मेरी सरकारकी — और मुझे कोई सन्देह नहीं कि सम्राट्की सरकारकी भी — यह हार्दिक इच्छा है कि जिन मामलोंमें भारतीय लोग अभी स्वयं जिम्मेदारी उठानेकी स्थितिमें नहीं हैं, उन मामलोंके सम्बन्धमें विशेष उपाय करनेके बाद भारतकी जनताको यथासम्भव अधिकसे-अधिक मामलोंमें उस हद तक स्वराज्य दिलानेके लिए हम अपने-अपने क्षेत्रमें मदद करें जिस हद तक यह दिखाया जा सके कि वैसा करना उन विशेष उपायोंसे असंगत नहीं होगा। वे मामले क्या हैं, और उनके लिए क्या पूर्वोपाय करना सर्वोत्तम होगा, इस प्रश्नपर सम्मेलन विचार करेगा, लेकिन मैंने कभी ऐसा नहीं माना है कि दोनों पक्षोंके बीच परस्पर विश्वास होनेपर कोई समझौता हो सकना असम्भव है।[2]

हमें लगता है कि दोनो पक्षोने जो स्थिति अपनाई है उसमे जबर्दस्त अन्तर है। पण्डित मोतीलालजीकी जहाँ यह कल्पना है कि प्रस्तावित गोलमेज सम्मेलनमें विचार-विमर्शके परिणाम-स्वरूप भारत स्वतन्त्र हो जायेगा और उस स्वतन्त्र भारतका दर्जा आज भारतको प्राप्त दर्जेसे भिन्न प्रकारका होगा, वहाँ वाइसरायका पत्र केवल उनकी, उनकी सरकारकी और ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलकी यह हार्दिक इच्छा मात्र व्यक्त करता है कि जिन मामलोमें भारतीय लोग अभी स्वय जिम्मेदारी उठानेकी स्थितिमे नही है, उन मामलोके सम्बन्धमें विशेष उपाय करनेके बाद वे भारतकी जनताको यथासम्भव अधिकसे-अधिक मामलोमें उस हद तक स्वराज्य दिलानेमें मदद करना चाहते हैं जिस हद तक यह दिखाया जा सके कि वैसा करना उन विशेष उपायोसे असगत नही होगा। दूसरे शब्दोमें, वाइसरायके पत्रसे यही सम्भावना प्रकट होती है कि लैसडाउन रिफॉर्म्सके नामसे विख्यात सुधारोके साथ ही साथ कुछ और सुधार भी लागू कर दिये जायेंगे।

चूँकि हमें भय था कि हमारी व्याख्या सही है, अतः अपने १५-८-१९३० के पत्रमें, जिसपर पण्डित मोतीलाल नेहरू, डा० सैयद महमूद और पण्डित जवाहरलाल नेहरूने भी हस्ताक्षर किये थे, हमने स्थिति निषेधात्मक रूपमें रखी थी और बताया था कि क्या-क्या बातें हैं जो हमारी रायमें कांग्रेसको सन्तुष्ट नही करेगी। जो पत्र

१ और २. मसविदेमें ये अनुच्छेद नहीं थे।

अब आप वाइसराय महोदयसे लाये है उसमें वही बात दोहराई गई है जो उन्होंने अपने पहले पत्रमें कही थी, और हमें यह कहते हुए दुख होता है कि इस पत्रमें वाइसराय महोदयने हमारे पत्रको तिरस्कारपूर्वक विचारके योग्य भी नही माना है और उस पत्रमें निहित सुझावोंके आधार पर समझौता-वार्ता करनेको असम्भव बताया है।

आपने हमें यह बताकर इस प्रश्न पर और ज्यादा प्रकाश डाला है कि "यदि श्री गांधी सरकारके सामने निश्चित रूपसे ऐसा सवाल रखेंगे" अर्थात् भारतकी इच्छा पर साम्राज्यसे पृथक होनेके अधिकारका सवाल रखेंगे, तो वाइसराय कहेंगे कि हम इस सवालको विचारणीय प्रश्न माननेको तैयार नही है। हम लोग, दूसरी ओर, ऐसा मानते है कि भारतको जो भी संविधान मिलेगा उसमें यह अधिकार सबसे महत्त्वपूर्ण होगा और यह ऐसा प्रश्न है जिसपर किसी बहसकी जरूरत नही होनी चाहिए। यदि भारतको अब पूर्ण उत्तरदायी सरकार या पूर्ण स्वायत्त शासन, अथवा उस सरकारका जो भी नाम रखा जाये, प्राप्त करना है तो यह बिल्कुल स्वैच्छिक आधार पर ही हो सकता है, जिसमें प्रत्येक पक्षको अपनी इच्छाके अनुसार साझेदारी या सम्बन्ध तोड़नेका अधिकार होगा। यदि भारतको आगेसे साम्राज्यका अंग नही रहना है बल्कि राष्ट्र-मण्डलमें एक बराबरीका दर्जा रखनेवाले स्वतन्त्र सदस्यके रूपमें रहना है, तो वैसी हालतमें उसे इस सम्बन्धकी आवश्यकता और हार्दिकताका अनुभव होना चाहिए। इस सम्बन्धमें इससे भिन्न कोई स्थिति कदापि स्वीकार्य नही हो सकती। आप कृपा करके देखेंगे कि हमने जिस भेंटका ऊपर जिक्र किया है उसमें यह स्थिति स्पष्ट रूपसे जता दी गई है। इसलिए जबतक ब्रिटिश सरकार या ब्रिटिश जनता इस स्थितिको असम्भव या अतर्कसंगत मानती है तबतक हमारी रायमें कांग्रेसको स्वतन्त्रता की लड़ाई जारी रखनी चाहिए।

नमक-करके विषयमें दिये गये हमारे अत्यन्त नरम प्रस्तावके सम्बन्धमें वाइसराय महोदयने जो रवैया अपनाया है उससे हमें सरकारकी मनोवृत्तिकी बडी दुखद झाँकी मिलती है। हमारे लिए यह बात दिनके प्रकाशके समान स्पष्ट है कि शिमलाकी चकरानेवाली ऊँचाइयों पर बैठे हुए भारतके शासक मैदानोंमें रहनेवाले उन करोडो क्षुधापीड़ित लोगोंकी कठिनाइयोंको न तो समझ सकते हैं, न उन्हें उनका अहसास ही हो सकता है जिनके अनवरत श्रमके कारण ही उन चकरानेवाली ऊँचाइयों परसे शासन करना सम्भव है।

गरीब लोगोंके लिए जिस प्रकृति-प्रदत्त वस्तुका महत्त्व हवा और पानीके समान ही है, उस चीजपर एकाधिकार बनाये रखनेके लिए निर्दोष लोगोंका खून बहाकर भी यदि सरकारको उसकी घोर अनैतिकताका विश्वास नही हुआ है, तो वाइसराय द्वारा सुझाया गया भारतीय नेताओंका कोई सम्मेलन वैसा विश्वास नही दिला सकता। यह सुझाव देना कि एकाधिकारको रद करनेकी माँग करनेवालोंको उतने ही राजस्वका कोई अन्य साधन बताना चाहिए, जलेपर नमक छिड़कनेके समान है। यह रवैया इस बातका संकेत है कि यदि सरकारका वश चले तो मौजूदा पीस डालनेवाली खर्चीली प्रणाली अनन्त काल तक जारी रहेगी। हम यह भी ध्यानमें लानेका साहस करते

है कि यहाँकी सरकार ही नही बल्कि समारभर की सरकारें ऐसे कानूनोंके उल्लघनको खुले तौर पर माफ करती है जो अलोकप्रिय हो गये है किन्तु जिन्हे प्राविधिक अथवा अन्य किन्ही कारणोवश एकदम रद नही किया जा सकता।

अब हमें उन अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण विषयोकी चर्चा करनेकी जरूरत नही है जिनके बारेमें हमने जनताकी स्थिति स्पष्ट की थी किन्तु जिनके बारेमे वाइसरायने कोई अनुकूल उत्तर नही दिया है। हम आशा करते है कि हमने ऐसे पर्याप्त महत्त्व-पूर्ण मामले यहाँ गिनाये है जिनके बारेमे इस समय ब्रिटिश सरकार और काग्रेसके बीच ऐसे मतभेद है जिन्हे दूर नही किया जा सकता।

तथापि शान्ति-वार्ताकी प्रकट विफलता पर निराश होनेकी जरूरत नही है। काग्रेस स्वतन्त्रताकी कडी लडाई लड रही है। हमारे राष्ट्रने एक ऐसे अस्त्रका सहारा लिया है जिसके हमारे शासक अभ्यस्त नही है और इसलिए जिसे समझने और जिसकी कद्र करनेमें उन्हे समय लगेगा। हमारे कुछ महीनोंके कष्ट-सहनसे उनका हृदय-परिवर्तन नही हुआ है, इस बात पर हमें कोई आश्चर्य नही है।

काग्रेसकी इच्छा किसीके भी, वह कोई भी क्यो न हो, वैध हितोको हानि पहुँचानेकी नही है। काग्रेसका अग्रेजोसे उनके अग्रेज होनेके नाते कोई झगडा नही है, लेकिन वह असह्य ब्रिटिश आधिपत्यका अपनी सम्पूर्ण नैतिक शक्तिसे विरोध करती है और करेगी। अन्त तक अहिंसात्मक रहनेका विश्वास होनेके कारण हमें निश्चय है कि हमारी राष्ट्रीय आकांक्षाएँ शीघ्र ही पूरी होगी। यह बात हम सविनय अवज्ञाके सम्बन्धमें शासक वर्ग द्वारा कटु और अक्सर अपमानजनक भाषा प्रयुक्त की जानेके बावजूद कह रहे है।

अन्तमें, हम एक बार आपको फिर धन्यवाद देते हैं कि आपने शान्ति स्थापित करनेके लिए इतनी तकलीफ उठाई है, लेकिन हमारी रायमें काग्रेस सगठनके अधि-कारियोके साथ और आगे शान्तिवार्ता चलानेका अभी समय नही आया है। बन्दी होनेके कारण हमारे सामने कुछ स्पष्ट कठिनाइयाँ है। हमारी राय, जैसाकि अनि-वार्य है, दूसरोसे सुनी बातो पर आधारित है और उसके गलत होनेका खतरा है। काग्रेस सगठनकी बागडोर जिनके हाथमें है वे स्वभावतः चाहने पर हममें से किसीसे भी मिल सकते है। वैसी स्थितिमें, और जब सरकार स्वयं भी शान्तिकी उतनी ही इच्छुक हो, तब उनके लिए हमसे मिलनेमें कोई कठिनाई नही होनी चाहिए।

मो० क० गांधी

सरोजिनी नायडू

वल्लभभाई पटेल

जयरामदास दौलतराम

[अग्रेजीसे]

हिन्दू, ५-९-१९३०

१७०. पत्र : भगवानजी पण्डचाको

५ सितम्बर, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारा दुःखपूर्ण पत्र मिला। . . .[1] तो बहुत अधम महिला प्रतीत होती है। लेकिन अब उसे दयासे जीता जा सके तो हम प्रयत्न करेंगे। तुम्हारा धर्म स्पष्ट है। तुम्हें उसका सग फिलहाल तो तुरन्त छोड़ देना चाहिए। तुम्हें न उससे सेवा लेनी है न उसकी सेवा करनी है। मैंने उसे पत्र लिखा है। वह पत्र नारणदास उसे पढ़नेको देगा। तुम [भी] उसे पढ जाना। जो पुरुप अथवा स्त्री किसी अन्य स्त्री अथवा पुरुषके प्रति मनसे विकारवश हो सकते हैं उन्हे अपने पति अथवा पत्नीसे सेवा लेने अथवा उसकी सेवा करनेका अधिकार नही रह जाता। तुम्हारा पति-पत्नीका सम्वन्ध तो खत्म हो गया है और यदि यह सम्वन्ध हो भी तो विकारवश पति अपनी पत्नीकी शुद्धभावसे कदापि सेवा नही कर सकता। इस वातको अनुभवसिद्ध समझो। इसलिए फिलहाल तो तुम इस वातको ही अपने मनसे निकाल देना कि . . .[2] नामका कोई प्राणी आश्रममें रहता है। इसीमें तुम्हारा श्रेय है। . . .[3] के लिए यदि यह स्थिति असह्य होगी तो वह चली जायेगी और यदि वह जाती है तो भले ही चली जाये। यह सव तुम्हें समझ न आया हो तो फिर पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२३) से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्डचा

१७१. पत्र : पूँजाभाईको

यरवडा मन्दिर
५ सितम्बर, १९३०

चि० पूंजाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। स्वास्थ्य विगड़ने पर हमें शर्मिन्दा तो होना ही चाहिए। किन्तु प्रायः अनजाने ही हमें रोग आ घेरते है। यह मानकर हमें अपने मनको शान्त रखना चाहिए। हम नम्र रहें और ईश्वरके प्रति अपनी श्रद्धाको बढ़ायें, यही बीमारीका सदुपयोग है। तुम कौन-सी चिकित्सा करा रहे हो? तुम्हारा चिकित्सक कौन है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४०१५) की फोटो-नकलसे।

१, २ और ३. यहाँ नाम छोड़ दिये गये हैं।

१७२. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

यरवडा मन्दिर
५ सितम्बर, १९३०

चि० जयसुखलाल,

नारणदासका कहना है कि मैंने तुम्हें पत्र नही लिखा। किन्तु जहाँतक मुझे याद पडता है मैंने तो तुम्हे पत्र लिखा था। क्या तुम्हे यह याद पडता है कि मैंने तुम्हारे किसी पत्रका उत्तर न दिया हो? वहाँके समाचार देना। कसुवा कैसी है? युक्ति वापस क्यो लौट आई? यदि वह लिख सके तो मुझे लिखे। तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एम० एम० यू०/३) की माइक्रोफिल्मसे।

१७३. पत्र : शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
६ सितम्बर, १९३०

चि० शारदा (बबु),

तेरे पत्र तो सभी मिल जाते हैं। यह सच है कि मैं तुझे हर हफ्ते पत्र नही लिखता। अस्तेय आदि व्रतोके बारेमें मैं जो लिखता हूँ वह जरा अधकचरा होता है, इसलिए यदि तुझे उसमें रस न आये तो यह बात मै समझ सकता हूँ। भाषा अधकचरी नही बल्कि विचार अधकचरे हैं और वे सक्षेपमें व्यक्त किये जाते हैं। बडी बातको थोडेमें इसी प्रकार समझाया जा सकता है। अब तू यदि इन सब बातोको चिमनलाल या प्रेमाबहनसे विस्तारपूर्वक समझकर फिर पढे तो तुझे उसमें रस आयेगा। यदि तुझे समझनेकी इच्छा होगी तो तू भी अवश्य समझ सकेगी। आशा है अब तुझे दमा नही उखडता होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८८९) से। सौजन्य : शारदाबहन जी० चोखावाला

१७४. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
६ सितम्बर, १९३०

चि० प्रेमा,

तूने अब स्वास्थ्यकी चिन्ता छोड़ दी होगी। जमनादासने[1] इस तरह सबसे मिलनेसे क्यों इनकार कर दिया? तुझे और कुछ मालूम हुआ हो तो लिखना।

आश्रमके पुस्तकालयमें हर भाषाकी कितनी पुस्तकें हैं, इसका किसीने हिसाब लगाया है? पुस्तकालयके लिए कितना समय देना पड़ता है? चोरोंका उपद्रव कैसा है? बरसात अब तो नहीं होती होगी। यहाँ तो बहुत थोड़ी हुई है। आज ठीक पानी बरस रहा है। जरूरत भी बहुत थी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८१)से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२३३की फोटो-नकलसे भी।

१७५. पत्र : लीलावती आसरको

यरवडा मन्दिर
६ सितम्बर, १९३०

चि० लीलावती (आसर),

तेरा पत्र मिला। नारणदास लिखता है कि तुझे दौरे बहुत आने लगे हैं। ऐसी अवस्थामें आराम लेना जरूरी है। आश्रममें या जहाँ तुझे अच्छा लगे वहाँ कुछ दिन रह आ। किन्तु यह सब खुर्शेदबहनकी अनुमति लेकर ही किया जा सकता है। तुझे अपनी दैनन्दिनीमें सोलह आने सच बात लिखनी चाहिए। फिर भले ही उसे कोई भी क्यों न पढ़े। हम जैसे हैं, दुनियाके सामने अपना वही रूप रखनेमें हमारा भला है। और इससे किसी तरहकी मान-हानि भी नहीं होती।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९५६४) की फोटो-नकलसे।

१. जमनादास गांधी, जो उस समय राजकोट-जेलमें थे।

१७६. पत्र : बेचरदास दोषीको

६ सितम्बर, १९३०

भाई बेचरदास,

तुम्हारा पत्र मिला। सच कहा जाये तो इसका उत्तर काकासाहब को देना चाहिए था। किन्तु वे अधिक पत्र नही लिख सकते, इसलिए फिलहाल मैं ही लिख रहा हूँ। यह मान लेना कि इसमें व्यक्त किये गये विचार हम दोनोके हैं। व्युत्पत्तिकी पद्धतिके बारेमें मैं कुछ नही लिखूंगा।[1] यदि भविष्यमें काकासाहब को कुछ लिखना होगा तो लिखेंगे। उनसे बातचीत करनेके बाद मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारा प्रधान कार्य आगमोका[2] अनुवाद करना ही है। श्री पूंजाभाईने जो पैसा दिया है वह इसी कामके लिए दिया है, अतः हमारा कर्त्तव्य है कि उसपर यथासम्भव तेजीसे अमल किया जाये। इस कार्यमें अपना समय देनेसे यदि व्युत्पत्तिका काम स्थगित करना पडे या उसमें शिथिलता आये तो चिन्ता नही करनी चाहिए या फिर बिना किसी अड-चनके यदि यह काम दूसरोसे कराया जा सके तो करा लेना चाहिए। भक्तिप्रसादको तुम्हारे पास इस खयालसे नही रखा गया था कि वह मूल काम करेगा बल्कि वह तुम्हारे हाथके नीचे रहकर मदद करेगा और यदि वह सावधानीसे काममें लगा रहेगा तो उसमें निष्णात हो जायेगा।

मेरे विचारसे तुम्हें अपनी आँखोके इलाजके बारेमें एक सीमा निर्धारित कर लेनी चाहिए। गुजरातमें आसानीसे जो मदद मिल सके, तुम्हें उतनेमें ही सन्तोष कर लेना चाहिए। डा० हरिभाई आँखके रोगोके विशेषज्ञ हैं। यदि वे कुछ नही कर सकते तो अन्य कोई कुछ नही कर सकेगा, यह मानकर तुम्हे सन्तोष कर लेना चाहिए। गरीबीकी जिन्दगी बितानेके लिए ऐसी कोई सीमा होनी चाहिए। असख्य गरीबोको क्या हरिभाई-जैसा डाक्टर भी मिल पाता है? यह तो मेरा अपना व्यक्तिगत विचार है। और यह कहा जा सकता है कि काकासाहब भी इस विचारसे सहमत हो गये हैं। किन्तु यह एक नाजुक मामला है। सभीको अपनी बुद्धि और इच्छानुसार सीमा निर्धारित करनी चाहिए। ऐसे मामलोमें एक व्यक्तिकी सीमा सबपर लागू नही हो सकती।

बापू

[पुनश्च :]

काकासाहब सहमत "हो गये" है, इसमें "हो गये" का प्रयोग करनेका कारण काकासाहब यह बताते है कि उन्होने ही पहले तुमसे एक दो अन्य डाक्टरोकी सलाह लेनेको कहा था। किन्तु अब उन्हें मेरा विचार उचित जान पडता है।

गुजराती (जी० एन० १३४०) की फोटो-नकलसे।

१. गुजराती कोशके लिए, जिसका सम्पादन उन दिनों गुजरात विद्यापीठमें हो रहा था।
२. जैन आगम।

१७७. पत्र : कमलनयन बजाजको

यरवडा मन्दिर
६ सितम्बर, १९३०

चि० कमलनयन,

तेरा खत मिला। अच्छा लिखा गया है। यदि वही काफी काम है तो अजमेर जानेकी आवश्यकता मुझे प्रतीत नही होती है। अजमेरमें ज्यादा जरूरत किसीकी है तो जाना चाहिये सही। यहाँसे निश्चयपूर्वक अभिप्राय देना मुश्केल है। माताजी क्या कहती हैं? धार्मिक निर्णय तो टुकड़ीका सरदार हि दे सकता है। आजकल सुरेन्द्रजी है उनसे पूछना।

मराठीमें खत लिखना मेरे लिये प्राय: अब तक तो असंभवित है। पढनेका मुझको समय भी कम मिलता है। जानकी बहनको कहो मुझे लिखे।

का. सा. के आ.[1]

बापुके आशीर्वाद

पांचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद

१७८. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
७ सितम्बर, १९३०

चि० मीरा,

तिरुपुरसे लिखा तुम्हारा पत्र मिला। हमारी शान्ति-वार्ताके विषयमें अब तो तुम सभी जानती हो! मेरा जो वजन यहाँ कम हुआ था वह फिर पूरा हो गया है। पिछले शुक्रवारको मेरा वजन १०४ पौंड था। मैंने मेवे लेना भी छोड़ दिया है। नीबू लेता हूँ। मेवोंकी जगह सब्जियाँ लेता हूँ। शकरकन्द और कच्चा टमाटर बराबर लेता हूँ। शकरकन्द भुने हुए होते हैं। कोई एक ही सब्जी उबली हुई होती है — आम तौरसे यह बंदगोभी, लौकी या ऐसी ही कोई होती है। इस परिवर्तनसे ही वजन फिर पहले जैसा हुआ है और अब कब्जकी मुझे कोई शिकायत नही है। अगर अन्तमें यह परिवर्तन सफल सिद्ध हुआ तो खर्चा काफी घट जायेगा। हम देखेंगे। मैंने फल न लेनेके बारेमें कोई सख्त नियम नही बनाया है। लेकिन इस समय उसकी कमी खलती नहीं, और न लेनेसे स्वास्थ्यमें लाभ ही हुआ है।

१. काकासाहब के आशीर्वाद।

चरखे पर मेरा अभ्यास बढ़ता जा रहा है। अब थकावट बिल्कुल नहीं होती। मैं देखता हूँ कि यदि पूनी अच्छी हो, तो सूत निकालते समय अगर पूनीके सिरे पर ध्यान रखा जाये, और जब सूतको शंकु पर लाया जा रहा हो उस समय तकुएकी नोक पर ध्यान रखा जाये, और जब सूतको शंकु पर चढाया जाये उस समय शंकु पर ध्यान रखा जाये तो धागेको टूटनेसे बचाया जा सकता है। मैं आशा करता हूँ कि शीघ्र ही मैं अपनी गति काफी बढा लूंगा। अभी भी वह पहलेसे अच्छी है। लेकिन सुधारकी बहुत गुंजाइश है। जो हो, इस वक्त मैं अन्य अध्ययन-कार्य छोड कर सारा ध्यान चरखे पर ही लगा रहा हूँ। काका अभी भी तुम्हारा ही चरखा चला रहे हैं। उनकी गति धीमी है। धुनकी काफी ठीक है। उसे संयोजित करनेमें मुझे कोई कठिनाई नहीं होती। जबसे वह मेरे पास है तबसे उसकी ताँत केवल एक बार टूटी है और सो भी तब जब काकाने उसपर काम करना शुरू किया। वह धुनाईके काममें बिलकुल नये हैं लेकिन वह बहुत सावधान कामगर हैं। फिर, मैंने जहाँ देखा कि ताँत घिस गई है वहाँ मैंने उसे जानबूझ कर काट भी दिया था। काकाने तकुएसे सूत उतारते समय उसे फँसा कर रखनेकी एक नयी अडानी निकाली है। यह अडानी पेटीमें जडी है। तकुएको उसमें चढा देते हैं और सूतको बायें हाथकी अँगुलियोंमें पकडा जाता है। नतीजा यह होता है कि सूत लपेटनी पर काफी कसा हुआ चढता है। समयकी भी बचत होती है। तुम्हारे चरखे पर बेशक सूत उतारते समय तकुआ चमरखेमें ही लगा रहता है। अडानीकी जरूरत पेटीके लिए थी।

मुझे आशा है कि तुमको कहीं कुछ आराम मिल गया होगा। बहुत तेजीसे मत भागो।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४१०) से। सौजन्य : मीराबहन, जी० एन० ९६४४ से भी।

१७९. पत्र : मणिबहन पटेलको

यरवडा मन्दिर
७ सितम्बर, १९३०

चि० मणि (पटेल),

तेरा पत्र मिला। बापू तथा जयरामदास दो दिन और साथ रहकर चले गये। इतनेमें तेरा पत्र मिला। इसलिए बापूने भी पढ़ा। बापूको लिखा पत्र मैंने पढ़ा। माँ सम्बन्धी वर्णन हृदयद्रावक है। अधिकतर प्राचीन माताएँ ऐसी ही होती थी। इसलिए तूने जो वर्णन किया है, उसपर आश्चर्य नही होता। हालांकि प्रेमका यह स्वरूप मोह-जनित है फिर भी इतना उज्ज्वल है कि नित्य नया जैसा ही लगता है। पत्र लिखनेके नियमको भंग न करना। यात्रामें (जेलमें) पहुँच जायें तो दूसरी बात है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ४ : मणिबहेन पटेलने

१८०. पत्र : सुशीला गांधीको

यरवडा मन्दिर
७ सितम्बर, १९३०

चि० सुशीला,

बहुत दिन बाद तेरा पत्र मिला। 'उलटा चोर कोतवालको डाँटे' वाली बात तू करती है। मेरा इससे पहला पत्र तो तुझे मिला ही होगा? सीताकी बीमारी बहुत लम्बी चली। वह इतनी बीमार कैसे हो गई, क्या तू यह भी नही समझ पा रही है? सीताको अपनी आँखोसे देखे बिना मेरी कुछ कहनेकी हिम्मत नही हो रही है। किन्तु मैं यह सुझाव दूँगा कि यदि तू उसे बहुत-सी चीजोंके बजाय मुख्यतः दूध, दही और फल दे, तो अच्छा हो। यदि टोस्ट दिये जायें तो वे 'ब्राउन ब्रेड' के होने चाहिए। उसे दलिया देनेकी कोई आवश्यकता नही जान पड़ती। यदि तू चाहे तो उसे 'कॉड-लिवर आयल' [मछलीका तेल] देना। मैं तो यह तेल देनेकी बात भी नही सोच सकता। किन्तु मेरे इस विचारको महत्त्वपूर्ण मत मानना। तेरा कान कैसा है? मुझे हर हफ्ते लिखती रहना। और स्याहीसे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७७१) की फोटो-नकलसे।

१८१. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
७ सितम्बर, १९३०

चि० मनु (त्रिवेदी),

तेरा चित्त शान्त नही हुआ क्या? यदि अब भी तेरा समाधान न हुआ हो तो मुझसे लगातार जूझता रह। मै तुझसे बलात् पुण्य नही करवाना चाहता। इस संसारमें आज तक कोई बलात् पुण्य कर भी नही सका है। और फिर तेरी तो इच्छा भी शुभ है; इसलिए मैं तेरा दिल दुखाकर तुझे वहाँ बिठाये नही रखना चाहता।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७६२) की फोटो-नकलसे।

१८२. पत्र : रेहाना तैयबजीको

यरवडा मन्दिर
७ सितम्बर, १९३०

चि० रेहाना,

तेरा पत्र मिला। मेरा छोटा-सा पत्र देखकर तू भी अपने पत्रको छोटा मत करना। मेरे छोटा पत्र लिखनेका कारण तो तू जानती है। बावाजान 'सीरत' का अनुवाद किस भाषामें कर रहे है? 'सीरत' और 'उस्वा-ए-सहाबा' मैंने अपनी पहली कैदके दौरान पढे थे और उन्हें पढनेमें मुझे बहुत आनन्द आया था। किन्तु बादमें मेरी उर्दूमें जंग लग गया और अब कताईके कारण पढनेकी फुरसत नही मिलती।

तेरा स्वास्थ्य तो जब ईश्वरकी कृपा होगी, तभी सुधरेगा। "भगवानकी जब जो मर्जी हो उसके लिए शोक करना वृथा है।" बावाजानको भुर्रर और अम्माजान-को वन्देमातरम्। तुझे तथा बहनोको खुदा हाफिज[1]।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९६२०) की फोटो-नकलसे।

१. 'खुदा हाफिज' उर्दूमें लिखा है।

१८३. पत्र : तारामती मथुरादास त्रिकमजीको

७ सितम्बर, १९३०

चि० मथुरादास जेल चला गया इससे तू घबराती तो नहीं है? अभी कहाँ रह रही है? तेरा और दिलीपका स्वास्थ्य कैसा रहता है? मथुरादास क्या लिखता है? उसे क्या-कुछ असुविधा है? तू समय कैसे बिताती है? सार्वजनिक काममें कुछ भाग लेती है क्या? कोई तुझसे मिलने आता है? तू किसीसे मिलने जाती है।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी

१८४. पत्र : कलावती त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
७ सितम्बर, १९३०

चि० कलावती,

तुम्हारा खत बहोत दिनोसे मिला। सासकी सेवाके लिये जाना चाहिये हि तो जाना। प्रायः यह खत भी वही मिलेगा। नियमोंका भली भांति पालन करना। खानेमें भी बहोत मर्यादा रखना।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२५० की फोटो-नकलसे।

१८५. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

यरवडा मन्दिर
८ सितम्बर, १९३०

प्रिय कुमारप्पा,

तुम्हारी भेजी पुस्तिका मुझे अभी तक नही मिली है। एक रोमाच सात्विक होता है और एक राजसिक होता है। तुम्हारी लिखी रचनाएँ किस वर्गमें आती हैं? हम उन अमेरिकी महिलाके बारेमें और आगे सुननेकी अपेक्षा करते हैं। मुझे आशा है कि आश्रमका जीवन उनके लिए बहुत कठिन सिद्ध नही होगा। अपने स्कूलमें चरखे और तकलीका आरम्भ करानेके लिए श्रीमती अप्पास्वामीको हमारी सयुक्त बधाई।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १००९०) की फोटो-नकलसे।

१८६. पत्र : पी० जी० मैथ्यूको

यरवडा मन्दिर
८ सितम्बर, १९३०

प्रिय मैथ्यू,

मानवकी वाणी सत्यका वर्णन करनेके लिए अपर्याप्त है। आत्मा अजन्मा और अविनाशी है। [बाहरी] व्यक्तित्व नष्ट होता है, उसे नष्ट होना ही है। जिस प्रकार सागरमें प्रत्येक बूंदका एक व्यक्तित्व है भी और नही भी है, उसी प्रकार व्यक्तिकी सत्ता है भी और नही भी। ऐसा इसलिए नही कि सागरसे पृथक बूंदका कोई अस्तित्व ही नही है। ऐसा इसलिए कि यदि बूंदका अस्तित्व नही है अर्थात् उसकी कोई वैयक्तिक सत्ता नही है, तो सागरका भी कोई अस्तित्व नही है। ये बहुत ही सुन्दर ढंगसे परस्पर निर्भर है। और यदि यह बात भौतिक जगतके बारेमें सच है तो आध्यात्मिक जगतके मामलेमें कितनी सच न होगी।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १५५४) की फोटो-नकलसे।

१८७. पत्र : मोतीबहन चोकसीको

यरवडा मन्दिर
८ सितम्बर, १९३०

चि० मोती,

तू आश्रम पहुँच गई, यह बहुत अच्छा हुआ। अब यदि तू शान्तिसे रह सके, तो अच्छा हो। जब भड़ौंचसे तुझे कुछ नहीं मिलता तो तेरा खर्च कैसे चलता है? क्या नाजुकलालने कुछ बचाया है?

लक्ष्मीसे मुझे पत्र लिखनेको कहना। जीवनदास कहाँ है और क्या कर रहा है? जेठालाल कहाँ है? मणिकी क्या खबर है? बम्बईमें वह क्या करती है? क्या गोकीबहन सेवा-कार्यमें कुछ हाथ बँटाती है? तेरा दैनिक कार्यक्रम क्या रहता है? वल्लभभाई कह रहे थे कि लक्ष्मीदासको बुखार आ गया था। बुखार कैसे आया? अब उन्होंने वल्लभभाईको मेरे पाससे हटा दिया है। उन्हें दो-तीन दिनके लिए ही यहाँ रखा गया था। जेलमें तो ऐसा ही होता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० १२१४७) की फोटो-नकलसे।

१८८. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

यरवडा मन्दिर
८ सितम्बर, १९३०

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा प्रणाम मुझ तक पहुँच गया है। मैं तुम्हारा रोज स्मरण करता हूँ। घड़ी तो मेरे सामने ही पड़ी है न? तुम मुझे पत्र लिख सकते हो। क्या तुम्हारी कठिनाइयाँ दूर हुईं? माँजी को प्रणाम। ईश्वर तुम्हारे मनको शान्ति दे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४७१९) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

१८९. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
८ सितम्बर, १९३०

चि० काशिनाथ,

किसी व्यक्तिको अपनी मानसिक स्थितिके बारेमें बहुत सोच-विचार नही करना चाहिए। हमें अपने नियत कार्यमें तन्मय रहना चाहिए और प्रफुल्लित रहना चाहिए। जब हमारे मनमें विकारपूर्ण विचार आने लगें तो सद्विचारो द्वारा उनका निवारण करके हमें शान्त रहना चाहिए। अपने निश्चयो पर दृढ रहनेसे आत्मविश्वास अपने-आप आ जाता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२५१)की फोटो-नकलसे।

१९०. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

यरवडा मन्दिर
८ सितम्बर, १९३०

चि० मथुरादास,

तुम्हारा पत्र मिला, किन्तु मोतीबहनका पत्र नजर नही आया।

उपाधियोके बारेमें काकासाहब से बातचीत करनेके बाद हम दोनो इस निर्णय पर पहुँचे हैं कि उनकी तीनसे अधिक श्रेणियाँ न रखी जायें तथा हर तरहके हुनर, कला या साहित्य ज्ञानके लिए एक ही प्रकारकी उपाधि होनी चाहिए। फिलहाल 'विनीत', 'विशारद' और 'पण्डित' इस प्रकार विद्यापीठकी तीन उपाधियाँ है। जिसने किसी विषयमें सामान्य ज्ञान प्राप्त किया हो वह 'विनीत' (मेट्रिकुलेशन-प्रवेश), जिसने उक्त विषयमें प्रवीणता प्राप्त कर ली हो अर्थात् जो दूसरोंको पढ़ा सके वह 'विशारद' (ग्रेजुएट) और जो इस विषयमें शोध कर सके, शोध-प्रबन्ध और लेख लिख सके, वह 'पण्डित'। इस बातको ध्यानमें रखते हुए 'पण्डित' की उपाधि फिलहाल किसीको न दी जाये। 'धनुर्विनीत', 'धनुर्विशारद' की उपाधि दी जा सकती है। यदि तुम उपाधियाँ दो तो इस बातका ध्यान रखना कि उन्हें बहुत सस्ता मत बना देना। परीक्षक नियुक्त करके जो यथारीति उत्तीर्ण हो उन्हीको उपाधियाँ देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७४४) की फोटो-नकलसे।

१९१. पत्र : नारणदास गांधीको

५/९ सितम्बर, १९३०

चि० नारणदास,

पत्रोंका पुलिंदा बुधवारको ही मिला। भगवानजी और मणिबहनके पत्र पढ़ लेना। मणिबहनका पत्र उसे तुम खुद पढ़ाना। दोनों पत्र पढ़नेसे सब समझ आ जायेगा और तुम्हें और कुछ बतानेकी जरूरत नही रहेगी। ऐसे काम भी तुम्हीको करने पड़ेंगे, इसका विचार नही किया था; पर मुझे सोच लेना चाहिए था। तुममें इन्हें भी पूरी तरह सँभाल लेनेकी शक्ति है, यह ईश्वरकी कृपा है। केशुका काम कठिन लगता है। सँभलकर जैसे काम चले वैसे चलाना। नवीनके साथ क्यों नही बनी? पहले तो दोनोंकी बहुत ही बनती थी। विदेशसे आये हुए पत्र भेजने लायक हों तो भेज सकते हो। बहुत महत्त्वपूर्ण हों तो नकल रख लेना, या नकल ही भेज देना। दूदाभाई लक्ष्मीको बुलानेका बहुत आग्रह करें और लक्ष्मी जाना चाहे तो रोकना नही। वह अच्छी खासी हठी है; किन्तु अब उसका नया अनुभव हो तो देखना।

८ सितम्बर, १९३०

पिंजाईके लिए रुई मुश्किलसे २० तारीखतक चलेगी। यदि अभीतक न भेजी हो तो अब फौरन भेज देना। चार पौंड भेज दो तो काफी है। दो जनोंके लिए पूनियाँ बनती हैं; इसलिए काफी रुई लगती है। काकासाहब ने अभी तो शुरू ही किया है, किन्तु समय बीतने पर ज्यादा कात पायेंगे यह सम्भव है। चप्पलके बारेमें तो लिखा ही है।

मेरे वजन और भोजन-सम्बन्धी फेरफार आदिके बारेमें तो मीराबहनको लिखे पत्रमें देखोगे ही।

मंगल प्रभात, ९ सितम्बर, १९३०

अस्पृश्यता-निवारण : यह व्रत भी अस्वाद-व्रतकी तरह नया है; और यह कुछ विचित्र भी लगेगा। यह जितना विचित्र है, उससे कही ज्यादा जरूरी है। अस्पृश्यता यानी अछूतपन; और अखा भगतने ठीक ही गाया है कि 'आभडछेट अदकेरुं अंग' (अछूतपन तो [शरीरका] एक व्यंग है; छठी अँगुलीके समान यह किसी कामका नही है)। यह जहाँ-तहाँ धर्मके नामपर या धर्मके बहाने धर्मके काममें रुकावट डालता है और धर्मको बिगाड़ता है। अगर आत्मा एक ही है, ईश्वर एक ही है, तो अछूत कोई नही। जैसे ढेड़, भंगी अछूत माने जाते है, लेकिन वे अछूत नही हैं; वैसे ही मुरदा भी अछूत नही है, वह सम्मान और करुणाका पात्र है। मुरदेको छूकर या तेल लगाकर या उसकी हजामत आदि करके अगर लोग नहाते हैं, तो वह सिर्फ आरोग्य-तन्दुरुस्तीके खयालसे ही। मुरदेको छूकर या तेल लगाकर अगर

कोई नहाता नही है, तो उसे गन्दा भले ही कहा जाये, लेकिन वह पातकी नही है, पापी नही है। यो तो माता बच्चेका मैला उठाकर जबतक न नहाये या हाथ-पैर न धोये, तबतक अछूत गिनी जाये; लेकिन बच्चा प्यारसे या खेलता हुआ उसे छू ले तो न उसे (बच्चेको) छूत लगनेवाली है, और न इससे उसकी आत्मा ही मलिन होगी। लेकिन जो लोग नफरतके कारण भंगी, ढेड़, चमार वगैरा नामसे पहचाने जाते है, वे तो जन्मसे अछूत माने जाते है। भले ही उनमें से किसीने बरसो तक शरीर पर सैकड़ों साबुन मल डाले हो, भले ही वह किसी वैष्णव-जैसी पोशाक पहनता हो, माला-कण्ठी पहनता हो, रोज गीतापाठ करता हो और लेखकका धन्धा करता हो, तो भी वह अछूत माना जाता है। इस तरह जिसे धर्म माना जाता है या जो धर्मकी तरह बरता जाता है, वह धर्म नही है, अधर्म है और उसको समाप्त किया जाना चाहिए। अस्पृश्यता-निवारणको व्रतका स्थान देकर हम यह प्रगट करते है कि अछूतपन हिन्दू धर्मका अग नही है; इतना ही नही, बल्कि वह हिन्दू धर्ममें पैठी हुई एक सड़न है, एक अन्धविश्वास है, पाप है, और उसे मिटाना हरएक हिन्दूका धर्म है, उसका परम कर्त्तव्य है। इसलिए जो उसे पाप मानता है वह उसका प्रायश्चित्त करे, और कुछ नही तो प्रायश्चित्तके तौर पर ही समझदार हिन्दू अपना धर्म समझ कर हरएक अछूत माने जानेवाले भाई या बहनको अपनाये; प्रेमसे और सेवाभावसे उसे छुए, छूकर अपनेको पावन हुआ माने, 'अछूतो' के दुख दूर करे; वे बरसोंसे कुचले गये हैं, इसलिए उनमें अज्ञान वगैरा जो दोष आ गये है उन्हें धीरजसे दूर करनेमें उनकी मदद करे, और ऐसा करनेके लिए दूसरे हिन्दुओको समझाये, प्रेरणा दे। इस निगाहसे अछूतपनको देखने पर, उसे दूर करनेमें जो सामाजिक या राजनीतिक नतीजे निहित हैं, उन्हे व्रतधारी तुच्छ समझेगा। उक्त या वैसा नतीजा आये या न आये, फिर भी अछूतपन मिटानेके कामको जिसने अपना व्रत बना रखा है, वह धर्म समझ कर अछूत माने जानेवाले लोगोको अपनायेगा। सत्य वगैराका आचरण करते हुए हम सामाजिक परिणामोका विचार न करे। सत्यका आचरण उस व्रतधारीके लिए कोई तरकीब नही है, वह तो उसकी देहके साथ जुडी हुई चीज है, उसका स्वभाव है, उसी तरह अस्पृश्यता-निवारण भी उस व्रतधारीके लिए तरकीब नही है, उसका स्वभाव है। इस व्रतका महत्त्व समझनेके बाद हमें मालूम होगा कि यह अछूतपनकी सडन सिर्फ ढेड़-भगी माने जानेवालोके बारेमें ही हिन्दू समाजमें पैठ गई है, ऐसा नही है। सडनका स्वभाव है कि वह पहले राईके दानेके बराबर दीखती है, बादमें पहाड़का रूप लेती है, और अन्तमें जिस वस्तुमें दाखिल होती है उसका नाश कर देती है। अछूतपनका भी ऐसा ही है। यह छुआछूत दूसरे धर्मवालोके साथ बरती जाती है, दूसरे फिरकेवालोंके साथ बरती जाती है, एक ही सम्प्रदायके भीतर भी बरती जाती है; यहाँ तक कि कुछ लोग तो छुआछूतको पालते-पालते इस पृथ्वी पर भाररूप हो गये है। वे अपनी शुचिता सँभालने, खुदको ही सहलाने (अपने पर आँच न आने देने), अपनेको बचाते फिरने, नहाने-धोने, खाने-पीनेसे फुरसत नही पाते, और ईश्वरको भूलकर ईश्वरके नामसे खुदको पूजने लग जाते है। इसलिए अछूतपन मिटानेवाला आदमी सिर्फ ढेड़-

भंगीको अपनाकर सन्तोष न मानेगा; वह जबतक तमाम जीवोको अपनेमे नही देखता और अपनेको तमाम जीवोमें नही होम देता, नही मिटा देता, तबतक शान्त होगा ही नही। अछूतपन मिटाना यानी तमाम जगतके साथ दोस्ती रखना, उसका सेवक बनना। यों अस्पृश्यता-निवारण और अहिंसाकी जोड़ी बन जाती है और सच-मुच है भी ऐसा ही। अहिंसाका अर्थ है तमाम जीवोंके प्रति पूरा प्रेम। अछूतपन मिटानेका भी वही अर्थ है। तमाम जीवोंके साथका भेद मिटाना अछूतपन मिटाना है। इस तरह अछूतपनको देखनेसे वह दोष थोड़ा-बहुत सारे जगतमें फैला हुआ है। यहाँ हमने उसका हिन्दू धर्मकी सड़नके रूपमें विचार किया है, क्योंकि उसने हिन्दू धर्ममें धर्मका स्थान हथिया लिया है, और धर्मके बहाने लाखों या करोडोंकी हालत गुलामों-जैसी कर डाली है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

एक व्यक्ति कान्तु गजीवाला, खपाटिया चकला, सूरतमें रहता है। लगता है कि [दांडी-] कूचके दौरान उसने मुझे ५ रुपये दिये थे। उसे मैंने अपने यहाँसे हाथका कागज लेकर उसकी दैनन्दिनी बँधवाकर उसपर खादीकी जिल्द चढ़ाकर भेजनेको कहा था। पकड़े जानेके कारण ऐसा करा नही पाया। अब जिसे बाँधनेका काम आता हो उससे सौ या उससे ज्यादा पन्नोंकी छोटी-सी दैनन्दिनी बनवाकर उसे भेज देना और मुझे लिखना। उसे एक पोस्टकार्ड तो फौरन लिखकर डाल देना।

बापू

[पुनश्च :]

५३ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

१९२. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

यरवडा मन्दिर
१० सितम्बर, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

तुम्हारा पत्र मिला। ज्यों-ज्यों तुम्हारा काम बढ़ता जाता है त्यो-त्यों तुम्हारे अक्षर भी सुधरते जाते हैं। तुम्हें अपने अक्षर और भी सुधारने चाहिए। सजावटके लिए अक्षरोंमें घुंडियाँ नही लगानी चाहिए। जैसे 'उ'की मात्रा '़' इसी तरह लगानी चाहिए, न कि 'ꣳ' इस तरह। अक्षर जैसे छपते है, वैसे ही लिखनेका अभ्यास कर लेनेसे लिखावट बहुत सुन्दर हो जायेगी। मैं तो तुम सभी बहनोंको हर तरहसे परिपूर्ण देखना चाहता हूँ। मेरे इस कथनमें अतिशयोक्ति नही है कि मेरी सभी आशाएँ तुम

बहनों पर निर्भर है। मुझे प्रायः ऐसा लगता रहता है कि अहिंसाकी अन्तिम विजय स्त्रियोंके हाथों ही होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६७९९) की फोटो-नकलसे।

१९३. पत्र : मोतीबहन चोकसीको

[१० सितम्बर, १९३० के लगभग][1]

चि० मोतीबहन,

आशा है अब तुमने दुःख मानना छोड़ दिया होगा। तुम्हारे दुःखकी औषधि 'गीताजी' है। प्रतिदिन गुजराती अनुवाद पढ़ना और बार-बार पढ़ना। शान्तूको हरिभाई डाक्टरको दिखाकर उसके दाँतका इलाज करवा लेना। प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा पढ़ती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७३८) की फोटो-नकलसे।

१९४. पत्र : रमाबहन जोशीको

यरवडा मन्दिर
११ सितम्बर, १९३०

चि० रमा (जोशी),

तुम्हारा सुन्दर पत्र मिला। मैं देखता हूँ कि महालक्ष्मी तुम्हारा अनुकरण करती है। इसके और तुम्हारे अक्षरोंमें कोई फर्क नहीं है। यह अच्छी बात है। लेकिन इससे क्या तुम्हारी जिम्मेदारी बढ़ नहीं जाती? तुम्हें हर चीजमें इसी कारण उन्नति करनी चाहिए। ऐसा करनेकी शक्ति ईश्वरने तुम्हें प्रदान की है। तुम उन्नति करो, यही मेरी प्रार्थना है। तुम्हें मेरा यही आशीर्वाद है। महालक्ष्मीके जिन गुणोंकी तुमने चर्चा की है वह सचमुच उन गुणोंसे युक्त है, यह मैंने वर्धामें ही देख लिया था।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५३२४) की फोटो-नकलसे।

१. मूलमें यही तारीख दी गई है, किन्तु वह गांधीजीकी लिखावटमें नहीं है।

१९५. पत्र : रोहिणी कन्हैयालाल देसाईको

११ सितम्बर, १९३०

चि० रोहिणी,

तेरा पत्र मिला। अपने पत्रमें हमीदाबहन ने तेरे साहसकी बात लिखी है, जिसे पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। कानजीभाईकी लड़की भला इतनी बहादुर क्यों न हो। तेरी बहादुरीकी बात पढ़कर मुझे उपनिषदकी एक कथा याद आ गई। उसमें हमारी इन्द्रियोंकी तुलना घोड़ेसे की गई है। आत्माकी सारथीके रूपमें कल्पना की गई है। जो इस घोड़े अर्थात् इन्द्रियोंको अपने वशमें रखता है उसे विजयी, और घोड़ा जिसे घसीट ले जाये उसे पराजित कहा गया है। उस घोड़ेको जिस प्रकार तू अपने साहसके बलपर रोक सकी है उसी प्रकार तू और अन्य बहनें अपनी इन्द्रियों पर सवार रहें और उन्हें अपने वशमें रखें। यदि तुम लोग ऐसा कर सकीं तो वह हमारे लिए रामराज्य होगा। हमीदाबहनको यह पत्र पढ़वा और समझा देना। प्रभु तेरा साहस बढ़ाये। हमीदाबहन को गुजराती सिखाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २६५२) की फोटो-नकलसे।

१९६. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

११ सितम्बर, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। अब तबीयत अच्छी हो गई होगी। रातके नियमका पालन करना ही चाहिए। तुझे दिनका कोई काम कम कर देना चाहिए अथवा अभी पढ़ना-लिखना छोड़ देना चाहिए। पूरी नींद आनेसे उत्साह बढ़ेगा और वही काम थोड़े समयमें हो सकेगा। ऐसा हो या न हो, ९ से ४ तक मनको शान्त रखकर सोना ही चाहिए। इसपर तुरन्त अमल करना। तू बहस न करे तो अच्छा हो। बहस करने योग्य बातोंमें खूब बहस करना, लेकिन इसमें नहीं।

तूने कमलाबहन लुंडीसे मित्रता की या नहीं?

धुरन्धरको बताना कि अध्यापक लिमयेने 'अनासक्तियोग' का अनुवाद किया है और वह अनुवाद तुरन्त ही प्रकाशित भी होगा।

'भीक' मराठीमें है, गुजरातीमें 'बीक'[1] [है]।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८२)से। सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२३४की फोटो-नकलसे भी।

१९७. पत्र : निर्मला देसाईको

यरवडा मन्दिर
११ सितम्बर, १९३०

चि० निर्मला (बुआ),

तेरी कैद सच्ची है और हमारी झूठी। किन्तु अपनी कैदसे छूटना तेरे हाथमें है। और हम जिस कैदमें है उससे छूटना किसके हाथमें है? यदि हड्डी बढ गई है तो इसमें घबरानेकी कोई बात नहीं। सूर्योदयके समय तुझे केवल धूपस्नान लेना चाहिए। धूपस्नानके समय शरीरके जिस भागकी हड्डी बढ़ गई है, उस भागको तो खुला रखना ही चाहिए। यदि पूरा शरीर खुला रखा जाये तो अधिक लाभ होगा। यदि सादी खुराक ली जाये तो वह जल्दी पच जायेगी। बाकी तो हरिभाई जैसा कहें वैसा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९४५६)की फोटो-नकलसे।

१९८. पत्र : बलभद्रको

यरवडा मन्दिर
११ सितम्बर, १९३०

चि० बलभद्र (या बुद्धिचक्र),

नारणदासभाई तेरी बहुत प्रशंसा करते हैं। तूने तो जबर्दस्त पिंजाई की। यदि तू इसी प्रकार नियमित रूपसे उद्यम करता रहे तो कितना अच्छा हो! तू मुझे पत्र क्यों नहीं लिखता?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९२१०)की फोटो-नकलसे।

१. 'भीक' (मराठी)का अर्थ है भिक्षा और 'बीक' (गुजराती)का अर्थ है डर।

१९९. पत्र : लीलावती आसरको

यरवडा मन्दिर
११ सितम्बर, १९३०

चि० लीलावती (आसर),

तेरा पत्र मिला। फिलहाल थोड़ा आराम कर ले; अपना काम उसके बाद शुरू करना। अपनी लिखावट बिगाड़ मत। जरा राधाबहनकी लिखाई तो देख। जरा-सी कोशिश करके तू अपनी लिखावट सुधार सकती है। यदि तेरी लिखावट एक बार सुधर जायेगी तो फिर तेजीसे लिखने पर भी बिगड़ेगी नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९५६५) की फोटो-नकलसे।

२००. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

यरवडा मन्दिर
११ सितम्बर, १९३०

'चि०' पण्डितजी,

'पण्डितजी' के साथ 'चि०' अच्छा नहीं जान पड़ता। किन्तु 'चि०' शब्दका प्रयोग तो मैं आजकल बहुत खुलकर करता हूँ। इस शब्दका प्रयोग करते हुए कभी-कभी मुझे घबराहट भी होती है। पितृपदके लिए आवश्यक योग्यता — उतना प्रेम, उतनी आत्मीयता, उतनी सजगता — मुझमें है या नहीं, इस बातकी जब जाँच करता हूँ तो मैं कभी-कभी काँप उठता हूँ। किन्तु ईमानदारीसे मैं इतना कह सकता हूँ कि अपनेमें इन सबका विकास करनेका मैं पूरा प्रयत्न करता हूँ और इतनेसे सन्तोष मानता हूँ। यह तो मैं जानता ही हूँ कि जब मैं किसीके लिए 'चि०' विशेषणका प्रयोग करता हूँ तो उस हद तक मेरी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। ईश्वर इस उत्तरदायित्वको निभानेकी सामर्थ्य दे तो अच्छा हो।

प्रभात-फेरियोंसे काफी शक्ति उत्पन्न हो सकती है। उन्हें सुव्यवस्थित रूप देनेमें तुम काफी सहयोग दे सकते हो। सहयोग देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २१२) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : लक्ष्मीबाई खरे

२०१. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
११ सितम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन (बडी),

तुम्हारा पत्र क्यो नही आया? तुम्हे हर सप्ताह पत्र लिखना ही चाहिए। जो बहनें घरना देनेके लिए वाहर गई हुई हैं उन सबसे तुम्हारा पत्र-व्यवहार है न? न हो तो शुरू करना। याद रखना कि उनमें वहुतसी बहनोके लिए तुम माँके समान हो। तुम्हें लड़के-लड़कियोकी कमी तो है ही नही; किन्तु वे सब जोखिमसे भरे काममें जुटी है, यह तो हम जानते ही हैं। जोखिम भरा काम करना हमारा धर्म है। हम जान-बूझकर ऐसा काम न उठायें, पर यदि सिर पर आ ही पड़े तो उसका स्वागत करे और उसमें सफल होनेके लिए ईश्वरसे सहायता माँगें। वाहर रहते हुए भी जो अपने व्रतोंका पालन करेगी वह बहन ही जीती हुई मानी जायेगी।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – ६ : गं० स्व० गंगाबहेनने सी० डब्ल्यू० ८७५७ से भी। सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

२०२. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
११ सितम्बर, १९३०

चि० मनु (त्रिवेदी),

तेरा पत्र मिला। हम दोनोंने चैनकी साँस ली। यदि अपनी उम्रका कोई अन्य व्यक्ति हमसे अधिक काम कर सके तो उससे हमें दुःखी होनेके बजाय प्रसन्न होना चाहिए। "भगवानकी जब जो मर्जी हो, उसके लिए शोक करना वृथा है।" हमें जैसा शरीर मिला होगा, हम वैसा ही काम कर सकेंगे। अधिक शारीरिक शक्ति होनेके बावजूद जो व्यक्ति कामसे जी चुराता है और कम काम करता है उसे शर्मिन्दा होना चाहिए। तेरे-जैसेके लिए तो वैसा कोई कारण नही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७६३) की फोटो-नकलसे।

२०३. पत्र : बनारसीलाल बजाजको

यरवडा मन्दिर
११ सितम्बर, १९३०

चि० बनारसी,

तुमारा खत मीला है। पकडे भी गये और छूट भी गये? मुझे विश्वास है कि अमारा कार्य धैर्यमय, सत्यमय और अहिंसामय हि रहेगा इसलिये मैं निश्चित हूं।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ९३०४से। सौजन्य: बनारसीलाल बजाज

२०४. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
१२ सितम्बर, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। सरभोणके कामका विवरण मुझे लिख भेजना। तू कहाँ रहती है? क्या कोई पुरुष भी है या सारा कारोबार स्त्रियोंके ही हाथमें है? वृद्धा माँजी कहाँकी रहनेवाली है? उनकी उम्र क्या है? वे क्या काम करती है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२८७) की फोटो-नकलसे।

२०५. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

यरवडा मन्दिर
१२ सितम्बर, १९३०

चि० रुक्मिणी,

तेरा पत्र मिला। मैं तेरे पत्रका इन्तजार ही कर रहा था। अब तेरा स्वास्थ्य कैसा है? क्या बीजापुर तुझे माफिक नही आया? आशा है तू बनारसीके बारेमे तनिक भी चिन्ता नही करती होगी। वह आगा-पीछा सोचकर चलनेवाला व्यक्ति है। और आखिरकार तो ईश्वर ही हम सबकी रक्षा करता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९०५२)की फोटो-नकलसे।

२०६. पत्र : कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
१२ सितम्बर, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

तेरा पत्र मिला। मै राह देख रहा था, प्यारेलालके समाचार मिलनेकी आशासे। प्यारेलाल यहाँ है, यह खबर भी मुझे तब मालूम हुई जब मैंने अनायास ही तेरा तार जेलरके पास देखा। फिर छगनलाल (जोशी) के पत्रसे उसकी तबीयतके खराब होनेका समाचार मिला। यहाँ तो मुझे बताया गया है कि वह आनन्दसे है। अब तेरे पत्रसे पता चलेगा।

नियत कर्मके बारेमें तू आलस्य न करना। श्रद्धा रखना। श्रद्धाका काम तो वहीं होगा न, जहाँ बुद्धि काम न दे? जो कार्य आलस्यके कारण या और किसी कारणसे न हो उसके बारेमें मुझे लिखते हुए संकोच न करना। मुझे लिखनेसे भी तू सुरक्षित रहेगी, क्योंकि मुझे लिखना पड़ेगा, यह बात ही तुझे नियमित बनानेमें सहायक सिद्ध होगी।

बा के विषयमें मैं यहाँसे क्या कर सकता हूँ? तू ही मीठुबहनसे शिकायत कर। बा स्वतन्त्र रूपसे तो हरगिज कोई काम नही कर सकती। वह मीठुबहनके नेतृत्वमें वहाँ गई है इसलिए उसे उसके अधीन काम करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८०३) की फोटो-नकलसे।

२०७. पत्र : माधवदासको

यरवडा मन्दिर
१२ सितम्बर, १९३०

चि० माधवदास,

आश्रमसे मिले पत्रसे ज्ञात हुआ कि तुम रामदास आदिसे मिलने गये थे। ठीक किया। तुम्हारा क्या हाल है? कृष्णा कैसी है? क्या अब उसका शरीर स्वस्थ हुआ? क्या तुम दोनों वर्तमान आन्दोलनमें किसी प्रकार हाथ बँटा सकते हो? तुम कहाँ रहते हो?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एम० एम० यू०/२२)की माइक्रोफिल्मसे।

२०८. पत्र : मणिबहन परीखको

१३ सितम्बर, १९३०

चि० मणिबहन (परीख),

नरहरिकी हड्डी कैसे बढ़ गई, यदि तुम्हें इसका पता हो तो मुझे लिखना। आशा है तुम्हारी तबीयत ठीक होगी। बच्चे कैसे हैं? क्या वे कुछ लिखते-पढ़ते हैं? तुम्हारा दिन कैसे बीतता है? मुझे विस्तारपूर्वक पत्र लिखना। इस पत्र-व्यवहारको सर्वथा अनिश्चित समझना, क्योंकि यह कभी भी बन्द हो सकता है। हालांकि फिलहाल ऐसा कोई लक्षण नजर नहीं आता; किन्तु कैदी तो कैदी ही है। कैदीका व्यक्तिगत कोई अधिकार नहीं होता।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मोहनको पीलिया हो जानेका मतलब है उसकी खुराकमें लापरवाही होना।

गुजराती (जी० एन० ५९६०) की फोटो-नकलसे।

२०९. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
१३ सितम्बर, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। मैं तो एक भी डाक नही छोड़ता, लेकिन हो सकता है कि यहीसे पत्र नियमपूर्वक न जाते हो। जयप्रकाश अब ठीक हो गया होगा। वहाँ कोई अखबार क्यों नही आता? आश्रममें बहुत सारे अखबार आते हैं, वे चाहे तो कुछ अखबार तुझे भेज सकते हैं। तेरी सास अब ठीक हो गई होगी।

मैं तुझे अपने वजनके बारेमें तो बता ही चुका हूँ। हम दोनो आरामसे हैं। तू वहाँ घूमने-फिरने जाती है अथवा नही? नियमपूर्वक प्रार्थना भी करती है? दिन किस तरह बिताती है? वहाँकी आबादी कितनी है? जयप्रकाश अब क्या करेगा? वह कुछ काम करेगा अथवा नही? और कोई चिन्ता करता है या नही? यदि तू मुझे सीधे पत्र लिखेगी तो बहुत करके वह मुझे मिल जायेगा। आजकल तो [सभी पत्र] मिलते हैं। तुझे सीधे मैं अधिक पत्र नही लिख सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३६९)की फोटो-नकलसे।

२१०. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
१४ सितम्बर, १९३०

चि० मीरा,

कोयम्बटूरसे लिखा तुम्हारा पत्र मेरे सामने है। यह विलक्षण बात है कि इतनी जबर्दस्त भागदौड़में भी तुम कुल मिलाकर इतनी स्वस्थ रह सकी। मैं समझता हूँ कि यह मानसिक शान्तिका चिह्न है।

केशुने बाँसका चरखा भेजनेका प्रस्ताव अवश्य किया था। लेकिन मैंने नही भेजने दिया। यह मेरी गलती है कि जब मेरे पास पर्याप्त अवसर था तब मैंने उसके प्रयोग की तफसीलोंमें निपुणता प्राप्त नही कर ली। अब मैं प्रायश्चित्त-स्वरूप गलती कर-करके उसको चलानेमें निपुणता प्राप्त कर रहा हूँ। मैं देखता हूँ कि माल और उसे कम-ज्यादा करके ठीक तरहसे काममें लानेका चरखेकी गति और उसके बढ़िया चलनेसे बहुत सम्बन्ध है। मेरा काम ठीक चल रहा है। मैं तनिक भी निराश नही हूँ। जो असाधारण थकान होती थी वह खत्म हो गई है। इसलिए चरखेके बारेमें चिन्ता

करनेकी कोई जरूरत नही है। काका तुम्हारा चरखा चलाते है। अभी भी वह प्रति घंटे सूतके ८० तारसे अधिक नही निकाल पाते।

श्रीमती ऐशरके गर्भपातका मुझे दुख है। यदि वे लोग एक पूर्ण विकसित और स्वस्थ बच्चा चाहते है और श्रीमती ऐशरको एक मजबूत और स्वस्थ माँ होना है तो मुख्य चीज यह है कि वे अपनी विषय-वासनापर तीन वर्षतक संयम रखें। इसके लिए यदि जरूरत हो तो उन्हें अलग-अलग रहना चाहिए। अवश्य, इस संयमके अलावा उन्हे सादा भोजन करना और खुलेमें रहना चाहिए और हलकी कसरत खूब करनी चाहिए। यदि श्रीमती ऐशर कूनेका कटि-स्नान और बैठकर स्नान दोनो करें, तो उन्हे जबर्दस्त लाभ होगा। मुझे विश्वास है कि यदि वह यह स्नान तीन वर्षतक ले और धीरजसे काम लें तो वह बिलकुल नई स्त्री बन जायेंगी। अगर तुम चाहो तो इसे तुम श्रीमती ऐशरको भेज सकती हो।

मेरा टहलना अब भी सीमित ही है। लेकिन मै काफी ठीक-ठाक हूँ। चरखा चलाते और चरखेके बारेमें सोचते हुए समय जल्दी ही बीत जाता है। दिनके अन्तमें मै अच्छी नीद सोता हूँ जो मेरे लिए भोजनसे भी बढ़कर है। मैने ६५वें भजनका अनुवाद समाप्त कर दिया है। लेकिन अभी भी बहुत दूरी तय करनी है। मुझे एकसे ज्यादा करनेका अवसर कदाचित् ही मिलता है और प्रतिदिन एकसे कम करूँ, ऐसा अभी तक हुआ नही है। अतः यद्यपि प्रगति सुस्थिर है, किन्तु निःसन्देह धीमी तो है ही।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४११) से। सौजन्य: मीराबहन; जी० एन० ९६४५ से भी।

२११. पत्र: मणिबहन पटेलको

यरवडा मन्दिर
१४ सितम्बर, १९३०

चि० मणि (पटेल),

चूँकि तू मुझसे पत्रकी आशा रखती है, इसलिए यह लिख रहा हूँ। तुझे यह कैसे मिलेगा, यह तो दैव ही जाने। तेरा पत्र बापूको पढ़नेके लिए जाने दिया गया था। तुझे लिखनेकी छूट मिले तो लिखना। भले ही लाचारी क्यों न हो, अब तुझे शान्तिका अवसर मिला है, उसका पूरा उपयोग करना।[1] इसे भी मै सेवा मानता हूँ। स्वास्थ्यको सँभालना। कार्यक्रम ठीक बनाना। खाने-पीनेको क्या मिलता है, इत्यादि बातें लिखना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो-४: मणिबहेन पटेलने

१. मणिबहन उस समय बम्बईकी आर्थर रोड जेलमें थीं।

२१२. छगनलाल जोशीको लिखे पत्रका अंश

[१८ सितम्बर,][1] १९३०

सूक्ष्म हिंसाकी गन्ध तो मुझे यहाँ बैठे हुए भी आती है। लोगोंने अहिंसाको धर्मके रूपमे कम समझा है। वे उसे एक युक्तिके रूपमे आजमा रहे हैं। वैसे यह भी एक बहुत बडा परिवर्तन है। किसी दिन इससे धर्म भी समझ जायेंगे। यदि हम उसे मूर्तिमन्त कर सके तो आसपासका वातावरण निर्बल होनेपर भी हम दुगुने जागृत हो, दुगुनी तपश्चर्या करे।

बहनोके बारेमें तुमने जिस भयकी बात की है, उसे हम बहुत बडा नही मानते, क्योकि पुरुष-वर्गके दोषोको दरगुजर करनेकी हमें आदत पडी हुई है। बहने बाहर निकली है। यह अच्छा ही हुआ है। उस कसौटी पर जो सफल हुई, उसने व्रतोका पालन किया और अपना धर्म समझा, ऐसा हम कह सकेंगे। जो असफल हुई, वह प्रयत्न करने पर भी गिरेगी तो बादमें फिर प्रयत्न करेगी और ऊँचा उठेगी। जो मनमें विषयोका सेवन करती है और मौका मिलने पर उसका पोषण करती है उसने तो किसी दिन भी व्रत-पालन नही किया था। उसमें दम्भ था, जो फूट निकला। यह भी अच्छा ही मानें।

इसलिए तुम निर्भय रहना। उनकी चिन्ता न करना। सब अपने-आपको सँभाले। ईश्वर सबका रखवाला है। थोडे भी बचे रहेंगे तो भूले-भटकोको सहारा मिलता रहेगा। मेरा तो यही विश्वास है कि बहुत-से बच जायेंगे। आजकी खिचड़ी मुझे अच्छी तो नही लगती, किन्तु वह अनिवार्य है।

जबतक मानपूर्वक लिख सकता हूँ तबतक पत्रोके द्वारा प्रयत्न करता ही रहूँगा। फिर प्रार्थना भी मेरा प्रयत्न ही है; उसे तो कोई छीन नही सकता।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो–७: श्री छगनलाल जोशीने

1. देखिए अगला शीर्षक। वर्ष साधन-सूत्रके अनुसार दिया गया है।

२१३. पत्र : नारणदास गांधीको

यरवडा मन्दिर
१४/१६ सितम्बर, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। बहनोंके बारेमें तुम्हारा इशारा समझ गया हूँ। छगनलाल जोशीका पत्र पढ़ लेना। बाहर काम करने गई हुई बहनोंके साथ तुम या गंगाबहन पत्र-व्यवहार करते रहना। आवश्यकता लगे और समय मिले तो गंगाबहन किसी-किसी जगह तो चक्कर भी लगा सकती है। कहीं गलती भी हो जायेगी; तो भी हमें निर्भय रहना है। आवश्यकतानुसार सावधान भर रहें, दूसरोंको भी सावधान करें और परिणाम ईश्वर पर छोड़ दें। जिस संयमकी हम आशा या इच्छा करते हैं उसके मुकाबलेमें हमारी तपश्चर्या कितनी है? फिर भी हमें तो उसी मार्गपर चलते रहना है। बहनोंकी स्वतन्त्रताकी पूर्ण रूपसे रक्षा करनी है। चाहे रास्ता चलते भूल जायें, ठोकर लगे, काँटा चुभे, या गिर पड़ें। मैंने तो कागज नियमके अनुसार मंगलवारको ही दिया था। किन्तु यहाँके दफ्तरकी गड़बड़के कारण या जानबूझकर देरसे डाकमें भेजा गया होगा। मैंने शिकायत नहीं की। जब-जब डाक समयसे न मिले, मुझे तो लिख ही देना। अच्छा हुआ पूंजाभाई आ गये। क्या आश्रममें से किसी-को सेवाके लिए नियुक्त किया है? कविश्रीके[1] स्मारकके लिए जो रकम रेवाशंकर-भाईके पास है उसके बारेमें मणिभाईको[2] लिख रहा हूँ। जोलिंगर बहनसे कहना कि मैं उनके जवाबकी राह देख रहा हूँ। निःसंकोच लिखें। कमलाबहन लुंडीके बारेमें तुमने ठीक किया है। फिलहाल वह न बोले, न लिखे, यही इष्ट है। मूक सेवाकी तो कोई सीमा ही नहीं है। बलभद्रने तो पिंजाईमें खूब कमाल किया है। इससे मालूम होता है कि हम किसीको मूर्ख न मानकर प्रोत्साहन देते रहें और उससे आशा करते रहें तो उसका फल अच्छा ही निकलेगा।

मेरी गाड़ी अभी तो चल रही है। हमेशाकी तरह दूध-दही ले रहा हूँ। मुनक्का और खजूरके बदले दिनमें सात या आठ टमाटर, चार या पाँच भुने हुए बड़े रतालू और कोई ६ चम्मच गोभीके या जो भी सब्जी बनी हो। इससे पाखाना ठीक होता है। सुबहके ७-३० बजे एक खट्टे नीबूका रस गर्म पानी और नमकके साथ लेता हूँ। दोपहरको एक नीबूका रस सोडाके साथ। यह माफिक आ जाये तो कब्जकी समस्या दूर हो और खर्च तो बहुत ही बच जाये। जो सब्जी यहाँ बगीचेमें उगती है, उसीमें से लेता हूँ। किन्तु उसका खर्च गिनें तो रोज दो आनासे ज्यादा नहीं होता होगा। जबकि खजूर और मुनक्केका खर्च कमसे-कम ६ आने

१. राजचन्द्र।
२. मणिभाई रेवाशंकर झवेरी।

होता होगा। जिन्हें कब्जकी शिकायत है वे इस खुराकको आजमाकर देखें। यह नहीं कह सकते कि सभीको लाभ ही होगा। मुझपर भी यह असर बना ही रहेगा, उस समय यह भी नहीं कह सकते। इस प्रयोगमें दूसरी खुराक निषिद्ध मानी जानी चाहिए। सिर्फ भुने हुए रतालू ही खूब चबाकर खाने चाहिए। उसे दूध या दहीमें भिगोना नहीं चाहिए। छिलका खा लेनेमें शायद कोई बुराई नहीं। थोड़ा-सा तो खाता ही हूँ। पाचनशक्ति नाजुक है इसलिए सारा खाते हुए डरता हूँ। यदि नाजुक पाचनशक्ति-वाला कोई व्यक्ति यह प्रयोग करना चाहे तो वह भी छिल्केको छोड़ दे। मेरी चप्पल मिल जाये तो सचमुच अच्छा हो। कुसुमको खबर होनी चाहिए। शायद उसने उन्हें प्रेमाबहनको सौंपा हो। रुई अभी न भेजी हो तो आखिर डाकसे ही भेज देना। छः तार और आठ तारकी दोनों ही माल बहुत पतली मालूम हुईं। चरखीसे खिसक जाती है और उसे फिराये बिना खुद ही घूम जाती है। मुझे और न भेजना। मेरे पास थोड़ी-सी तैयार पड़ी है और दूसरी जब चाहूँ तब बना ही सकता हूँ। कोई अच्छा तरीका मालूम हो तो उससे कुछ समय बच जायेगा, इस विचारसे पूछा था।

१५ सितम्बर, १९३०

अभी मौन छोड़ा है। रामदासने काकासाहब को जो पत्र लिखा था, सो उन्होंने मुझे सुनाया। रामदासने लिखा है कि उसने मुझे पत्र लिखा था किन्तु वह पत्र मुझे मिला नहीं रामदासने अपने स्वास्थ्य और अध्ययनके बारेमें विस्तारपूर्वक लिखा है। उससे बहुत सन्तोष हुआ। उसके जेलमेंसे निकलनेके बाद पत्र लिख सकूँगा और वह भी लिख सकेगा। उसके पत्र जबतक यह पत्र-व्यवहार निभेगा, तबतक मिलते रहेंगे। अभी तुम्हें पत्र कपड़ेके अस्तरवाले लिफाफेमें भेज रहा हूँ। अभी तो तुम्हारे भेजे हुए लिफाफे हैं, उनका फिर वहाँ इस्तेमाल कर सको इस इरादेसे यहाँसे आकार न बदल कर भेजता हूँ। नहीं तो मेरा काम तो उसे छोटा करके भी चल जाता।

मंगल प्रभात, १६ सितम्बर, १९३०

बा को सूरतमें पुलिसने तंग किया — ऐसा समाचार देखा है। उसमें कुछ सत्य है क्या?

शरीर-श्रम सभी मनुष्योंके लिए अनिवार्य है, यह बात पहले-पहल टॉल्स्टॉयका एक निबन्ध पढ़कर मेरे मनमें बैठी थी। यह बात इतनी साफ जाननेके पहले उसपर अमल तो मैं रस्किनका 'अनटू दिस लास्ट' ('सर्वोदय') पढ़कर ही करने लगा था। यहाँ 'शरीर-श्रम' अंग्रेजी शब्द 'ब्रेड लेबर' का तरजुमा है। 'ब्रेड लेबर' का शब्दके मुताबिक अनुवाद है रोटी (के लिए) मजदूरी। रोटीके लिए हरएक मनुष्यको मजदूरी करनी चाहिए, शरीरको (कमरको) झुकाना चाहिए, यह ईश्वरका कानून है। यह मूल खोज टॉल्स्टॉयकी नहीं है, लेकिन उससे बहुत कम मशहूर रूसी लेखक बोन्दकी है। टॉल्स्टॉयने उसे रोशन किया और अपनाया। इसकी झाँकी मेरी आँखें 'भगवद्गीता' के तीसरे अध्यायमें करती हैं। जो यज्ञ किये बिना खाता है, वह चोरीका अन्न खाता है, ऐसा कठिन शाप यज्ञ नहीं करनेवालेको दिया गया है। यहाँ

यज्ञका अर्थ शरीर-श्रम या रोटीके लिए की गई मजदूरी ही ठीक बैठता है। और मेरी रायमें यही मुमकिन है। जो भी हो, हमारे इस व्रतका जन्म इस तरह हुआ है।

बुद्धि भी उस चीजकी ओर हमें ले जाती है। जो मजदूरी नहीं करता, उसे खानेका क्या हक है? 'बाइबिल' कहती है: "अपनी रोटी तू अपना पसीना बहाकर कमा और खा।" करोड़पति भी अगर अपने पलंगपर पड़ा रहे और उठ उसके मुँहमें कोई खाना डाले तब खाये, तो वह ज्यादा दिनों तक खा नहीं सकेगा, उसमें उसको मजा भी नहीं आयेगा। इसलिए वह कसरत वगैरा करके भूख पैदा करता है और खाता तो है अपने ही हाथ-मुँह हिलाकर। अगर यों किसी-न-किसी रूपमें अंगोंकी कसरत राय-रंक सबको करनी ही पड़ती है, तो रोटी पैदा करनेके लिए ही सब क्यों कसरत न करें? यह सवाल कुदरती तौर पर उठता है। किसानको हवाखोरी या कसरत करनेके लिए कोई कहता नहीं है और दुनियाके ९० फीसदीसे भी ज्यादा लोगोंका निर्वाह खेतीपर होता है। बाकीके दस फीसदी लोग अगर इनकी नकल करें, तो जगतमें कितना सुख, कितनी शान्ति और कितनी तन्दुरुस्ती फैल जाये? और अगर खेतीके साथ बुद्धि भी मिले तो खेतीसे सम्बन्ध रखनेवाली बहुतसी मुसीबतें आसानीसे दूर हो जायेंगी। फिर अगर इस शरीर-श्रमके निरपवाद कानूनको सब मानें, तो ऊँच-नीचका भेद मिट जाये। आज तो जहाँ ऊँच-नीचकी बू भी नहीं थी वहाँ यानी वर्ण-व्यवस्थामें भी वह घुस गई है। मालिक-मजदूरका भेद एक आम बात हो गई है और गरीब धनवानसे जलता है। अगर सब रोटीके लिए मजदूरी करें, तो ऊँच-नीचका भेद न रहे; और फिर भी धनिक-वर्ग रहेगा तो वह खुदको मालिक नहीं बल्कि उस धनका रखवाला या ट्रस्टी मानेगा और उसका ज्यादातर उपयोग सिर्फ लोगोंकी सेवाके लिए करेगा। जिसे अहिंसाका पालन करना है, सत्यकी भक्ति करनी है, ब्रह्मचर्यको कुदरती बनाना है, उसके लिए तो शरीर-श्रम रामबाण-सा हो जाता है। यह मेहनत सचमुच तो खेतीमें ही है। लेकिन सब खेती नहीं कर सकते, ऐसी आज तो हालत है ही। इसलिए खेतीके आदर्शको खयालमें रखकर खेतीके एवजमें आदमी भले दूसरी मजदूरी करे — जैसे कताई, बुनाई, बढ़ईगिरी, लुहारी वगैरा वगैरा। सबको अपना भंगी स्वयं ही बनना चाहिए। जो खाता है वह मल-त्याग तो करेगा ही। जो मल-त्याग करता है वही उसे जमीनमें गाड़ दे, यह उत्तम बात है। अगर यह नहीं ही हो सके तो प्रत्येक कुटुम्ब अपने यहाँ मल-मूत्रकी सफाई स्वयं करे। जिस समाजमें भंगीका अलग पेशा माना गया है, वहाँ कोई बड़ा दोष पैठ गया है, ऐसा मुझे तो बरसोंसे लगता रहा है। इस जरूरी और तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाले (आरोग्य-पोषक) कामको सबसे नीच काम पहले-पहल किसने माना, इसका इतिहास हमारे पास नहीं है। जिसने माना उसने हमपर उपकार तो नहीं ही किया। हम सब भंगी हैं, यह भावना हमारे मनमें बचपनसे ही जम जानी चाहिए; और उसका सबसे आसान तरीका यह है कि जो इसे समझ गये हैं वे शरीर-श्रमका आरम्भ पाखाना-सफाईसे करें। जो समझ-बूझकर, ज्ञानपूर्वक यह करेगा, वह उसी क्षणसे धर्मको निराले ढंगसे और सही तरीकेसे समझने लगेगा। बालक, बूढ़े और बीमारीसे जो अपंग हो गये हैं वे अगर मजदूरी न करें, तो उसे कोई अपवाद न समझे। बालक तो

समा जाता है। अगर कुदरतके कानूनका भंग न किया जाये, तो बूढ़े अपग नहीं बनेंगे। और उन्हे बीमारी तो होगी ही क्यों?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

खुर्शेदबहनसे कहना उसे पैसेकी जरूरत हो तो नि.सकोच आश्रमसे मांग ले। और कहीसे मँगायेगी तो मुझे दुख होगा, ऐसा कहना।

५५ पत्र है।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

२१४. पत्र : पैट्रिक क्विनको

१८ सितम्बर, १९३०

प्रिय श्री क्विन,

आपने जो सन्देश भेजा था उसके अनुसार हम दोनों कल शाम आपकी प्रतीक्षा करते रहे।

(१) कृपया कलका 'क्रॉनिकल' भेज दें।

(२) क्या आप उसे नियमित समयपर भिजवानेकी व्यवस्था नही कर सकेंगे?

(३) कृपया आश्रमवाली डाक भी भिजवायें। वह कल आनेवाली थी।

(४) मैं आश्रमसे एक पार्सल पानेकी आशा कर रहा हूँ जिसमें सैंडिले और रुई होगी।

(५) किताबो और पत्रिकाओका अन्य कोई पार्सल हो तो वह भी। मुझे . . .[1] 'सीज़र ऑर क्राइस्ट' नामक पुस्तिका और मद्रासका 'हिन्दू' भी होना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

महात्मा गांधी : सोर्स मैटीरियल फॉर ए हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, खण्ड ३, भाग ३, पृष्ठ २८७।

१. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ शब्द स्पष्ट नहीं हैं।

२१५. पत्र : गुलाम रसूल कुरेशीको

१८ सितम्बर, १९३०

चि० कुरेशी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम बम्बई हो आये, यह अच्छा किया। जब मैं वहाँ था तो सुलताना मेरे पास आती ही नहीं थी, भला अब वह मुझे याद क्यों न करेगी। फिर भी यदि वह मुझे देखेगी तो भाग ही जायेगी। मणिलाल इमामसाहब की सेवामें है, इससे मुझे बहुत शान्ति मिलती है। अमीनाके साहसका तो कोई पार नहीं है, उसने स्वयसेविकाओमें अपना नाम लिखवा कर ठीक किया। किन्तु यदि वह सचमुच जेल चली जाये तो वहाँ बच्चेकी देखभाल कैसे कर पायेगी? इसलिए वह अगर घर रहकर जो-कुछ कर सके, सो करे, तो पर्याप्त होगा। मौका आने पर वह जेल जानेको तैयार तो है ही।

बापूकी दुआ और आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६६५२) की फोटो-नकलसे।

२१६. पत्र : कमला नेवटियाको

यरवडा मन्दिर
१८ सितम्बर, १९३०

चि० कमला (रामेश्वरदास),

आखिरकार तेरा पत्र मिला। मेरे पत्रका तकाजा तू ठीक समझ गई। अब आलस्य मत करना। तेरा स्वास्थ्य कैसा रहता है? मुझे लिखती रहना। मुझे पत्र लिखनेकी वजहसे भी तू अपने आलस्यको भगा सकेगी। कराचीमें कीकीबहन[1], गंगाबहन[2] आदिसे मिली थी क्या?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३०४२) की फोटो-नकलसे।

१. जे० बी० कृपालानीकी बहन।
२. ए० टी० गिडवानीकी पत्नी।

२१७. पत्र : रलियातबहन वृन्दावनलालको

१८ सितम्बर, १९३०

प्रिय बहन,

मणि अपने पत्रमें लिखती है कि तुम मुझे याद करती हो। क्यों न करोगी? मैं तो प्रायः तुम्हारे बारेमें सोचता हूँ और तुम्हारे चेहरेको याद करके नरोत्तमदासकी याद हो आती है; क्योंकि तुम्हारा चेहरा उनसे मिलता-जुलता है। प्रभु तुम्हें और माँजी को मानसिक शान्ति दे।

मोहनदासके जय श्रीकृष्ण

श्रीमती गोकीबहन
बम्बई

गुजराती (एस० एन० ९८१०) की फोटो-नकलसे।

२१८. पत्र : रामेश्वरदास पोद्दारको

१८ सितम्बर, १९३०

भाई रामेश्वरदास (धुलीया),

तुमारा पत्र मिला। सापके डसते हुए बच गये तो ईश्वर अवश्य तुमारे पाससे अधिक सेवा लेगा। उपचार क्या किया था? साप जहरी था? ईश्वर तुमको शांति देगा। राम नाम हमारे लिये कल्पद्रुम है ऐसा निश्चय जानो।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १७५ की फोटो-नकलसे।

२१९. पत्र : शारदा सी० शाहको

२० सितम्बर, १९३०

चि० शारदा (बबु),

तू तो बहुत सयानी हो गई लगती है। अबसे जबतक तेरे पत्र आते रहेंगे तबतक मेरे पत्र भी तुझे मिलते ही रहेंगे। अब तो तू कोठारिन हो गई है न? तुझे अपना शरीर खूब मजबूत बना लेना चाहिए। पूंजाभाई बड़े होनेके बावजूद मुझे अपनेसे बडा मानते है, यह कैसे होता है? यदि काका की अपेक्षा भतीजा उम्रमें बड़ा हो तो भी भतीजेको काका ही आशीर्वाद देता है न? क्या तू अब समझी?

यदि आनन्दीको मेरे बिना अच्छा न लगता हो तो तुम सब मिलकर उसे प्रसन्न रखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८९०) से। सौजन्य : शारदाबहन जी० चोखावाला

२२०. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

२० सितम्बर, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा लम्बा पत्र मिला।

तेरी तबीयत ठीक रहती है, इसलिए मुझे कोई सुझाव देनेकी जरूरत नही है।

पश्चिमकी उन दो बहनोके सम्पर्कमें तू आती है या नही? न आती हो तो आना।

अभी तो ईश्वरने तेरा समस्त जीवन मुझे सौप दिया जान पड़ता है।[1] अन्त तक ऐसा ही चलेगा।

सुशीला, जो मुझे अंग्रेजीमें शुभकामनाएँ भेजती है, किस प्रान्तकी है? नाम तो गुजराती या मराठी-जैसा है। तमिल तो नही है। यदि वह तमिल हो तो उसे माफ किया जा सकता है; नही तो शुभेच्छाएँ मातृभाषामें भेजे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८३) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२३५ की फोटो-नकलसे भी।

१. गांधीजीके जन्म दिवसके उपलक्ष्यमें प्रेमाबहन कंटकने अपना सारा जीवन उन्हें समर्पित कर दिया था।

२२१. पत्र : लक्ष्मीबहन खरेको

यरवडा मन्दिर
२० सितम्बर, १९३०

चि० लक्ष्मीबहन (खरे),

तुम्हारा धरनेके लिए जाना दूसरी बहनोंके लिए ढालरूप सिद्ध होगा। यह सब नये अनुभव हैं। इनमें किसीको चोट भी लग सकती है; तो भी उससे हम पीछे न हटें। तुममें अटूट बल है। इसका उपयोग करके तुम शोभा पाओ और आश्रमकी शोभा भी बढाओ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७६) से। सौजन्य . लक्ष्मीबहन खरे

२२२. पत्र : आर० बी० मार्टिनको

यरवडा सेंट्रल जेल
२१ सितम्बर, १९३०

प्रिय मेजर मार्टिन,

अब मुझे अपनी दूसरी कठिनाई कह डालनी चाहिए। इस जेलमें तथाकथित दुर्व्यवहारके आरोपोंके विषयमें आपने मुझे जो बताया है, मैं उसके एक भी शब्द पर अविश्वास नहीं करता। फिर भी, अखबारोंमें जो रिपोर्टें छपी हैं उन सभीको मैं अपने दिमागसे निकाल नहीं सकता। लिखनेवालोंने हर चीजके बारेमें जानबूझ कर झूठ नहीं कहा होगा। मुझे विश्वास है कि कुछ वक्तव्य तो सर्वथा अतिरंजित हैं। मैं आशा करता हूँ कि अधिकाश बातें झूठ हैं और मैं ऐसा मानना चाहूँगा कि सभी बातें झूठी हैं। लेकिन मेरा मन उद्विग्न है। कुछ ऐसी बातें हो सकती हैं जो आप न जानते हों; कुछ ऐसी बातें भी होंगी जिन्हें आप एक दृष्टिकोणसे देखते हैं और सम्बन्धित कैदी दूसरे दृष्टिकोणसे।

ऐसी स्थितिमें मेरा कर्त्तव्य मुझे स्पष्ट प्रतीत होता है। अगर मुझे उन कैदियोंके साथ रहनकी अनुमति नहीं दी जाती तो भी मैं यह अनुमति माँगना चाहूँगा कि मुझे यदाकदा इनसे मिलने दिया जाये। मैं आपको बता चुका हूँ कि मैं कोई विशेष सुविधाएँ नहीं चाहता। मुझे जो सुविधाएँ प्रदान की गई हैं वे मुझसे छीनी जा सकती हैं। यदि मुझे सुविधाओंकी खातिर अलग रखा गया है तो उनका मेरे लिए कोई

महत्त्व नही है, जबकि अलग रखा जाना मेरे लिए बहुत महत्त्व रखता है। जिन शारीरिक निर्योग्यताओंसे मैं पीड़ित हूँ उन्हीसे पीड़ित अन्य कैदियोंको जो सुविधाएँ नही दी जा सकती उनको मैं भी नही चाहता। मैं वर्गीकरणमे विश्वास नही करता क्योंकि वह मेरी रायमें अपमानजनक है। यदि मैं उन सुविधाओंका लाभ उठाता हूँ जो मेरे ही जैसे अन्य कैदियोंको प्राप्त नही हैं, तो ऐसा मै अपनी शारीरिक आवश्यकताओं[1] के कारण करता हूँ। किन्तु यदि मुझे अपने स्वास्थ्यको अपने उन साथियोंकी सेवा करनेके सौभाग्यकी कीमत चुका कर खरीदना पड़े जिनमें से कइयोंको मैं जानता हूँ और जिनमे से एकको भी मैं अपने से किसी प्रकार कम नही मानता, तो मैं खुशीसे अपने स्वास्थ्यकी बलि चढा दूँगा।

मैं यह अलगाव तबतक सहन कर सका जबतक मैं ऐसा समझता रहा कि सब ठीक-ठाक है। लेकिन इस जानकारीने कि तरुण रतिलाल अब नही रहा, और प्यारेलाल, जो मेरे लिए पुत्रवत है, तकलीफमें है, तथा वृद्ध नरसिंहभाई मौतके दरवाजे तक पहुँच गये थे, और अखबारोंमें छपनेवाली लगातार शिकायतोने मुझे अपने कर्त्तव्यके प्रति जागरूक कर दिया है, अर्थात् अब मुझे उनके साथ सम्पर्क स्थापित करनेके लिए अपनी भरसक कोशिश करनी चाहिए।

मैं जानता हूँ कि मैंने जिस अनुमतिकी प्रार्थना की है उसे प्रदान करना आपके या जेलोके इन्स्पेक्टर जनरलके हाथमें नही है। अत: मैं आपसे प्रार्थना करूँगा कि आप कृपया इस पत्रको सरकारके सामने पेश करके इसका उत्तर शीघ्र ही प्राप्त करें। मैं इस बातसे अवगत हूँ कि एक बन्दीके नाते मुझे अपने शरीरकी व्यवस्था करनेके मामलेमें कोई अधिकार नही है। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि मेरे शरीरके रख-रखावमें मेरे सहयोगकी भी आवश्यकता होती है। इस शरीरके अन्दर रहनेवाली आत्मा जो सेवा करनेको उत्कंठित है, यदि उसके लिए इस शरीरका उपयोग नहीं किया जा सकता तो मुझे उसके परिरक्षणमें कोई दिलचस्पी नही रह सकती। मैं मनुष्य हूँ। बन्दी होकर भी मैं अपने अन्दरके इन्सानको अलग नही कर सकता।

मुझे यह आश्वासन देनेकी जरूरत नही है, लेकिन आवश्यक हुआ तो शायद आप स्वयं यह आश्वासन दे सकेंगे कि अपने साथियोंके बीच मेरी उपस्थितिका उपयोग अनुशासनका उल्लंघन करनेके लिए नही किया जायेगा, बल्कि इसके विपरीत उससे अनुशासन और बढ़नेकी ही सम्भावना है। एक सविनय अवज्ञाकारीकी नैतिक संहिता उससे इस बातकी अपेक्षा करती है कि जेलके जो नियम आत्म-सम्मानके विरुद्ध न हों, उनको वह खुशीसे माने और उनका पालन करे।

अन्तमें मैं सरकारका ध्यान इस तथ्यकी ओर दिलाना चाहता हूँ कि १९२३ में इसी जेलमें जब लगभग एक ऐसी ही घटना हुई थी तब मुझे दो कैदियोंसे मिलने दिया गया था, और जिसका परिणाम यह हुआ कि एक बड़ी गम्भीर दुर्घटना होनेमें

१. एस० एन० १९९८० में प्राप्त मसविदेसे। साधन-सूत्रमें यह शब्द मिट गया है।

बच गई थी।[1] पुलिसके वर्तमान इन्स्पेक्टर जनरल महोदय उस मामलेके तथ्योंसे अवगत हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (जी० एन० ३८५२) की फोटो-नकलसे; बॉम्बे सीक्रेट ऐब्सट्रैक्ट्स ७५० (५)/ए०, पृष्ठ २०७ से भी।

२२३. पत्र : लीलावती आसरको

२१ सितम्बर, १९३०

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। यदि तू अधीर न हो तो अपने आदर्शो पर आचरण करनेकी शक्ति आ ही जायेगी। जैसे एकबारगी बहुत खानेसे अजीर्ण हो जाता है उसी प्रकार अपनी सामर्थ्यका अनुमान किये बिना किसी बात पर अमल करनेसे हम असफल हो जाते हैं जिससे बादमें निराशा उत्पन्न होती है। यदि हम अपनी सामर्थ्यका अनुमान न कर सके तो जिस पर हमारी आस्था हो, वह हमारी सामर्थ्यको ध्यानमें रखकर जैसा करनेको कहे, हम वैसा करे। गगाबहनसे दिल खोलकर अपनी बात करना। वे जैसा कहें वैसा करेगी तो वही काफी होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९५६६) की फोटो-नकलसे।

२२४. पत्र : अमीना कुरेशीको

२१ सितम्बर, १९३०

चि० अमीना,

तेरा पत्र मिला। मियाँ अब्दुल मजीदको मेरी तरफसे बहुत-बहुत प्यार। सुलताना तो मुझे भला अपनेको छूने ही क्यो देगी? तेरी तबीयत अब कैसी रहती है? खाने-पीनेमें सावधानी बरतना।

तेरी उर्दूकी पढाई-लिखाई चल रही है न?

बापूकी दुआ और आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६६५८) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए खण्ड २३, पृष्ठ १७०।

२२५. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
२१ सितम्बर, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। भगवानने हमें पंख तो दिये हैं किन्तु हम उन्हें काममें नहीं लाते। यदि हम शरीरको भूल जायें तो भी पंख है ही न? जहाँ हमारा मन होता है वहीं हम होते हैं। क्या कभी-कभी हमें ऐसा नहीं लगता कि हमारा शरीर एक स्थान पर है और मन दूसरे स्थान पर? मुर्देका मन किस जगह होता है? यह कहना तो सहज है किन्तु उसपर आचरण करना कठिन है। किन्तु तूने पखोंकी बात लिखी थी इसलिए मैंने यह ज्ञान उँड़ेला है। इसमें से जिस पर अमल कर सके उस पर करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२८८) की फोटो-नकलसे।

२२६. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
२१ सितम्बर, १९३०

चि० प्रभावती,

तुझे मेरे पत्र नहीं मिलते, यह आश्चर्यजनक है। मैं नारणदासको लिखता हूँ। मैंने तो एक भी सप्ताह खाली नहीं जाने दिया। मेरी तबीयत अच्छी है। मेरा वजन १०३ है। मुनक्केके बदले घिया आदि हरी सब्जियाँ लेता हूँ। दूध-दही तो है ही। काकासाहब भी अच्छे हैं। इनका वजन प्रति सप्ताह लगभग एक सेर बढ़ जाता है। कोई चिन्ता न करना। मृत्युंजय कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तू वहाँ घूमने जाती है?

गुजराती (जी० एन० ३३७१) की फोटो-नकलसे।

२२७. पत्र : कुसुम देसाईको

२१ सितम्बर, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

तेरा पत्र मिला है। तू स्वय बीमार पड़ी है, ऐसा सुनता हूँ। ऐसा क्यो? यदि वहाँ मच्छर हो तो तुझे नि सकोच होकर मच्छरदानीका उपयोग करना चाहिए। उसका प्रवन्ध न हो सके तो मिट्टीका तेल चुपड़ना। मैं इस तरह प्यारेलालको अपने साथ रखनेकी माँग नही कर सकता। काका की माँग भी मैंने नही की थी। अधिकारियोंने ही उन्हे भेज दिया था, लेकिन प्यारेलालसे मिलनेकी तजवीज कर रहा हूँ। उसे दस्त लग रहे है, यह सुनते ही मैंने मिलनेकी माँग की है। अब उसे आराम है। तुझे ध्यान रखना चाहिए कि यहाँ कौन-कौन कैदी हैं, इसका मुझे पता नही चलता। तू यह समझ ले कि मैं पिंजडेमें हूँ। तुझे जब मालूम हुआ था, उसी समय मुझको लिखना चाहिए था।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८०४) की फोटो-नकलसे।

२२८. पत्र : भगवानजी पण्डचाको

२१ सितम्बर, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र पढा। मणिबहनके प्रति तुम्हारे मनमें जो रोप है उसे निकाल दो। वह तुम्हारी पत्नी है, यह बात भूल जाओ। असख्य बहनोंमें वह भी एक बहन है, ऐसा समझो। उसके पास जो बच्चे हैं उन्हे भी बिसार दो। वे तुम्हारे नही हैं, ऐसा समझो। तुम विकारवश हो सकते हो इसलिए बहनके रूपमें भी उससे तुम्हे सेवाका अधिकार नही है, ऐसा जानो। और जिसे भुला दिया उसका स्मरण भी नही करना चाहिए। इसलिए तुम किसी प्रकारकी चिन्ता करना भी छोड देना और मनके बोझको उतार डालना। यह पत्र गंगाबहनको पढाना जिससे वह इसपर अमल करनेमें तुम्हारी मदद करेगी। गुड़का त्याग कर दो पर दूध पिया करो; यह मेरी तुमको सलाह है। भले आधा सेर ही लिया जा सके।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२४) से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्डचा

२२९. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

२१ सितम्बर, १९३०

चि० मनु,

तेरा मन शान्त हो गया यह जानकर हम दोनोंने चैनकी साँस ली। जो विद्यार्थी सयाने हो चुके हैं वे जो-कुछ समझ-बूझकर ग्रहण करेंगे वही फलप्रद होगा। तुझे १००० तार सूत कातनेमें कितना समय लगा, वह कितने नम्बरका था और उसकी मजबूती तथा समानता कितने प्रतिशत थी, लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७६४) की फोटो-नकलसे।

२३०. पत्र : जानकीदेवी बजाजको

२१ सितम्बर, १९३०

चि० जानकीबहन,

तुम बहुत चंट मालूम होती हो। जैसे-तैसे पत्र लिखनेसे भी बच निकलना चाहती हो? और यदि भाषण करते-करते हाकिम 'डिक्टेटर' बन जाओगी तो फिर मुझ-जैसेके तो बारह ही बज जायेंगे न? मालूम होता है जमनालालने नासिकमें अपना धन्धा ठीक जमा लिया है। यह तो मैं जानता ही था। उनके पंजेसे कोई छूट ही नहीं सकता। मदू पहले तो पत्र लिखती थी, अब तुम्हारी तरह ही आलसी हो गई है। ऐसी ही आलसी बनी रही तो तुम्हारे पाससे उसे हटा लेनेका हुक्म जारी करना पड़ेगा। अब शरीर कैसा है? ओम उपद्रव करती है या नहीं?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद

२३१. पत्र: सत्यादेवी गिरिको

यरवडा मन्दिर
२१ सितम्बर, १९३०

चि० सत्यदेवी,

तेरा पत्र मिला। तुझे अपनी गुजराती किसीसे सुधरवा लेनी चाहिए। चित्र [बनाने]का मुहावरा[1] [जारी] रखा है? समय-समयपर उसमें सुधार नहीं दीखता। क्या धर्मकुमार[2] ऊधम मचाता है?[3]

बापूके आशीर्वाद

बापूकी विराट् वत्सलता

२३२. पत्र: जे० सी० कुमारप्पाको

२२ सितम्बर, १९३०

प्रिय कुमारप्पा,

मैं तुम्हारे हिसाबमें एक गलती दिखाना चाहता हूँ। अगर तुम जितना मैं कर रहा हूँ उसी प्रमाणमें मेरा 'प्रति-अभिनन्दन करना' चाहते हो तब तो तुम्हें पता चलाना चाहिए कि मैं प्रति सप्ताह कितने प्रेम-पत्र भेजता हूँ। अतः यदि प्रेमको गणितकी पद्धतिसे नापना सम्भव हो, तब तो तुम्हारे पत्र उतने गुने ज्यादा लम्बे होने चाहिए जितने कि मेरे सब पत्रोंका कुल जोड़ है। लेकिन ईश्वरका धन्यवाद है! प्रेम गणित और ज्यामिति, दोनोंकी उपेक्षा करता है और उन्हें मिथ्या सिद्ध करता है। हाँ, कमलाबहन वास्तवमें बहुत ठीक-ठाक है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १००९१) की फोटो-नकलसे।

१. अर्थात् अभ्यास।
२. सत्यादेवी गिरिके छोटे भाई।
३. मूल पत्र गुजरातीमें था।

२३३. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
२२ सितम्बर, १९३०

चि० मीरा,

मुझे कलकत्तेसे लिखा तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें विविध प्रकारके अनुभव हो रहे हैं।[1] सत्यान्वेषी लोग इन सभीका लाभ उठाते हैं। मैं आशा करता हूँ कि जो थोड़ी-सी बीमारी तुम्हें हुई थी वह अल्पकालिक थी और तुम शीघ्र ही पुन: स्वस्थ हो गई थी। मुझे आशा है कि जो विश्राम तुम चाहती थी वह तुम्हे मिला होगा। मैं सफरी चरखेमे रोजाना कुछ मामूली सुधार करता जा रहा हूँ और अब वह मुझे दिनोंदिन कम तकलीफ दे रहा है। जब किसीके पास एक पूर्ण यन्त्रकी जगह हाथोके कौशलकी मदद करनेवाला एक साधनमात्र हो, उस समय कितनी सारी बारीकियोका ध्यान रखना पड़ता है, यह बात आश्चर्यजनक है। लेकिन चरखेके प्रयोगमें जितनी निपुणता हासिल होगी, कताईमें उतना ही आनन्द और कम थकान होगी। काका अभी भी तुम्हारे चरखेको चलानेकी कोशिश कर रहे हैं। पहले उन्होंने बहुत उपेक्षा बरती थी और अब उसकी कसर उन्हें पूरी करनी है। जैसाकि उनका कहना है, ठीक कातनेवाले तो वह यही बने हैं। इससे पहले वह कताई तो करते थे, लेकिन कतैया नहीं थे। मेरा अभिप्राय क्या है सो तुम समझती हो। मेज बनानेके लिए किसी व्यक्तिको आलमारी बनानेका ज्ञान होना जरूरी नही है। सब्जियाँ लेना जारी है। न कोई नुकसान हुआ है और न ही कोई प्रत्यक्ष फायदा हुआ है। मै इस प्रयोगकी पूरी आजमाइश करना चाहता हूँ। डा० मेहताने कहला भेजा था कि शकरकन्दसे शायद कब्जियत हो। इसलिए आज मैंने उन्हें नही लिया है। भोजनके साथ टमाटर और एक हरी सब्जी रोजाना लेता हूँ।

तुम जहाँ कहीं भी हो, मित्रोंको मेरा प्यार कहना।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४१२) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६४६से भी।

१. हावड़ा पहुँचनेपर मीराबहनको महिलाओंके उस जुलूसमें शामिल होनेसे मना कर दिया गया था जो उन्हें लेकर शहरमें घूमनेवाला था। इस निषेधाज्ञाके बावजूद वह जुलूसमें शामिल हुईं, और पुलिसने उनपर लाठी-चार्ज किया। मीराबहनको पुलिस थाने ले जाया गया और बादमें उन्हें छोड़ दिया गया। औरतोंके साथ कठोर व्यवहार किये जानेके विरोधमें विश्वविद्यालयके कुछ छात्रोंने पुलिसके विरुद्ध नारे लगाये, इसपर उन्हें बुरी तरह पीटा गया। अगले दिन शहरमें हड़ताल हो गई। मीराबहनने अपनी आत्मकथा द स्पिरिट्स पिलग्रिमेज, पृष्ठ ११५-७, में इन घटनाओंका काफी विस्तारसे उल्लेख किया है।

२३४. पत्र: गंगाबहन वैद्यको

२२ सितम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन (बड़ी),

तुम्हारा पत्र न मिले तो मुझे लगता है कि कुछ-न-कुछ हुआ है। उदासी क्यों लगती है? लगे तो उसे फौरन मेरी तरफ भेज ही देना चाहिए। तुम उम्रमें चाहे जितनी बड़ी हो, तो भी मैं जबसे तुमसे मिला हूँ तबसे तुम्हें अपनी प्यारी बेटीकी तरह मानता आया हूँ। जिस तरह मुझमें बाप बननेकी शक्ति है, उस तरह माँ बननेकी भी है। इसलिए तुम मुझे तुरन्त अपनी उदासीमें भागीदार बनाकर निश्चिन्त हो जाया करो।

काकासे मिलनेकी इच्छा हो, तो कभी डुबकी लगा जाओ।

. . . बहनमें[1] एक दोष तो है ही कि वह भगवानजीकी परीक्षा करने गई। ऐसा होते हुए भी जबतक वह आश्रममें रहनेकी और सुधरनेकी इच्छुक है, तबतक उसे बना रहने दें। हमारे प्रयोग भयकर तो है ही। ईश्वरपर श्रद्धा रखें तो इन सबसे पार हो जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - ६: गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७५८ से भी। सौजन्य: गगाबहन वैद्य

२३५. पत्र: कमलनयन बजाजको

यरवडा मन्दिर
२२ सितम्बर, १९३०

चि० कमलनयन,

तेरा पत्र मिला। तुझे साफ-साफ अक्षर लिखने चाहिए। अक्षर गढ़े हुए तो हैं, किन्तु स्पष्ट नहीं है। अभीसे न सुधारे, तो बादमें नहीं सुधरेंगे। तू खुशीसे अजमेर जा वहाँसे भी पत्र लिखते रहना। स्वास्थ्यको न बिगड़ने देना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद

१. नाम यहाँ नहीं दिया गया है।

२३६. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

२२ सितम्बर, १९३०

चि० पण्डितजी,

कुछ प्रयत्न करके ही मैं तुम्हारे नामके आगे 'चि०' लगा पाता हूँ। मेरे हृदयमें प्रेम तो वही है [जो 'चिरंजीव' से ध्वनित होता है] किन्तु शायद व्यवहारमें उसे व्यक्त नही कर पाया हूँ। पिंजाई तुरन्त सीख लेना और यदि हो सके तो कताईके लिए कोई एक ही समय निश्चित कर लेना। खादीके प्रति प्रेमकी जो कमी तुम्हें अपने आसपास नजर आती है वह हमारी ही कमजोरीका प्रतिविम्ब है। खादी आन्दोलनका मध्य-बिन्दु, केन्द्र, हम स्वयं है। जिस प्रकार सूर्यके कम तपनेसे वातावरणमें गर्मी कम हो जाती है उसी प्रकार यदि हम कम 'तपें' अर्थात् हम स्वय खादीके प्रति ढिलाई बरतें तो क्या बाहर ढिलाई नजर नही आयेगी? किन्तु प्रेम बाहरसे नही आता, वह तो अन्तरमें स्फुरित होना चाहिए। यदि हम उस प्रेमको स्फुरित करनेके लिए परिश्रम करेंगे तो निश्चय ही उसका अच्छा परिणाम निकलेगा। रामभाऊ[1] अलमोड़ा गया, यह बहुत ही अच्छा हुआ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २१३) की फोटो-नकलसे। सौजन्य: लक्ष्मीबाई खरे

२३७. पत्र : अब्बासको

यरवडा मन्दिर
२२ सितम्वर, १९३०

चि० अब्बास,

तेरा पत्र मिला। मालके विषयमें तूने जो-कुछ कहा है वह सब स्पष्ट तो है किन्तु लगता है कि दुबारा पढ़ने पर ही उसे मैं पूरी तरह समझ पाऊँगा। मैंने यह पत्र सँभालकर रख लिया है। अपने जेलके अनुभव लिखना। तूने क्या पढ़ा और कितनी कताई-पिंजाई की; जेलके नियमोंका पालन किस तरह किया? तेरा स्वास्थ्य कैसा रहा? मथुरादासभाई ने पिंजाईकी जो पद्धति चलाई है उसके बारेमें भी यदि कुछ लिखना चाहे तो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६३०३) की फोटो-नकलसे।

१. ना० मो० खरेका पुत्र रामचन्द्र।

२३८. पत्र : गंगावहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
मौनवार, २२ [सितम्बर,][1] १९३०

चि० गगावहन (वडी),

तुम्हारा पत्र मिला। जमाई [भव-बाधामे] छूट गया। हमने तो मौतको मित्र मानना सीखा है। यदि ससारमे मौत न होती तो हम क्या करते?

तुम जितने वच्चोको आश्रममे लाना चाहो, ला सकती हो।

काकू के वारेमे समझ गया। सवको अवसर मिल ही जायेगा।

वापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

वापुना पत्रो–६: गं० स्व० गंगावहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७५० से भी।
सौजन्य : गगावहन वैद्य

२३९. पत्र : नारणदास गांधीको

२१/२३ सितम्वर, १९३०

चि० नारणदास,

कमला गाधी आजकल कहाँ है? वहुत दिनोसे उसका पत्र नही आया, इसलिए चिन्ता हो रही है। हरिदास कहाँ है? वह क्या कर रहा है? दो सप्ताहसे प्रभावती के पत्रोमें यह शिकायत आ रही है कि उसे मेरे पत्र नही मिले। यहाँसे तो मैंने नियमित रूपसे लिखा है। उसने तुम्हे अपना ठीक पता दिया है न? वह सीतल-दियारामें है। हरिदासभाईको लिखा पत्र पढ़ लेनेसे उनके वारेमें जान जाओगे। वे रखने लायक है। उनके कुटुम्वके लिए ६० से ६५ रुपये तक दे देना और उनके अपने खर्चके लिए ४० रुपये तक। कुल मिलाकर हर मास १०० रुपये होगे। शिक्षणके वारेमे मैंने जैसा लिखा, उसी तरह होना इष्ट है। मुझे लगता है कि जव आश्रममे रहेंगे, तव उनका अपना खर्च कम ही होगा। अध्ययनके लिए वाहर जाये तो वहाँ खर्च ४०

[1]. साधन-सूत्रमें तारीख "२२ सोमवार, १९३०" दी गई है। १९३० में बाईस तारीखको सोमवार सितम्बर और दिसम्बरमें पड़ता है। अन्य पत्रोंको देखनेसे लगता है कि यह पत्र सितम्बरमें ही लिखा गया होगा; देखिए "पत्र : गंगावहन वैद्यको", २२-९-१९३० और २७-९-१९३० तथा खण्ड ४५, २२-१२-१९३०।

तक हो जायेगा, ऐसा मैं समझता हूँ। ज्यादा स्पष्ट रूपसे बात करनेकी जरूरत हो तो कर लेना। यह ठीक है न? वालजीभाई तो यह सब जानते ही होंगे।

यदि गिरिराजका मन वहाँ शान्त न रहता हो तो मुझे लगता है उसके वर्धा चले जानेमें ही भलाई है। फिर भी जैसा तुम्हें ठीक लगे वही करना।

नानीबहन (बुधाभाईवाली) को लिखा पत्र पढ़ लेना। बुधाभाईको लिखा पत्र भी पढ़ लेना और यदि नानीबहन सहमत हो तो बुधाभाईकी इच्छानुसार व्यवस्था कर देना। नानीबहन दुखी हो तो हस्तक्षेप न करना। मणिबहनको लिखा पत्र पढ़ लेना और उसे भी पढ़वा देना। गंगाबहन भी पढ़ ले। जैनुको लिखा पत्र भी पढ़ लेना। इतना समझाने पर भी वह न समझे तो मेहमान मानकर उसकी गैरहाजिरी सहन कर लेना। भगवानजीको लिखा पत्र भी पढ़ना। मुझे लगता है कि उन्हें वही दवा लेनी चाहिए जिसका मैंने सुझाव दिया है। बालकृष्णको विनोबाके पास भेजकर बिलकुल ठीक किया है। दूसरोंको भेजनेके लिए भी लिखा, यह ठीक किया।

प्रार्थनाका काम बालक-बालिकाओंने सँभाल लिया है, इससे तो मैं बहुत ही खुश हुआ हूँ। और फिर बत्तीकी जरूरत नहीं पड़ती। फिलहाल तो ['गीता' के] श्लोक कण्ठस्थ करनेका काम बन्द हो गया है। समय ही नहीं निकाल पाता। जेलमें पड़े कैदीको ऐसा क्या काम हो सकता है, किन्तु है ऐसा ही। हर पलका हिसाब है। कुछ क्षण बचाकर थोड़ा-बहुत पढ लेता हूँ। मिश्रित वरनेके बारेमें तुम्हारी राय ठीक है। जोशीका पत्र पढ़ लेना। रुई मिली, चमड़ा मिला, काकासाहब की चप्पल मिल गई। अपनीवाली की मरम्मत करा ली है, इसलिए मेरी गाड़ी तो अब दो-तीन महीने तक चलनी ही चाहिए। तुम्हारा वर्षगाँठका नमस्कार पहुँच गया। ईश्वर तुम्हारे आत्मबलमें वृद्धि करे और तुम दीर्घायु हो।

मंगल प्रभात, २३ सितम्बर, १९३०

सर्वधर्म-समभाव: हमारे व्रतोंमें सहिष्णुताके नामसे परिचित व्रतको यह नया नाम दिया गया है। सहिष्णुता अंग्रेजी शब्द 'टॉलरेशन' का अनुवाद है। मुझे यह पसन्द नहीं था, पर उस समय दूसरा शब्द सूझता नहीं था। काकासाहब को भी यह नहीं रुचा था। उन्होंने 'सर्वधर्म-आदर' शब्द सुझाया। मुझे वह भी नहीं जँचा। दूसरे धर्मोको सहनेकी भावनामें उनमें न्यूनताका विचार आ जाता है। आदरमें कृपाकी भावना झलकती है। अहिंसा हमें दूसरे धर्मोके प्रति समभाव सिखाती है। आदर और सहिष्णुता अहिंसाकी दृष्टिसे पर्याप्त नहीं हैं। दूसरे धर्मोके प्रति समभाव रखनेके मूलमें अपने धर्मकी अपूर्णताका स्वीकार भी आ ही जाता है। सत्यकी आराधना, अहिंसाकी कसौटी यही सिखाती है। सम्पूर्ण सत्यको यदि हम देख पाये होते तो फिर सत्यके आग्रहकी क्या बात थी? तब तो हम परमेश्वर हो गये होते; क्योंकि हमारी भावना है कि सत्य ही परमेश्वर है। हम पूर्ण सत्यको पहचानते नहीं हैं, इसलिए उसका आग्रह करते हैं। इसीसे पुरुषार्थकी गुंजाइश है। इसमें अपनी अपूर्णताकी स्वीकृति आ गई। यदि हम अपूर्ण हैं तो हमारे द्वारा कल्पित धर्म भी अपूर्ण है; स्वतन्त्र धर्म तो सम्पूर्ण है। हमने उसे देखा नहीं है, वैसे ही जैसे ईश्वरको नहीं देखा है। हमारा

माना हुआ धर्म अपूर्ण है और उसमें सदा परिवर्तन होते रहते हैं, होते रहेंगे। यह होनेसे ही हम उत्तरोत्तर ऊपर उठ सकते हैं, सत्यकी ओर, ईश्वरकी ओर दिन-प्रति दिन आगे बढ़ सकते हैं। जब हम मनुष्य-कल्पित सब धर्मोंको अपूर्ण मान लेते हैं तो फिर किसीको ऊँचा या नीचा माननेकी बात नहीं रह जाती। सभी सच्चे हैं, पर सभी अपूर्ण हैं, इसलिए दोषपात्र हैं। समभाव होनेपर भी हम उनमें दोष देख सकते हैं। हमें अपनेमें भी दोष देखना चाहिए। उस दोषके कारण उसका त्याग न करें, बल्कि दोषको दूर करें। इस प्रकार समभाव रखनेसे दूसरे धर्मोंके ग्राह्य अंशको अपने धर्ममें लेते सकोच न होगा। इतना ही नहीं, बल्कि वैसा करना धर्म हो जायेगा।

तब प्रश्न यह होता है कि बहुतसे धर्मोंकी आवश्यकता क्या है? हम जानते हैं कि धर्म अनेक हैं। आत्मा एक है, पर मनुष्य-देह अगणित हैं। देहकी असंख्यता टाले नहीं टल सकती, तथापि आत्माकी एकताको हम पहचान सकते हैं। धर्मका मूल एक है, जैसे वृक्षका, पर उसके पत्ते असंख्य हैं।

सब धर्म ईश्वरदत्त हैं, पर वे मनुष्य-कल्पित होनेके कारण, मनुष्य द्वारा प्रचारित होनेके कारण अपूर्ण हैं। ईश्वरदत्त धर्म अगम्य है। उसे भाषामें मनुष्य प्रकट करता है, उसका अर्थ भी मनुष्य लगाता है। किसका अर्थ सच्चा माना जाये? सब अपनी-अपनी दृष्टिसे, जबतक वह दृष्टि बनी है तबतक, सच्चे हैं। पर झूठा होना भी असम्भव नहीं है। इसीलिए हमें सब धर्मोंके प्रति समभाव रखना चाहिए। इससे अपने धर्मके प्रति उदासीनता नहीं आती, बल्कि स्वधर्म-विषयक प्रेम अन्धा न रहकर ज्ञानमय हो जाता है, अधिक सात्विक, निर्मल बनता है। सब धर्मोंके प्रति समभाव आने पर ही हमारे दिव्यचक्षु खुल सकते हैं। धर्मान्धता और दिव्यदर्शनमें उत्तर-दक्षिण जितना अन्तर है। धर्मज्ञान होने पर अन्तराय मिट जाते हैं और समभाव उत्पन्न हो जाता है। इस समभावके विकाससे हम अपने धर्मको अधिक पहचान सकते हैं।

यहाँ धर्म-अधर्मका भेद नहीं मिटता। यहाँ तो उन धर्मोंकी बात है जिन्हें हम निर्धारित धर्मके रूपमें जानते हैं। इन सभी धर्मोंके मूल सिद्धान्त एक ही हैं। सभीमें सन्त स्त्री-पुरुष हो गये हैं, आज भी मौजूद हैं। इसलिए धर्मोंके प्रति समभावमें, और धर्मियों — मनुष्यों — के प्रति जिस समभावकी बात है उसमें, कुछ अन्तर है। मनुष्य-मात्रके प्रति, दुष्ट और श्रेष्ठके प्रति, धर्मी और अधर्मीके प्रति समभावकी अपेक्षा है, पर अधर्मके प्रति वह कदापि नहीं है।

इस विचार पर शायद और लिखना चाहिए। सहज ही समझ न आया हो तो मुझसे पूछना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

यदि लेख ठीक समझमें न आया हो तो उसका अनुवाद करना ठीक नहीं। यहींसे करनेका प्रयत्न तो मैं करूँगा ही।

आज ८६ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१)की माइक्रोफिल्मसे।

२४०. पत्र : वा० गो० देसाईको

२३ सितम्बर, १९३०

भाईश्री वालजी,

तुम तो यह जानते ही होगे कि पहले मैं अपनी तिथि ही लिखा करता था, किन्तु बादमें मैंने देखा कि यह तो दुराग्रह है। हिन्दुस्तानके बाहर तो [अंग्रेजी] तारीखका ही प्रयोग किया जाता है, इस बातको जान लेने पर ही समस्या हल हो सकेगी। मुझे ऐसा लगता है कि स्वराज्य मिल जाने पर भी हमें तारीखका प्रयोग करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई पंचांग नही है जिसे पूरा हिन्दुस्तान स्वीकार करता हो। प्रत्येक प्रान्तमें लगभग अलग-अलग सम्वत्‌का प्रयोग किया जाता है। विदेशी-मात्रसे हमें कोई द्वेष थोड़े ही है। इसके सिवा और भी दलीलें हैं। फिलहाल तो इतनी बातों पर विचार करके मुझे लिखना कि क्या करना उचित है। आजकल तुम क्या कर रहे हो?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७४०७) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : वा० गो० देसाई

२४१. पत्र : मोतीबहन चोकसीको

यरवडा मन्दिर
मंगलवार, [२३ सितम्बर, १९३०][1]

चि० मोतीबहन,

तुम्हारे विस्तृत पत्रका संक्षेपमें उत्तर दे रहा हूँ। बीती बातोंका विचार करनेके बजाय हमें उन बातोंका विचार करना चाहिए जो हमारे सामने हैं। आश्रममें जितने लोग रहते हैं उन सबको मेघजी समझकर उनपर प्रेमके मोती बरसाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७४१) की फोटो-नकलसे।

१. मूल पत्रपर किसी अन्य व्यक्तिके हाथसे "२५-९-१९३० के आसपास", लिखा हुआ है। इससे पहले मंगलवार इसी तारीखको पड़ा था।

२४२. पत्र : पी० जी० मैथ्यूको

२६ सितम्बर, १९३०

प्रिय मैथ्यू,

जिन चीजोके बारेमें तुमने लिखा है उनका निर्णय अन्तत श्रद्धासे होता है। बुद्धि हमे कुछ दूर तक ही ले जा सकती है। मनुष्य तो एक व्यक्ति होता है, ईश्वर उस अर्थमे व्यक्ति नही है। मनुष्यको सही और गलतका ज्ञान है इसीलिए वह पाप करता है। हम अपने तुच्छ पैमानोसे ईश्वरको नापनेकी कोशिश करते है, यही हमारी कठिनाइयोका कारण है। वह तो सभी पैमानोसे परे है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १५५३)की फोटो-नकलसे।

२४३. पत्र : कुसुम देसाईको

२६ सितम्बर, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

तेरा पत्र मिला। प्यारेलालके बारेमें मैंने पिछले पत्रमें लिखा है। अभी उससे भेंट तो नही हुई, लेकिन अब उसके बारेमे समाचार मिल सकते है। भेंट तो अवश्य होगी। साथ रहनेकी बात दैवके अधीन है। जब मैं जेलसे बाहर निकलूँगा तब तो वह मुझे मिलेगा ही और मेरे साथ रहेगा भी। परन्तु भविष्यकी कौन जानता है? काकासाहब नवम्बरके अन्तमें छूटेंगे। इतनेमें तो प्यारेलालकी अवधि भी खत्म होनेको आ जायेगी न? प्यारेलालने अन्तत. 'गीता' और 'रामायण' का आश्रय लिया और मै उसकी ओरसे चिन्तासे मुक्त हो गया। अभी तक उसे उनसे सन्तोष क्यो नही मिलता था, यह बात मेरी समझमें नही आती।

तू स्वय स्वीकार करती है कि मुझे लिखकर ही तू सुरक्षित रह सकती है। तो मुझे पूरा ब्यौरा लिखा कर।

मैंने पुरानी चप्पले नही माँगी। नई चप्पलोके बारेमे तू भूल गई जान पड़ती है। परन्तु अभी तो काम चलता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८०५)की फोटो-नकलसे।

२४४. पत्र : पन्नालालको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्वर, १९३०

चि० पन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम यह जानते हो न कि वर्धामें कुछ लोग तकलीपर एक घंटेमें दो सौ तार निकाल सकते हैं। मैं तो यह पढ़कर हक्का-वक्का रह गया था। इतनी गति किस प्रकार आ सकती है, यह वर्धा पत्र लिखकर जान लेना। वैसे छोटेलालने मुझे इसका पूरा विवरण लिख तो भेजा था।

निराशाको अपने पास मत फटकने देना। निराशामें नास्तिकता निहित है। आस्तिकताका तात्पर्य है आशीर्वाद। तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३१०५)की फोटो-नकलसे।

२४५. पत्र : युक्तिको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्बर, १९३०

चि० युक्ति,

तू पेंसिलसे क्यों लिखती है? जहाँतक हो सके बच्चोंको पेंसिलसे लिखना ही नही चाहिए। अब मुझे लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एम० एम० यू०/३)की माइक्रोफिल्मसे।

२४६. पत्र : विनोद वालाको

२७ सितम्बर, १९३०

चि० विनोद वाला,

तू यह क्यों मानती है कि तू मुझे पत्र नहीं लिखती, इसलिए मैं तुझे याद नहीं करता होऊँगा और तुझे ऐसा भी नहीं मानना चाहिए कि जिन्हें मैं नहीं लिखता उन्हें याद नहीं करता। ऐसे बहुतसे लोगोंकी मुझे रोज याद आती है जिन्हें मैं नहीं लिखता। तेरा पत्र बहुत सुन्दर है। लिखावटके बारेमें रामदास स्वामीकी एक कविताका अनुवाद मैंने आश्रमको भेजा था। यदि तूने वह न देखा हो तो मँगवाकर देख लेना। अब मुझे नियमित रूपसे लिखती रहना और बहुत अच्छी बिटिया बनना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

माँसे मेरे आशीर्वाद कहना। क्या अब उसका मन शान्त है?

गुजराती (एम० एम० यू०। ३)की माइक्रोफिल्मसे।

२४७. पत्र : मणिबहन पटेलको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्बर, १९३०

चि० मणि (पटेल),

तूने मुझे हर हफ्ते पत्र लिखनेको तो कहा है परन्तु वह मिलेगा क्या? तू लिख सकेगी या नहीं, इस बारेमें भी शंका है। देखना शरीरको सँभालना। प्रत्येक क्षणका सदुपयोग करना और हिसाब रखना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने

२४८. पत्र : लीलावती आसरको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्बर, १९३०

चि० लीलावती (आसर),

तेरा पत्र मिला। मुझे तो यही उचित जान पड़ता है कि जबतक तेरा शरीर स्वस्थ न हो जाये तबतक तुझे आश्रममें रहते हुए सेवा-कार्य करना चाहिए। यदि खुर्शेदबहन तुझे बुलायेंगी तो नारणदासभाई तुझे रोकेंगे नहीं। स्वयंसेविका को तो जहाँ जो काम मिले उसीमें आनन्द आना चाहिए। तू अपनी इच्छासे या आलस्यके कारण थोड़े ही आश्रममें पड़ी हुई है? और आश्रम यदि सेवा-स्थल नहीं तो फिर क्या है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९५६७)की फोटो-नकलसे।

२४९. पत्र : मणिबहन परीखको

२७ सितम्बर, १९३०

चि० मणिबहन,

ऐसा लगता है कि नरहरि और रमणीकलालको जेल ठीक फली है। मोहनको बुखार कैसे आ गया? तू उसके खाने-पीने पर निगाह रखती है क्या?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५९६१)की फोटो-नकलसे।

२५०. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

२७ सितम्बर, १९३०

चि० पण्डितजी,

कदम-कदम चढना ही मेरे लिए उचित होगा, अन्यथा गिर पड़ूँगा। तिसपर यदि मैं तुम्हे 'नारायण' लिखने और पुकारने लगूँ और मोक्ष मिल जाये तो कैसा हो?

तुम्हें भाषण देने पड़ते है, किन्तु यह भी एक अच्छा अनुभव है। सभी कार्यकर्त्ताओको तरह-तरहके अनुभव हो रहे है और वे उनसे लाभान्वित हो रहे है। यदि तुम्हें रामभाऊके बारेमें कोई समाचार मिले, तो मुझे लिखना। उन तीनोंके आश्रममे जानेके बाद मुझे कोई समाचार नही मिला है।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २११) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : लक्ष्मीबाई खरे

२५१. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्बर, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। हम अकेले पड़ जायें, कोई हमें न पुकारे, कोई हमारी न सुने और भले होनेके बावजूद लोग हमें गालियाँ दें, और इतने पर भी यदि हम मुस्कराते रहे और प्रसन्न रहें तो इसीको सच्चा आनन्द कहा जा सकता है। ससार भले ही हमारी निन्दा या स्तुति करे, किन्तु इन बातोका स्पर्श तक हमें अपनी आत्मासे नही होने देना चाहिए। यह स्थितप्रज्ञ-सम्बन्धी उन श्लोकोका अर्थ है जिनका हम नित्य पाठ करते है। नित्य नियम और श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करनेमे किसी दिन हम उसे आत्मसात् कर लेगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२८९) की फोटो-नकलसे।

२५२. पत्र : गंगाबहन झवेरी और नानीबहन झवेरीको

२७ सितम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन और नानीबहन,

तुम दोनोंके पत्र मिले। मैं तुम दोनोंको हर हफ्ते तो याद करता ही हूँ, किन्तु बादमें तुम्हें पत्र लिखनेका विचार छोड़ देता हूँ। एक प्रकारसे मैं तुम दोनोकी एक आदर्श जोड़ी मानता हूँ। तुम दोनों सास-बहू नहीं बल्कि सगी बहनोसे भी बढ-चढ़ कर हो। ऐसा वातावरण तैयार करनेमें पन्नालालका भी हाथ तो है ही। किन्तु यदि तुम दोनों ऐसी न होतीं तो वह क्या कर पाता? अभी तो हमें बहुत आगे बढ़ना है; और तुम तीनों आगे बढ़ने योग्य भी हो ही। भाई पानाचन्दसे कहना कि उनका तार मुझे मिल गया था।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३१०४) की फोटो-नकलसे।

२५३. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन (बड़ी),

तुमपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। प्रभु तुम्हें यह बोझ उठानेकी शक्ति दे।

अम्बालालने[1] काकासाहब को लिखा है। काकासाहब मजेमें हैं। कातते हैं, पींजते हैं, नियमपूर्वक घूमने जाते हैं, नियमपूर्वक खाते हैं।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

रमीबाई जो चाहती थी वह उसे मिल गया है।[2] बहुत शोभा देता है।

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-६ : गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७५९ से भी।
सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

१. अम्बालाल चतुरभाई पटेल, जो उस समय काकासाहब कालेलकरके शिष्य थे।

२. रमीबाई गिरफ्तार हो गई थीं।

२५४. पत्र : रेहाना तैयबजीको

२७ सितम्बर, १९३०

चि० रेहाना,

तेरा पत्र मिला। तेरा स्वास्थ्य पहलेसे कुछ अच्छा है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। जब तू कमलादेवीको पत्र लिखे तो लिखना कि मैं उसे प्राय: याद करता हूँ। बाबाजानसे कहना कि पूरी 'सीरत' का अनुवाद अच्छा नहीं लगेगा, बल्कि यदि उसके मुख्य-मुख्य अंशोंका अनुवाद दिया जायेगा तो अच्छी पुस्तक बन जायेगी। मौलाना शिबलीने मुसलमानोंको ध्यानमें रखकर 'सीरत' लिखी है और यह उचित भी है, किन्तु आम लोग ऐसी पुस्तकका अनुवाद नहीं पढ़ेंगे। अमीर अली, मौलवी मुहम्मद अली कादियानी, वाशिंगटन इर्विंग और कार्लाइल की पुस्तकें तो हमारे पास हैं। इसमें यदि मौ० शिबलीकी पुस्तकका संक्षिप्त अनुवाद और जोड़ दिया जाये तो इससे [हमारे साहित्यमें] एक अच्छी पुस्तककी वृद्धि होगी। रामदास लिखता है कि बाबाजान दिन-दिन जवान होते जा रहे हैं, छ:-छ: घंटे लिखनेमें मेहनत करते हैं और उनकी स्मरण-शक्ति बढ़ी है। यदि ऐसा है तो उनकी दाढ़ी सफेद हो जानेसे क्या हुआ? और तिसपर महादेवको फ्रेंच सिखाते हैं। उनसे किसे ईर्ष्या न होगी? तुम दोनों माँ-बेटीने खेड़ा जिलेमें खूब काम किया और वह हमीदा सूरत जिलेको गुंजाये हुए है।

खुदा हाफिज।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

क्या मेरी लिखावट पढ़नेमें तुझे मुश्किल होती है?

गुजराती (एस० एन० ९६२१) की फोटो-नकलसे।

२५५. पत्र : जयप्रकाश नारायणको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्वर, १९३०

चि० जयप्रकाश,

तुमारी शरी [र] प्रवृत्ति अच्छी नहि रहती ऐसा प्रभावती लिखती है। इतना ज्ञान पानेके वाद शरीर क्यों विलकुल दुरुस्त नहि वन सकता? इस वारेमें प्रयत्न करना आवश्यक है। अव क्या करते हो।

वापुके आशीर्वाद

जी० एन० ३३७४ की फोटो-नकलसे।

२५६. पत्र : कलावती त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्वर, १९३०

चि० कलावती,

तुमारा खत पाकर आनंद हुआ। ऐसे हि नियम पालनमें दृढ़ रहो। भले निंदा करना है वह करते रहें। ऐसे लोगों पर क्रोध भी मत करो परंतु प्रेम करो।

अक्षरमें सुधारके लिये काफी स्थान है। प्रयत्नसे अक्षर अच्छे वन सकेंगे।

वापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२५२ की फोटो-नकलसे।

२५७. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्बर, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुमारे दोनो पत्र मिले हैं। कलावतीकी प्रगती वहोत अच्छी हुई है। खद्दरके वारेमें स्वावलम्बन पद्धति ग्रहणका निश्चय ठीक किया। स्वप्नदोषका निवारण अल्पाहार और शारीरिक और मानसिक उद्यम है। जो शारीरिक कार्य किया जाय उसीमें मनको रोक लेनेसे दोगुना लाभ होता है, कार्य ज्यादा अच्छा होता है, मनोविकार ऐसे ही रुक जाते हैं।

वापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२५३ की फोटो-नकलसे।

२५८. पत्र : तुलसी मेहरको

यरवडा मन्दिर
२७ सितम्बर, १९३०

चि० तुलसी मेहर,

तुमारा खत ठीक मिला। तुमारा स्मरण वहोत करता हुं। मीरावहनने लिखा था अब खत भी आया। अच्छा है।

वापुके आशीर्वाद

जी० एन० ६५३८ की फोटो-नकलसे।

२५९. पत्र : मीराबहनको

२८ सितम्बर, १९३०

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम्हें मुजफ्फरपुरमें पूरे चार दिनका भी आराम मिला नही या तुमने किया नहीं। मैं तुम्हारी जगह होऊँ तो अगली बार इस प्रकारके वचनोंका पालन अवश्य करूँ। विश्राम सेवाकी भावनासे क्यों नही किया जा सकता? अवश्य ही इसका सरलतासे दुरुपयोग किया जा सकता है और अक्सर किया जाता है। लेकिन यह तो कोई वजह नही है कि ईमानदार लोग ईमानदारीसे अपनेको विश्राम क्यों न दें ताकि वे और अधिक सेवा करनेके लिए अपनेको ठीक हालतमें रख सकें। कोई व्यक्ति जब यह कहता है कि वह सेवा करनेमें अपने-आपको मिटाये दे रहा है, तो मैं इसे और कुछ नही तो कमसे-कम आत्म-प्रवंचना अवश्य समझता हूँ। क्या ईश्वर अनवरत और निष्काम भावसे की जानेवाली सेवाकी अपेक्षा ऐसी सेवाको ज्यादा पसन्द करता है? शरीर तो मशीनकी भाँति है जिसे पूरी सेवा लेनेके खयालसे अच्छी हालतमें रखनेकी जरूरत है। लेकिन सुरक्षित विश्राम-स्थलसे बैठकर मुझे ज्यादा उपदेश नही देना चाहिए। इतना ही है कि मुझे लगता है कि आवश्यक आराम लेनेमें मुझे लज्जाका अनुभव नहीं हुआ है। मेरे निकटवर्ती लोगोकी राय इससे भिन्न है, इसका कारण यही है कि वे विश्रामके नियमोंसे अनभिज्ञ है। ठीक समय पर उचित विश्राम लेना वैसा ही है जैसे कपड़ेमें पड़ी खोंचको समय रहते सिल देना।

काका को तुम्हारा चरखा छोड़ना पड़ा। उसपर वह प्रति घंटे ७० तारसे अधिक सूत नहीं निकाल पाते थे। अब वह पेटी-चरखा इस्तेमाल करते है। कल तीसरा दिन था और उन्होंने एक घंटेमें ११९ तार सूत निकाला। वह और भी ज्यादा अच्छे नतीजेकी उम्मीद करते हैं। मैं दिन-प्रतिदिन प्रगति कर रहा हूँ और उस चरखे पर थकान क्या चीज है, मुझे पता ही नही चलता। वह बिल्कुल आसानीके साथ चलता है। जब मैं आवश्यक मोटाईकी माल स्वयं बना लूँगा तब वह और भी अच्छा चलेगा। धुनाई तो वास्तविक संगीतका आनन्द देती है। विट्ठलने लिखा था कि हमें ताँतमें पत्तियाँ रगड़नेके बजाय मोमबत्ती रगड़नी चाहिए। इस परिवर्तनसे ताँत ज्यादा अच्छे परिणाम दे रहा है। मै चाहूँगा कि जिन लोगोंको नये अनुभव प्राप्त हों वे उनकी सूचना मुझे भी देते रहें। यहाँ जिन्हें आजमाना सम्भव होगा उन्हें मैं निश्चय ही आजमाऊँगा। मैं कताई और धुनाई, दोनोंमें एक ऊँचा स्तर प्राप्त करना चाहता हूँ। कोई वजह नहीं है कि मै १६० तार प्रति घंटे पर ही क्यों ठहर जाऊँ। मुझे अब विश्वास है कि मैं और बेहतर कर सकता हूँ। मेरे लिए तो यह ईश्वरका कार्य है। यदि वह चाहता है तो मुझे शक्ति और क्षमता देगा।

नारणदास मुझे बताता है कि तुम्हारी कुमारप्पामे पटरी नहीं बैठ रही है। हमारा अन्तर तो उदारता ही है। वह जैसा चाहता है मैं उसे वैसा ही करने दूंगा। लेकिन मतभेदोंके बारेमें मुझे अवश्य ही कुछ पता नहीं है। ना० ने अपने पत्रमें इस विषयमें एक या दो पंक्तियां ही लिखी हैं। मेरा वजन १०३ और १०८ पौंडके बीच है और आहार लगभग वही है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४१३) से। सौजन्य: मीराबहन, जी० एन० ९६४७ से भी।

२६०. पत्र : कसुम्बा गांधीको

यरवडा मन्दिर
२८ सितम्बर, १९३०

चि० कसुम्बा,

तुम चलाला पहुँच गईं, यह बहुत ठीक किया। हमारी आपसमें जो बातचीत हुई थी उसीके अनुसार चलना। छूतछातकी भावना अपने मनसे निकाल देना। उमिया तो प्रसन्न है न? जयसुखलालके सभी कामोंमें रुचि लेना। तुममें मुझे दृढताका गुण नजर आया, जिससे मुझे प्रसन्नता हुई थी। मैं चाहता हूँ कि तुम अपने इस गुणका उपयोग सेवा-कार्यमें करो।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एम० एम० यू०/३) की माइक्रोफिल्मसे।

२६१. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

२८ सितम्बर, १९३०

चि० जयसुखलाल,

तुम्हारा विस्तृत पत्र मिला। तुमने पत्र लिखकर अच्छा किया। उमियाका पांव भारी है, इस बातकी जानकारी मुझे तुम्हारे पत्रसे ही मिली। उसके दर्दका कारण मैं अब समझा। शुरूमें वह जितनी खुश थी, अब भी वह उतनी ही खुश है न? अपने नियमोंका तत्परतापूर्वक पालन करते हुए भी तुम कसुम्बाका दिल मत दुखाना। हम स्वयं जिस स्वतन्त्रताका उपभोग करना चाहते हैं वही स्वतन्त्रता उसे भी है। उसपर क्रोध करनेसे उसकी सच्ची भावनाएँ दब जायेंगी। मैंने भी तो ऐसा किया है, अतः यह मैं अपने अनुभवके आधार पर लिख रहा हूँ। कसुम्बामें मुझे उच्च

कोटिके कुछ गुण दिखाई पड़े हैं। किन्तु यदि ये गुण न हो तो भी क्या है? तुम्हारे जीवनमें वह बाधक नहीं बनेगी और तुम उसके जीवनमें बाधक मत बनना। समय-समय पर मुझे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तुमने पूँजीपतियोंके बारेमें जो-कुछ लिखा है, वह सच है। किन्तु हम उन्हें भी प्रेमसे ही जीतेंगे।

गुजराती (एम० एम० यू०/३) की माइक्रोफिल्मसे।

२६२. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
२८ सितम्बर, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। चादर ओढ़ानेमें तू क्रम भूल जाती थी, यह कैसे याद न रहे? रोज एक ही भूल सहन करनेवाला पिता कितना अच्छा होगा?

'आश्रम-भजनावलि'[1] में ८४वें भजनकी तीसरी पंक्ति यों है: "कमल म्याने मोट बाँधी।" इसका अर्थ तू समझती हो तो तू अथवा वालजीभाई अथवा तोतारामजी अथवा जो भी कोई जानता हो उससे समझकर भेज देना अथवा जो जानता हो वही भेज दे।

कमलाके साथ तूने मित्रता कर ली है, यह अच्छा किया। इस बातका ध्यान रखना कि वह उदास न हो। उस जोलिंगर नामकी बहनके साथ भी क्या तूने मित्रता कर ली है? न की हो तो कर लेना। आश्रमके नियमोंके बारेमें उसके मनमें कुछ प्रश्न हैं। यदि वह उनको लेकर तुझसे बातचीत करे तो तू उससे बातचीत करना और उसकी शंकाओंका समाधान करना।

अब तबीयत कैसी है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८४) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२३६ की फोटो-नकलसे भी।

१. देखिए परिशिष्ट ६।

२६३. पत्र : राधाबहन गांधीको

२८ सितम्बर, १९३०

चि० राधिका,

तुम सबके अलग-अलग लिखे पत्र मुझे मिल गये थे। फिलहाल तो ये लोग तुम्हारे अलग-अलग लिखे गये पत्र भी मुझे दे देते हैं; किन्तु शर्त तो यह है कि सभी पत्र एक ही लिफाफेमें भेजे जाने चाहिए।

तेरे पैरका मामला लम्बा चला। ऐसा लगता है कि तेरी शारीरिक निर्बलताका भी इसमें कुछ हिस्सा है। नारणदासकी शिकायत है कि तुममें से कोई प्रार्थना आदिमें भाग नहीं लेता। क्या यह सच है? मुझे साफ-साफ लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६८६) से। सौजन्य: राधाबहन चौधरी

२६४. पत्र : वेणीलाल गांधीको

२८ सितम्बर, १९३०

चि० वेणीलाल गांधी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी तबीयत जो दो सालसे खराब चली आ रही है उसका इलाज वैद्यकी दवा नहीं बल्कि आबोहवा और खुराकमें रद्दो-बदल और अगर जरूरी हो तो उपवास है। इस तरहसे सैकड़ों लोगोंको आराम हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९१६) से। सौजन्य: वेणीलाल गांधी

२६५. पत्र : बलभद्रको

यरवडा मन्दिर
२९ सितम्बर, १९३०

चि० बलभद्र,

तेरा पत्र मिला। तूने अच्छा लिखा है। किन्तु तू इससे भी अच्छा पत्र लिख सकता है। तेरा वजन क्यों घटता जाता है? तू चबा-चबाकर खाता है न? तुझे किसी तरहकी पीड़ा तो नहीं रहती? तू कितना दूध पीता है? तेरा वजन बढ़ना ही चाहिए। यह पत्र नारणदासभाई को पढ़वा देना और वे जैसा कहें वैसा करना। तू जो-कुछ करे सो मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९२११)की फोटो-नकलसे।

२६६. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

यरवडा मन्दिर
२९ सितम्बर, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

क्या एक ही पत्रका उत्तर देना बाकी था? रोज तुम सब बहनोंको याद तो करता ही हूँ। मेरे साथ भी यदि तुमने थोड़े महीने विताये होते तो मुझे भी अच्छा लगता। तथापि तुम दोनोंने दूर बैठे हुए भी इस तरहसे तरक्की की है कि यदि मेरे पास ही होते तो भी मुझसे क्या [विशेष] ग्रहण करते सो मैं समझ नहीं पाता। बच्चे आज भी फलों आदि पर रहते हैं और तुम भी फिरसे फलों पर आ गई हो, यह ठीक किया। डाहीबहनने मुझे पत्र क्यों नहीं लिखा? सब बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६७९७)की फोटो-नकलसे।

२६७. पत्र : पूँजाभाईको

२९ सितम्बर, १९३०

चि० पूंजाभाई (छोटे, वडौदा),

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी बीमारी बहुत लम्बी चली। शरीरका तो ऐसा ही है। यह चूड़ीसे भी ज्यादा नाजुक है। अतः हमें उसकी देखभाल सेवा-कार्यके लिए ही करनी चाहिए। तुरन्त चंगे हो जाओ। समय-समय पर मुझे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४०१६)की फोटो-नकलसे।

२६८. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

२९ सितम्बर, १९३०

प्रिय भगिनी,

तुमारे दो खतका उत्तर बाकी है। पहले तो सतीशबाबुका प्रश्न। द्वितीय अध्यायमें जो युद्धकी बात है उसका शब्दार्थ करे तो अवश्य भौतिक युद्ध है। परंतु 'गीता'का भाव हमको अंतरयुद्धकी ओर ले जाता है उसमें मेरे दिलमें थोडा भी संदेह नहिं है। जब संदेह पैदा हो जायगा 'गीता' मेरे लिये धर्म ग्रंथ मिट जायगा।

तुमारा शरीर अब अच्छा होगा। विनोबाको पूछकर संस्कृत सीखनेवाले लडको को अवश्य वर्धा भेजो। छोटेलाल अब तो जेलमें गया। तारीणी कुछ भी अच्छा है जानकर बहोत आनंद हुआ। तारीणी चारू अरूण – इ० सबको मेरे आशीर्वाद। भारत-वर्षमें जैसे प्राचीन तपोवन थे ऐसे अब भी हो सकते हैं हमारी तपश्चर्या पर निर्भर है। हां उसके रूपमें परिवर्तन हो सकता है। पूर्वजोने जो किया उसमें आगे बढनेका हमारा धर्म है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६७१ की फोटो-नकलसे।

२६९. पत्र : आर० बी० मार्टिनको

यरवडा सेंट्रल जेल
३० सितम्बर, १९३०

प्रिय मेजर मार्टिन,

मैंने इसी २१ तारीखको आपको पत्र भेजकर अनुरोध किया था कि मुझे इस जेलमें बन्द सविनय अवज्ञावाले कैदियोंसे सम्पर्क स्थापित करने दिया जाये। मैंने अपने सचिव और सह-कार्यकर्त्ता प्यारेलालसे मुलाकात करनेका अनुरोध इसने भी पहले किया था। अब मैं यह आग्रह करना चाहता हूँ कि मुझे मेरी बातका जवाब जल्दी दिया जाये। मैं जानता हूँ कि सरकार अत्यन्त व्यस्त है और एक बन्दीके नाते मैं चाहता हूँ कि अपनी वजहसे उसे कोई तकलीफ न दूँ। लेकिन मैंने जो अनुरोध किया है वह मेरे आत्माकी एक अनिवार्य माँग है। मैं अब अपनेको और अधिक नहीं रोक सकता। अपने इन सह-बन्दियोंसे मिलने न दिया जाना मेरे लिए असह्य है। अतः अगर आगामी शनिवारकी दोपहर तक मेरी इच्छा पूरी न की गई तो मैं अपने शरीरके परिरक्षणमें सहयोग देना बन्द करना आरम्भ कर दूँगा। मेरे लिए इस समय यह बताना सम्भव नहीं है कि यह असहयोग मैं किस हद तक करूँगा। उसका निश्चय दिन बीतनेके साथ-साथ मेरी आन्तरिक प्रेरणा और साहस तथा शक्ति द्वारा होगा। असहयोगका आरम्भ साधारण कैदियोंको दिये जानेवाले भोजन, अर्थात् उसमें भी जो-कुछ मैं धर्मपूर्वक ले सकता हूँ, उसके सिवा अन्य कोई भोजन लेनेसे इनकार करनेके साथ होगा। मै नमकके अलावा केवल पाँच प्राकृतिक खाद्य वस्तुएँ और ले सकता हूँ। इसलिए जहाँतक मैं देख सकता हूँ, मैं केवल काँजी और बाजरी और जुवारी की चपाती ही ले सकता हूँ। मैं दाल या सब्जियाँ नहीं ले सकता क्योंकि उनमें पाँचसे अधिक वस्तुएँ होती हैं। काँजी और चपाती मैं अधिकारियोंकी जिम्मेदारी और उनकी इच्छा पर लूँगा। मुझे भरोसा नहीं है कि इतने वर्षों तक इनका उपयोग न करनेके बाद मेरा पेट इन दो में से कोई भी चीज हजम कर सकेगा। मैंने आरम्भमें यह समझौता इसलिए किया है क्योंकि मैं अपने बश-भर, अभी आरम्भमें, कमसे-कम अटपटी स्थिति उत्पन्न करना चाहता हूँ। मै चाहूँगा कि सरकार इस पत्रको धमकी न माने बल्कि सौजन्य और लिहाजका द्योतक माने। मेरी इच्छा यह नहीं है कि जिसे मैं मानव-अधिकार मानता हूँ उस अधिकारको प्राप्त करनेके लिए मुझे जो भी कदम उठाने पड़ें, उनकी सूचना सरकारको पहलेसे न हो।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (जी० एन० ३८५३) की फोटो-नकलसे; बॉम्बे सीक्रेट ऐब्सट्रैक्ट्स, ७५० (५)/ए० पृष्ठ २०७ से भी।

२७०. पत्र : नारणदास गांधीको

२५/३० सितम्बर, १९३०

चि० नारणदास,

आज तुम्हें ही पहले पत्र लिख रहा हूँ। पिछले सप्ताह समय कुछ कम था इसलिए कुछ एक वातें सक्षेपमें लिख कर काम चलाना पडा था। राजगोपालाचारीके आश्रममें कौन-कौन है, सुव्वैया कहाँ है, उसकी पत्नी कहाँ है, आदिके वारेमें मालूम हो तो लिखना।

पूंजाभाईको तो अब कष्ट सहन करते हुए शान्तिसे ही दिन विताने है। जोलिंगर बहनके साथ ज्यादा वातचीत कर सको तो करना। यह वहन अच्छी और समझदार दिखाई देती है। किन्तु उसे हमारी सारी वातें समझनेमें समय लगता है। वह चौकीदारी करना चाहे, तो वैसा करने देनेमें कोई दोष नही दिखाई देता। उसकी दलील ठीक है। जितनी स्वतन्त्रतासे घूमने-फिरनेके लिए वह तत्पर है, हिन्दकी वहने शायद इतनी स्वतन्त्रता लेनेको तैयार न हो। फिर भी कोई उसके साथ रहना चाहे तो वेशक रह सकता है। यह तो मैंने यहाँ वैठे-वैठे अपना विचार व्यक्त भर कर दिया है। तुम जैसा उचित समझो वैसा कर लेना।

केशु आदिको क्या लिखूं? इस समय जो पत्र लिख रहा हूँ, सो पढकर उन्हे दे देना। केशु ईमानदार नवयुवक है। समय आने पर अपना धर्म समझ जायेगा, इसलिए उसे कुछ लिखनेका मन नही होता। तुम तो हिम्मतसे काम लेकर जो कहना हो, कह देना। इस समय तो मै लिख ही रहा हूँ।

मेरी खुराक है तीन सेर दूध — दो वार दहीके रूपमें, एक वार दूधके रूपमें। नौ टमाटर, छोटे-वड़े जैसे आये हो और परिमाणमें कुम्हडा या गोभी आदि सब्जी उवाल कर। नमक डालनेकी जरूरत लगे ही तो ऊपरसे ले लेता हूँ। चार दिनमे रतालू छोड़ दिये है, क्योकि डा० जीवराज काकासाहवसे मिलने आये थे और उन्होने उन्हें वताया कि रतालू कब्ज करता है। मुझे वादमें एनीमा लेनेकी जरूरत तो पडी ही थी। इसलिए रतालू छोडकर देख रहा हूँ। [शक्तिमें] कुछ फर्क नही पडा है। शक्ति वनी रही तो फिर रतालू न लेनेका प्रयत्न जारी रखूंगा। यो मुझे उसका खास नुकसान तो नही मालूम पड़ा। यहाँका पानी ही मेरे जैसे लोगोंके लिए कब्ज करनेवाला जान पड़ता है, किन्तु चिन्ता करनेकी कोई वात नहीं है। आज शामको वजन लिया जायेगा; वह भी लिख भेजूंगा। एनीमा मेरे लिए नई चीज नही है। किन्तु यदि उसके विना चल सकूँ तो उसे छोड़ना जरूर चाहता हूँ। ताजे फल भी जवतक छोड़े रह सकूं, छोड़ना चाहता हूँ। यदि सब्जीसे एनीमा न छूटा या किसी तरहकी कमजोरी लगी तो खजूर और मुनक्का लेना शुरू करूँगा। कोई चिन्ता न करे।

चरखेका काम सुधरता जा रहा है। लगता है, गति बढ़ रही है। थकावट तो मालूम नहीं होती। ज्यादा कात पानेका लोभ बेशक नहीं करूँगा। 'गीता'के श्लोक कण्ठस्थ करनेका काम फिलहाल बन्द है। इससे मनको दुःख होता है। किन्तु अवसर देख रहा हूँ। पहले कताई करते समय याद करता था। देखता हूँ कि उससे कातनेमें विघ्न पड़ता है। अच्छी तरह कताई करनेके लिए एकाग्रताकी आवश्यकता दिन प्रति-दिन बढ़ती दिखाई दे रही है। कातने और कातनेकी कलामें बड़ा अन्तर है, यह भी देखता हूँ। मुझे तो कलामें सिद्धहस्त होना है। यदि ऐसा इस जन्ममें न हो सके तो न हो। मैं अपने प्रयत्नमें ढिलाई न करूँ तो मुझे उतनेसे भी सन्तोष रहेगा। चरखा चलाते समय 'गीता' कण्ठस्थ करनेके लोभमें मैंने अपनी ढिलाई देखी। 'गीता'की शिक्षा इसके विरुद्ध है। चरखेकी साधनाके साथ-साथ 'गीता' कण्ठस्थ हो तो ठीक है; किन्तु चरखेकी कीमत पर 'गीता' कण्ठस्थ करूँ तो यह 'गीता'का — जिस तरह मैंने उसे समझा है — अनादर करनेके बराबर होगा। अमीदासको मना लेना। मैं उसे लिख रहा हूँ। ऐसे व्यक्तिको हम आश्रम छोड़ देनेके लिए कहें भी कैसे?

दो प्रवचन तो नहीं भेज सकूँगा। शायद इस बार सर्व-धर्म समभाव ही चलेगा। स्वदेशीको छोड़ देनेकी इच्छा होती है। राजनीतिसे सम्बन्धित विषयोंको न छेड़नेका संकल्प है। ऐसा करनेसे उसके कुछ टूटनेका भय है। स्वदेशी पर केवल धार्मिक दृष्टि रखकर लिखा जा सकता है। लिखें, तो भी कोई ऐसी बात उसमें आ सकती है जिसका राजनीतिके साथ कुछ-न-कुछ सम्बन्ध जुड़ जाये। यदि लगा कि राजनीतिको एक ओर रखकर लिख सकता हूँ तो लिखूँगा; देखता हूँ।

गिरिराजको वहाँ जबरदस्ती रखनेका कोई फायदा नहीं है। बालकृष्ण उसे वर्धा बुला रहे हैं तो वहाँ जाने देनेमें तुम्हें क्या हानि दिखाई देती है? वह आदमी तो भला है किन्तु उसका दिमाग काम नहीं करता। सम्भव है कि बालकृष्णकी संगतसे लाभ हो। विनोबाके पास दूसरा व्यक्ति भेजनेके लिए तो तुमने लिखा ही है; तो फिर गिरिराजको ही क्यों न भेज दो। यदि वह इससे खुश हुआ तो काम करेगा ही। उसका त्याग करना मुझे ठीक नहीं लगता। किन्तु फिर मैं उसे लेकर सिर खपा रहा हूँ, जिसे लेकर खपाना आवश्यक नहीं है; इसलिए इसपर बहुत ध्यान न देना। तुम्हें निर्णय करनेमें मदद हो, इसी विचारसे इतना लिखा है, ऐसा मानना। हो सकता है, मैं कोई बात समझ नहीं पाया होऊँ और मैंने ऐसी राय बना डाली हो। मुझे तुम्हारे निर्णय पर इतना ज्यादा विश्वास है कि जब मेरी बुद्धि किसी निर्णयका विरोध करती है तो मन यही कहता है कि यहाँ पर कुछ बातोंकी मुझे जानकारी नहीं है। अब तुम्हारे प्रश्नोंका जवाब:

१. आश्रम छोड़नेकी आज्ञा देनेकी जरूरत नहीं; किन्तु न रहे तो उसे आज्ञा देकर रोकना नहीं चाहता।

२. आश्रमकी सम्मतिके बिना वर्धा जाना ठीक नहीं होगा।

३. आश्रमकी आज्ञाका उल्लंघन करके कुछ करे और वह आश्रमका विश्वास खो बैठे तो आश्रम उसके बच्चोंका बोझ नहीं उठा सकता।

४. कटु, विमुको आश्रममें न रख सके तो उन्हें कहाँ भेजें, यह समझमें नहीं आता। अभी गिरिराज उनकी देखरेखमें भाग न लेता हो और वह आश्रमकी सम्मतिसे बाहर तब और यदि आश्रम बच्चोंकी देखभाल कर सकता हो, तो करे। किन्तु यदि वे देखभाल करनेके लायक न रहे हो, तो गिरिराजसे यह बात कह देनी चाहिए।

५. नई व्यवस्था करनेमें गिरिराजको पैसेकी मदद तो देनी चाहिए, ऐसा मुझे लगता है। कितनी रकम हो यह आश्रम ही तय करे। मुझे लगता है कि अब मैंने तुम्हारे सभी प्रश्नोंका उत्तर दे दिया है। गिरिराजको लिखा पत्र पढ़ लेना।

मेरे पास मणिबहनके बारेमें निर्णय करने लायक तथ्य नहीं हैं। किन्तु जो समझा हूँ उससे ऐसा लगता है कि वह अपने गाँव जाना चाहें तो जाने दें। भगवानजीकी इच्छाका सवाल नहीं। मणिबहनकी इच्छाका सवाल है। रहे तो खुशीसे रहे। इतनी शर्त जरूर है कि भगवानजीको भूल जाये। उससे मिलनेकी इच्छा या आशा न करे। जैसे दूसरी बहनें रहती हैं वैसे नियमोंका पालन करते हुए आश्रममें रहे। वह खुशीसे ऐसा न करना चाहे तो उसे जाने देना चाहिए।

मीराबहन और कुमारप्पाके बारेमें समझ गया हूँ। तुम्हारा निर्णय ठीक लगता है। मैं मीराबहनको लिख रहा हूँ।

आजकल भाई जेठालाल कहाँ है? अपनी प्रदर्शनीमें जो फल रखे गये उनके बारेमें पढ़कर मुझे आश्चर्य और आनन्द हुआ है। मुझे तो अंगूर बोये जानेकी खबर भी नहीं थी।

मेरी टूटी हुई चप्पलें भेजनेकी जरूरत नहीं। एक नई जोड़ी थी। कान्तिको नहीं मालूम, तो ठीक है। मैंने जैसा लिखा है उस तरह अभी काम चल रहा है। नई जोड़ी न मिले तो बादमें देखेंगे। वहाँ जो चप्पलें तैयार पड़ी हैं, उनमें से एक जोड़ी क्यों नहीं चलेगी? जैसी काकासाहब के लिए भेजी है, वैसी मेरे लिए भी ठीक है। उस जैसी सजावट न हो तो ज्यादा अच्छा। प्यारेलालको घरके खर्चके लिए पैसे जरूर भेज देना। इसके बारेमें और कुछ किया ही नहीं जा सकता। उसे तो पहले ही पैसा मँगा लेना चाहिए था। वह उसने नहीं मँगाया। उसका मित्र या जो कुछ भी कहो तो आश्रम ही है। गोकीबहनके बारेमें तुमने जो किया वह शोभा देता है। आश्रमसे तो नहीं भेज सकते थे। डा० मेहतासे माँग सकते थे। किन्तु तुमने ही दिया, यह मुझे बहुत अच्छा लगा है। और उसे उसकी जरूरत तो होगी ही। रेंटिया-बारस[1]की कताईका हिसाब देख लिया है। अच्छा है। लगता है, खुर्शेदबहन और बहनोंको बुलाना चाहती है। उसकी माँग समझ लो और यदि किसी बहनको भेजा जा सकता हो तो भेज देना। वहाँसे जा सकने योग्य कोई सयानी बहन बाकी ही नहीं है, मुझे ऐसा लगता है।

१. भाद्रके कृष्ण पक्षकी द्वादशी; विक्रम सम्वत्के अनुसार इस दिन गांधीजीका जन्म-दिन था।

२६ सितम्बर, १९३०

आज वजन लिया है। १०३ से थोड़ा ऊपर है। इसलिए सुधार माना जायेगा। काकासाहब का ११५ से थोड़ा कम है। इसलिए इस सप्ताह सुधार नहीं माना जायेगा। इस तरह सेर-आधा सेर कई बार कम हो भी जाता है।

बे० जी० की पत्रिका न भेजकर तुमने ठीक किया है। वह मुझे नहीं भेजी जा सकती।

२७ सितम्बर, १९३०

लीलावती फिर खुर्शेदबहनके पास जानेके लिए अधीर हो रही है। यदि खुर्शेद बहन उसकी स्थिति जानते हुए भी बुलाये तो जाने देनेमें ही भलाई होगी। आश्रममें रहकर व्याकुल रहे, उससे ज्यादा अच्छा है कि वहाँका अनुभव प्राप्त करके लौट आये। जैसा ठीक हो वैसा करना। पूनियाँ आदि तोलने लायक काँटा सतीशबाबूने तीन आनेमें बनाया था। वह या उसके जैसा दूसरा काँटा हो तो साथ भेज देना। मद्रासमें हिन्दी प्रचार करनेवाले अन्नाकी कोई खबर है क्या?

२८ सितम्बर, १९३०

काकासाहब ने बाल को गोसेवा-संघके लिए सूत दिया था। क्या वह मिला है? शंकरकी मारफत जो ८,५०० गज सूत भेजा था वह तुम्हें वहाँ मिलेगा या अहमदाबादमें? कुमारी अ० के बारेमें मीराबहनको मैंने लिखा है वह पढ़ लेना।

मंगल प्रभात, ३० सितम्बर, १९३०

जैसा मैंने पिछले सप्ताह लिखा था वैसे सर्वधर्म-समभाव सम्बन्धी लेखका अंग्रेजी अनुवाद कर डाला है। वह इसके साथ भेज रहा हूँ। यदि उसका अनुवाद वालजी भाईने किया हो और वह छप चुका हो तो साथका अनुवाद वे देख लें। जिसे पढ़ना हो वह पढ़कर अन्तमें मीराबहनको सौंप दे। यदि वालजीभाई का अनुवाद प्रकाशित न हुआ हो तो मेरे अनुवादको देख लें और बादमें जो पसन्द आये उसे प्रकाशित कर दें। तुम्हें सिर्फ गुजराती ही छापना है या अंग्रेजी अनुवाद भी?

यह विषय इतना महत्वपूर्ण है कि यहाँ इसपर थोड़ा और लिख रहा हूँ।

मंगल प्रभात, ३० सितम्बर, १९३०

यह विषय इतने महत्वका है कि इसे यहाँ और विस्तारसे लिखना चाहता हूँ। अपना कुछ अनुभव लिख दूँ तो शायद समभावका अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाये। यहाँकी तरह फीनिक्समें भी नित्य प्रार्थना होती थी। वहाँ हिन्दू, मुसलमान और ईसाई थे। स्व० सेठ रुस्तमजी या उनके लड़के प्रायः उपस्थित रहते ही थे। सेठ रुस्तमजीको 'मने वहालुं वहालुं दादा रामजीनुं नाम' (मुझे रामनाम प्रिय है) बहुत अच्छा लगता था। मुझे याद आ रहा है कि एक बार मगनलाल या काशी हम

सबको गवा रहे थे। रुस्तमजी सेठ उल्लासमें बोल उठे, "दादा रामजी" के बदले 'दादा होरमज्द' गाओ न।" गवाने और गानेवालोंने इस सूचना पर तुरन्त इस तरह अमल किया मानो वह बिलकुल स्वाभाविक हो। और इसके बादसे रुस्तमजी जब उपस्थित होते तब तो अवश्य ही, और वे न होते तब भी, कभी-कभी हम लोग वह भजन 'दादा होरमज्द' कहकर गाते। स्वर्गीय दाऊद सेठका पुत्र हुसैन तो आश्रममें कई बार रह जाता था। वह प्रार्थनामें उत्साहपूर्वक शामिल होता था। वह खुद बहुत मधुर सुरमें 'आर्गन' के साथ 'है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज' गाया करता। उसने वह भजन हम सबको सिखा दिया था। वह कई बार प्रार्थनामें गाया जाता था। हमारे यहांकी 'आश्रम भजनावलि' में उसे स्थान मिला है, वह सत्य-प्रिय हुसैनकी स्मृति है। उसकी अपेक्षा अधिक तत्परतासे सत्यका आचार करनेवाला नवयुवक मैंने नही देखा। जोसेफ रायप्पन आश्रममें अक्सर आते-जाते थे। वे ईसाई थे। उन्हें 'वैष्णव जन' वाला भजन बहुत अच्छा लगता था। सगीतका उन्हें अच्छा ज्ञान था। उन्होंने 'वैष्णव-जन' के स्थान पर 'क्रिश्चियन जन तो तेने कहिए' अलाप दिया। सबने तुरन्त उनका साथ दिया। मैंने देखा कि जोसेफके आनन्दका पारावार न रहा।

आत्म-सन्तोषके लिए जब मैं भिन्न-भिन्न धर्मपुस्तकें उलटता रहता था तब मैंने ईसाई, इस्लाम, जरथुश्त, यहूदी और हिन्दू, इतने धर्मोंकी पुस्तकोंका अपने सन्तोषभरके लिए परिचय कर लिया था। मैं कह सकता हूँ कि इस अध्ययनके समय सभी धर्मोंके प्रति मेरे मनमें समभाव था। मैं यह नही कहता कि उस समय मुझे इसकी प्रतीति थी। उस समय समभाव शब्दका भी पूरा परिचय न रहा होगा; परन्तु उस समय की अपनी स्मृतियाँ ताजी करता हूँ तो मुझे याद नही नही आता कि उन धर्मोंके सम्बन्धमें टीका-टिप्पणी करनेकी इच्छा तक हुई हो। वरन् उनके ग्रन्थोंको धर्मग्रन्थ मानकर आदरपूर्वक पढता और सबमें मूल नैतिक सिद्धान्त एक-जैसे ही पाता था। कितनी ही बातें मैं नही समझ पाता था। यही बात हिन्दू-धर्मग्रन्थोंके सम्बन्धमें भी थी। आज भी कितनी ही बातें नही समझ पाता; पर अनुभवसे देखता हूँ कि जो बातें हमारी समझमें नही आती, वे गलत ही है, यह माननेकी जल्दबाजी करना भूल है। कितनी ही बातें पहले समझमें नही आती थी, वे आज दीपककी तरह दिखाई देती है। समभावका अभ्यास करनेसे अनेक गुत्थियाँ अपने-आप सुलझ जाती है और जहाँ दोष दिखाई ही दें, वहाँ उन्हे दरसानेमें भी नम्रता और विवेक होनेके कारण किसीको दु.ख नही होता।

एक कठिनाई शायद रह जाती है। पिछले लेखमें मैंने कहा है कि धर्म-धर्मका भेद रहता है और धर्मके प्रति समभाव रखनेका अभ्यास करना यहाँ उद्देश्य नहीं है। यदि ऐसा हो तो धर्माधर्मका निर्णय करनेमें ही क्या समभावकी श्रृंखला नही टूट जाती? यह प्रश्न उठ सकता है और यह भी सम्भव है कि ऐसा निर्णय करनेवाला भूल कर बैठे। परन्तु हममें यदि वास्तविक अहिंसा मौजूद रहे तो हम वैरभावसे बच जाते है; क्योंकि अधर्म देखते हुए भी उस अधर्मका आचरण करनेवालेके प्रति तो प्रेमभाव ही होगा। इससे या तो वह हमारी दृष्टि स्वीकार कर लेगा अथवा

हमारी भूल हमें दिखायेगा या दोनों एक-दूसरेके मतभेदको सहन करेंगे। अन्तमें विपक्षी अहिंसक न हुआ तो वह कठोरतासे काम लेगा। और फिर भी हम अहिंसाके सच्चे पुजारी होंगे तो इसमें सन्देह नहीं कि हमारी मृदुता उसकी कठोरताको अवश्य दूर कर देगी। दूसरेको, उसकी भूलके लिए भी, हमें पीड़ा नहीं पहुँचानी है। हमें खुद ही कष्ट सहना है। इस स्वर्ण नियमका पालन करनेवाला सभी संकटोंसे बच जाता है।

जैसा मैंने इस पत्रके आरम्भमें लिखा है, स्वदेशी पर लिखनेका विचार तो छोड़ दिया है। अब फिर किस विषय पर लिखूँ इसका विचार करना है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

आज ७० पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१)की माइक्रोफिल्मसे।

२७१. पत्र : आर० बी० मार्टिनको

२ अक्टूबर, १९३०

प्रिय मेजर मार्टिन,

श्री क्विन मेरे पिछले ३० तारीखके पत्रके बारेमें मुझसे बात करते रहे हैं। अगर आपको यह अधिकार दे दिया जाये कि मैं अपने जिन मित्रोंसे सेवाके उद्देश्यसे मिलना जरूरी समझूँ उनसे समय-समय पर उस अहातेमें, जहाँ मुझे रखा गया है, मिलनेकी आप मुझे अनुमति दे सकें, तो मैं बिल्कुल सन्तुष्ट हो जाऊँगा। अवश्य ही मैं उनके साथ राजनीतिक चर्चा नहीं करूँगा, न कोई राजनीतिक सन्देश भेजूँगा, न ऐसी कोई बात कहूँगा जिसका उद्देश्य जेलके अनुशासनका भंग करना हो। जैसा कि मैंने आपको आज सुबह बताया, इन मित्रोंसे मिलनेकी इच्छाके पीछे मेरा उद्देश्य उनकी सेवा करना है और, अगर आप विश्वास कर सकें, तो जैसाकि मैंने १९२३ में किया था, जहाँ भी सम्भव हो, जेल अधिकारियोंकी सहायता करना है।

अंग्रेजी (एस० एन० १९९८२)की फोटो-नकलसे।

२७२. पत्र : शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
२ अक्टूबर, १९३०

चि० शारदा (बबु),

तेरा पत्र मिला। जैसे मिट्टीके टमाटरसे वास्तविक टमाटर अधिक सुन्दर होते है, उसी तरह बिजलीके खम्भोसे पेड-पौधोकी सुन्दरता अधिक होती है। कभी मिट्टीके टमाटरोसे किसीकी भूख मिटती सुनी है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८९१) से। सौजन्य : शारदा जी० चोखावाला

२७३. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
२ अक्टूबर, १९३०

चि० प्रेमा,

तू खडाऊँ रखना चाहे तो जरूर रख ले। लेकिन इन लकड़ीके टुकड़ोका तू क्या करेगी? उनसे तेरा कद दो इच बढे तो भले ही उनका सग्रह कर। मै तो इसे मूर्तिपूजा कहकर इसकी भर्त्सना करता हूँ। अपने पिताजीका चित्र मै रखता था। दक्षिण आफ्रिकामे अपने दफ्तरमें, बैठकमें और सोनेके कमरेमें मैंने उनके चित्र टाँग रखे थे। मै सोनेकी जजीर पहना करता था और उसमें लॉकेट भी हुआ करता था। उसमें पिताजी और बडे भाईका चित्र रहता था। आज मैंने इस सबको छोड दिया है। इसका यह अर्थ नही है कि अब मै उनकी कम पूजा करता हूँ। आज वे मेरे हृदयमें पहलेसे भी ज्यादा अच्छी तरह प्रतिष्ठित है। उनके गुणोका स्मरण करके मैं निरन्तर उनका अनुकरण करनेका प्रयत्न करता हूँ; और ऐसी भक्ति मै असंख्य देवताओकी कर सकता हूँ। लेकिन यदि मै उनके चित्रोका सग्रह करने लगूँ तो मेरे पास जगह भी न रहे। और लोगोकी खड़ाऊँ आदि रखने लगूँ तो मुझे उसके लिए जमीन लेनी पड़े। इसलिए एक अनुभवी व्यक्तिके रूपमें मै तुझसे कहता हूँ कि यदि मैं सच्चे मार्ग पर चलूँ तो तू मेरा अनुकरण कर। ऐसा करना खडाऊँ रखनेकी अपेक्षा हजार गुना अधिक श्रेष्ठ है, और यदि कोई उसे देखकर तेरा अनुसरण करे तो वह और भी अच्छी बात है। लेकिन तेरे पास खडाऊँ देखकर उसका कोई

अन्धानुकरण करने लगे, तो वह खड्डेमें ही गिरेगा न? इतना समझ ले और फिर 'यथेच्छसि तथा कुरु'।

जो व्यक्ति कर्त्तव्य-कर्मको समझता है और उसपर आचरण करता है, उसकी तृष्णा नष्ट हो जाती है। जिसकी तृष्णा नही मिटी, उसे कर्त्तव्य-कर्मका भान ही नही हुआ है। तृष्णाका पर्वत तो इतना ऊँचा है कि उसे कोई लाँघ ही नही सकता। उसे धराशायी करनेके सिवा अन्य कोई चारा नही है। तृष्णाका त्याग करना अर्थात् कर्तव्यका भान होना। मुझे मालूम हो कि मुझे काशी जाना है, वहाँ जानेके मार्गकी भी मुझे जानकारी हो, तो फिर मुझे कौन-सी तृष्णा उस मार्गसे — कर्त्तव्यसे — हटा सकती है? मेरी तृष्णा ही काशीके मार्ग पर जानेकी हो और वह पूरी हो जाये, तो फिर बाकी क्या रह जाता है? सहजप्राप्त सेवा तेरे पास है। उसे एकनिष्ठासे तू करती रहे, तो उसमें तुझे पूर्ण सन्तोपकी अनुभूति होगी। सेवा करते हुए तुझे जो संग मिले, जो पढ़नेको मिले, वह ग्राह्य है; उसके अलावा किसी अन्य वस्तुका विचार तक भी नही करना चाहिए। मेरे विचारसे यह 'योगः कर्मसु कौशलम्' है। यही समत्व और समाधि है।

लेकिन यह सब तुझे व्यर्थ लगे और तेरी इच्छा पठन-पाठनकी हो तो उसे खुशीसे तृप्त करना। कामका बोझ हलका करना और आराम करना। यह कैसे हो, तो नारणदाससे मिलकर ही तू इसपर विचार कर सकती है। नारणदास दूरदर्शी है, धैर्यवान है और साधु-चरित है। वह तेरी जरूर मदद करेगा। तुझे और क्या सान्त्वना दूं? मेरे जैसे लोग तो केवल दिशा-निर्देश ही कर सकते है। वैसे तेरी और हम सबकी शान्तिका सच्चा आधार तो अपने ऊपर ही निर्भर करता है।

सुशीलाके बारेमें तूने जो कहा है वह मै समझ गया हूँ। अब तो वह मराठीमें सन्देश भेजे। उसे मेरा आशीर्वाद।

पण्डितजीका संगीत सुननेके बाद तेरे-जैसी लड़कीको किसी अन्य व्यक्तिका संगीत अच्छा नहीं लगता, यह मैं समझ सकता हूँ। लेकिन तू स्वयं ही भजन-गायन में सबसे आगे क्यों नही रहती? यदि ऐसा करनेकी हिम्मत तुझमें हो तो उसके लिए कहना। तू कहे तो मैं लिखूं। तुझे गाना आता तो है। लगभग रोज रातको तू गाया करती थी, यह मै भूला नही हूँ। तेरे गलेकी गिल्टियाँ कैसी है? डा० हरिभाईको दिखाई थी न?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८५) से। सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२३७ की फोटो-नकलसे भी।

२७४. पत्र : रावजीभाई ना० पटेलको

यरवडा मन्दिर
२ अक्टूबर, १९३०

चि० रावजीभाई,

जैसा कि डाक्टरने कहा है, तुम्हे पूरे एक महीने आराम कर ही लेना चाहिए। सेवा-कार्य तो हमारे सामने पड़ा ही हुआ है। तुम जितने मजबूत रहोगे उतनी अधिक सेवा कर पाओगे। और फिर हमारे कार्यक्रमके अनुसार हम जहाँ भी होंगे वहाँ कुछ-न-कुछ सेवा तो कर ही सकेंगे। मुझे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ८९८९) की फोटो-नकलसे।

२७५. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
२ अक्टूबर, १९३०

चि० गंगाबहन (बड़ी),

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम्हें बेटी बननेकी योग्यता प्राप्त करनी है तो मुझे माँ और बाप बननेके लिए कितनी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए? माँ और बाप होनेका दावा करनेवाला मैं यदि अपने प्रयत्नमें असावधान रहूँ तो तीनो लोकोमें मेरे लिए तो कोई जगह भी न रहे। इसलिए योग्य-अयोग्यके विवादमें क्यो पड़ें? बेटे-बेटी अयोग्य हो तो उसकी जिम्मेदारी माँ-बाप पर कम नही होती।

तुम्हारी उदासीका कारण तो समझमें आता है। एक, दो, तीन—ये सब काम मुझे करने है ऐसा कहने और सोचनेके बदले यह सोचो और कहो कि एक, दो, तीन—ये सब काम भगवान करता है और मैं उसका साधन हूँ। ऐसा समझने पर बोझ तो लगेगा ही नही। बोझ तो भगवान उठाता है और उसके कन्धे इतने विशाल है कि चाहे जितना बोझ लादें भगवानको उसका भार उतना भी नही लगता जितना हमें रजकणका लगता है। इसलिए हम 'मैं' और 'मेरा' भूल जायें। "मै करता हूँ, मैं करता हूँ, यह हमारी अज्ञानता होगी। गाड़ीका भार जैसे कुत्ता ढोता है।"[1] नरसिंह मेहताने इस पदमें अपना अनुभव बताया है। शकट अर्थात्

१. हुं करुं, हुं करुं ए ज अज्ञानता, शकटनो भार ज्यम श्वान ताणे।

गाड़ी। गाड़ीके नीचे चलनेवाले कुत्तेके ऊपर यदि गाड़ीका भार होता है तो हम भी अपने ऊपर रहनेवाले कामका भार मानें। किन्तु जो ईश्वरके निमित्त ही सेवा करता है, वह ज्यादा बोझ तो कदापि नही उठाता। उसे उठानेकी जरूरत ही नही। उसपर भार आ पड़ता है और वह भगवानका स्मरण करता हुआ आनन्दपूर्वक चलता जाता है। 'मने चाकर राखोजी' तुम बहुत भावनासे गाती हो। इस भजनके अर्थका विचार करना और हमने स्त्रियोंकी प्रार्थनामें जो दो श्लोक लिये है उनका विचार करना। जो भगवानके हो गये हैं उनके योगक्षेमका बोझ भगवान पर है। ऐसी भगवानकी प्रतिज्ञा है। फिर हमें क्या परेशानी है। यह तो हुई ज्ञान-वार्त्ता।

दुःखी होकर भी तुम्हें और हमें कहाँ जाना है? आश्रम-सम्बन्ध हिन्दू-विवाह जैसा है; पल्ला बाँधा है तो छोड़े नही छूटेगा? दूसरे ढीले है या दृढ़, उसका खयाल हम न करके यही विचार करें कि "मै ढीला हूँ या दृढ़" तो भी काफी है। नाथसे जितना सहारा मिल सके, उतना तो लेना ही। नारणदासके साथ बात करना और हर सप्ताह मुझे तो मनकी बात लिखती ही रहना। थोड़े दिनकी छुट्टी लेकर काकासाहब से मिलने आ जाओ, तो भी थोड़ा आश्वासन मिलेगा।

इतना परिश्रम न करना कि थकान हो। सेवाभावसे किये जानेवाले काममें प्रमाणका ध्यान रखना चाहिए। ध्यान तभी रख सकते है, जब हममें अनासक्तिकी भावना आ गई हो। अनासक्तिका पर्याय ममत्वहीनता कहा जा सकता है। 'चादरके अनुसार पैर फैलायें' वाली कहावतमें बहुत ज्ञान निहित है।

समय-समय पर इस पत्रको पढ़ती रहना, इसपर विचार करना और उदासी छोड़ देना और हृदयमें 'चाकर राखो' की धुन दोहराती रहना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - ६: गं० स्व० गंगाबहेनने सी० डब्ल्यू० ८७६० से भी। सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

२७६. पत्र : बलवीर सिंहको

यरवडा मन्दिर
२/३[1] अक्टूबर, १९३०

भाई बलवीर सिंह,

तुमारा खत मिला। खादी भंडार काम काम हि है बहोत अच्छा है। कममें कम आध घंटा कातना यज्ञ है। दोनोके बीच मुकाबला नहिं हो सकता दोनो कर्त्तव्य है। इसलिये जिस तरह खानेका समय निकालना हि पडता है ठीक उसी तरह यज्ञका समय नीकालना। पुणीया तो एक मासके लिये एक दिनमें बन सकती है। १० के बदले २० या ३० का कातनेसे कम पुणीया चाहीयेगी। इस बारेमें महावीर प्रसादजीसे चर्चा करना। का० सा० आशीर्वाद भेजते हैं।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १०५३८ की फोटो-नकलसे।

२७७. पत्र : आर० बी० मार्टिनको

यरवडा सेंट्रल जेल
३ अक्टूबर, १९३०

प्रिय मेजर मार्टिन,

हमारी बातचीतके सन्दर्भमें मुझे आपको यह बताना है कि 'मित्रों' से मेरा अभिप्राय उन सविनय अवज्ञावाले कैदियोंसे है जिन्हें मैं जानता हूँ। मैं केवल उन्हींसे मिलना चाहूँगा जिनके बीमार होनेकी सूचना हो या जिनके साथ दुर्व्यवहार किये जानेकी शिकायत हो अथवा जिनके बारेमें दुर्व्यवहार किये जानेकी खबर हो। इस अधिकारका भी मैं यथासम्भव अधिकसे-अधिक सयमके साथ प्रयोग करूँगा। यदि मेरा अभिप्राय और अधिक स्पष्ट करनेकी आवश्यकता हो तो कृपया मुझे सूचित करें। मैं कोई बात मनमें छिपा कर रखना नही चाहता।

जहांतक अपने निश्चयके कार्यान्वयनको स्थगित रखनेका प्रश्न है, यदि मेरी मांग समय रहते स्वीकार नही की जा सकती तो मुझे दु:ख है कि मैं उसे मुल्तवी नही कर सकता। लेकिन इसमें कोई तात्कालिक चिन्ता करनेकी जरूरत नही है

१. लिखावट अस्पष्ट है।

क्योंकि आरम्भिक चरणोंमें मैं साधारण कैदियोंवाला वह भोजन तो खाता ही रहूँगा जिसे मैं धर्मतः ले सकता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (जी० एन० ३८५४) की फोटो-नकलसे तथा एस० एन० १९९८३ से भी।

२७८. पत्र : परशुराम मेहरोत्राको

यरवडा मन्दिर
३ अक्टूबर, १९३०

चि० परसराम,

तुमारा खत मिला। जैसे शंकरलालजी कहें ऐसा करो। लोक भले उपहास करे, तुमारे तो वही काम करते रहना। मील पुनी वेचनेवालोंको प्रेमसे मनाओ घरणा मत दो। सत्य और अहिंसा हरगीज मत छोडो। ऐसा करनेसे वुद्धिवल अपने-आप आयेगा। मुझे लिखते रहो।

बापुके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ४९६५ से। सौजन्य : परशुराम मेहरोत्रा

२७९. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

४ अक्टूबर, १९३०

चि० मथुरादास,

तुम्हारा पत्र मिला। बुनकरोंके बारेमें तुमने जो लिखा है वह सही है। सूतमें माँड़ लगानेवाले अहमदाबादमें विशेष कारीगर होते हैं। अन्य स्थानोंमें भी ऐसे कारीगर देखनेमें आते हैं। क्या हम बुनकरोंकी माँड़वाले तानेके सूतकी माँगको पूरा नहीं कर सकेंगे? रामजीभाई आदिसे यदि तुम आनेको कहोगे तो वे तुम्हारी सहायताके लिए आ जायेंगे। छगनभाई या सुरेन्द्र द्वारा सौंपा हुआ काम उन्हें करना है। फिर भी यदि तुम्हें ऐसा लगता हो कि मैं उन्हें लिखूँ तो मुझे पुनः सूचित करना। आखिर मुझे मोतीबहनका पत्र नहीं ही मिला।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७४५) की फोटो-नकलसे।

२८०. पत्र : रामेश्वरदास पोद्दारको

४ अक्टूबर, १९३०

भाई रामेश्वरदास (धुलीया),

पत्र मिला। इतना शोक मत करो। राम नाम लेकर प्रसन्न चित्त रहना। दर्दका आवश्यक इलाज करनेके बाद सहना और जो कुछ सेवा कार्य हो सके करना। प्रात.कालमें न उठा जाय तो कोई चिंताका कारण नहि है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १७७ की फोटो-नकलसे।

२८१. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
५ अक्टूबर, १९३०

चि० मीरा,

मै मौन ग्रहण करनेके बाद यह पत्र लिख रहा हूँ। मैंने 'टाइम्स इलस्ट्रेटेड वीकली' में प्रकाशित एक ग्रुप-फोटोमें तुम्हारा चित्र देखा है। तुम चरखा चला रही हो और स्वस्थ दिखाई पड रही हो। मैंने 'बॉम्बे क्रॉनिकल' में पढा था कि तुम महिलाओके जुलूसमें थी और उनकी सभामें बोली थी। तो अब तुम फिर मेरे आवासके निकट हो और शायद यह पत्र तुम्हें आश्रममें मिलेगा।

हाँ, एस० अय्यगारकी बेटी बडी भली है लेकिन जब हम मैसूरसे चले थे तब भी उसका व्यवहार कुछ वैसा ही था जैसा भावावेगोमें बहनेवाले असयत-चित्त व्यक्तियोका होता है। जब उसे चिट्ठी लिखना तो कृपया उसे मेरा प्यार कहना और कहना कि मै अक्सर उसकी याद करता हूँ। उसके पिताका मामला बहुत ही दुखद है। उनके साथ भी वही बात है जो उनकी बेटीके साथ है। अपनी बहुतसी अजीब हरकतोंके लिए उन्हे दोषी नही ठहराया जा सकता। उनसे तुम मिली थी? मद्रासमें तुम कहाँ ठहरी थी?

काकाको मेरा चरखा दे दिया गया है इसलिए पिछले हफ्ते मैंने सोचा था कि मै तुम्हारे वाले पर अपना कोटा पूरा कर लूंगा। मैंने बहुत कोशिश की, लेकिन उसे चला नही पाया। तकुआ घूमता ही नही था। राल बेकार थी या क्या बात थी, मै कुछ समझ नही पाया। जो हो, वह चल नही रहा था। तब मुझे सूरतवाले गाण्डीवका खयाल आया। मैंने उसे असाधारण रूपसे बढिया चीज पाया। पिछले दो दिनोमे मै अपना सारा कोटा उसी पर पूरा करता रहा हूँ और सो भी काफी कम समयमें

और तनिक भी थकान महसूस किये बिना। इसने मुझे मोहित कर लिया है और मैं चाहता हूँ कि तुम भी इसे आजमाओ। यह बुनियादी तौर पर गरीबोंका चरखा है। इसका बनानेवाला कोई कुशल कारीगर नहीं है। लेकिन चरखेका प्रत्येक भाग मुझे लगता है कि क्षुधा-पीड़ितोंको ध्यानमें रख कर बनाया गया है। इसकी कीमत १ई रुपये है लेकिन मुझे विश्वास है कि इसे सिर्फ ८ आनेमें बनाया जा सकता है। भारतमें जितने भी चरखे है, यह उन सबसे ज्यादा हलका है। इसकी ओर कमसे-कम ध्यान देनेकी जरूरत है। जितने भी चरखे मैं जानता हूँ उनमें यह सबसे कम स्थान घेरता है। एक छोटा बच्चा भी इसे चला सकता है। अगर चकरियाँ और तकुए भंडारमें हों तो एक दिनमें हजारों ऐसे चरखे बनाये जा सकते है। इसकी बनावट बहुत ही सादी है। इस पर बारीक सूत तो सहज ही निकलता है। पहली बार मैंने जो सूत काता वह ३० नम्बरका था। और मेरा खयाल है कि रफ्तारके मामलेमें यह चरखा किसी भी चरखेसे टक्कर ले सकता है। इसमें कुछ सुधारोंकी गुंजाइश है जो इसकी लागतमें एक पाईका इजाफा हुए वगैर किये जा सकते है। मैंने दो बनाये हैं और इससे लागत कम हुई है। मूल चरखेमें लकड़ीके चमरख है जिनसे बड़ी आवाज होती है। मैंने उन्हें निकाल कर नारियलकी रस्सी लगा दी है जो मैंने कूड़ेमें से निकाली है। मैंने तकुए पर लगे खनखनानेवाले शीशेके छड़को तोड़ कर उसकी जगह कुछ धागा लपेट दिया है ताकि तकुआ अपनी जगहसे न हिले। ऐसा करनेसे अब चरखेमें कोई आवाज नहीं होती। यह राय इस चरखेके एक नये भक्तकी है जिसने उसे पिछले चार दिन ही आजमाया है। इसलिए इस रायमें सुधारकी आवश्यकता हो सकती है। लेकिन निस्सन्देह आस्थावान लोगोंको इस चरखेकी आजमाइशका पूरा मौका देना चाहिए। मैं इस चरखेके आविष्कारकको पत्र लिख कर इसमें कुछ सुधारोंका सुझाव दे रहा हूँ और केगुको भी लिख रहा हूँ कि वह इस चरखेको जाँचे, आजमाये और यदि मेरा आरम्भिक प्रेक्षण तनिक भी ठीक हो, तो वह चरखेमें सुधार करे। इस चरखेके कुछ और भी गुण हैं जिनका वर्णन मैं नहीं करूँगा क्योंकि अभी मुझे कई और पत्र लिखने है। तुम्हारे चरखेका तकुआ किस कारण नहीं चल रहा है, यह अगर सोचनेसे समझमें आये तो कृपया मुझे बताना।

व्रजकिशोर बाबू तुम्हें कैसे मिले? क्या अब वह बेहतर है? क्या तुम प्रभावती से मिली? वह काफी दुबली हो गई है और उसके अन्तिम पत्रमें लिखा है कि उसे तेज बुखार था।

और तुम्हारा स्वास्थ्य? तुम आश्रममें अपनेको थका कर चूर मत कर देना। तुम कमलाबहन लुंडीसे मिली होगी। यह कहनेकी जरूरत नहीं कि तुम उसे मित्र बना लोगी। वह बहुत भली स्त्री मालूम पड़ती है।

हम दोनोंका स्वास्थ्य बहुत बढ़िया है। मेरे वजनमें कुछ बढ़ोतरी ही हुई है। सब्जियोंवाला प्रयोग सफल सिद्ध हुआ दिखता है और मुझे यह जानकर बहुत ही खुशी है कि सूखे मेवे छोड़नेसे भी खर्चमें काफी कमी होती है। सब्जियोंमें मैं पिछले दो दिनोंसे पालक ले रहा हूँ जिससे पेट अपने-आप साफ हुआ है। मैं कभी-कभी

शकरकन्द खाता हूँ। मुझे आशा है कि अब तक तुम्हें मेरे सभी पत्र मिल गये होंगे? मैंने किसी सप्ताह नागा नहीं किया है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४१४) से; सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६४८ मे भी।

२८२. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

५ अक्टूबर, १९३०

चि० मनु,

तुझे बुखार कैसे आ गया? अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखनेके कारण तू तो इनाम पाने योग्य है। अपने उद्योगसे ही तू अपना शरीर बना सका है। और उसे बनाये रखना भी तेरा ही काम है। जब काकासाहब छूटें तब तक तू एक प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताके रूपमें तैयार हो जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७६५) की फोटो-नकलसे।

२८३. पत्र : दूधीबहन देसाईको

यरवडा मन्दिर
५ अक्टूबर, १९३०

चि० दूधीबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम कक्षाओंको पढाती हो, यह बात मुझे बहुत अच्छी लगती है। अपनेको भूलकर उक्त कार्यमें खूब रस उत्पन्न करना। सभी बालकोंको मनु समझकर अपना लेना। तुम्हारे पत्र लिखनेसे मेरा कार्य तनिक भी नहीं बढता। मुझे समय-समय पर लिखती रहना और यदि मुझसे कुछ पूछना चाहो, पूछना। अब तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? कुल मिलाकर तुमपर उपवासका कैसा प्रभाव पड़ा जान पड़ता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७४५४) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : वा० गो० देसाई

२८४. पत्र : गोविन्द पटेलको

यरवडा मन्दिर
६ अक्टूबर, १९३०

चि० गोविन्द,

तेरा सुन्दर अक्षरोंमें लिखा हुआ पत्र मिला। समय-समय पर अपनी गतिविधिके बारेमें लिखते रहना। क्या तू कुछ पढ़ रहा है? अब तेरा वजन कितना है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३९४५) की फोटो-नकलसे।

२८५. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
६ अक्टूबर, १९३०

चि० प्रभावती,

तुझे मैंने सीधे ही एक पत्र भेजा है; उम्मीद है वह मिल गया होगा। तेरे तारकी बाट जोह रहा हूँ। तू बीमार क्यों पड़ जाती है? देखना, अपना स्वास्थ्य खराब न करना। यदि वहाँ स्वास्थ्य नही सुधरता तो आश्रम चली जाना। तबीयत की खातिर आश्रम जानेसे कोई इनकार नही करेगा। चूँकि तू पटनामें है, इसलिए मुझे सबके समाचार दे सकती है। मैं आनन्दसे हूँ। काकासाहब का स्वास्थ्य अच्छा होता जा रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३७५) की फोटो-नकलसे।

२८६. पत्र : शान्ता शंकरभाई पटेलको

यरवडा मन्दिर
६ अक्टूबर, १९३०

चि० शान्ता (पटेल),

तेरा पत्र मिला। तूने ठीक विवरण दिया है किन्तु अबतक अपनी लिखावट नही सुधारी है। यदि तू सुधारनेकी कोशिश करेगी तो लिखावट अवश्य सुधर जायेगी। यदि तू अपनी लिखावट अभी नही सुधारेगी तो वह मेरी जैसी खराब रह जायेगी। तू यह समझती है न कि किसीको बुरी लिखावटमें पत्र लिखनेमें भी हिंसा-दोष ही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४०५४) की फोटो-नकलसे।

२८७. पत्र : बलभद्रको

यरवडा मन्दिर
६ अक्टूबर, १९३०

चि० बलभद्र,

तेरा पत्र मिला। यदि सचमुच ही मथुरादास भाई तुझे ले जानेको तैयार हो और नारणदास भाई तुझे जानेकी अनुमति दे दें तो इसमें मुझे कोई बुराई नजर नही आती। तू अपनी लिखावट सुधारना और अपना वजन बढाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९२१२) की फोटो-नकलसे।

२८८. पत्र : भगवानजी पण्ड्याको

६ अक्टूबर, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारे पत्र पढ़ गया। तुम्हारे स्वभावमें वहमकी मात्रा अधिक है इसलिए तुम्हारी राय सदोष हो सकती है। फिर भी तुम्हारा धर्म अपने ऊपर पूरी चौकसी रखना है। तुम्हारा धर्म यह है कि तुम्हें जो बुराई दीख पड़े उसके बारेमें नारणदास को बता दो और फिर चुप रहो। तभी तुम आगे बढ़ सकोगे। जबतक आश्रममें एक भी ऐसा व्यक्ति है जो सत्यादि व्रतोंका पुजारी है तबतक आश्रमको कदापि स्वामीहीन न समझना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२५) से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या

२८९. पत्र : नारणदास गांधीको

२/७ अक्टूबर, १९३०

चि० नारणदास,

आश्रमका पुलिंदा कल मिला। अधिकतर तो जिस दिन पहुँचता है उसी दिन मुझे दे दिया जाता है।

हरिलाल देसाईको पत्र लिख रहा हूँ। उसे पढ़ लेना। आज गिरिराजके बारेमें कुछ लिखनेकी जरूरत नहीं। तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करना। जैनूके बारेमें पढ़कर खुशी हुई। भगवानजीको लिख रहा हूँ। उसके पत्रका मुझपर असर नहीं पड़ेगा। उसका स्वभाव मैं जानता हूँ। मबुके पत्रसे मुझे वह बहुत निर्दोष बालिका लगी है, नवीन आदि धीरे-धीरे सादगी सीख लेंगे, ऐसा मानता हूँ। तुम्हारा विश्वास मुझे अच्छा लगता है। विश्वास करनेवालेने इस संसारमें कभी कुछ खोया नहीं। अविश्वासी कभी कुछ पाता नहीं और कई बार तो खो ही बैठता है, और शान्ति खोकर अशान्ति मोल लेता है। मलेरियावालों से तीन बातोंका ध्यान रखनेको कहना। टट्टी साफ हो, अपने-आप न आये, तो जुलाब लें या एनीमाका इस्तेमाल करें। बुखार उतर जाने पर भी एक सप्ताह तक पाँच ग्रेन कुनैन नीबूके रसमें घोल कर उसमें १० या १५ ग्रेन सोडा डालनेके बाद सोडावाटरकी तरह पी जायें। उसमें उफान आता है, और आना भी चाहिए। और बुखार उतरनेके बाद कमसे-कम एक सप्ताह दूध तथा मुनक्का या उबली हुई सब्जी पर रहें। जिन्हें बुखार नहीं है, पर मच्छर परे-

शान करते हो, वे शरीरके खुले भाग पर मिट्टीका तेल मलकर सोयें। सबको अपना पेट तो साफ रखना ही चाहिए। अमीदासके बारेमें चिन्ता तो जरूर होती है। मेरे पत्रका कुछ असर हुआ हो और वह दूध लेने लगा हो तो अच्छा है।

पूंजाभाईको जैसा ठीक लगे वैसा करे और रहे। चन्द्रशंकर जिस उदासी वैद्यसे उपचार करवाता है वह शायद जमनाके लिए भी ठीक रहेगा। चन्द्रशंकर उसकी बहुत तारीफ करता है। पता लगाना। गंगाबहनको लिखा पत्र पढ लेना। उसे समय और धीरज देना। वह काकासाहब को देखनेके बहाने भी पूना आ जाये तो तीन दिनके लिए वायु-परिवर्तन हो जायेगा। नाथजीसे आग्रह करते ही रहना। उनकी उपस्थिति भी गंगाबहनके लिए शान्तिप्रद हो सकती है। महादेवकी माताजीसे कहना कि उन्होंने आकर अच्छा किया है। अब जल्दी दिहेण वापस जानेका विचार न करें। हो सके तो आश्रममें ही रहने लगें। छगनलालको लिखा पत्र पढ़ना। मुझे पत्र लिखनेमें कैसी मर्यादाका पालन करना चाहिए, उससे यह मालूम होगा। जिसने उसका पालन न किया हो उसका पत्र वही रोक लेना। खड़ग बहादुरके पत्रमें उसका उल्लघन हुआ मानता हूँ। प्रेमाबहन भी चिन्तित हो गई है। उसको लिखा पत्र पढ लेना। उसे सान्त्वना देना। कमलाबहन लुडीका पत्र पढना। उसके कई सुझाव अपनाये जानेके योग्य है।

४ अक्टूबर, १९३०

छगनलाल जोशीको लिखा पत्र पढना। उसमें जिन मर्यादाओको सूचित किया है सभी उनका पालन करे। उनका उल्लघन करनेवालोके पत्र वही रोक लेना। खडग बहादुरका पत्र ऐसा ही माना जायेगा।[1] सभी पत्र तुम पढो ऐसा बोझ मैं तुमपर डालना नही चाहता। किन्तु नया व्यक्ति हो तो उसके पत्र एक नजर देख जाओ। बहनोके पत्रमें तो आपत्तिके योग्य कुछ नही होता। इसलिए थोड़े ही देखने लायक होगे। मुझे कई बार यह विचार तो आता ही है कि वहाँ जो पत्र मैं भेजता हूँ उन्हे छाँटने और सब लोगो तक भेजनेका काफी बोझ पड जाता होगा। उसे कैसे कम किया जाये, यह समझ नही आता। न लिखना भी योग्य नही है; इसलिए अनिवार्य समझकर यह बोझ लादता जाता हूँ।

हरिलाल देसाईका पत्र पढना ताकि उसमें लिखे सुझावोका तुम्हे ध्यान रहे। गाण्डीव चरखा अभी चलाना शुरू किया है। मुझे वह अच्छा लगा है। उसपर उसी गतिसे कात सका हूँ जितनी दूसरे पेटी चरखे पर है। गति और बढानेकी आशा करता हूँ। इसमें कई और सुधार सम्भव है, तब शायद यह और भी सम्पूर्ण बन सके। उसके बारेमें ईश्वरलाल बीमावालाको जो लिखा है वह पढना। मीराबहनके पत्रमें भी लिखना है उसे भी पढ लेना। मैं चाहता हूँ कि आश्रममें कोई उसे चलाकर देखे। तुम खुद भी देख लेना। मैं ईश्वरलालको दो-तीन और चरखे भेजनेको लिख रहा हूँ। मैंने बहुत-से चरखे देखे है किन्तु सबमें अभी तो यही अभ्यास करने लायक लगा है। और जैसे अनुभव होता जायेगा वैसे लिखूंगा।

१. पिछले चार वाक्योंमें पुनरुक्ति अनजानेमें हो गई लगती है।

मंगल प्रभात, ७ अक्टूबर, १९३०

रुई और सूतकी माला मिल गई है। रुईका आना तो खास तरहसे अच्छा लगा है क्योंकि वल्लभभाईके लिए पूनियाँ यहींसे जाती है। काँटेकी राह देख रहा हूँ किन्तु उसकी जल्दी नही।

नम्रता: इसे व्रतोंमें पृथक स्थान नही है और हो भी नहीं सकता। अहिंसाका यह एक अर्थ है, अथवा यों कहें कि यह उसके अन्तर्गत है; परन्तु नम्रता अभ्याससे प्राप्त नहीं होती, वह स्वभावमें ही आ जानी चाहिए। जब आश्रमकी नियमावली पहलेपहल बनी तब मित्रोंके पास उसका मसविदा भेजा गया था। सर गुरुदास बनर्जीने नम्रताको व्रतोंमें स्थान देनेका सुझाव दिया, तब भी उसे व्रतोमें स्थान न देनेका मैंने वही कारण बतलाया था जो यहाँ लिख रहा हूँ। यद्यपि व्रतोमें उसे स्थान नहीं है तथापि वह व्रतोंकी अपेक्षा शायद अधिक आवश्यक है; आवश्यक तो है ही। परन्तु नम्रता किसीको अभ्याससे प्राप्त होती नही देखी गई। सत्यका अभ्यास किया जा सकता है, दयाका अभ्यास किया जा सकता है, परन्तु नम्रताके सम्बन्धमें कहना चाहिए कि उसका अभ्यास करना दम्भका अभ्यास करना है। यहाँ नम्रतासे तात्पर्य उस वस्तुसे नहीं है जो बड़े आदमियोंमें एक दूसरेके सम्मानार्थं सिखाई-पढ़ाई जाती है। कोई बाहरसे दूसरेको साष्टांग नमस्कार करता हो, पर मनमें उसके सम्बन्धमें तिरस्कार भरा हुआ हो तो यह नम्रता नहीं है, पाखण्ड है। कोई रामनाम जपता रहे, माला फेरे, मुनि-सरीखा बनकर समाजमें बैठे, पर भीतर स्वार्थ भरा हो, तो वह नम्र नहीं है, पाखण्डी है। नम्र मनुष्य खुद नही जानता कि कब वह नम्र है। सत्यादिका माप हम रख सकते हैं, पर नम्रताका नही। स्वाभाविक नम्रता छिपी नहीं रहती, तथापि नम्र मनुष्य खुद उसे नही देख पाता। वशिष्ठ-विश्वामित्रका उदाहरण तो आश्रममें हम लोगोने अनेक बार सुना और समझा है। हमारी नम्रता शून्यता तक पहुँच जानी चाहिए। हम कुछ है, यह भूत मनमें घुसा कि नम्रता हवा हो गई और हमारे सभी व्रत मिट्टीमें मिल गये। व्रत-पालन करनेवाला यदि मनमें अपने व्रत-पालनका गर्व रखे तो व्रतोंका मूल्य खो देगा और समाजमें विषरूप हो जायेगा। उसके व्रतका मूल्य न समाज ही करेगा, न वह खुद ही उसका फल भोग सकेगा। नम्रताका अर्थ है अहंभावका आत्यन्तिक क्षय। विचार करनेपर मालूम हो सकता है कि इस संसारमें जीवमात्र एक रजकणकी अपेक्षा अधिक कुछ नही है। शरीरके रूपमें हम लोग क्षणजीवी हैं। कालके अनन्त चक्रमें सौ वर्ष क्या है; परन्तु यदि हम इस चक्करसे बाहर हो जायें, अर्थात् 'कुछ नही हो जायें,' तो हम सब-कुछ हो जायें। कुछ होनेका अर्थ है ईश्वरसे — परमात्मासे —, सत्यसे पृथक हो जाना। कुछका मिट जाना परमात्मामें मिल जाना है। समुद्रमें रहनेवाला बिन्दु समुद्रकी महत्ताका उपभोग करता है, परन्तु उसका उसे ज्ञान नही होता। समुद्रसे अलग होकर ज्यों ही अपनेपनका दावा करने चला कि वह उसी क्षण सूखा। इस जीवनको पानीके बुलबुलेकी उपमा दी गई है, इसमें मुझे जरा भी अतिशयोक्ति नही दिखाई देती। ऐसी नम्रता — शून्यता — अभ्याससे कैसे आ सकती है? पर व्रतोंको सही रीतिसे

समझ लेनेपर नम्रता अपने-आप आने लगती है। सत्यका पालन करनेकी इच्छा रखने-वाला अहंकारी कैसे हो सकता है? दूसरेके लिए प्राण न्यौछावर करनेवाला अपना स्थान कहाँ घेरने जायेगा? उसने तो जब प्राण न्यौछावर करनेका निश्चय किया, तभी अपनी देहको फेंक दिया। क्या ऐसी नम्रता पुरुषार्थरहितता न कहलायेगी? हिन्दू-धर्ममें ऐसा अर्थ अवश्य कर डाला गया है और इससे बहुत जगह आलस्यको, पाखण्ड को स्थान मिल गया है। वास्तवमें नम्रताका अर्थ तीव्रतम पुरुषार्थ है. परन्तु वह सब परमार्थके लिए होना चाहिए। ईश्वर स्वयं चौबीसों घंटे एकसा काम करता रहता है, अँगड़ाई लेने तकका अवकाश नहीं लेता, हम उसके हो जायें। उसमें मिल जायें तो हमारा उद्योग भी उसके समान ही अतन्द्रित हो गया — हो जाना चाहिए। समुद्रसे अलग हो जानेवाले बिन्दुके लिए हम आरामकी कल्पना कर सकते हैं; परन्तु समुद्रमें रहनेवाले बिन्दुके लिए आराम कहाँ? समुद्रको एक क्षणके लिए भी आराम कहाँ मिलता है? ठीक यही बात हमारे सम्बन्धमें है। ईश्वररूपी समुद्रमें हम मिले और हमारा आराम गया, आरामकी आवश्यकता भी जाती रही। यही सच्चा आराम है। यह महा अशान्तिमें शान्ति है। इसलिए सच्ची नम्रता हमसे जीवमूर्तिकी सेवाके लिए सर्वार्पणकी आशा रखती है। सबसे निवृत्त हो जानेपर हमारे पास न रविवार रह जाता है, न शुक्रवार, न सोमवार। इस अवस्थाका वर्णन करना कठिन है, परन्तु वह अनुभवगम्य है। जिसने सर्वार्पण किया है उसने इसका अनुभव किया है। हम सब अनुभव कर सकते हैं। यह अनुभव करनेके उद्देश्यसे ही हम लोग आश्रममें एकत्र हुए हैं। सब व्रत, सब प्रवृत्तियाँ यह अनुभव करनेके लिए ही हैं। जो सेवा प्राप्त हो जाये वही करते-करते किसी दिन यह हमारे हाथ लग जायेगा। केवल उसीको खोजने जानेसे यह अनुभव प्राप्त नहीं होता।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

आज ६१ पत्र हैं।

खुर्शेदबहनको आश्रमसे कोई लोग मिलने जायें। मणिबहनके बारेमें कुछ खबर हो तो लिखना।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

२९०. पत्र: कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
७ अक्टूबर, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

पिछले सप्ताह मैं प्यारेलालसे मिल सका। मिलनेके लिए थोड़ा ही समय दिया गया था। वह कमजोर तो जरूर हो गया है लेकिन अब ठीक है। उसे दूध आदि मिलता है। उसकी देख-भाल अच्छी होती है। अब मेरा खयाल है कि उससे फिर मिल सकूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८०६) की फोटो-नकलसे।

२९१. पत्र: शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
१० अक्टूबर, १९३०

चि० शारदा (बबु),

तेरा पत्र मिला। कातना अच्छा नहीं लगता, इसका एक कारण तो यह है कि तुझे अभी इस बातका पूरा भान नहीं हुआ कि उसके द्वारा करोड़ों लोगोंकी सेवा होती है, अथवा यह कारण होना चाहिए कि इस सेवामें तुझे रसका ही अनुभव नही होता। ऐसा हो तो अपने विचारका शोधन कर लेना। दूसरा कारण यह हो सकता है कि कातनेकी कला अभी तूने हस्तगत न की हो। सूत अच्छा निकले, तार टूटे नही, चरखा बिना किसी तरहकी कट्टु आवाज करते हुए चलता रहे तो इस क्रियामें रसका अनुभव हुए बिना नही रहता। किसी प्रदर्शनीमें किसी दिन तूने आन्ध्रकी बहनोंको कातते हुए देखा है? वे सचमुच कातती हैं। कातनेकी ऐसी क्रियामें किसे रस न आयेगा? 'गीता'की भी यही बात है। उसका मूल्य तू समझे तो ही वह तुझे भायेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००२३) से। सौजन्य: शारदाबहन जी० चोखावाला

२९२. पत्र : हरिइच्छा देसाईको

यरवडा मन्दिर
१० अक्टूबर, १९३०

चि० हरिइच्छा,

तेरा पत्र मिला। चन्दनको धन्यवाद। तुझे भी प्रतियोगितामे अपना नाम देना चाहिए। तुझे जो इनाम मिले, उसका उपयोग तू चाहे तो परोपकारके लिए करना। जिन लोगोको प्रतियोगिता आदिके द्वारा प्रोत्साहनकी आवश्यकता नही है वे लोग दूसरोंके लिए प्रतियोगितामें भाग ले। चन्दन, तारा और वसन्तको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७४६६) की फोटो-नकलसे।

२९३. पत्र : कपिलराय मेहताको

यरवडा मन्दिर
१० अक्टूबर, १९३०

चि० कपिल,

तेरा पत्र विले पार्लेमें मिल गया है। घर निकट होनेके बावजूद किसीको घरमें मिलनेवाली सुविधाओ या सगे-सम्बन्धियोके प्रेमकी खातिर वहाँ नही जाना चाहिए, किन्तु सगी-साथियोका बोझ हलका करनेके खयालसे और उनकी इच्छासे तीमारदारीके लिए घर जानेमें दोष नही हो सकता। यह व्यक्तिकी मानसिक स्थिति पर निर्भर है। तुझे अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना चाहिए और उसे सुधार लेना चाहिए। तेरा स्वास्थ्य इस जवानीमें नाजुक हो जाये, यह बात ठीक कैसे लग सकती है? सूर्य-स्नान, प्राणायाम, शवासन और अल्पाहार दमेमें बहुत सहायता पहुँचाते हैं।

काकासाहब आनन्दसे हैं।

उनके और बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३९७५) की फोटो-नकलसे।

२९४. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

११ अक्टूबर, १९३०

चि० पण्डितजी,

तुम्हारा पत्र मिला। आशा है अब बुखार बिल्कुल चला गया होगा। 'रामायण' प्रवचनके द्वारा ग्रामवासियोंके सम्पर्कमें आनेका तुम्हारा सुझाव मुझे पसन्द है। किन्तु सम्पर्कमें आनेको ही अपना उद्देश्य मत बना लेना। 'रामायण' तो इसी उद्देश्यसे बाँचनी है कि लोगोंको उपदेश मिले और ऐसा करते हुए यदि उनके सम्पर्कमें आनेका अवसर मिले तो ठीक है। अर्थात् यह निश्चय करके तुम्हें 'रामायण' बाँचना आरम्भ करना चाहिए कि तुम उसे बीचमें बन्द नहीं करोगे या फिर लोगोंके सम्पर्कमें आनेके लिए जैसे तुम अन्य बहुतसे काम करते हो वैसे ही बीच-बीचमें 'रामायण' बाँचोगे? इन दोनोंके भेदको समझ लेना। गोखलेके संस्मरण मैं शायद ही लिख पाऊँ। चरखेकी लगन मुझे और कुछ करने ही नहीं देती।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २४०) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : लक्ष्मीबाई खरे।

२९५. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
११ अक्टूबर, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। मैंने पटनाके पते पर जो पोस्टकार्ड भेजा था, लगता है वह तुझे नहीं मिला क्योंकि उसमें मैंने तुझे एक तार भेजनेको कहा था; तार नहीं मिला। अब तो पत्र परसे पता चलता है कि तेरी सासका देहान्त हो गया है और तू तथा जयप्रकाश बहुत घबरा गये हो। जो मृत्यु छोटे, बड़े, सबके साथ लगी है, उससे घबराना कैसा? और फिर सासजी बीमार थीं। वे तो दुःखसे मुक्ति पा गई। अतएव पीछे रहनेवाले लोगोंका सन्ताप तो स्वार्थपूर्ण है। कर्त्तव्य तो अब यह है कि तू जल्द ही स्वस्थ हो जा। अभी तो रोगसे मुक्त हो गई नहीं जान पड़ती। अब तू मुझे सीधे पत्र लिख सकती है। आश्रमकी मारफत तो भेजती ही रहना। तुम सबको भगवान धीरज दे। मेरी तबीयत अच्छी है। वजन १०४ है, यह अच्छा कहा जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३७२) की फोटो-नकलसे।

२९६. पत्र : मोतीबहन चोकसीको

यरवडा मन्दिर
११ अक्टूबर, १९३०

चि० मोतीबहन,

बहुत इन्तजार करवानेके बाद आखिरकार तुमने पत्र लिखा। जितने बच्चोंको तुम्हारी देखरेखमें रखा जाये उन सबको तुम अपना ही मानकर चलना। 'गीताजी' के कुछ अध्याय कण्ठस्थ कर लेनेसे तुम्हें अधिकाधिक शान्ति अनुभव होने लगेगी। एक-एक श्लोक करके भी कण्ठस्थ कर सकती हो। श्लोकका अर्थ भली-भाँति समझ लेने और उसका उच्चारण शुद्ध हो जानेके बाद उसे याद करना। विट्ठल, महावीर आदिको यह सब आता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७४६) की फोटो-नकलसे।

२९७. पत्र : महावीर गिरिको

यरवडा मन्दिर
११ अक्टूबर, १९३०

चि० महावीर,

तेरा पत्र मिला। सिद्धपुरमें तेरे साथ और कौन है? तू जहाँ भी रहे वहाँसे मुझे पत्र तो लिखते ही रहना और छोटी-मोटी सभी खबरें देते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६२१९)की फोटो-नकलसे।

२९८. पत्र : विट्ठलदास जेराजाणीको

यरवडा मन्दिर
११ अक्टूबर, १९३०

भाई विट्ठलदास,

तुम्हारे द्वारा भेजे गये आँकड़ोंके साथका पत्र भी मिला। मैं जानता हूँ कि फिर खादी इकट्ठी हो गई है। हताश मत होना। मेरे विचारसे अभी ज्वार पूरी तरह आया ही नही है। यदि हममें श्रद्धा होगी तो आयेगा अवश्य।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९७७४) की फोटो-नकलसे।

२९९. पत्र : रमाबहन जोशीको

यरवडा मन्दिर
१२ अक्टूबर, १९३०

चि० रमाबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। इस बार तो बहुत दिनो बाद तुमने पत्र लिखा है। लेकिन यह अपने-आपमें पूर्ण पत्र है। बहनोंमें जो बल है उसे मैं ईश्वर-प्रदत्त मानता हूँ। अतएव उन्हें अपने काममें अवश्य सफलता मिलती है। हमीदाबहन तुम्हारे साथ है, यह तो बहुत अच्छा हुआ। बालिका होने पर भी उसका मुझपर समझदार और साध्वी स्त्रीका-सा प्रभाव हुआ है। बा सचमुच बहुत दौड़-धूप कर रही है। मैं देख रहा हूँ कि अब सारी बहनों पर ज्यादा जिम्मेदारी आयेगी। लेकिन हमें चाहिए कि हम तो नौवें और दसवें अध्यायके[1] पहले तीन श्लोकोंका स्मरण करें और निश्चिन्त रहें।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५३२५) की फोटो-नकलसे।

१. भगवद्गीताके।

३००. पत्र : भगवानजी पण्ड्याको

यरवडा मन्दिर
१२ अक्टूबर, १९३०

चि० भगवानजी,

आश्रम सामान्य कोटिके मनुष्योंके लिए है। जैसा तुम समझते हो यदि गिरिराजजी उस स्थितिको प्राप्त हो गये हैं तो यह नही कहा जा सकता कि आश्रमने उनका त्याग किया, बल्कि यह कहा जायेगा कि गिरिराजजी की महान आत्मा आश्रममें समा नही सकती। नारणदासने जो निर्णय दिया है वह आध्यात्मिक है। आश्रममें हम अमुक उद्देश्योको लेकर चले हैं, उनको ध्यानमें रखते हुए व्यवहार करना आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। मैं स्वय मानता हूँ कि गिरिराज मोहमे पड गये हैं। हम जो कार्य कर रहे हैं उससे यदि हमें आत्मदर्शन न हो तो मैं स्वय कदापि वह कार्य न करूँ और न किसीसे करनेके लिए कहूँ। यह सम्भव है कि भगीके यहाँ ईश्वरका वास हो और वेदान्तीके यहाँ नही। हमारा कर्म उच्च भावनाके अनुरूप होना चाहिए। गिरिराज सज्जन है, विनम्र है, इसलिए भटककर वापस आ जायेंगे। यदि वे हमारे मार्गको झूठा सिद्ध करेंगे, उनसे हम कुछ सीखेंगे तो भी इसका यश आश्रमको ही जायेगा। तुम निश्चिन्त रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२६) से। सौजन्य: भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या

३०१. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
१२ अक्टूबर, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुम्हारा पत्र मिला। मित्रोके देहान्त पर व्यथित होनेका कोई कारण नही है। बिना मौत कोई नही मरता, अकाल मृत्यु मिथ्या भ्रम है। एक दिन जीवित रहकर मरनेवाले बालककी भी अकाल मृत्यु नही होती। उसकी मृत्युका अर्थ है कि उस देहके कर्म पूरे हो गये हैं। मृत्युके कारण हमें जो दुःख होता है वह केवल अज्ञान और स्वार्थवश होता है। आत्माके धर्मके प्रति अज्ञानके कारण, और चूँकि हम स्वय मरना नही चाहते, इस कारण मित्र आदिकी मृत्युमे हम विचलित हो उठते हैं। हाँ, विधवाओके प्रति हमारा कर्त्तव्य है। यदि वे आना चाहे और नियमोका पालन कर सकें

तो मेरे विचारमें उन्हें लेनेमे हमें कोई अड़चन नही होनी चाहिए। किन्तु इसका उत्तर-दायित्व नारणदास और गंगावहन पर है इसलिए उनसे विचार-विमर्श कर लेना। यह पत्र उन्हें पढ़वा देना।

हालाँकि कलावतीकी परिस्थिति विषम है, किन्तु उसकी ठीक परख हो जायेगी और उसकी दृढ़ताकी भी परीक्षा हो जायेगी। मैं उसे पत्र लिख रहा हूँ। कुमारप्पाके भाषणका हिन्दी अनुवाद मिल गया है। महावीरप्रसाद के उत्साहका क्या कहना! 'गीता' के तीसरे संस्करणकी तैयारी वह आजसे कर रहा है।

तुम्हारी मानसिक ग्लानि अव तो कट ही जानी चाहिए। यदि निराशाजनक विचार और विकार आदि तुम्हारे मनमें उठें तो उन्हें लिख डालो और इस प्रकार उन्हें दूर करनेका प्रयत्न करते रहो। उनके वारेमें सोच-विचार नही करना चाहिए। उक्त विचार क्योंकर उठे, इसे लेकर तुम्हें अपने मनमें मंथन नही करना चाहिए, वल्कि मनको सद्‌विचारोंमें लगाये रखना चाहिए। और इसका उत्कृष्ट उपाय यह है कि जो वाह्य काम किया जाये उसीमें मनको लीन रखा जाये। इस प्रकार मनके किसी अन्य दिशामें भटकनेका अवकाश ही नही रहेगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ५२५४) की फोटो-नकलसे।

३०२. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

यरवडा मन्दिर
१२ अक्टूवर, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

तुम्हारा पत्र मिला। हमें चाहे जैसी आदत क्यों न पड़ गई हो, किन्तु यदि वह हमें अरुचिकर लगने लगे तो फिर उसे छोड़ते देर नही लगती। तुम्हारे-जैसी दृढ़ निश्चयवाली स्त्रीके लिए तो ऐसा करना तनिक भी कठिन नही है। तुम अपनी खुराक पर जमी हुई हो, यह अच्छा है। शरावकी दुकानों पर धरना आदि देनेके मामलोंमें हम जव लोगोंको ढिलाई वरतते या उनकी श्रद्धाको डगमगाते देखें तो हमें अधिक सजग हो जाना चाहिए तथा अपनी श्रद्धाको तेजपूर्ण वना लेना चाहिए। आखिरकार इसका असर अवश्य होगा।

वापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८००) की फोटो-नकलसे।

३०३. पत्र : रोहिणी कन्हैयालाल देसाईको

यरवडा मन्दिर
१२ अक्टूबर, १९३०

चि० रोहिणी,

तेरा सुन्दर पत्र मिला। यदि हमीदा गुजराती सीख जायेगी तो उसका यश तुझे ही मिलेगा न? शराबकी दुकानो पर धरना देनेका काम कठिन है, इसीलिए तो उक्त काम बहनोको सौंपा गया है। यह कार्य करनेवालोमे अति पवित्रता और अति श्रद्धा होनी चाहिए, और ये दोनो गुण पुरुषोकी अपेक्षा स्त्रियोमे विशेष मात्रामें होते हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २६५३)की फोटो-नकलसे।

३०४. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
१२ अक्टूबर, १९३०

चि० वसुमती,

मुझे पत्र पढनेकी परेशानीसे बचानेकी जरूरत नही है। पिताको अपने पुत्र-पुत्रियोके पत्र पानेकी भूख तो बनी ही रहती है। दस या पन्द्रह दिन तक मैंने शाक-भाजी और दूध-दही ही लिया; इसलिए मैंने मुनक्के और खजूर तक खाना छोड दिया था। आजसे मुनक्के और खजूर लेना शुरू कर दिया है और कुछ दिनो बाद मैं फिर शाक-भाजी पर आ जाऊँगा। ऐसा करनेसे यह पता चल जायेगा कि मुझे क्या माफिक आता है। यदि शाक-भाजीसे काम चल जायेगा तो बचत ही होगी। किन्तु मैं किसी बातका आग्रह नही करूँगा। फिलहाल मेरा वजन १०४ पौंड है, जोकि अच्छा ही माना जायेगा। तू कैसी है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२९०) की फोटो-नकलसे।

३०५. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
१२ अक्टूबर, १९३०

चि० गंगाबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। मणिबहनके जानेसे जो विचार आये हों वे और दूसरे विचार भी मुझे जरूर लिखना। तुम्हारा पिछला पत्र ठीक था। हम जैसे हो, ससार भले हमें वैसा देखे। और जिसपर हमें विश्वास हो उसे तो हम अपनी इच्छासे बतायें। कोई भी अपनी शुभेच्छाके अनुसार एकाएक आचरण नही कर सकता। किन्तु प्रयत्न तो सभी कर सकते है। वह तुम रोज करती ही हो। इसलिए अन्ततोगत्वा अच्छा ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - ६: गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७६१ से भी। सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

३०६. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
१२ अक्टूबर, १९३०

चि० प्रेमा,

दोनों अर्थ अच्छे है। नाथजीका अर्थ अधिक अधिकृत हो सकता है।

तू शान्त हो गई है, यह हमारा सौभाग्य है।

सरोजिनी देवीके हृदयमें प्रवेश करना। उसे सहानुभूति और प्रेमकी जरूरत है। ऐसे कामोंके लिए थोड़ा समय निकालना। अभी तो तुझे बड़ी जिम्मेदारीके काम करने है।

अब तेरी स्वास्थ्य-सम्बन्धी चिन्ता दूर हो गई क्या? शरीर बिलकुल चंगा लगता है? क्या खुराक लेती है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८६) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२३८ की फोटो-नकलसे भी।

३०७. पत्र : दुर्गा गिरिको

यरवडा मन्दिर
१२ अक्टूबर, १९३०

चि० दुर्गा,

तेरा पत्र मिला। मैं हरगिज देरमें जवाब नहीं देता। बल्कि तू लिखती नहीं, इसीलिए मानती है कि मेरा पत्र देरमें पहुँचा। तेरे पत्रके अन्तमें लिखे हुए अक्षर सत्यादेवीके ही हों, तो वे तेरे जैसे तो हैं ही। अतएव अब कुछ ही दिनोंमें उसे तुझसे आगे बढ़ जाना चाहिए।[1]

बापूके आशीर्वाद

बापूकी विराट् वत्सलता

३०८. पत्र : मीराबहनको

[१३ अक्टूबर, १९३०][2]

चि० मीरा,

आशा है तुम्हें वे पत्र मिल गये होंगे जो रास्ता भटक गये थे। मुझे विश्वास है कि उन्हें बीचमें रोका नहीं गया होगा, परन्तु एक स्थानसे दूसरे स्थान पर भेजनेमें देर हुई होगी।

तुम जर्जर स्थितिमें लौटी हो, अतः स्पष्ट है कि जिसे तुम मेरी 'झिड़की' कहती हो, वह बिलकुल उचित थी। सबसे बुरी बात तो यह हुई कि तुम एक बुरी दुर्घटनाकी शिकार बनी। अब अपना वचन पूरा करके पूरा आराम लो। यह जानकर मुझे बड़ी राहत मिली कि तुम सरदारसे मिलती रही थीं। इससे जाहिर होता था कि तुम्हारी तबीयत सफर करने लायक थी।

मैं अभी तक गाण्डीव चरखे पर ही काम कर रहा हूँ और उसमें मुझे जिस आनन्दका अनुभव होता है वह न केवल बराबर बना हुआ है, बल्कि कुछ बढ़ा ही है। अब मैं वैज्ञानिक ढंगसे कात रहा हूँ, यानी सूतका तार निकलनेके रास्तेके नीचे गज भरका कपड़ा रखता हूँ। मैं एक मिनटमें ८ धागे निकाल सकता हूँ और एक

१. मूल पत्र गुजरातीमें था।

२. 'पुनश्च' में जिस १००वें भजनका उल्लेख किया गया है उसका अंग्रेजी अनुवाद इसी तारीखको हुआ था; देखिए परिशिष्ट ६। वैसे पत्रपर मीराबहनकी लिखावटमें "१२-१०-१९३०", तारीख पड़ी हुई है।

धागा कमसे-कम दो फुटका होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि फी घंटे २४० तार या ३०० गज सूत कतता है। अलबत्ता, एक घंटेमें इतना तो हो नहीं पाता। लेकिन इसका कारण गाण्डीवकी कोई खराबी नहीं है। कम सूत निकलनेका कारण तो तारका टूटना और उसके फलस्वरूप समयका बरबाद होना है। लेकिन जबसे ध्यान लगानेका तरीका अख्तियार किया है, तार बहुत कम टूटते हैं। इसलिए मेरी गति बहुधा २०० गज फी घंटे तक पहुँच जाती है, जो मेरे लिए बहुत अच्छी है। गाण्डीवके बारेमें मेरे विचार अभी प्रकाशित न करना। मैं उन लोगोंकी रिपोर्ट चाहता हूँ, जो आश्रममें प्रयोग करें। सबसे अधिक तो मुझे तुम्हारी रिपोर्ट चाहिए, बशर्ते कि तुम्हारे पास इसका प्रयोग करनेके लिए अवकाश हो और रुचि हो। मैं जानता हूँ कि मेरी तरह तुम सबके पास ये प्रयोग करनेके लिए समय नहीं है। इसलिए उतना ही करना जितना सम्भव हो और तभी करना जब तुम इसे जरूरी समझो। मेरे पास और कोई काम नहीं है, इसलिए बहुत सम्भव है कि मैं किसी ऐसी चीजके गुणोंका अधिक बखान कर देता होऊँ, जिसकी मैंने पहले उपेक्षा की हो, जैसीकि मैंने की है, लेकिन जिससे अब अपेक्षतया ज्यादा सन्तोष मिल रहा हो।

पिछले दो दिनसे मैं फिर किशमिश और खजूर लेने लगा हूँ, सिर्फ यह देखनेके लिए कि मुझे जो जुकाम हो गया है उसका सम्बन्ध तरकारियोंसे तो नहीं है। संयोगसे हो या और कोई बात हो, मगर आज वह लगभग मिट गया है। बहरहाल, तबीयत बिलकुल अच्छी है। वजन १०४ पौंड है।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

आज मैंने १०० वाँ भजन पूरा कर लिया है। हिन्दुस्तानी भजनोंमें केवल दो का अनुवाद करना बाकी रहा है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस कामको मैंने लगभग आधा पूरा कर लिया है।

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४१५) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६४९ से भी।

३०९. पत्र : रामदास गांधीको

यरवडा मन्दिर
१३ अक्टूबर, १९३०

चि० रामदास,

जबतक तू बाहर है तबतक हर सप्ताह तेरा पत्र मुझे मिलना चाहिए। तेरा स्वास्थ्य कैसा है? खाना ठीक-ठीक पच जाता है? क्या अभी तक दवा बन्द नहीं है? तू किस काममें लगा हुआ है? नीमू कैसी है? सुमित्रा कैसी है? खादी-सरजाम कार्यालयके बारेमें क्या हुआ? सच्ची परीक्षा तो अब होगी। किन्तु उसमें कोई नई बात नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८६०) की फोटो-नकलसे।

३१०. पत्र : नारणदास गांधीको

९/१४ अक्टूबर, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा भेजा पुलिन्दा कल रातको मेरे हाथ आया। तुम्हें डाक देरसे क्यों मिली इसके बारेमें पता तो लगाऊँगा ही, किन्तु ऐसा तो होता ही रहेगा, इसलिए निश्चित दिन डाक न मिले तो चिन्ता न करना। वहाँसे भेजी जानेवाली डाक नियमपूर्वक भेजते रहना।

आज हम दोनोंका वजन लिया गया। हर गुरुवारको लिया जाता है। काका साहबका ११५-१६ के बीच है; इसलिए थोड़ा सुधार है। मेरा १०४ हो गया है। चार दिनसे एनीमा बन्द है। चौलाईका साग खाता हूँ। उसका अच्छा असर हुआ है। रतालू हमेशाके लिए बन्द नहीं किये हैं। सप्ताहमें दो-तीन बार लेनेका इरादा है और बाकी दिन कुम्हड़ा या ऐसी ही कोई दूसरी सब्जी। टमाटर तो अबतक चल ही रहे हैं। फलकी अभीतक जरूरत मालूम नहीं हुई। वजन बना रहे तो जिस तरह चल रहा है उसी तरह चलाते रहनेका इरादा है। यह सब स्वास्थ्यका ध्यान रखते हुए ही करूँगा, सबके लिए इतना आश्वासन काफी होना चाहिए।

तुम्हारा पत्र लम्बा नहीं लगता। तुम्हारा बोझ न बढ़े, यह जरूर चाहता हूँ। मेरी डाक देखना और बाँटना तथा मुझे पत्र लिखना। दूसरोंकी भेजना, यह एक काम ज्यादा मानता हूँ। ज्यादा इसलिए कि ठीक तरहसे देखें तो मुझे यहाँसे कोई राय व्यक्त नहीं करनी चाहिए। पत्र लिख-लिखा सकते हैं; यह एक संयोग ही है।

राधाका लम्बा जवाब मिला है। उसमें . . .[1] की चोरी आदिके बारेमें लिखा है। यह देखकर और जानकर केशु व्याकुल हुआ, यह लिखा है। यह क्या है? . . .[2] को पत्र लिख रहा हूँ; उसे पढ़ना।

गिरिराजके बारेमें तुमने जो निर्णय किया है उसके बारेमें मुझे कुछ नही कहना। मै इस निर्णयको ठीक ही मानता हूँ। पूरी हकीकत तो तुमको ही मालूम है। बच्चोंका क्या हुआ, यह सब बादमें मालूम होगा। अमीदासके लिए क्या कहे? उसकी बहादुरी के लिए तो मनमें सम्मान उपजता ही है। दूधकी प्रतिज्ञाके लिए मै जिस हद तक जिम्मेदार हूँ, उस हद तक मुझे दुःख होगा। उसके पिता आ गये है इसलिए धीरज है। उसकी सेवा किये बिना हमारा छुटकारा नही। रक्षा करनेवाला तो ईश्वर ही है।

मणिबहनके खर्चकी जिम्मेदारी तो भगवानजी पर ही होगी न? मै प्यारेलालसे मिला हूँ। उसका स्वास्थ्य बिगड़ा नही है। कुछ कमजोर है। ऐसा लगता है कि आगे भी मिलते रहेंगे। अभी उसे दूध-रोटी मिलती है।

चितालियाका पत्र दिखाई नही दिया। मददकी रकम मुझे जबानी याद नही। मेरा खयाल है कि रकमको दर्ज तो कराया था। उसका कागज फाइलमें होनेकी सम्भावना है। शिवाभाई और छगनलालको मालूम होना चाहिए। शायद रावजीभाई को भी मालूम हो। चितालिया स्वयं भी बता सकेगा। क्या १५०० रुपये मकानके लिए मँगाये है? मालूम करके यदि योग्य लगे तो भेज देना। मुझे फिर लिखनेकी जरूरत हो तो लिखना। उसे पत्र लिखा है; सो पढ़ लेना।

१३ अक्टूबर, १९३०

नया कानून देखा है। तुम्हारे लिए भी विचार करनेकी जरूरत तो है ही। किन्तु मैं यहाँसे कुछ कहना नही चाहता। वहाँ जो नेता हो उसीके साथ सलाह करके जो ठीक लगे वह करते जाओ। मुझे इसमें कुछ नया नही लगता। ऐसा सोचा ही था।

मंगल प्रभात, १४ अक्टूबर, १९३०

<u>व्रतकी आवश्यकता</u>: व्रतके महत्त्वके सम्बन्धमें मै जहाँ-तहाँ इस लेखमालामें लिख ही चुका होऊँगा; परन्तु व्रत जीवनके गठनके लिए कितने आवश्यक हैं, यहाँ इसपर विचार करना मुझे उचित प्रतीत होता है। स्वदेशीके सिवा दूसरे सभी व्रतोके सम्बन्धमें लिख चुकनेके बाद अब उन व्रतोकी आवश्यकता पर विचार करेगे। ऐसा एक सम्प्रदाय है और वह प्रबल है, जो कहता है कि "अमुक नियमोंका पालन करना उचित है, पर उनके सम्बन्धमें व्रत लेनेकी आवश्यकता नही; इतना ही नही, बल्कि ऐसा करना मनकी निर्बलता सूचित करता है और हानिकारक भी हो सकता है। इसके सिवा व्रत लेनेके बाद यह नियम अड़चन उत्पन्न करनेवाला या पापरूप मालूम

१ और २. नाम यहाँ नहीं दिये गये हैं।

हो तो भी उसे पकड़ रखना पडे, यह तो असह्य है।" वे कहते हैं, "उदाहरणके लिए, शराब न पीना अच्छा है, इसलिए नहीं पीनी चाहिए, पर कभी पी ली गई तो क्या हुआ? दवाके रूपमें तो उसे पीना ही चाहिए। इसलिए उसे न पीनेका व्रत तो गलेमें फंदा डालनेके समान है। और जो बात शराबके बारेमें है वही बात दूसरी चीजोंके बारेमें है। झूठ भी भलाईके लिए क्यों न बोला जाये?" मुझे इन दलीलोंमें तत्व नहीं दिखाई देता। व्रतका अर्थ है अटल निश्चय। अड़चनोंको पार कर जानेके लिए ही तो व्रतकी आवश्यकता है। असुविधा सहन करनेपर भी जो भंग न हो वही अटल निश्चय कहा जा सकता है। समस्त संसारका अनुभव इस बातकी गवाही दे रहा है कि ऐसे निश्चयके बिना मनुष्य उत्तरोत्तर ऊपर उठ नहीं सकता। जो पापरूप हो, उसका निश्चय व्रत नहीं कहलाता। वह राक्षसी वृत्ति है। और कोई विशेष निश्चय जो पहले पुण्यरूप प्रतीत हुआ हो और अन्तमें पापरूप सिद्ध हो तो उसे त्याग करनेसे धर्म अवश्य प्राप्त होता है; पर ऐसी वस्तुके लिए कोई व्रत नहीं लेता, न लेना चाहिए। जो सर्वमान्य धर्म माना गया है, पर जिसके आचरणकी हमें आदत नहीं पडी उसके सम्बन्धमें व्रत होना चाहिए। ऊपरके दृष्टान्तमें तो पापका आभासमात्र सम्भव है। "सत्य कहनेसे किसीकी हानि हो जायेगी तो?" सत्यवादी ऐसा विचार करने नहीं बैठता। उसे खुद ऐसा विश्वास रखना चाहिए कि सत्यसे इस संसारमें किसीकी हानि नहीं होती और हो भी नहीं सकती। मद्यपानके विषयमें भी यही बात है। या तो इस व्रतमें दवाके लिए अपवाद रहने देना चाहिए या व्रतके पीछे शरीरके लिए जोखिम उठानेका भी निश्चय रहना चहिए। दवाके तौर पर भी शराब न पीनेसे शरीर न रहे तो क्या हुआ? शराब पीनेसे शरीर रहेगा ही, इसका पट्टा कौन लिख सकता है? और उस समय शरीर बच गया, पर किसी दूसरे समय किसी दूसरे कारणसे वह न रहा, तो उसकी जवाबदेही किसके सिर होगी? इसके विपरीत, शरीर-रक्षाके लिए भी शराब न पीनेके दृष्टान्तका चमत्कारिक प्रभाव शराबकी लतमें फँसे हुए लोगो पर पडे तो संसारका कितना लाभ है? शरीर जाये या रहे, मुझे तो धर्मका पालन करना ही है — ऐसा भव्य निश्चय करनेवाले ही किसी समय ईश्वरकी झाँकी कर सकते हैं।

व्रत लेना निर्बलतासूचक नहीं, वरन् बलका सूचक है। अमुक बातका करना उचित है तो फिर वह करनी ही चाहिए, इसका नाम व्रत है और इसमें बल है। फिर इसे व्रत न कहकर किसी दूसरे नामसे पुकारें तो उसमें हर्ज नहीं है, परन्तु "जहाँ तक हो सकेगा करूँगा" ऐसा कहनेवाला अपनी कमजोरी या अभिमानका परिचय देता है, भले ही उसे खुद वह नम्रता कहे। इसमें नम्रताकी गन्ध तक नहीं है। "जहाँ तक हो सकेगा" यह शुभ निश्चयमें जहरके समान है। मैंने तो अपने और बहुतोंके जीवनमें देखा है कि जहाँ तक हो सकेगा, वहाँ तक करनेके मानी हैं पहली ही अड़चनके सामने गिर पड़ना। "सत्यका पालन जहाँ तक हो सकेगा करूँगा", इस वाक्यका कोई अर्थ ही नहीं है। व्यापारमें यथासम्भव अमुक तारीखको अमुक रकम चुका दी जायेगी, इस तरहकी चिट्ठी, चेक या हुंडीके रूपमें स्वीकार नहीं की जाती।

उसी तरह जहाँ तक हो सकेगा, वहाँ तक सत्य-पालन करनेवालेकी हुंडी भगवानकी दुकानमें नही भुनाई जा सकती।

ईश्वर स्वय निश्चयकी, व्रतकी सम्पूर्ण मूर्ति है। उसके नियमोका एक अणु भी इधर-उधर हो जाये तो वह ईश्वर न रह जाये। सूर्य महाव्रतधारी है, उससे संसारका काल-निर्माण होता है और शुद्ध पंचांगोंकी रचना की जा सकती है। उसने अपनी ऐसी साख सिद्ध की है कि वह सदा उदय हुआ है, सदा उदय होता रहेगा, और इसीसे हम लोग अपनेको सुरक्षित पाते हैं। व्यापार-मात्र एक पक्की प्रतिज्ञाके आधार पर चलते हैं। व्यापारी एक-दूसरेके प्रति वादेसे बँधे न हो तो व्यापार चले ही नही। इस प्रकार व्रत एक सर्वव्यापक वस्तु दिखाई देती है। तो फिर जहाँ हमारे अपने जीवनके गठनका प्रश्न उपस्थित हो, ईश्वर-दर्शन करनेका प्रश्न हो, वहाँ व्रतके विना कैसे काम चल सकता है? इसलिए व्रतकी आवश्यकता के विषयमें हमारे मनमें कभी शंका उठनी ही नही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

गाण्डीव और मेरी खुराकके बारेमें खबर मीराबहनके पत्रमें है।

आज ६३ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

३११. पत्र : फेनर ब्रॉकवेको

यरवडा सेंट्रल जेल
१५ अक्टूबर, १९३०

प्रिय मित्र,

लन्दनसे जन्म-दिवसकी बधाइयोंवाला तार भेजनेवालोमें मै आपका नाम देखता हूँ। चूँकि मै मन्त्री महोदयका पता नही जानता, इसलिए मै आपको तथा आपके जरिये अन्य मित्रोंको धन्यवाद देता हूँ।

मै आशा करता हूँ कि मद्रासके निकट आप जिस दुःखद दुर्घटना[1] में पड़ गये थे उसका आपपर अब कोई दुष्प्रभाव शेष नही रह गया है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्सट्रैक्ट्स, ७५० (३४), भाग १, पृष्ठ २७९

१. फेनर ब्रॉकवे १९२७ के अन्तमें एक कार-दुर्घटनामें पड़ गये थे। देखिए खण्ड ३६, पृष्ठ २१-२।

३१२. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

यरवडा मन्दिर
१५ अक्टूबर, १९३०

भाई घनश्यामदासजी,

आपका खत मिला है। मिरावहनने भी थोडा लिखा था।

दोषमुक्त तो इस जगत्‌मे कोई नहिं है। मुक्ति पानेकी कोशीष करना हम सबका कर्त्तव्य है और वही पुरुषार्थ है। जब तक निजी प्रयत्नके हम साक्षी बन गये निराशाको कोई स्थान नहिं है। दुन्यवी व्यापारमे जितनी साहसकी आवश्यकता है उससे कोटीगुना साहसकी आवश्यकता आध्यात्मिक व्यापारमे है। आत्मश्रद्धाको कभी न छोड़ी जाय। श्रद्धाके नजदीक सब कुछ शक्य है।

मुझे भी विश्वास है कि पू० मालवीजी कभी बीमार नहिं होंगे। मेरा तो विश्वास है कि जेलसे उनको सच्चा आराम और सच्ची शांति मिलेंगे।[1] दोनोकी उनके लिये बरसोसे बडी आवश्यकता थी। भगवान्‌ने ऐसे हि अब दोनो दे दीये हैं।

अबके पत्रमें शरीरके हाल दे दो।

खादी ज्यादा हो जानेसे डरोगे नहिं ऐसी आशा करता हु। गोशालाका प्रयोग कुछ करते हो क्या?

आपका,
मोहनदास

सी० डब्ल्यू० ६१८७ से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

३१३. पत्र : लीलावतीको

१६ अक्टूबर, १९३०

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तू शान्त है, यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई। तुझे तीन दिनका उपवास क्यों करना पडा था? यह मत भूल जाना कि उम्रके लिहाजसे तू अभी बच्ची है। बच्चोंको दुनिया-भरका बोझ अपने सिर नही लेना चाहिए। यदि सच कहा जाये तो हम सभी बालक हैं। वृद्ध तो एकमात्र भगवान् हैं। सबका भार

१. मदनमोहन मालवीयको दूसरी बार २७ अगस्तको गिरफ्तार किया गया था जबकि वह कांग्रेस कार्यसमितिकी बैठकमें हिस्सा ले रहे थे। उन्हें ६ महीनेकी मामूली कैद हुई थी।

वह उठाता है तो फिर हमें किस बातकी चिन्ता? हम सब तो बस उसकी गुलामी करते रहें।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९३१७) की फोटो-नकलसे।

३१४. पत्र : भगवानजी पण्ड्याको

१६ अक्टूबर, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा हेतु तो निर्मल है ही, लेकिन हेतुकी निर्मलता मात्रसे सन्तोष नहीं करना चाहिए। ज्ञानकी आवश्यकता इसलिए स्वीकार की गई है ताकि मनुष्यसे शुभ हेतुके होते हुए भी भूल न होने पाये। इतना भी निश्चित जानो कि जिस हदतक तुम शुद्ध बनोगे उस हदतक आश्रम भी अधिकाधिक शुद्ध होता चला जायेगा। आश्रमकी शुद्धि आश्रमवासीकी शुद्धिसे भिन्न वस्तु नहीं है। आध्यात्मिक समस्याओंको सुलझानेमें मदद करनेके लिए आश्रममें नारणदाससे बढ़कर हो, ऐसा तो और कोई व्यक्ति नहीं है। तोताराम जी भी मदद कर सकते हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२७) से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या

३१५. पत्र : नारणदास गांधीको

गुरुवार रात, [१६ अक्टूबर, १९३०][1]

चि० नारणदास,

तुम्हारी डाक मिल गई है। यह पत्र खास करके अमीदासके बारेमें ही लिख रहा हूँ; इसलिए तुरन्त भेजा जा सकेगा। अमीदास कच्चा अंडा लेगा? दोषपूर्ण और निर्दोष दो प्रकारके अंडे मिलते हैं। दोषयुक्त वह है जिसमें अन्तमें बच्चा पैदा हो सके। निर्दोष वह है जिसमें जीव पैदा होता ही नहीं। मुर्गी ऐसा अंडा मुर्गेका साथ किये बिना देती है। यह बात प्रसिद्ध है। भाई पारनेरकर जानता होगा। बाजारमें ऐसे अंडे मिल सकते हैं। मुख्यतः यूरोपीय लोग ऐसे अंडे तैयार करते हैं। मीरजके पास एक फार्म है। इस विषयमें किया गया पत्र-व्यवहार हमारे दफ्तरमें है। उसे

१. बापुनापत्रो-९ : श्री नारणदास गांधीनेके अनुसार।

ढूंढनेकी जरूरत नही। अहमदाबादके कई पारसी ऐसे अंडोंके बारेमे बना जाने हैं। मैं स्वयं मानता हूँ कि ऐसे अंडेमे दूधकी अपेक्षा दोष कम है। दूधकी तरह इसे हम किसीकी खुराकमें से नही छीनते।

यदि अमीदास 'हाँ' करे तो फौरन मँगा लेना। उपचार इस प्रकार है। जैसे-का तैसा कच्चा अंडा फोडकर उसका रस आठ औंस पानीमे मिलाकर शीशीमें भर कर रखो। हर घंटे एक-एक औंस पानी दो। एकदम ताकत आयेगी। दूधकी जरूरत पूरी करेगा। कह सकते हैं कि मनु[1] इसी चीजसे बची। यह अंडा 'कॉड लिवर आयल' से तो सौगुना अच्छा है। अमीदासको समझाना कि इस सलाहमे कुछ भी दोष होगा तो वह मैं अपने सिर उठानेको तैयार हूँ। इस बातका मैंने प्रचार नही किया क्योंकि जहाँ भोगका पहाड बढता जा रहा हो, बिना संकोच अनेक दवाएँ ली जा रही हों, वहाँ इसे भी कैसे उसीमें जोड़ दें। अमीदासका किस्सा बिल्कुल न्यारा है। पारनेरकर अब अच्छा होगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

इसका जवाब जल्दी दे सकते हो।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे, बापुना पत्रो-९ : श्री नारणदास गांधीने से भी।

३१६. पत्र : सुशीला गांधीको

[१७ अक्टूबर, १९३० से पूर्व][2]

चि० सुशीला,

इस बार तेरा ब्यौरेवार पत्र मिला। यदि सीताको पर्याप्त फल दिये जायें तो साग-भाजी देनेकी बिलकुल जरूरत नही है। फिलहाल ताजा दूध, फल और जो खट्टा न हो ऐसा दही मैं उसके लिए पर्याप्त मानता हूँ।

यदि उसके दाँत मजबूत हो तो वह भले ही कुछ कड़े बिस्कुट या 'खाखरी' [अच्छी तरह सिकी हुई, कडी पतली रोटी] चबाये। उसे अच्छी तरह चबानेकी आदत डालनी चाहिए। माधवजीके दोनो बच्चे इसी खुराकपर पले हैं। उनकी देह कुन्दन-जैसी है। तूने अपने कान किसी डाक्टरको दिखाये या नही? मणिलाल किसीको दिखानेको कहता था न? एक बार यदि किसी जाने-माने डॉक्टरको दिखाकर तकलीफ को समझ ले तो चिन्ता मिट जाये। मुझे नियमित रूपमे पत्र लिखती रहना। अपनी

१. हरिलाल गांधीकी लड़की।

२. पत्रमें सहेलीका नाम (अभिप्राय भारती नामकी बालिकासे है) भूल जानेके उल्लेखसे ऐसा लगता है कि यह १७-१०-१९३० को सुशीला गांधीको लिखे गये पत्रसे पहले लिखा गया होगा।

उस सहेलीका नाम तो भूल गया जो तेरे विवाहके मौकेपर मुझसे बहुत हिल-मिल गई थी।

सभीसे मेरे आशीर्वाद कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७८१) की फोटो-नकलसे।

३१७. पत्र : पैट्रिक क्विनको

१७ अक्टूबर, १९३०

प्रिय श्री क्विन,

साथका पत्र एक मित्र[1]के बारेमें है जोकि आश्रममें मृत्यु-शय्यापर पड़े हैं। यदि आवश्यक हो तो क्या आप मेजर मार्टिनसे बात करके इस पत्रको तुरन्त डाकसे भिजवा देंगे। तब यह शायद कल सुबह तक वहाँ पहुँच जायेगा, और कौन जाने एक व्यक्तिकी प्राण-रक्षाका साधन ही सिद्ध हो!

क्या आपने 'सोशल रिफॉर्मर' सरदार वल्लभभाईको भेज दिया है? साथका पत्र, जोकि हम दोनोंके एक बीमार मित्रके बारेमें है, उनके देखनेके लिए है। और क्या आपने उनकी पुत्रीका पत्र उनको दे दिया है?

यदि आपने खजूर मँगानेका आदेश कल दे दिया हो, तो अभी तक वे मुझे दिये नहीं गये हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

टिप्पणी: आश्रमके लोग पिछले दो हफ्तोंसे शिकायत कर रहे हैं कि उन्हें डाक दो-तीन दिन देरसे मिलती है।

[अंग्रेजीसे]

महात्मा गांधी: सोर्स मैटीरियल फॉर ए हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया, खण्ड ३, भाग ३, पृष्ठ २८८

१. अभिप्राय अमीदाससे है; देखिए "पत्र: नारणदास गांधीको", १६-१०-१९३०।

३१८. पत्र : शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

चि० शारदा,

तेरा पत्र मिला। किन्तु तू बीमार क्यों पड़ गई? खाने-पीनेमें कोई भूल हुई थी क्या? दमाको तो तुझे समाप्त ही कर डालना चाहिए ताकि फिर उसका नाम लेनेकी भी जरूरत न रहे। तू निश्चय कर ले तो सफलता अवश्य मिलेगी। सूर्य-स्नान करती है? छाती में मालिश करती है? पेट साफ रखती है? प्रात.कालकी प्रार्थना के बाद कुछ भी खानेके पहले धीरे-धीरे गहरा श्वास लेना चाहिए। ऐसा करनेसे फेफड़े निर्मल हो जाते हैं। फेफड़ोको साफ करनेके लिए उनमे प्राण-वायुका सिंचन करना चाहिए। यह क्या है सो चिमनलालसे समझ लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८९२) से। सौजन्य : शारदाबहन जी० चोखावाला

३१९. पत्र : छगनलाल जोशीको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

चि० छगनलाल (जोशी),

तुम्हारे दो पत्र मिले। यह पत्र तो तुम्हे शायद ही मिले। जेलके बाहर परिवर्तित स्थितिकी चिन्ता लेकर जेलमें मत जाना। हमारी चिन्ता ईश्वर करता है, यह हम 'गीता' से सीखते हैं। और फिर यह याद रखो कि जब कोई व्यक्ति अपने विचारको आचारमें उतारनेकी बाट ही जोह रहा हो उस समय उसके विचारकी शक्ति आचारकी अपेक्षा कही अधिक बढ जाती है। इसलिए जो लोग काम करनेको तत्पर रहते हैं उनके विचार भी अवश्य फलित होते हैं। इसलिए यदि तुम्हें [जेल जाकर] आराम मिले और जेलसे बाहरके लोगोंकी परीक्षा हो तो तुम्हे इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५४९५) की फोटो-नकलसे।

३२०. पत्र : रलियातबहन वृन्दावनलालको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। मृत्युमार्ग तो राजमार्ग है और इच्छा या अनिच्छापूर्वक हम सबको उसे रौंदना ही है तथा असंख्य बटोहियोंके बावजूद वह सूनाका-सूना ही बना रहेगा। अतः वह परमशान्तिका मार्ग भी है। जो उसपर जाते डरता है, वही धैर्य नही रख पाता है और जो निडर रहता है वह शान्तिके साथ सुख उठाता है।

मोहनदासके जय श्रीकृष्ण

श्रीमती गोकीबहन

गुजराती (एस० एन० ९८११) की फोटो-नकलसे।

३२१. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। मैंने डाहीबहनके विरुद्ध किसी बातपर विश्वास ही नही किया। डाहीबहनकी आँखों या उसके व्यवहारमें मुझे मलिनता नामकी कोई चीज दिखाई ही नही पड़ी। मै समझता हूँ डाहीबहनने वह स्थान न छोड़कर ठीक ही किया है। रावजीभाईका पत्र मुझे मिला था।

अब बहनोंके लिए भारी जिम्मेवारी उठानेका समय आ पहुँचा जान पड़ता है। भगवान इसमें उनकी सहायता करेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२९१) की फोटो-नकलसे।

३२२. पत्र : कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

तेरा पत्र मिला। तेरे पत्रकी राह देखूंगा। आजकल तो नियमित रूपमे लिखती रहना। निराश न होना। प्यारेलालसे फिर मिला था। अभी फिर मिलूंगा। अब कोई दिक्कत नही है। सेवाश्रमके अस्पताल भी कब्जेमें ले लिये जानेकी खबर अखबारोंमें है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८०७) की फोटो-नकलसे।

३२३. पत्र : रतिलाल सेठको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

भाई रतिलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे वल्कल भेज देना। इससे पहले भी किसी भाईने आफ्रिकासे ऐसा वस्त्र भेजा था। मैं समझता हूँ कि किसीके मांगने पर वह मैंने उसे दे दिया था।

आशा है, तुम्हारी व्यापार-सम्बन्धी सभी अडचनें दूर हो गई होंगी। नरभेराम और अन्य स्नेही जनोको वन्देमातरम्।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७१६५) की फोटो-नकलसे।

३२४. पत्र : पूँजाभाईको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

चि० पूंजाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे विश्वास है कि तुम [जेलके] वहार ज्यादा दिन नहीं रह पाओगे। जब तुम फिर जेल जाओ तो वीमार न होनेकी कोशिश करना। यदि बीमारीका कारण तुम्हारी समझमें आ गया हो तो उसे दूर करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४०१७) की फोटो-नकलसे।

३२५. पत्र : सुशीला गांधीको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

चि० सुशीला,

तेरा पत्र मिला। भारतीसे मुझे माफी तो माँगनी ही चाहिए। भारती यह कह सकती है कि इतनी गहरी दोस्ती कर लेनेके बाद जो नाम ही भूल जाये वह कैसा मित्र है। किन्तु मैं सठिया गया हूँ, यह मानकर क्या वह मुझे माफ नहीं कर देगी? यदि वह लिखना चाहे तो मुझे लिखे। व्यक्तिगत रूपसे मैं तो यही मानता हूँ कि सामान्यतः तेरे कानका इलाज स्वस्थ शरीर ही है। यदि तू भी ऐसा ही मानती हो तो तेरे लिए कटिस्नान और सूर्यस्नान लेना अच्छा होगा। तुझे अच्छी तरह कसरत भी करनी चाहिए। तड़के ही तुझे घूमनेके लिए निकल जाना चाहिए। ताराका सिरका कष्ट कैसा है? नानाभाईकी लिखावट देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। तारा उन दोनोंको मेरे आशीर्वाद लिख दे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

क्या मणिलालका ४० पौंड वजन कम हो गया है? ऐसा नहीं हो सकता। कहीं कोई भूल है। फिरसे जाँचना।

गुजराती (जी० एन० ४७७३) की फोटो-नकलसे।

३२६. पत्र : दुर्गा गिरिको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

चि० दुर्गा,

तेरे पत्रसे मुझे अभी सन्तोष नही हो रहा है। रोजका कार्यक्रम लिखना। नियमित रूपसे लिखने लगेगी, तो नया विशेषण मिलेगा। इस बार अक्षर अच्छे लिखे हैं। तेरे पत्रके नीचे मैत्रीके अक्षर देखकर खुश हुआ हूँ। उसके विस्तृत पत्रकी राह देखूंगा[1]।

बापूके आशीर्वाद

बापूकी विराट् वत्सलता

३२७. पत्र : कलावती त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
१७ अक्टूबर, १९३०

चि० कलावती,

बहोत दिनोंके बाद तुम्हारा खत मिला। हमें ऐसी आदत रखनी चाहिये जि[स]में अच्छा बुरा न लगे। कर्त्तव्यके कारण कही भी रहना पडे अच्छा हि मानना। जिसको सेवा हि करनी है उसको अच्छा क्या बुरा क्या? लोक-चर्चासे डरना नहि। अपने निश्चय पर कायम रहेना। धर्म पालन वही स्त्री करती है जो फासी पर भी अपने निश्चयको न तोडे। मुझको लिखा करो।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२५६ की फोटो-नकलसे।

१. मूल पत्र गुजरातीमें था।

३२८. पत्र : राधाबहन गांधीको

यरवडा मन्दिर
१८ अक्टूबर, १९३०

चि० राधिका,

तेरा पत्र मिला। पिछले पत्रमें मैंने अविवेककी कोई बात नहीं देखी। उसमें तूने अपना दुखड़ा रोया है। ऐसा करनेका तुझे अधिकार है।

नम्रताका पाठ सीखा नहीं जा सकता। किन्तु अहिंसाका विकास करनेके प्रयत्नमें नम्रता अपने-आप आ जाती है। नम्रता अहिंसाका एक बड़ा लक्षण है। हम अहिंसाका पाठ पढ़ते हैं और नम्रता स्वतः आ जाती है। नम्रताका बाह्याचार सीखा जा सकता है, यह हम राजपरिवारोंमें देखते ही हैं; किन्तु वह वास्तविक नम्रता नहीं है। वह एक प्रकारकी सभ्यता है। मैंने जिस नम्रताकी बात कही है, उसमें तो अहं पूरी तरह मिट जाना चाहिए और हमें एकदम शून्य हो जाना चाहिए। यह वस्तु क्या सीखने-सिखानेकी है? किन्तु जिसे शरीरकी क्षणिकताका कुछ भान हो गया है और आत्माका कुछ ज्ञान हो गया है वह तुरन्त नम्र हो जाता है। मैं तुझे खिझाऊँ और तू गरीब गायकी तरह आँखें नीची किये चुपचाप सुनती रहे, तेरे मनमें बिलकुल भी रोष उत्पन्न न हो — यह कैसी नम्रता है? सच्ची नम्रता तो तभी आती है जब व्यक्तिमें सच्चा स्वाभिमान होता है। यह बात तू न समझी हो तो बार-बार पूछना। मैं समझाते हुए थकूँगा नहीं। तू बिलकुल ठीक तो हो गई है न?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६८७) से। सौजन्य : राधाबहन चौधरी

३२९. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
१८ अक्टूबर, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। अपने बम्बईके अनुभव लिखना। डाक्टरको गला नहीं दिखाती, यह ठीक नहीं है। रोगको शुरू होते ही दवा देना चाहिए। समय पर लगाया हुआ एक टाँका आगेके नौ टाँकोंको बचाता है, यह कहावत बिलकुल सच्ची है।

मूर्तिपूजाके मैं दो अर्थ करता हूँ। एकमें मनुष्य मूर्तिका ध्यान करके उसमें आरोपित गुणोंमें लीन होता है। यह इष्ट पूजा है। दूसरेमें गुणोंका विचार न करके वह मूर्तिको ही मूल वस्तु मानता है। यह बुतपरस्ती हानिकारक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८७) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२३९ की फोटो-नकलसे भी।

३३०. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
१८ अक्टूबर, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरा तार मिला तो जरूर, लेकिन बहुत देरसे। क्या तुझे भी मेरा पत्र देरसे मिला था? अब तुम दोनों शान्त हो गये होगे। तेरे तारसे लगता है कि आजकल तेरी सेहत ठीक रहती है। कमजोरी दूर होनी चाहिए। घूमने जाती है क्या? जयप्रकाश क्या करेगा?

मेरी तबीयत अच्छी है। अब मैंने फिरसे खजूर और मुनक्का लेना शुरू किया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३७३) की फोटो-नकलसे।

३३१. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

यरवडा मन्दिर
१८ अक्टूबर, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

तुम्हारा पत्र मिला। दूसरे पत्रोंमें तुम्हारे बुखारकी खबर पढ़ी। बुखार क्यों आया? मुझे आशा है कि वहाँ कोई बीमार नहीं पड़ेगा। सच्चे कामका समय तो अब आता दिख रहा है। जिस समय हम ज्यादासे-ज्यादा काम कर रहे हों, उस समय भी हमारे मनमें किसी किस्मकी अशान्ति नहीं होनी चाहिए। कर्त्ता और भर्त्ता तो ईश्वर है, हम तो उसके हाथमें केवल साधन-रूप हैं। यह बात मनमें उतर जाये तो अशान्ति हो ही नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८०१) की फोटो-नकलसे।

३३२. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
१८ अक्टूबर, १९३०

प्रिय भगिनि,

ईश्वर तुमारी सब तरहसे परीक्षा कर रहा है। और अबतक तुम उत्तीर्ण हुई है। तारिणीने तो अपना कर्त्तव्य पालन करते हुए देह छोडा उसका खेद हम क्यों करे? क्योंकि तारिणीका देह हमको काम देता था उस स्वार्थसे हम भले दुःख माने। परमार्थ दृष्टिसे तारिणीका देहांत हि इष्ट था। ऐसा दुर्बल देह उसके आत्माको कष्टदायी था। अब वह कार्यपरायण आत्मा दूसरा देह धारण करके अधिक सेवा करेगा ऐसा हम निश्चय पूर्वक माने।

सतीशबाबुका अनुवाद[1] मिल गया है। उसे समझनेके लिये भी बंगलाका ज्ञान ताजा करनेको दिल चाहता है। परंतु चर्खाका ध्यान मुझे रोकता है। श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात्[2] के लिये १० वा श्लोक[3] की टिप्पणी देखो। उसमें से अर्थ स्पष्ट हो

१. शायद अनासक्तियोग का; देखिए "पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको", १४-१२-१९३०।
२. भगवद्गीता, अध्याय १२, १२।
३. भगवद्गीता, अध्याय १२।

जायगा। उसके बाद भी यदि शका रहे तो मुझे फिर लिखो। चाम्न और अम्ण ठीक है। सब भाई बहनोंको मेरे आशीर्वाद दे दो।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० १६७२ की फोटो-नकलसे।

३३३. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
१९ अक्टूबर, १९३०

चि० मीरा,

बम्बईसे भेजा तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम्हारी तबीयत पहलेसे अच्छी है। तुमने जिस मन स्थितिका वर्णन किया है, वह हरगिज नही होने देनी चाहिए। अगर तुम अनासक्त होकर काम करो, तो किसी भी बातके लिए तुम भागदौड न करोगी और न अपने मन पर किसी बातका भार पडने दोगी। किसी सुपुर्द किये हुए काम या हाथमें उठाये हुए काममें अपना सारा हृदय लगा देनेके बाद आदमी उसका परिणाम ईश्वर पर छोड सकता है। तब कोई भागदौड और कोई चिन्ता नही रह सकती। राजा जनककी कथा तुम्हें मालूम है। वे कर्त्तव्यकी साक्षात् मूर्ति थे। उनकी राजधानी जल रही थी। यह उन्हें मालूम था। लेकिन किसीने उन्हे इसकी खबर दी। उनका उत्तर यह था "मेरी राजधानी जल कर राख हो जाये या बच जाये, इसकी मुझे क्या चिन्ता।" उन्होने उसे बचानेकी जितनी कोशिश हो सकती थी, कर ली थी। घटनास्थल पर उनके जाने और वहाँ अतिरिक्त हलचलका वातावरण पैदा करनेसे आग बुझाने वालोका और दूसरोका ध्यान बँट जाता और इससे स्थिति और खराब ही होती। वह तो भगवानके प्रतिनिधि मात्र थे। उस हैसियतसे उन्होंने अपना भाग अदा कर दिया था और इसलिए वे दायित्वसे 'मुक्त' और निश्चिन्त थे। इसी तरह अगर हम भरसक अपना कर्त्तव्य कर चुके हों, तो हमारा काम बने या बिगडे, हम भी शान्त और निश्चिन्त हो सकते है, और हमें होना ही चाहिए।

गाण्डीवसे मुझे अब भी सुख और सन्तोष मिल रहा है। अभीतक कोई चीज टूटी नही है। जहाँ पहले मुझे पाँच घटे लगते थे, वहाँ अब मैं अपना काम आसानीसे तीन घटेके भीतर ही समाप्त कर लेता हूँ। तकलीके सिवाय तीसरे पहरको अब कोई काम नही रहता। अत: दूसरे कामके लिए वक्त खाली है। अगर गाण्डीवसे तुम्हे उतना ही सन्तोष मिलता हो जितना मुझे मिलता है, तो यात्रामें उसे साथ ले जा सकती हो। मेरे पास जो नमूना है, उसकी लागत एक रुपया है। इसमें तकुआ और चरखेके चौखटेको खोखला करके उसमें बनाई गई एक पेटी शामिल है और चौखटेके एक बाजूमें तकुआ रखनेका अत्यन्त सादा उपाय भी शामिल है। कीमत और

सादगीमें इस चरखेकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। लकड़ीके चमरखों तथा रद्दी शीशेके सिलेंडरोंको मैंने निकाल दिया है। मेरे खयालमें मैंने तुम्हें यह बात बताई भी थी। इससे चरखा बिना कोई कर्णकटु आवाज किये चलता है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४१६) से। सौजन्य: मीराबहन

३३४. पत्र: रमाबहन जोशीको

यरवडा मन्दिर
१९ अक्टूबर, १९३०

चि० रमाबहन,

[छगनलालके गिरफ्तार होनेसे] तुम घबरा तो नहीं गईं? छगनलालको अब कुछ शान्ति मिलेगी तथा लोगोंकी परीक्षा होगी। सब बहनोंकी परीक्षाका समय भी अब निकट आ रहा है। मेरा विश्वास बढ़ता जाता है। अब हमें चाहिए कि हम और भी दृढ़ बनें, जागरूक रहें तथा हमारे हृदय सदा आनन्दसे सराबोर रहे।

अब मुझे तुम और भी ज्यादा नियमपूर्वक पत्र लिखना। ईश्वर हमारा कल्याण करेगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

धीरू और विमुके बारेमें कोई विशेष समाचार हो तो देना। केवलराम कहाँ है? निर्मला कहाँ है? उनसे कहो कि वे मुझे पत्र लिखें।

गुजराती (जी० एन० ५३२६) की फोटो-नकलसे।

३३५. पत्र : रेहाना तैयबजीको

यरवडा मन्दिर
१९ अक्टूबर, १९३०

चि० रेहाना,

तू तो बड़ी चालाक लड़की मालूम होती है। मुझे दो-चार पत्र गुजरातीमें लिखनेके बाद अब बेचारी मुझे उर्दूमें पत्र भेजती है। पर वह प्रेम किस कामका जो बदला माँगे? लेकिन ठीक है, मैं बदला दे रहा हूँ। तेरे अक्षर इतने साफ और अलग-अलग लिखे गये हैं और शब्द ऐसे सरल चुने हैं कि मुझे पढ़नेमें कोई कठिनाई नही हुई। अबसे तुझे अपने पत्रका आधा हिस्सा उर्दूमें लिखने की छूट है। उसमें मुझे लाभ ही होगा, कारण, उर्दू पढ़नेका मेरा भूला हुआ अभ्यास ताजा हो जायेगा। और तुम सब मिलकर मेरी हँसी न करो तो मैं भी कभी-कभी उर्दूमें लिखूंगा। लेकिन यदि मैं ऐसा करूँ, तब तो तू पूरा बदला मिल गया मानेगी न?

तेरे पेटमें जितनी चालाकी है उतनी ही ईर्ष्या भी भरी दीखती है। और ईर्ष्या भी किसकी? — बाबाजानकी? किन्तु कोई चिन्ता नही। वे अब दिन-प्रतिदिन जवान होते जा रहे हैं। इसलिए तेरी खबर लेंगे ही। तेरे पत्रके एक-दो शब्द नहीं पढ सका। पत्र सुरक्षित रख लिया है, फिर पढ़ूँगा और उन शब्दोको समझूंगा, कममें-कम प्रयत्न तो करूँगा ही। पत्र पूरा भर गया है। इसलिए तेरे लिए अब तीसरा विशेषण नही दे सकता। उसे फिर देखूंगा।

खुदा हाफिज।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९६२२) की फोटो-नकलसे।

३३६. पत्र : कसुम्बा गांधीको

यरवडा मन्दिर
१९ अक्टूबर, १९३०

चि० कसुम्बा,

मैं देखता हूँ कि तुम्हारी और जयसुखलालकी अभी भी ठीक बन नहीं रही है। तुम्हें मैं ज्यादा पहचानने लगा हूँ। इसलिए तुम्हें दोषी माननेका मन नहीं होता। तुम दोनोंके स्वभाव अलग-अलग हैं, वे एक-दूसरेसे मिल नही सकते। ऐसी स्थितिमें यही ठीक है कि तुम दोनो अलग-अलग रहो। ईश्वरने तुम्हे सन्तान तो पर्याप्त दी ही है। पुत्र नही है किन्तु उसका कोई दुख नहीं होना चाहिए। हम पुत्र और पुत्रीके

बीच कोई भेद नही करते। पुत्रियाँ पुत्र-जैसी ही है। और फिर सब होशियार है। इसलिए अपने मनमें पूरा सन्तोष रखना। खर्च जयसुखलाल देगा ही। दूर रहकर एक-दूसरेके लिए निष्ठा रखना। मनमें खेद बिलकुल न करना। दोनोंमें से कोई भी गलत रास्ते पर नही है। जब ऐसा समय आये कि तुम जयसुखलालके साथ उसके जीवनमें घुलमिल सको, तब उसके साथ जरूर रह सकोगी। लड़कियोको आश्रममें जाकर रहनेके लिए प्रेरित करना; इससे तो उनका भी जीवन सुधरेगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मुझे पत्र विस्तारसे लिखना।

गुजराती (एम० एम० यू०/३) की माइक्रोफिल्मसे।

३३७. पत्र : बनारसीदास चतुर्वेदीको

यरवडा मन्दिर
१९ अक्टूबर, १९३०

भाई बनारसीदास,

तुमारी धर्म पत्नीके देहांतकी खबर भाई काशीनाथने दी है। तुमारे शीरसे[1] यह बड़ी आपत्ती आइ है। मृत्युसे तो हमने डरको छोड़ हि दिया है। दुःख स्वार्थका है। मैं समझा हुं तुमारे छोटे बाल-बच्चे है परंतु इससे भी दु.ख क्यों आवे? ऐसी घटनाएं जगतमें बनती हि रहती हैं। हमारी परीक्षाका ये सब घटनाएं काल हैं। हमने परिश्रम करके जो ज्ञान पाया है वह हृदयगत हुआ है या नहि उसकी कसौटी भी ऐसे मौके पर हो सकती है। ईश्वर तुमको शांति बक्शे।

मोहनदासके वं० मा०

जी० एन० २५२५ की फोटो-नकलसे।

१. अर्थात्, सर पर।

३३८. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

यरवडा मन्दिर
२० अक्टूबर, १९३०

भाईश्री खम्भाता,

तुम्हारा पत्र पढकर प्रसन्न हुआ। मेरी तबीयत ठीक रहती है। तुम कैसे हो? मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम दोनो अपनी शक्तिका उपयोग सत्कार्यमें ही करोगे। क्या अभी पूनामें ही रहनेवाले हो?

तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६५९६) की फोटो-नकलसे।

३३९. पत्र : तहमीना पी० जोशीको[1]

यरवडा मन्दिर
२० अक्टूबर, १९३०

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र पढकर मुझे बहुत खुशी हुई। हमने जो बातें की थी उनकी मुझे अच्छी तरह याद है। कभी-कभी अखबारोमें तुम्हारा नाम देखकर मुझे खुशी होती है।[2] आश्चर्य तो मैं तब करता जब जितना काम तुम करती हो उतना काम न करती। हमारी पहली भेंटमें ही मैंने तुम्हारी क्षमता समझ ली थी।

मुझे बराबर पत्र लिखती रहना।

भाई गोदरेजका स्वास्थ्य कैसा है? उनके [कृषि-] फार्मका काम कैसा चल रहा है? उनसे मेरा वन्देमातरम् कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ११४) की फोटो-नकलसे।

१. अर्देशिर गोदरेजकी छोटी बहन। अर्देशिर गोदरेजने मद्यपान-निषेध और अस्पृश्यता-निवारण कार्यके लिए रु० १,००,००० का दान दिया था, जिसके फलस्वरूप उनको सरकारी ठेकेसे हाथ धोना पड़ा।

२. तहमीना जोशी मद्यपान-निषेध और अस्पृश्यता-निवारणके ऊपर सभाओंमें व्याख्यान दिया करती थीं जिनकी खबर अखबारोंमें छपा करती थी।

३४०. तार: मोतीलाल नेहरूको

यरवडा सेंट्रल जेल, पूना
[२१ अक्टूबर, १९३० या उससे पूर्व][1]

पण्डितजी नेहरू
मसूरी

आपके स्वास्थ्यकी अखबारी रिपोर्टें चिन्तोत्पादक है। कृपया तारसे पूरा हाल दें। सुझाव है कि रोजाना बुलेटिन जारी की जाये। सप्रेम।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्सट्रैक्ट्स, (३४) ७५०, भाग १, पृष्ठ २६९

३४१. पत्र: नारणदास गांधीको

१६/२१ अक्टूबर, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला। यहाँसे देर-सबेर होती ही रहेगी। 'आजनो लहावो लीजिएरे काल कोणे दीठी'ती"—आजका आनन्द लूटो कल किसने देखा है, यहाँ तो यही लागू होता है। बारडोलीके कारखानेवाले लोग नही पकड़े गये तो कारखानेका क्या हुआ?[2] अखबारमें तो उसके भी जब्त होनेकी खबर है।

आश्रम मलेरियासे मुक्त रहा है, यह आश्चर्यजनक लगता था; अन्ततक तो नहीं रह सका। मैं मानता हूँ कि वह मुक्त रहने लायक बन सकता है। इस मौसममें पेट खाली और साफ रखना चाहिए। स्टार्च और भारी पदार्थों का जैसेकि दालका त्याग करना चाहिए। जो बचे हुए हैं वे सावधान हो जायें तो स्वस्थ रहेंगे। कुँएका पानी साफ करना चाहिए—परमैंगनेट या क्लोरीन डाल कर। नदीके पानीमें भी डाल देना चाहिए, ऐसा मानता हूँ। इसलिए जिस बर्तनमें नदीका पानी भरा हो,

१. इस तारको मेजर आर० वी० मार्टिनने बम्बई सरकारके गृह-सचिव जी० एफ० एस० कॉलिन्सके पास २१ अक्टूबर, १९३० को निम्नलिखित टिप्पणीके साथ अग्रेषित किया था:

"गांधी संलग्न तार मोतीलाल नेहरूको भेजना चाहते हैं। क्या आप कृपया मुझे सूचित करेंगे कि इसे भेजनेमें कोई आपत्ति तो नहीं है?"

२. बारडोलीके इस कारखानेमें लक्ष्मीदास आसरकी देखरेखमें चरखे आदि बनाये जाते थे।

उसमें कुछ बूँदें डालें जिससे उसका रंग हलका गुलाबी हो जाये। कुछ समय रहने देनेसे रंग बैठ जाता है। इसके बारेमें डाक्टरसे और मालूम कर लेना चाहिए। अमीदासके बारेमें पत्र अलग लिख रहा हूँ।[1] सम्भव है कि वह कल डाकसे भेज दिया जायेगा। मिलनेका समय लिखना।

जमनालालजीको खबर देना कि मैं कोई माँग नही करता। काकासाहब के लिए भी नही की। जमनालालजी या और जो कोई आये, अपने प्रयत्नसे आये; अथवा सरकारी कृपाके बल पर। प्यारेलाल मुझे कभी-कभार मिल सके, इतना बन्दोबस्त करा पाया हूँ। साथी माँगनेमें स्वार्थकी गन्ध है इसलिए नही माँगता। माँगता तो हूँ सबके साथ रहना। पर ऐसा दिन कहाँसे मिले? मथुरादासने भी यही माँग की है, ऐसा काकासाहब से मुलाकात करनेवालेने कहा है। गिरिराजके बारेमे लिख चुका हूँ। तुम्हारे निर्णयमें दोष नही दिखाई दिया।

राजाजीको लिखना कि प्रसिद्धि पा जानेवालोको मैं कम ही लिखता हूँ इसलिए उन्हें भी नहीं लिखता। रोज याद करता हूँ। लक्ष्मी और सुब्बैयाकी पत्नीकी खबर दें। [राजाजी] कैसा स्वास्थ्य लेकर लौटे है?

१९ अक्टूबर, १९३०

तुम्हारी पत्रोकी सूचीमें प्रभावतीका नाम देखता हूँ। उसका पत्र हाथ नही लगा। यहाँ तो नही रोका गया होगा। या तो वह वही रह गया। ऐसा हर सप्ताह होता है इससे इस बार भी उसका नाम लिखा गया होगा। यदि ऐसा हो तो ठीक है। उसने अपने स्वास्थ्यके बारेमें तार दिया है; ठीक लगता है।

वर्धामें तकलीका प्रयोग बहुत नियमपूर्वक चल रहा है। इसका वर्णन तुमने शायद बालकृष्णके पत्रमें देखा होगा। भाऊकी गति आधे घंटेमें १३२ तार है, जो आश्चर्यजनक है। इतनी गतिसे कैसे कात पाते हैं, इसकी ब्योरेवार जानकारी प्राप्त करके छापनी चाहिए। गाण्डीवके बारेमें मेरा सन्तोष कायम है। शायद बढ़ा ही है। इस सम्बन्धमें मीराबहन और ईश्वरलाल बीमावालाको लिखे पत्र पढ लेना। उसने मुझे भी एक नया चरखा भेजनेको लिखा है। उसकी तथा जो चरखे आश्रममें आयें उनकी कीमत चुका देना। चरखेकी परीक्षा करके बादमें परिणाम भेजना। काकासाहब को जो सूत वहाँ मिले उसका अंक, मजबूती और समानताका प्रमाण लिखना।

बारडोलीके मोढियाके बारेमें मैंने मगनभाईके पत्रमें लिखा है वह पढना। मेरा अनुभव तो यह है कि वह हर तरहसे आश्रमके तथा दूसरे सभी मोढियोंसे ज्यादा बढिया है। यदि यह बात ठीक हो, तो अपने सभी चरखोमें ऐसा ही मोढिया लगाना चाहिए। यदि मैंने परीक्षामें भूल की हो तो उसे सुधारना ठीक है। जो आश्रमका मोढिया लगानेका आग्रह करते हैं या जिन्होने बारडोलीवालेको इस्तेमाल करके देखा हो वे मुझे लिखें। मेरा विश्वास है कि गतिकी दृष्टिसे भी अन्तमें बारडोलीका मोढिया ही बढिया ठहरता है। मुझे सुविधा मिली तो गाण्डीव पर भी यह मोढिया चढ़ा कर देखूंगा।

1. देखिए "पत्र : नारणदास गांधीको", १६-१०-१९३०।

अमीदासके बारेमें तुम्हें शुक्रवारको[1] ही पत्र लिखा था। वह मिला होगा। इसे डाकमें डालनेसे पहले ही शायद जवाब भी मिल जाये। वह पत्र न मिला हो तो मुझे तार भेज देना, ताकि उसकी दलील फिर लिख भेजूंगा।

२० अक्टूबर, १९३०

कान्ताको लिखा मेरा पत्र पढ़ना। उसे अब थोड़े समयके लिए बाहर जानेकी इच्छा हुई लगती है। तुम इसपर विचार करना। मुझे यहाँ बैठे हुए लगता है कि जहाँ भी जाना हो थोड़े समयके लिए जरूर हो आये। वह सच बोलती है और बहादुर भी है। और अपना ध्यान रख सके, ऐसी भी है। दिये हुए वचनका पालन करनेवाली भी है। यह तो मेरा अनुभव है। तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करना। उसके मनकी बात मालूम करना।

मगल प्रभात, दीवाली
२१ अक्टूबर, १९३०

तुम सब मित्रोंको मेरा यथायोग्य आशीर्वाद तथा वन्देमातरम्। आनेवाले वर्षमें हम सब और ज्यादा सेवापरायण बनें और उसके लिए ज्यादा योग्य और जागृत बनें।

यज्ञ: हम 'यज्ञ' शब्दका व्यवहार बारम्बार करते हैं। हमने नित्यका महायज्ञ भी रचा है। इसलिए 'यज्ञ' शब्दका विचार कर लेना जरूरी है। इस लोकमें या परलोकमें कुछ भी बदला लिये या चाहे बिना, परमार्थके लिए किये हुए किसी भी कर्मको यज्ञ कहेंगे। कर्म कायिक हो या मानसिक, चाहे वाचिक, उसका विशालसे-विशाल अर्थ लेना चाहिए। 'परमार्थके लिए' का मतलब केवल मनुष्य-वर्ग नहीं; बल्कि जीवनमात्र लेना चाहिए और अहिंसाकी दृष्टिसे भी, मनुष्य-जातिकी सेवाके लिए भी, दूसरे जीवोंकी बलि देना या उनका नाश करना यज्ञकी गिनतीमें नहीं आ सकता।

वेदादिमें अश्व, गाय इत्यादिकी बलि देनेकी जो बात आती है, उसे हमने गलत माना है। वहाँ पशु-हिंसाका अर्थ लें तो ऐसे होम सत्य और अहिंसाकी तराजू पर ठीक नहीं उतर सकते; इतनेसे हमने सन्तोष मान लिया है। जो वचन धर्मके नामसे प्रसिद्ध हैं उनका ऐतिहासिक अर्थ करनेमें हम नहीं फँसते और वैसे अर्थोंके अन्वेषणकी अपनी अयोग्यता हम स्वीकार करते हैं। उस योग्यताकी प्राप्तिका प्रयत्न भी हम नहीं करते, क्योंकि ऐतिहासिक अर्थसे जीव-हिंसा संगत भी ठहरे तो भी अहिंसाको सर्वोपरि धर्म माननेके कारण हमारे लिए अर्थको न रुचनेवाला आचार त्याज्य है।

उक्त व्याख्याके अनुसार विचारने पर हम देख सकते हैं कि जिस कर्मसे अधिक-से-अधिक जीवोंका, अधिकसे-अधिक क्षेत्रमें कल्याण हो और जो कर्म अधिकसे-अधिक मनुष्य अधिकसे-अधिक सरलतासे कर सकें और जिसमें अधिकसे-अधिक सेवा होती हो, वह महायज्ञ है या अच्छा यज्ञ है। अतः किसीकी भी सेवाके निमित्त अन्य किसीका अकल्याण चाहना या करना यज्ञ-कार्य नहीं है और यज्ञके अलावा किया हुआ कार्य बन्धनरूप है, यह हमें 'भगवद्गीता' बताती है, और अनुभव भी यही सिखाता है।

१. स्पष्ट ही गांधीजी भूलसे 'बृहस्पति' की जगह 'शुक्र' लिख गये; देखिए "पत्र: नारणदास गांधीको", १६-१०-१९३०।

ऐसे यज्ञके विना यह जग क्षण-भर भी नहीं टिक सकता, इसीलिए गीताकारने ज्ञानकी कुछ झलक दूसरे अध्यायमें दिखाकर तीसरे अध्यायमें उसकी प्राप्तिके साधनमें प्रवेश कराया है और साफ शब्दोंमें कहा है कि हम यज्ञको जन्मसे ही साथ लाये हैं। यहाँतक कि हमें यह शरीर केवल परमार्थके लिए मिला है और इसलिए यज्ञ किये विना जो खाता है, वह चोरीका खाता है, ऐसी सख्त वात गीताकारने कह डाली। जो शुद्ध जीवन विताना चाहता है, उसके सब काम यज्ञरूप होते हैं। हमारे यज्ञ सहित जन्मनेका मतलब है कि हम जन्मसे ही ऋणी या देनदार हैं। इसलिए हम जगत्के सदाके गुलाम हैं। और जैसे स्वामी गुलामको सेवाके वदलेमें खाना, कपड़ा आदि देता है वैसे ही जगत्का स्वामी हमसे काम लेनेके लिए जो अन्न-वस्त्रादि देता है वह हमें कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करना चाहिए। यह नहीं समझना चाहिए कि जो हमें मिलता है उतनेके हम हकदार हैं, और न मिलने पर मालिकको दोष भी न दें। यह देह उसकी है; वह चाहे इसे रखे, या न रखे। यह स्थिति दुःखद नहीं है, न दयनीय है। यदि हम अपना स्थान समझ ले तो यह स्वाभाविक है और इसलिए सुखद और चाहने योग्य है। ऐसे परम सुखके अनुभवके लिए अचल श्रद्धा तो अवश्य चाहिए। अपने लिए कोई चिन्ता न करना, सव परमेश्वरको सौंप देना, ऐसा आदेश मैंने तो सब धर्मोंमें पाया है।

पर इस वचनसे किसीको घवराना नहीं चाहिए। मनको स्वच्छ रखकर सेवाका आरम्भ करनेवालेको उसकी आवश्यकता दिन-प्रतिदिन स्पष्ट होती जाती है और वैसे ही उसकी श्रद्धा वढती जाती है। जो स्वार्थ छोडनेको तैयार ही नहीं है, अपनी जन्मकी स्थितिको पहचानने को ही तैयार नहीं है, उसके लिए तो सेवाके सब मार्ग मुश्किल हैं। उसकी सेवामें तो स्वार्थकी गन्ध आती ही रहेगी। पर ऐसे स्वार्थी जगत्में कम ही मिलेंगे। कुछ-न-कुछ निस्वार्थ सेवा हम सब जाने-अनजाने करते ही रहते हैं। इसी चीजको विचारपूर्वक करनेपर हमारी पारमार्थिक सेवाकी वृत्ति उत्तरोत्तर वढ़ती रहेगी। उसमें हमारा सच्चा सुख है और जगत्का कल्याण है।

वापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

आज ५८ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

३४२. पत्र : शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
२३ अक्टूबर, १९३०

चि० शारदा,

किसीसे कुछ सीखनेको ईर्ष्या नहीं कहा जा सकता। इसे ईर्ष्या कौन कहता है? अब दमाको पास न फटकने देना। तेरी लिखावट खराब नहीं है। धीरे-धीरे और सुधर जायेगी। शकरीबहन कहाँ है? उससे कहना या उसे लिखना कि वह मुझे पत्र दे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८९३) से। सौजन्य : शारदाबहन जी० चोखावाला

३४३. पत्र : पुरुषोत्तम डी० सरैयाको

२३ अक्टूबर, १९३०

चि० काकू,

तेरी लिखावट तो बहुत अच्छी है। लेकिन चिट्ठी तो कोरी ही कही जायेगी। बम्बईमें क्या काम मिल गया, यह भी तूने नहीं लिखा। कहाँ रहता है? काका साहबका आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

तू प्रार्थना तो करता है? 'गीता' अच्छी तरह समझमें आती है?

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २८०६) से। सौजन्य : पुरुषोत्तम डी० सरैया

३४४. पत्र : पद्माको

२३ अक्टूबर, १९३०

चि० पद्मा[1],

तू मुझे दोष लगाती मालूम होती है! पत्र तू नहीं लिखती और मुझसे पानेकी आशा रखती है? गलेमें जो गाँठ है वह क्या है? इसका निश्चय तुरन्त हो जाना चाहिए। उसे गंगाबहनको दिखाया था? क्या प्रभुभाईवाला चरखा तू रोज चलाती है? चलाये तो अच्छा। इतने ज्यादा तार यदि तू रोज काते तो कितनी बढ़िया बात हो। शीला कैसी है? तू क्या पढ़ती है? क्या खाती है? बराबर ९ बजे सो जाती है? संयुक्त प्रान्तमें क्या काम किया? वहाँ किस-किससे मिली थी?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६११३) की फोटो-नकलसे।

३४५. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
२३ अक्टूबर, १९३०

चि० गंगाबहन (बडी),

तुम्हारा पत्र मिला। एक अनुभवी डाक्टरका मत है कि बुढ़ापेमें जोड़ोंके दर्दसे बचनेके लिए सोडा लेना चाहिए। तुम तो जानती होगी कि मैं रोज किसी-न-किसी बहाने २० ग्रेन सोडा ले लेता हूँ। प्लास्टरसे फायदा हो सकता है। रोगकी जड़ तो अन्दर है। यह पीडा यह चेतावनी देती है कि तुम फल लेनेमें कजूसी न करो, मुख्यत: तुम दूध और फल ही लो। घुटनोंको सूर्य-किरणोंका प्रकाश दे सको, तो अच्छा है। सुबहके आठ बजेका समय अच्छा है।

काकूने कौनसा काम शुरू किया है, यह उसने नहीं लिखा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८७६२) से। सौजन्य : गंगाबहन वैद्य; बापुना पत्रो—६ : गं० स्व० गंगाबहेनने से भी।

१. सीतलासहाय की पुत्री।

३४६. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
२३ अक्टूबर, १९३०

प्रिय भगिनी,

तुमारा खत मिला। सतीशबाबु तारिणीके वियोगका खेद क्यों करे? जिस मकान पर तारिणी गया है वहां तो हम सब जानेवाले हैं हि? स्वार्थके वश भी हम खेद न करें। प्रतिष्ठान न तारिणी चलाता था न तुम चलाती हैं। भगवान चलाता है। हम सब निमित्त मात्र है। और ऐसे हि रहें तो हमें क्या कब हमको भगवान एक कामसे उठाकर दूसरे काममें रखता है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६७३ की फोटो-नकलसे।

३४७. पत्र : बलभद्रको

यरवडा मन्दिर
२४ अक्टूबर, १९३०

चि० बलभद्र,

इस बारका तेरा पत्र अच्छा कहा जा सकता है। वजन अब क्यों नही बढ़ेगा? अगर तू कसरत करे, मनको प्रफुल्लित रखे, और भोजन अच्छी तरह चबा कर खाये तो वजन अवश्य बढ़ेगा। इस प्रयत्नमें कभी हारना नही। घूमने जाता हो तो थोड़ा दौड़ना, और दौड़ते समय मुंह बिलकुल बन्द रखना और श्वास नाकसे लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९२१३) की फोटो-नकलसे।

३४८. पत्र : भगवानजी पण्डयाको

२४ अक्टूबर, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि जिस व्यक्तिका मन व्यवस्थित नही है वह दूसरोंके गुणदोपकी विवेचना नही कर सकता। गिरिराजको मैं तो अच्छी तरह जानता हूँ। उनमें भावनाएँ उत्तम हैं लेकिन उन भावनाओं तक पहुँच सकनेकी शक्ति उनमें बहुत कम है। किन्तु वे प्रयत्नशील हैं इसलिए मैं उनके प्रति आशावान हूँ। आश्रमका ध्येय सत्य और उसके अनुरूप आचारका आग्रह है। इसीको मध्यबिन्दु मानकर सारी रचना की गई है। उद्देश्य ससारमें बहुत नही होते, होने भी नही चाहिए। जो बहुत दिखाई देता है वह सत्य पर आच्छादित सोनेका ढक्कन है।[1] उसके हट जाने पर एक ही वस्तु दिखाई देगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२८) से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्डया

३४९. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

२४ अक्टूबर, १९३०

चि० मथुरादास,

तुम्हे मैं पिछले सप्ताह ही लिखना चाहता था, किन्तु लिखना रह गया। तुम्हारी हस्तलिखित पुस्तक मैं पूरी पढ गया हूँ; बहुत अच्छी लगी। मैंने देखा कि उसमें धुनकीके प्रति तुम्हारा प्रेम छलक रहा है। उसपर मैं मुग्ध हो गया, इसलिए उसे आलोचककी दृष्टिसे नही पढ सका। अब तो वह छपे हुए रूपमें मिलेगी ही, तब आलोचनाकी दृष्टिसे पढकर यदि मुझे तुम्हें कोई सूचनाएँ देनी होंगी तो दूँगा। [धुनकीकी डोरी पर] मोमबत्ती घिसनेके बाद भी तुम हरे पत्ते घिसनेको कहते हो। किन्तु विट्ठल लिखता है कि फिर कुछ करनेकी जरूरत नही है। ऐसा क्यों?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७४७) की फोटो-नकलसे।

१. ईशोपनिषद, ५, १५।

३५०. पत्र : राधाबहन गांधीको

यरवडा मन्दिर
२४ अक्टूबर, १९३०

चि० राधिका,

तेरा पत्र मिला। रुखीको लिखना कि मुझे लिखे। काशीमें बनारसी क्या करेगा? काशीकी जलवायु तो बहुत अच्छी मानी जाती है इसलिए रुखीको वह जगह माफिक आनी चाहिए। नवीनका पत्र आया है; वह उसमें अपनी निर्दोषताकी घोषणा करता है। तू उससे मिलना और शान्तिसे बात करना; तुझे जो मालूम है और जिसके सच होनेका तुझे विश्वास है ऐसा सब उसे दृढ़तापूर्वक बताना। नवीन अपनी निर्दोषता सिद्ध कर दे और ऐसा प्रगट हो कि तूने या केशुने उसे दोषी माननेमें भूल की है तो यह बहुत अच्छी बात होगी। इस बातकी खोज तटस्थ भावसे करना। बात ऐसी नहीं है जिसे छोड़ दिया जाये; साथ ही उसे लेकर उद्विग्न भी मत होना। तेरी लिखावट मेरे लिए चित्र-जैसी सुन्दर है। इस बार तेरा हाशिया थोड़ा टेढ़ा हो गया है। ऐसी सुन्दर लिखावटमें यह दोष आँखोंको उसी तरह खटकता है जिस प्रकार दूधमें धूलका काला कण।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६८८) से। सौजन्य : राधाबहन चौधरी

३५१. पत्र : दुर्गा गिरिको

यरवडा मन्दिर
२४ अक्टूबर, १९३०

चि० दुर्गा,

"अब और क्या लिखूँ?" ऐसा तू क्यों लिखती है? एक हफ्तेमें तो बहुतेरी घटनाएँ घट जाती हैं। उनका वर्णन करनेकी शक्ति आनी चाहिए। तेरी उमरकी लड़कीके मनमें तो सैकड़ों विचार उठते रहते हैं। उन विचारोंकी बात भी लिखी जा सकती है। हाँ, एक शर्त है — लिखनेका उत्साह चाहिए, उसमें मन तल्लीन होना चाहिए। अगर तू डायरी रखती हो, और उसमें सब-कुछ लिखती हो, तो उसमें से भी लिखनेके लिए विषय मिल सकते हैं।[1]

बापूके आशीर्वाद

बापूकी विराट् वत्सलता

१. मूल पत्र गुजरातीमें था।

३५२. पत्र : नारायण देसाईको

यरवडा मन्दिर
२५ अक्टूबर, १९३०

श्री नारायणराव,

या 'बावलो'[1] कहूँ? लकीरे तो तूने बहुत अच्छी खींची मालूम होती है। लेकिन लकीरे खींचनेके बजाय अब तू चित्र-जैसे सुन्दर अक्षर लिखना सीख। महादेव आ गये है इसलिए अब तो खूब मजा आ रहा होगा। उन्हे जल्दी वापस मत भेज देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९४७४) की फोटो-नकलसे।

३५३. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
२६ अक्टूबर, १९३०

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र और बिहारी चरखेको चलानेके बारेमें विस्तृत निर्देश मिल गये। तुम्हारे बताये अनुसार मैंने सब बातें की, बस यह नही समझ आया कि माल कहां चढ़ाई जाये। मुझे मालूम नही कि वह चरखेके चौखटेके नजदीक चढाई जाये या दूर। फिर भी मैं एक और प्रयत्न करके देखूंगा कि वह चलता भी है या नहीं। कमसे-कम उसे चलना तो चाहिए। इधर गाण्डीव बराबर सन्तोष दे रहा है। अभी तक तो इसने कोई तकलीफ दी नही है। मैंने तुम्हे बताया या नही कि इसमें हर रोज काम करनेके बाद तकुएको निकालनेकी जरूरत नही होती। काम करनेके बाद इसे दीवार पर टाँग दिया जाता है। इस प्रकार इसमें रोज सुबह जांच-पड़तालकी जरूरत नही रहती जैसीकि दूसरे सब चरखोंमें होती है। और जितना ही अधिक मैं इसपर काम करता हूँ उतनी ही मेरी यह धारणा दृढ होती जाती है कि इसमें किसी भी चरखेके बराबर उत्पादन करनेकी क्षमता है। मेरे पास अब तराजू आ गया है। मैं २४ तथा उससे ज्यादा अंकका सूत कातता हूँ और मेरी अधिकतम गति २०० तार है। पेटी चरखेके मुकाबले यह गति काफी ज्यादा है। मुझे बस एक बारकी याद है जब मैंने पेटी चरखे पर इतनी गतिसे काता था। बहरहाल मैं जानता हूँ कि

1. छोटे बच्चोंके लिए गुजरातीका प्रचलित सम्बोधन।

जबतक मुझसे ज्यादा कुशल कर्तैये अपना मत देकर इसकी पुष्टि नही करते तबतक मेरी रायका कोई मूल्य नही है।

मुझे खुशी है कि तुम अभी तो दौरे पर नही जा रही हो। तुम्हें अपना शरीर फिरसे स्वस्थ बना लेना चाहिए। हम दोनोकी तबीयत अच्छी रहती है। पिछले गुरुवारको मेरा वजन १०५ था और काका का ११७। मैंने तरकारियाँ काफी कम कर दी हैं और खजूर फिर लेने लगा हूँ। अभी और फेरबदल होंगे।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४१७) से। सौजन्य: मीराबहन; जी० एन० ९६५१ से भी।

३५४. पत्र: महेन्द्र वा० देसाईको

यरवडा मन्दिर
२६ अक्टूबर, १९३०

श्री मानसिंह[1],

तुझे 'देसाई' कहूँ या 'चि० मनु', इसका निर्णय करके मुझे सुन्दर लिखावटमें लिख भेजना। अध्यक्ष और मन्त्री अब भी ऊधम करते है या उनमें पदाधिकारी बननेपर कुछ गम्भीरता आ गई है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७४०८) की फोटो-नकलसे। सौजन्य: वा० गो० देसाई

१. गांधीजी द्वारा अपने मित्र वा० गो० देसाईके पुत्रका दिया गया प्यारका नाम।

३५५. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
२६ अक्टूबर, १९३०

चि० प्रेमा,

नासिकसे लिखा हुआ तेरा पत्र मिला। धुरन्धरके अनुवादके बारेमें मैंने जो लिखा था वह याद है न? उसने अनुवाद किया सो ठीक किया, लेकिन चूंकि अब लिमयेने भी उसका अनुवाद कर दिया है, इसलिए हमें इसपर विचार करना चाहिए कि धुरन्धरके अनुवादको प्रकाशित करवाया जाये या नहीं। आराम करनेसे तबीयत अच्छी रहती है, यह इस बातका परिचायक है कि तू कामका बोझ सिर पर उठाये फिरती है। काम करने पर भी उसका भार महसूस न हो, यह अनासक्तिका गुण है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८८) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२४० की फोटो-नकलसे भी।

३५६. पत्र : गंगाबहन झवेरीको

यरवडा मन्दिर
२६ अक्टूबर, १९३०

चि० गंगाबहन (झवेरी),

तुम्हारा यह पत्र तो कुछ हफ्तोंके बाद मिला है। लगता है, नानीबहन तुम्हारे साथ नहीं है। तुम बीमार क्यों पड़ी? भूख न लगे, तब उपवास करना चाहिए। कमजोरी मालूम हो तो भी। ऐसी कमजोरीको झूठी कमजोरी समझना चाहिए। पूरा उपवास न सधे तो अंगूर, संतरा आदि ताजे फल लें लेकिन और कुछ नहीं, और एनीमासे पेट साफ रखें। तबीयत बिगड़ने नहीं देनी चाहिए। पानी उबाला हुआ ही पिया जाये तो अच्छा। मुझे पत्र लिखती रहना। अभी स्त्रियोंके करनेका बहुत सारा काम बाकी है। तुम्हारे साथ दूसरी स्त्री-कार्यकर्त्ता कौन है? भाई पानाचन्दको मेरे आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

हम दोनोंकी तबीयत ठीक है।

गुजराती (जी० एन० ३१०६) की फोटो-नकलसे।

३५७. पत्र : कुँवरजी मेहताको

यरवडा मन्दिर
२६ अक्टूबर, १९३०

भाई कुँवरजी,

तुम्हारा पत्र मिला। यदि अभीतक सरकारके प्रिय मेहमान नहीं हुए हो तो यह पत्र तुम्हें मिल जायेगा। लक्ष्मीदासके चले जाने पर अब क्या व्यवस्था की जा रही है, सो लिखना। मन्दिरवासियों[1]से मिलो, तब उन्हें मेरा आशीर्वाद कहना। इतने वर्षोंके कामके बाद लोगोंमें आवश्यक साधन अपने बल पर निर्माण कर लेनेकी शक्ति तो आ ही जानी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २६८७) की फोटो-नकलसे।

३५८. पत्र : लक्ष्मीबहन खरेको

यरवदा मन्दिर
२६ अक्टूबर, १९३०

चि० लक्ष्मीबहन,

पत्र तो पण्डितजीका मिला है, पर उन्हें लिखनेके बदले तुम्हें लिख रहा हूँ। जो बीमार पड़ जाये उसे लिखनेकी इच्छा तो रहती ही है। सेवा करते हुए कोई बीमार क्यों पड़े? पर कितना ही ध्यान रखा जाये, फिर भी बीमारी कई बार चोरकी तरह छिपे-छिपे आ जाती है। आशा है, अब चोरको भगा दिया होगा। स्वास्थ्यको बिगड़ने मत देना। क्या मथुरी कुछ कमजोर रह गई है? कई बच्चे चेचकके बाद ज्यादा ताकतवर हो जाते हैं। मणिलालका ऐसा ही हुआ था। मुझे ब्योरेवार पत्र लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७७) से। सौजन्य : लक्ष्मीबहन खरे

१. अभिप्राय कैदियोंसे है।

३५९. पत्र : कलावती त्रिवेदीको

२६ अक्टूबर, १९३०

चि० कलावती,

तुमारे खतमें से काशीनाथ कुछ २ फिकरे भेजते हैं। उसमें से देखता हूं तुम बहोत गभराहटमें रहती है। जो अनासक्तियोगकी साधना करते हैं उसके लिये गभराहट जैसी कोई चीज नहिं है। जिसने सब ईश्वरार्पण किया उसके पास गभराहटका मौका हि कहां है? जीजी[1] के पीसनेके परिश्रमसे कुछ हानि होनेका सभव नहिं है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२५५ की फोटो-नकलसे।

३६०. पत्र : शान्ताको[2]

२६ अक्टूबर, १९३०

चि० शान्ता,

काशीनाथ लिखते हैं मेरा पत्रकी तुम प्रतीक्षा कर रही है। कोई पत्र लिखनेका बाकी है ऐसा मेरे मनमें तो न था। तुमारा शरीर अच्छा है और कामोंमें समय व्यतीत कर रही है सुनकर आनद हुआ। आश्रम में से प्रत्यक्ष क्या लेना का है वह तो सब जानते हैं परन्तु जो सत्यकी आराधना करते हैं उनको जो अप्रत्यक्ष मिलता है वह प्रत्यक्षसे बहोत अधिक है। इसे तुम ग्रहण कर सके ऐसा मैं चाहता हूं।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२५७ की फोटो-नकलसे।

१. सम्भवतः कलावती त्रिवेदीकी सास।

२. काशिनाथ त्रिवेदीकी छोटी बहन, जो उस समय आश्रममें रह रही थी।

३६१. तार: जयशंकर त्रिवेदीको

पूना
[२७ अक्टूबर, १९३०][1]

प्रोफेसर त्रिवेदी
विद्यापीठ
अहमदाबाद

मनुकी बीमारीके बारेमें सुनकर हम दोनों चिन्तित हैं। हालतकी सूचना तारसे दें। हम उसके स्वस्थ होनेकी प्रार्थना करते हैं।

गांधी

अंग्रेजी (जी० एन० १०००) की फोटो-नकलसे।

३६२. पत्र: वी० ए० सुन्दरम्‌को

यरवडा मन्दिर
२७ अक्टूबर, १९३०

प्रिय सुन्दरम्,

तुम अपनेको आराम दे रहे हो, यह जानकर खुशी हुई। आशा है सावित्री[2] और बच्चे ठीक हैं। पुस्तक और कागजके लिए कृपया प्रोफेसर राधाकृष्णन्[3]को मेरा धन्यवाद कहना।

तुम सबको प्यार सहित,

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० ३१८६) की फोटो-नकलसे।

१. डाककी मुहरसे; देखिए "पत्र: जयशंकर त्रिवेदीको", २७-१०-१९३० भी।
२. सुन्दरम्‌की पत्नी।
३. डॉ० सर्वेपल्ली राधाकृष्णन्।

३६३. पत्र : प्रभावतीको

२७ अक्टूबर, १९३०

चि० प्रभावती,

तू बहुत घबरा गई है। लेकिन घबरानेका कोई कारण नहीं। यदि घरका सारा कामकाज तेरे सिर पर आ पड़ा है तो उसे उठानेके लिए तू समर्थ है। यदि जवाबदेही तेरी है तो तुझे अधिकार भी होना चाहिए। घरकी व्यवस्था जैसी तुझे अच्छी लगे, तू वैसी कर सकती है। जयप्रकाश तो उसमें तेरी सहायता करेगा ही। ससुरके साथ सगी लड़कीके समान मुक्तभावसे सब बातें करना। उन्हें पहले-पहल कदाचित् थोड़ा संकोच होगा, लेकिन बादमें तू देखेगी कि वे भी मुक्तभावसे तुझसे बात करेंगे और तेरा मार्ग सरल करेंगे। घरमें नौकर-चाकर तो है ही। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए सब व्यवस्था करना। अपनी सामर्थ्यके बाहर काम न करना। पढ़ने, घूमने और शान्तिपूर्वक मनन करनेका समय बचा लेना; इस तरह एक आदर्श गृहस्थी बनाना। यदि तुझे समस्त अधिकार नही मिलते तभी यह विचारणीय बात होगी। लेकिन अभी तो मेरा मन इस बातको स्वीकार ही नही करता कि तुझे अधिकार नही मिलेगा। तू आत्मविश्वास रखना, दृढ बनना। ईश्वर तुझे उबार लेगा और तेरा पथ-प्रदर्शन करेगा। तू कदापि शोकाकुल न होना। मुझे ज्यादा बार पत्र लिखनेका मन हो तो लिखना। सीधे भी लिख सकती है। मिलना होगा तो अवश्य मिलेंगे। भगवान तेरी रक्षा करें।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३७६) की फोटो-नकलसे।

३६४. पत्र : भगवानजी अनूपचन्द मेहताको

यरवडा मन्दिर
२७ अक्टूबर, १९३०

भाईश्री भगवानजी,

आपका पत्र मिला। भाई रेवाशंकरकी खबर पढकर दुःख हुआ। उनकी सादगी जैसी आप लिखते हैं, सचमुच वैसी ही थी। उनकी आत्माको भगवान् शान्ति देंगे ही।

सुदर्शनके सम्बन्धमें इसके साथ देवचन्दभाई के नाम पत्र तो लिख रहा हूँ; किन्तु जहां हूँ वहांसे इस मामलेमें मैं अधिक क्या कर सकता हूँ?

भाई नरभेरामके बारेमें आपने जो लिखा है उसे सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ। वे अविश्वसनीय सिद्ध हुए हैं, यह माननेमें मेरे जीको बहुत चोट पहुँचेगी। मेरी

सलाह यह है कि उनसे पंचकी मार्फत फैसला करा लेनेके लिए कहा जाये। वे न मानें तो आप नुकसान सह लें। मामलेको न्यायालयमें न ले जाया जाये, ऐसी मेरी सलाह है। जो प्रतिष्ठा बैंक ऑफ इंग्लैंडकी लन्दनमें या कहो कि दुनियामें है, वही करसनजी मूलचन्दकी हमारी छोटी-सी दुनियामें, राजकोटमें है। अपने-अपने क्षेत्रमें दोनोंकी प्रतिष्ठा समान है। मैं तो यही चाहूँगा कि यह प्रतिष्ठा पुन: स्थापित हो। आपको लड़ना नहीं चाहिए; पैसा तो आज है और कल नहीं है।

मोहनदासका वन्देमातरम्

गुजराती (जी० एन० ५८१३) की फोटो-नकलसे।

३६५. पत्र: जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२७ अक्टूबर, १९३०

भाई त्रिवेदी,

तुम पति-पत्नी, दोनोंको, रिश्तेदारोंको और मित्रोंको पुन: मनुके विषयमें चिन्तामें पड़ना पड़ा है। हम दोनोंने आज तार तो भेजा है।[1] तुम्हें मिल गया या नहीं, यह तो कल ही मालूम हो सकेगा। मैं जानता हूँ कि तुममें भरपूर धैर्य है, इसलिए आश्वासन तो क्या दूँ? ऐसी बीमारियाँ हमारे लिए परीक्षा-रूप हैं। ऐसा नहीं है कि जो लोग ईश्वरमें आस्था रखते हैं उन्हें ऐसा कोई पट्टा लिख दिया गया है कि सदा सुखका अनुभव करते रहो। किन्तु काकासाहब और मैं, दोनों ही यह मानते हैं कि मनु सुरक्षित है। हम मानते हैं कि ईश्वर उससे उसकी इसी देहके द्वारा काम लेना चाहता है। जबतक बीमारी गम्भीर है तबतक प्रतिदिन खबर देते रहना। मेरा खयाल है कि खबर प्रतिदिन मिलती रहे, ऐसी व्यवस्था हो सकेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९९९) की फोटो-नकलसे।

१. देखिए "तार: जयशंकर त्रिवेदीको", २७-१०-१९३०

३६६. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२७ अक्टूबर, १९३०

चि० मनु,

तू फिर बीमार पड गया ! किन्तु तेरे ऊपर भगवानकी कृपा है। तेरा मनोबल उत्तम है इसलिए हम दोनो यह आशा रखते हैं कि यह पत्र वहां पहुँचेगा तबतक तो तू संकटसे मुक्त हो चुका होगा। स्थिति कितनी भी विषम हो, उसमें सदा शान्त रहनेका पाठ तो तूने सीखा ही है। पूरा आराम लेकर शरीरको बिल्कुल नीरोग बना लेना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७६६)की फोटो-नकलसे।

३६७. पत्र : तारामती मथुरादास त्रिकमजीको

२७ अक्टूबर, [१९३०][1]

तुम्हारा पत्र मिला। पढकर बहुत प्रसन्न हुआ। दिलीप तो अब बहुत बड़ा लगता होगा। देवलालीमें मिलनेके बाद तो मैंने उसे फिर देखा ही नहीं। कभी-कभी मित्रोंसे मिलने-जुलनेसे मनको धीरज मिलता रहेगा। प्यारेलाल भी इसी जेलमें है। किन्तु उसे मेरे साथ नही रखा गया। हाँ, कभी-कभी उससे मिल जरूर लेता हूँ। पढनेका शौक न हो, तो मैं सलाह दूंगा कि तुम्हें कुछ पढना चाहिए नवजीवन कार्यालय द्वारा प्रकाशित की गई बहुत-सी पुस्तकें पढने लायक हैं; और तुम उन्हें आसानीसे समझ भी सकती हो।

[गुजरातीसे]
बापुनी प्रसादी

१. साधन-सूत्रके अनुसार १९३० में तारामतीके पति जब जेलमें बीमार पड़े तब उन्होंने गांधीजीको पत्र लिखना आरम्भ किया।

३६८. पत्र : नारणदास गांधीको

२३/२८ अक्टूबर, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा पुलिंदा (कल) बुधवारको दो भागोंमें मिला। दो भाग यहीं अधिकारियोंने किये थे। यहाँसे जो पत्र २१ को भेजे थे, वे कब और कैसे मिले, यह लिखना। मेरी डाकका तुम्हें बोझ नहीं लगता, मेरे लिए इतना ही काफी है। जबतक सुविधा मिलती है, तबतक नियमानुसार लिखता ही रहूँगा। अमीदासकी खबर मिले तो लिखते रहा करो। मेरी अंडों सम्बन्धी रायके लिए कुछ कहना चाहो तो लिखना। प्यारेलालको नासिक नहीं भेजा जायेगा, इतना मैं निश्चित रूपसे जानता हूँ। दो-एक दिनमें फिर मिल पाऊँगा। चितालियाके बारेमें मालूम करने पर यदि रकम देना ठीक हो, तो दे देना। उसे परेशानी मत भोगने देना। तुमने छगनलाल जोशीसे पूछा था? शायद उसने कुछ लिखकर रखा हो। वह तो तुम्हारा पड़ोसी ही है न? वह वहाँ कैसा रहता है, यह भी लिखना। फिलहाल मीराबहन का कहीं बाहर आने-जानेका विचार नहीं है, यह मुझे अच्छा लगा। देवदासका एक भी छोटा-बड़ा पत्र मुझे नहीं मिला। [उसने पत्र] जेलसे सीधा भेजा था या और किसी तरीकेसे? खबर मिलने पर खोज करूँगा। जीवराम भाईको मुझे लिखनेके लिए कहना।

चन्द्रकान्ताने लिखा है कि कुमारप्पाका पत्र साथ है, किन्तु उक्त पत्र नहीं मिला। उसके बदले रेवरेंड होम्सका है। उसके ऊपर कुमारप्पाकी मार्फत लिखा है। उसीसे कान्ताने कुमारप्पाका नाम लिख दिया, ऐसा काकासाहब का अनुमान है। मणिलालने पढ़नेके बारेमें मेरी सलाह माँगी है। इसीका विचार करते-करते मैं सो गया होऊँगा। तब जो स्वप्न आया सो लिख रहा हूँ, और पढ़नेके बारेमें वही मेरी सलाह भी है। [मैंने देखा,] मणिलाल मेरे पास खड़ा है। देवदास बच्चा है और मेरी गोदीमें बैठा है और ऊँघ रहा है। मणिलाल कहता है कि मेरा बहुत समय बिना पढ़े निकल गया; किन्तु अब पढ़नेका शौक होता है। इसलिए मुझे बताइए। मैं पश्चात्ताप करता हूँ कि बच्चोंकी शिक्षाके लिए ज्यादा नहीं कर सका। और फिर [स्वप्नमें ही] मणिलालको मैंने यह लिखकर दिया : "गोखलेका अंक-गणित पूरा कर लो। समय मिले तो बीजगणित और ज्यामिति भी। हिन्दुस्तानका इतिहास और भूगोल विस्तृत रूपसे और दुनियाका सामान्य रूपसे जान लो। टॉल्स्टॉयकी 'किंगडम ऑफ हेवेन इज विदिन यू', संस्कृतमें भण्डारकर [की किताब] और 'गीता', गुजरातीमें 'नवजीवन माला', कि० भाई[1] की 'जीवनशोधन' और तुलसीकृत 'रामायण'। अंकगणित आदि सीखनेके लिए गुजराती पुस्तकें पढ़ना। पुस्तकें मगनभाईसे मँगा लो।" इतना लिख चुका तो आँख खुल गई। अभी थोड़ा-सा और भी था, किन्तु मुझे याद नहीं आ रहा है। अर्थात् सुबह ३-३० बजे आँख खुली, तब भी भूल गया

१. किशोरलाल घ० मशरूवाला।

था। स्वप्नमें जो लिखा सो मुझे ठीक लगा है। ऊपर लिखेमें जो दिलचस्प लगे और जितना हो सके, उतना मणिलाल करे। या उसे पढ़नेका रस लगानेवाला महादेव है, इसलिए जैसा महादेव बताये वैसा करे। स्वप्नमें सूझी हुई वस्तुओंका मुझे कोई आग्रह नही है, और इसके अलावा मुझे स्वयं यहांसे मणिलालके लिए कुछ सूझना भी नहीं। मै रामदासको भी यही सलाह दूंगा। स्वप्नोंको मैं किसी प्रकारका महत्त्व नही देता। मणिलालका प्रश्न मेरे सामने था। देवदासके पत्रकी बात मनमें थी ही। अतः पेटमें कुछ गड़बड़ी हुई होगी और उसके कारण ऐसा मीठा स्वप्न आया हो तो उसमें कोई आश्चर्य नही। ब्रजकृष्णको लिखना कि मुझे ऐसा संकेत दिया गया है कि जहांतक हो सके मैं कैदियोंको न लिखूं, इसलिए नही लिखता। किन्तु रोज उसे याद करता हूं। वह स्वास्थ्यका खूब ध्यान रखे। हर क्षणका सदुपयोग करे और उसका हिसाब रखे। इसीको पत्र समझे। वह तो पत्र लिखा ही करे।

मगल प्रभात, २८ अक्टूबर, १९३०

यज्ञके विषयमें पिछले सप्ताह लिख कर भी अभी मेरा मन भरा नहीं है। जिस चीजको जन्मके साथ लेकर हमने इस ससारमें प्रवेश किया है उसके बारेमें कुछ अधिक विचार करना व्यर्थ न होगा। यज्ञ नित्य-कर्त्तव्य है, चौबीसो घटे आचरणमें लानेकी वस्तु है, इस विचारसे और यज्ञका अर्थ सेवा समझकर 'परोपकाराय सतां विभूतयः' वचन कहा गया है। निष्काम सेवा परोपकार नही है, बल्कि अपने निजके ऊपर उपकार है। जैसे कर्ज चुकाना परोपकार नही, बल्कि अपनी सेवा है, अपने ऊपर उपकार है, अपने ऊपरसे भार उतारना है, अपने धर्मकी रक्षा करना है। फिर किसी सन्तकी ही पूंजी 'परोपकारार्थ', या अधिक सुन्दर भाषामें कहिए तो 'सेवार्थ' हो सो बात नही है, बल्कि मनुष्य-मात्रकी पूंजी सेवार्थ है। और यह होने पर सारे जीवनमें भोगका खात्मा हो जाता है, जीवन त्यागमय हो जाता है। मनुष्य त्याग करके ही भोग करता है। पशु और मनुष्यके जीवनमें यह भेद है। जीवनका यह अर्थ जीवनको शुष्क बना देता है, इससे कलाका नाश हो जाता है, गृहस्थ जीवनका नाश हो जाता है, अनेक लोग यह आरोप लगाकर उक्त विचारको सदोष समझते है। पर मेरे खयालमें ऐसा कहना त्यागका अनर्थ करना है। त्यागके मानी ससारसे भाग कर जंगलमें जा बसना नही है, बल्कि जीवनकी प्रवृत्तिमात्रमें त्यागका सचार करना है। एक गृहस्थका जीवन त्यागमय और भोगमय दोनो हो सकता है। मोचीका जूते सीना, किसानका खेती करना, व्यापारीका व्यापार करना और नाईका हजामत बनाना त्याग-भावनासे हो सकता है या उसमें भोगकी लालसा हो सकती है। जो यज्ञार्थ व्यापार करता है, वह करोडोंके व्यापारमें भी लोक-सेवाका ही खयाल रखेगा, किसीको धोखा नही देगा, सट्टेबाजीकी जोखिम नही उठायेगा, करोड़ोकी सम्पत्ति रखते हुए भी सादगीसे रहेगा, करोड़ो कमाते हुए भी किसीकी हानि नही करेगा। किसीकी हानि पहुँचानेके बजाय स्वयं करोड़ोकी हानि भी उठा लेगा। कोई इस खयालसे न हँसे कि ऐसा व्यापारी मेरी कल्पनामें ही बसता है। संसारके सौभाग्यसे ऐसे व्यापारी

पश्चिम और पूर्व दोनोंमें हैं। हाँ चाहे अँगुलियों पर ही गिनने-भरको, पर एक भी जीवित उदाहरण रहने पर उसे फिर कल्पनाकी वस्तु नहीं कह सकते। ऐसे एक लोकोपकारी दर्जी[1] को आपने वढ़वाणमें देखा ही है। ऐसे एक नाईको मैं जानता हूँ और ऐसे ही एक बुनकर[2] को हम लोगोंमें से कौन नहीं जानता। देखने-ढूँढ़नेपर हम सब धन्धोंमें केवल यज्ञार्थ अपना धन्धा करने और तदर्थ जीवन बितानेवाले आदमी पा सकते हैं। यह अवश्य है कि ऐसे याज्ञिक अपने धन्धेसे अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं। पर वे अपना धन्धा आजीविकाके निमित्त नहीं करते, आजीविका उनके लिए उस धन्धेका गौण फल है। मोतीलाल पहले भी दर्जीका धन्धा करता था और ज्ञान होनेके बाद भी दर्जी बना रहा। भावना बदल जानेसे उसका धन्धा यज्ञरूप बन गया, उसमें पवित्रता आ गई और पेशेमें दूसरेके सुखका विचार शामिल हो गया। उसी समय उसके जीवनमें कलाका प्रवेश हो गया।

यज्ञमय जीवन कलाकी पराकाष्ठा है, सच्चा रस उसीमें है, क्योंकि उसमें से रसके नित्य नये झरने प्रकट होते हैं। मनुष्य उन्हें पीकर अघाता नहीं है, न वे झरने कभी सूखते हैं। यज्ञ यदि भाररूप जान पड़े तो यज्ञ नहीं है, जो अखरे वह त्याग नहीं है। भोगका अन्त नाश है, त्यागका अन्त अमरता। रस स्वतन्त्र वस्तु नहीं है, रस तो हमारी वृत्तिमें मौजूद है। एकको नाटकके पर्दोंमें मजा आता है, अन्यको आकाशमें नित्य नये-नये प्रकट होनेवाले दृश्योंमें। रस परिशीलनका विषय है। जो चीज रसके रूपमें बचपनसे सिखाई जाती है, जिसे रसके नामसे जनतामें प्रवेश कराया जाता है, वह रस माना जाता है। हम ऐसे उदाहरण पा सकते हैं जिनमें किसी जातिको रसमय लगनेवाली चीज दूसरी जातिको रसहीन लगती है।

यज्ञ करनेवाले अनेक सेवक मानते हैं कि हम निष्काम भावसे सेवा करते हैं, अतः लोगोंसे आवश्यकता-भरको, और अनावश्यक भी, लेनेका हमें परवाना मिल गया है। जहाँ किसी सेवकके मनमें यह विचार आया कि उसकी सेवकाई गई, सरदारी आई। सेवामें अपनी सुविधाके विचारकी गुंजाइश ही नहीं होती है। सेवककी सुविधा स्वामी अर्थात् ईश्वर देखनेवाला है; देनी होगी तो वह देगा। यह ख्याल रखते हुए सेवकको चाहिए कि जो-कुछ आ जाये उस सबको ही न अपना बैठे। आवश्यकता भर ही ले, बाकीका त्याग करे। अपनी सुविधाकी रक्षा न होने पर भी शान्त रहे, रोष न करे, मनमें भी खिन्नता न लाये। याज्ञिकका पुरस्कार, सेवककी मजदूरी, यज्ञ-सेवा ही है। उसीमें उसका सन्तोष है।

सेवा-कार्यमें बेगार भी नहीं काटी जाती। उसे अन्तके लिए नहीं छोड़ा जाता। अपना काम तो सँवारे; लेकिन पराया काम बिना पैसेके करता है, इस ख्यालसे जैसा-तैसा या जब चाहे तब करनेमें भी हर्ज न समझनेवाला यज्ञका ककहरा भी नहीं जानता। सेवामें तो सोलहों शृंगार करने पड़ते हैं, अपनी सारी कला उसमें खर्च

१. मोतीलाल नामक दर्जी, देखिए खण्ड १४, पृष्ठ, ४३, पाद-टिप्पणी ३।

२. शायद कबीरसे आशय है।

कर देनी पड़ती है। पहले यज्ञ, फिर अपनी सेवा। मतलब यह है कि शुद्ध यज्ञ करनेवालेके लिए अपना कुछ नहीं है। उसने सब 'कृष्णार्पण' कर दिया है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

आश्रममें सबसे अच्छी तरह तकली चलानेवाला व्यक्ति यह लिख भेजे कि वह तकलीसे किस तरह कातता है, तकलीकी गति किस तरह बढ़ाता है, एक बारमें कितना लम्बा तार खींचता है, आदि। मैं एक घंटेमें ४४ फेरेसे ज्यादा नहीं कात पाता, यह बुरा लगता है। प्रो० त्रिवेदीने काँटा भेज दिया है। इसलिए तुम न भेजना।

७२ पत्र हैं।

बापू

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

३६९. पत्र : प्रेमलीला ठाकरसीको

यरवडा मन्दिर
२८ अक्टूबर, १९३०

प्रिय बहन,

मेरे पास धुननेके लिए जितनी रुई थी वह अब समाप्त हो रही है। अभी तक आश्रमसे मँगवाता था। इस बार तुम्हें कष्ट दे रहा हूँ। इसमें लालच यह है कि तुम अपने पास ऐसी रुई न रखती हो तो रखने लगो। यह रुई हाथसे ओटी हुई होनी चाहिए। जिनिंग प्रेसकी गाँठकी रुई हाथसे धुननी मुश्किल होती है और उसका सूत अच्छा नहीं निकलता। यदि तुम ऐसी रुईका संग्रह अपने पास नहीं रखती हो तो आश्रमसे अथवा विट्ठलदास जेराजाणीके पाससे मँगा सकती हो। शायद स्थानीय खादी-कार्यालयमें भी हो। तुम यह सब करनेका कष्ट करो, इसीलिए तो तुमसे अनुरोध कर रहा हूँ।

तुम्हारी सिलाईकी मशीनका उपयोग मैं और काकासाहब बराबर कर रहे हैं।

मोहनदासके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४८१४) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : प्रेमलीला ठाकरसी

३७०. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

२८ अक्टूबर, १९३०

भाई घनश्यामदास,

आपकी आध्यात्मिक अशांति मुझको एक तरह अच्छी लगती है। इसीमें से सच्ची शांति पैदा होगी। खादीका कार्य भले भाई महावीरप्रसाद हि करते रहे, और आप उसकी फिकर न करें। परंतु मेरा विश्वास है कि कुछ एक पारमार्थिक काममें केवल पैसे हि नहिं परंतु दिल भी लगानेसे कुछ शांति मिलेगी। धंदेकी देखभाल करनेमें ज्यादा समय जायगा [यह] में समज सकता हुं। सारा समय उसीकी चिंतामें रहनेसे न धंदा अच्छा बनता है न उससे मनको शांति मिल सकती है। यज्ञके बारेमें इसी सप्ताहमें जो कुछ मैंने लिख भेजा है ध्यानसे पढें। कैसा भी हो, मेरा विश्वास है कि आपका प्रयत्न इतना दृढ़ है और आपका दिल ऐसा साफ प्रतीत होता है कि आपको शांति अवश्य मिलेगी और सच्चा रास्ता भी दिखाई पड़ेगा।

आपका,

मोहनदास

[पुनश्च :]

जिस बहनको मैं मसुरीमें मिला था वह कहां है, कैसे है? उनको मेरे आशीर्वाद।

सी० डब्ल्यू० ६१८८ से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

३७१. पत्र : प्रेमलीला ठाकरसीको

यरवडा मन्दिर

३० अक्टूबर, १९३०

प्रिय बहन,

तुमने तो मुझे रुई वापसी डाकसे ही भेज दी। रुई बहुत बढ़िया है। मैं वजन लिखना भूल गया था। तुमने ठीक अनुमान लगाया। खतम होने लगेगी तब मैं जरूर फिर कष्ट दूंगा। हाथसे ओटी हुई रुईका संग्रह करनेके लिए तुम्हें ललचानेमें मेरा अभिप्राय मात्र संग्रहका ही नही था, यह तो तुमने समझ ही लिया होगा। मैंने ऐसा माना है कि तुम्हारी 'कुटी' में चरखा तो चलता ही है। लेकिन यदि तुम पूनियां बाहरसे लेती हो अथवा गाँठकी रुईका उपयोग करती हो तो मुझे हाथकी ओटी हुई रुई भेजनेके इस प्रसंगके फलस्वरूप तुम भी इसी रुईका संग्रह और

उपयोग करने लगोगी। रेंटिया बारसके दिन मुझे एक कलईके डिब्बेमें और तीन काँचकी शीशियोंमें किशमिश आदि सूखा मेवा मिला अवश्य था, किन्तु मुझसे ऐसा कहा गया था कि वह सुन्दरम्‌ने भेजा है। तुमने भी मेवा भेजा था, इस बातका पता मुझे तुम्हारे पत्रसे ही चला, अन्यथा मैं पहुँच जरूर लिखता। अब वह मेवा वही है या कोई और, सो मैं नहीं जानता। तुमने जो मेवा भेजा था, यदि उसका विवरण भेज दो तो मैं पता लगाऊँगा।

मोहनदासके आशीर्वाद

लेडी विट्ठलदास ठाकरसी
"पर्णकुटी"
यरवडा हिल

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४८१५) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : प्रेमलीला ठाकरसी

३७२. पत्र : अपटन सिंक्लेयरको

यरवडा सेंट्रल जेल
३० अक्टूबर, १९३०

प्रिय मित्र,

मैंने आपकी 'मैमनआर्ट'[1] बड़ी दिलचस्पी और 'मेन्टल रेडियो'[2] कौतूहलके साथ पढ़ी। पहली पुस्तकसे मुझे सोचनेका बहुत मसाला मिला, लेकिन दूसरीवाली मुझे नहीं रुची। मेरे विचारसे भारतमें कोई व्यक्ति टेलिपैथीकी सम्भावनामें सन्देह नहीं करेगा, लेकिन उसके भौतिक उपयोगकी बुद्धिमत्ता पर अधिकांश लोग शंका करेंगे।

अब मैं आपके कृपापूर्ण प्रस्तावका लाभ उठाऊँगा और आपसे अनुरोध करूँगा कि आप अपनी अन्य पुस्तकें या वे पुस्तकें मुझे भेजें जो आपकी रायमें मुझे पढ़नी चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री अपटन सिंक्लेयर
स्टेशना पी०, पासाडेना
कैलिफोर्निया

अंग्रेजी (जी० एन० २५५२) की फोटो-नकलसे।

१ और २. सिंक्लेयर लिखित पुस्तकें, जो क्रमशः १९२५ और १९३० में प्रकाशित हुई थीं।

३७३. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

३१ अक्टूबर, १९३०

प्रिय कुमारप्पा,

मुझे खुशी है कि 'वाउज' के प्रश्न पर तुमने अपने विचार खुल कर प्रकट किये हैं।

मुझे लगता है कि तुमने मेरा अर्थ गलत समझा है। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तुम्हारे सामने मूल लेख नहीं है। मैंने अनुवाद नहीं देखा है। 'वाउ' शब्द भी 'व्रत' शब्दका उपयुक्त पर्याय नहीं है। लेकिन मेरे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि मैं अपना आशय स्पष्ट कर दूँ, और फिर अगर तुम मेरे विचारसे सहमत हो तो बिलकुल सटीक शब्द ढूँढ़नेका जिम्मा तुम पर छोड़ दूँ। अगर तुम असहमत हो, तो जबतक हम इस विषयको विचार-विमर्श करके सुलझा न लें, तबतक तुम्हें इस पर पत्र-व्यवहार जारी रखना चाहिए।

'वाउ' के अर्थ तुम वह शपथ लगाते प्रतीत होते हो जो सभामें उपस्थित लोगोंको दिलाई जाती है। यह अच्छी चीज भी हो सकती है और नहीं भी हो सकती। मेरे मनमें जिस 'वाउ' का विचार है वह अपनेसे की गई प्रतिज्ञा है। हमें अपने अन्तरमें निवास करनेवाले दो तत्वोंसे निपटना है: राम और रावण, अल्लाह और शैतान, अहुरमज्द और ऑरिमान। पहला तत्व हमें वास्तवमें मुक्त करनेके लिए बाँधता है, जबकि दूसरा तत्व हमें अपने चंगुलमें और अधिक कस कर जकड़नेके लिए हमें मुक्त करता प्रतीत होता है। 'वाउ' अमुक चीज करने या न करनेकी एक प्रतिज्ञा है जो हम रामसे करते हैं। यह अमुक चीज यदि अच्छी है तो हम उसे करना तो चाहते हैं किन्तु जबतक हम बँधें नहीं तबतक हममें उसे करनेकी शक्ति नहीं आती, और यदि खराब है तो उससे बचना चाहते हुए भी हम जबतक उसी प्रकार बँधें नही तबतक उससे बचनेकी हममें शक्ति नहीं आती। मैं इस बन्धनको विकासकी एक अनिवार्य शर्त मानता हूँ। मैं स्वीकार करता हूँ कि हम सूर्यसे भी ऊँचे हैं। तब क्या हमारे लिए यह और अधिक आवश्यक नहीं है कि हम यदि ज्यादा नही तो कमसे-कम सूरजके समान सच्चे और आस्थावान हों? अगर व्यापारके मामलेमें आगा-पीछा करनेवाला व्यक्ति बेकार है तो आध्यात्मिक मामलोंमें वह इसके सिवा और कुछ कैसे हो सकता है, क्योंकि इसमें तो परिणाम कहीं अधिक गुरुतर होते हैं? अगर तुम ऐसा मानते हो कि मुझे हर कीमत पर सही बोलना और सही काम करना चाहिए तो तुम मेरी सारी स्थितिको स्वीकार करते हो, और उसी प्रकार यदि तुम यह स्वीकार करते हो कि मुझे अपने प्राणोंकी जोखिम उठा कर भी अपनी पत्नी या मित्रके प्रति वफादार रहना चाहिए तो भी तुम मेरी स्थितिका समर्थन करते हो। तुम आसानीसे ऐसे बहुतसे दृष्टान्त ढूँढ़ सकते हो। मेरी दृष्टिमें ईसा मसीह मुख्य

रूपमें एक अडिग निश्चयी, अर्थात् व्रती व्यक्ति थे। उनकी हाँ के सम्बन्ध में लोगोंके लिए हाँ। व्रतबद्ध जीवन विवाहकी भाँति है, वह एक परम पवित्र संस्कार है। व्रत धारण करना ईश्वरके साथ अविच्छेद्य विवाह-सम्बन्ध स्थापित करना है। आओ, हम उससे विवाह कर लें। किं बहुना विज्ञेषु।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १००८१) की फोटो-नकलसे।

३७४. पत्र : वसुमती पण्डितको

यरवडा मन्दिर
३१ अक्टूबर, १९३०

चि० वसुमती,

मैं सोचता था कि तेरा पत्र क्यों नहीं आया। मरभोणमें हारकर या थककर तो नहीं आई? ऐसा हो तो भी कोई बात नहीं। प्रकृतिका अतिक्रमण कौन कर सकता है? प्रकृति जहाँ तक जाने दे, वहाँ तक जानेका प्रयत्न करना हमारा धर्म है। शेष तो ईश्वरके हाथमें है। हमारी अन्तरात्मा यदि यह गवाही दे कि हमने आलस्य नहीं किया है तो बस, हमारा कर्त्तव्य पूरा हुआ। यह तो मैं मानता हूँ कि तू मुझे लिखेगी कि अब तेरा क्या करनेका विचार है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२९२)की फोटो-नकलसे।

३७५. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
१ नवम्बर, १९३०

चि० प्रभावती,

आश्रमकी मारफत और सीधे लिखे तेरे दोनों पत्र मुझे मिले। तुझे इतना नहीं घबराना चाहिए। जो कष्ट तुझपर आ पड़ा है उसे सहन कर। यदि तेरा स्वास्थ्य नहीं सुधरता, तो तुझे आश्रम चले जाना चाहिए। स्वास्थ्य ठीक होने पर ही घरका काम-काज सँभालना। कमजोर शरीरके साथ घरमें रहकर भी तू क्या कर सकेगी। तुझे दौरे क्यों पड़ते हैं, यह बात तो मैं समझ ही नहीं पा रहा हूँ। जान पड़ता है, तू बहुत सोचती रहती है। विचार करना छोड़ दे। ईश्वर पर भरोसा रख।

उसे जो करना होगा, करेगा। हम तो उसके हाथमें खिलौने हैं। फिलहाल तू मुझे रोज एक पोस्टकार्ड लिखना, वह मुझे अवश्य यहीं मिलेगा। मैंने जयप्रकाशको पत्र लिखा है। यदि वह तुझे अपना पत्र पढ़ाये और तेरी सलाह माँगे तो जैसी तुझे ठीक लगे वैसी सलाह देना। चिन्तामात्र छोड़ देना। मुझे जो लिखना हो सो निर्द्वन्द्व होकर लिखना। मेरा पोस्टकार्ड क्यों नहीं मिला, इसके बारेमें कुछ नहीं कहा जा सकता। आशा करता हूँ कि तुझे यह पत्र तुरन्त मिलेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३३७) की फोटो-नकलसे।

३७६. पत्र: घनश्यामदास बिड़लाको

यरवडा मन्दिर
१ नवम्बर, १९३०

भाई घनश्यामदासजी,

यह खत भाई जयप्रकाश नारायणके लिये है।[1] वह बिहारके प्रतिष्ठित कुलके हैं और बिहारके बड़े सेवक ब्रजकिशोर बाबुके दामाद हैं। अब तक तो पं० जवाहरलालके साथ कांग्रेसके दफ्तरमें थे। अमेरिकामें सात वर्ष तक अभ्यास किया है। अब माताका देहांत होनेके कारण कुछ धनोपार्जन करनेकी आवश्यकता उनको प्रतीत हुई है। उनकी हाजत रु० ३०० माहवार है। मेरा अभिप्राय है कि भाई जयप्रकाश गुणवान नवयुवक हैं। यदि संभव है तो उनको कहीं भी रख लो और जो हाजत है इतना माहवार दे दो। भाई जयप्रकाश हि के पाससे उनका और इतिहास सुनोगे। बाबु ब्रजकिशोरकी लड़की[2] को तो मैं खूब जानता हूं। आश्रममें काफी रह चुकी है। ऐसी कर्त्तव्यशील और दृढ़ लड़की मैंने बहौत कम देखी है।

आपका,
मोहनदास

सी० डब्ल्यू० ६१८९ से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

१. इस पत्रके साथ जयप्रकाश नारायणका पत्र संलग्न था।
२. प्रभावती, जयप्रकाशकी पत्नी।

३७७. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२ नवम्बर, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुम्हारा पत्र मिला। शान्ता स्नान-चिकित्सा कर रही हो तो उसका परिणाम सूचित करना। कूनेकी पुस्तककी दो प्रतियां हमारे पास थीं। मेरा खयाल है कि उसका गुजराती अनुवाद भी हुआ है। कलावतीको घरके जीवनका काफी अनुभव मिल गया है, और अब वह स्वेच्छासे वापस आ रही है, यह भी ठीक है।

रुक्मिणीकी आत्महत्या अत्यन्त करुणाजनक है। पतिका नाम-धाम मिल सके तो जाननेका प्रयत्न करना। मुझे लगता है, इस आत्महत्याके पीछे और भी कारण होना चाहिए। किसीने इस घटनाकी और ज्यादा जांच की है? स्त्री-समाजमें इसकी चर्चा नही हुई? जगह गोधराके आसपासकी है, इसलिए सम्भव है मामा जानते हों। यदि खबर सच हो तो घटना ऐसी है कि उसकी अच्छी तरह छानबीन होनी चाहिए। अवकाश मिले तो जांच करना और परिणाम सूचित करना। मूल पत्र लिखनेवाला कौन है? काशीका समाचारपत्र भेजनेकी जरूरत नही है। किन्तु उसमें क्या लिखा है, यह क्या समझमें नही आता?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२५८) की फोटो-नकलसे।

३७८. पत्र : राधाबहन गांधीको

२ नवम्बर, १९३०

चि० राधिका,

तेरा पत्र मिला। मेरा पत्र बार-बार पढना और जो चीज समझमें न आये उसे पूछती रहना। कोई मुझे लात मारकर सलाम कराना चाहे और मैं उसकी लात सह लूं, क्रोध न करूं, लात मारनेवालेका भला चाहूं, उसे कुछ कहूं तक नही, किन्तु फिर भी सलाम न करूं, तो अपने इस आचरणमे मैं स्वाभिमानकी भी रक्षा करता हूं और नम्रताकी भी। मुझे लात मारकर उसने मुझे अपने पांवोंके पास बिठानेकी कोशिश की। मैंने उसे कोई जवाब नही दिया, स्वप्नमें भी उसका अकल्याण नहीं चाहा, किन्तु मैं उसके पांवोंके पास नही बैठा। मैं मानता हूं कि इस तरह मैं स्वाभिमान और नम्रता दोनोंकी रक्षा करता हूं। यह घटना जिस समय घटी उस समय मुझे यह

भान नहीं था कि मैं नम्रताका आचरण कर रहा हूँ या क्या कर रहा हूँ। यह तो मैं घटनाके घट चुकनेके बाद अब उसका विश्लेषण कर रहा हूँ। इस एक उदाहरणसे तुम अन्य अनेक उदाहरणोंकी कल्पना कर सकती हो। तुम उन्हें अपने जीवनके अनुभवोंसे भी निकाल सकती हो। और उन्हें दूसरोंके जीवनमें देखनेके बजाय यदि अपने ही जीवनमें देखनेकी आदत डाली जाये और यह कला हस्तगत हो जाये तो बहुत अच्छा हो। हाँ, जब ऐसे उदाहरण ढूंढ़े जायें तब अपने गुणोंके उदाहरण ढूँढ़नेकी झंझटमें नहीं पड़ना चाहिए। उन्हें देखनेका काम दूसरे लोग करेंगे। हमें तो अपने दोषोंका ही दर्शन करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

अपने दोषोंका दर्शन भी नम्रताका ही एक रूप है।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६८९) से। सौजन्य : राधाबहन चौधरी

३७९. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

यरवडा मन्दिर
२ नवम्बर, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

तुम [अपने कार्यसे] अपनी और उस कार्यकी भी शोभा-वृद्धि कर रही हो। बीमारीको तो अपने पास भी न फटकने देना। अब रमाबहन आ गई होंगी। बच्चे आ गये हों और लिखना सीख चुके हों, तो उनसे मुझे पत्र लिखनेको कहना। रमाबहन मुझे लिखें कि बम्बईमें उन्होंने क्या देखा। बच्चे कैसा स्वास्थ्य लेकर लौटे हैं? सब भाई-बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८०२) की फोटो-नकलसे।

३८०. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

२ नवम्बर, १९३०

प्रिय भगिनी,

तुमारा खत पाकर वहोत आनंद हुआ। मृत्युको भी जो ईश्वरकी कृपा समजते हैं उनको लाभ हि होता है। इसी लाभ तुम उठा रही है। तुमारी प्रगतिका कुछ अंत हि नहि है। एक पुरुष करेगा उससे ज्यादा आज तुम कर रही है। और मैं स्त्रीओंसे यही आशा करता हु। ईश्वरके कामोमें स्त्रीशक्ति पुरुषसे कम तो है हि नहि, अहिंसा इ० में वह बड़ जाती है। तारिणीके श्राद्धका वर्णन भी बोधप्रद है। सतीशवावुको छुटनेका समय कव है? अरूण और चारू अच्छे होंगे। आश्रमवासि सवको मेरे आशीर्वाद

वापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६७४ की फोटो-नकलसे।

३८१. पत्र : रामचन्द्र त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२ नवम्बर, १९३०

चि० रामचंद्र,[1]

तुमारा खत देखकर मुझे आनंद हुआ। तुमारी उम्मरके लड़के वहोत अच्छा सूत कातते हैं, गीता पाठ करते हैं, रामायण समजते है। तुम क्या पढ़ता है? घटेमें कितना कातता है, सूतका आंक क्या है?

वापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२५९ की फोटो-नकलसे।

१. काशिनाथ त्रिवेदीका सात वर्षीय भाई, जो उस समय आश्रममें रह रहा था।

३८२. पत्र : जयशंकर त्रिवेदीको

३ नवम्बर, १९३०

भाई त्रिवेदी,

हमारे नाम भेजा हुआ आपका पत्र मिला। तार तो मिला ही था। निश्चिन्त हुआ। मनु तो एक बड़े संकटसे बच गया। हम इससे यह अनुमान कर सकते हैं कि उसके भाग्यमें कोई बड़ा पराक्रम करना होना चाहिए। अभी तो उसमें ऐसे ही गुण दिख रहे हैं। ऐसा लगता है कि डाक्टरोंकी राय लेकर . . .[1] अलमोड़ा या ऐसी किसी दूसरी जगह जाने लायक पाया जाये तो अच्छा हो। रेवाशंकरभाईके धीरूको इससे बहुत लाभ हुआ था। उसे मनुसे भी ज्यादा गम्भीर हड्डीका रोग था। प्रभुदासको भी इससे लाभ हुआ है। पसलियोंमें अभी कुछ बाकी रह गया मालूम होता है। वह जड़मूलसे चला जाये तो हम लोग एक हद तक निश्चिन्त हो सकेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७६७) की फोटो-नकलसे।

३८३. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
३ नवम्बर, १९३०

चि० मनु,

तेरे बारेमें पिताजीका तार आया था, जिससे हम दोनों बहुत प्रसन्न हुए। अब काम फिर करने लगनेमें उतावली न करना। कुछ शक्ति आ जानेके बाद अगर तू अलमोड़ा जैसी किसी जगह रह आये तो बहुत अच्छा हो। पूरी शक्ति आनेके बाद लिखना कि ऐसी गम्भीर बीमारी तुझे क्यों हुई?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

यह लिख चुकनेके बाद तेरा पत्र मिला। हम दोनों उसे पढ़कर बहुत प्रसन्न हुए। पूना जानेके बारेमें चर्चा होनेके बाद ही काकासाहब ने तुझे पत्र लिखा था। पूना जरूर जाना। लेकिन तूने देखा ही होगा कि मैं दूर तक की सोच रहा हूँ। ईश्वर तेरी रक्षा करे।

गुजराती (जी० एन० ७७६८) की फोटो-नकलसे।

१. साधन-सूत्रमें यहाँ एक पंक्ति छूटी हुई है।

३८४. पत्र : पन्नालालको

यरवडा मन्दिर
३ नवम्बर, १९३०

चि० पन्नालाल,

तुम्हारा प्रश्न अच्छा है। ऐसा ही प्रश्न पहले आन्ध्र प्रदेशके विषयमें भी उठा था। अन्तमें निर्णय यह हुआ था कि हमें तो गुजरातमें गुजरातके ही लिए जरूरी खादी पैदा करनेका प्रयत्न करना चाहिए। पंजावके लिए भी यही सिद्धान्त लागू पड़ता है। खादीके मूलमें ही स्थानिक उत्पादनका सिद्धान्त निहित है। प्रत्येक प्रान्तको, प्रत्येक जिलेको, और सच पूछो तो प्रत्येक गाँवको अपनी जरूरतकी खादी खुद पैदा कर लेनी चाहिए। ऐसा हो तो सस्ते और महँगेका सवाल ही नहीं रह जाता। जो लोग [खादीका] अर्थशास्त्र समझ गये हैं वे यदि अपनी जरूरतका सूत नहीं कातते तो खादी मिलके कपड़ेसे महँगी पड़ेगी। किन्तु तब भी यदि वे गरीबोंके हितमें खादी पहनते रहते हैं तो अन्तमें उन्हें भी खादी ही सस्ती पड़ेगी। स्वदेशीकी मेरी व्याख्या पर विचार करना। आज जो कठिनाइयाँ आ रही हैं उनसे निपटनेका हमारे लिए तो एक ही रास्ता है: सिद्धान्तका निश्चय करके फिर उसका दृढतापूर्वक अनुसरण करना। तथापि खानगी व्यापारी तो पंजाव आदिसे खादी मँगायेंगे ही। उन्हें हम नहीं रोकेंगे। इसका औचित्य समझमें न आये तो फिर पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३१०७) की फोटो-नकलसे।

३८५. पत्र : कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
३ नवम्बर, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

सुशीलाको लिखना कि मैं प्यारेलालसे शनिवारको मिला था। अब उसकी तबीयत पूरी तरहसे ठीक हो गई है। उसका वजन पहले जैसा हो गया है। भोजनमें वह डेढ सेर दूध और आधा सेर रोटी लेता है। इच्छा होने पर साग-सब्जी भी लेता है।

पत्र-सम्बन्धी तेरी अनियमितताके बारेमें तुझे क्या लिखूँ?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८०८) की फोटो-नकलसे।

३८६. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
३ नवम्बर, १९३०

चि० प्रमा,

पीलियाके लक्षण हों और खट्टी डकारें आती हों, तो मेरा खयाल है कि तुझे कमसे-कम सात दिनका उपवास करना चाहिए। इस बीच सोडा या नमक डालकर कमसे-कम चार सेर पानी रोज पीना चाहिए। फिर ताजे फलके रससे उपवास तोड़ना चाहिए। आखिरमें छाछ-चावल जरूर लेना। उपवासके दिनोंमें एनिमा अवश्य लेना चाहिए और कटिस्नान करना चाहिए। सात दिनके उपवासमें तुझे खाट नही पकड़नी पड़ेगी। थोड़ा बहुत काम भी किया जा सकता है। उपवाससे तुझे कतई कोई नुकसान नहीं होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६८९) की फोटो-नकलसे। सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक

३८७. पत्र : जमनाको

यरवडा मन्दिर
३ नवम्बर, १९३०

चि० जमना,

बम्बई जाकर ठीक किया। वहाँ स्वास्थ्य ठीक रहे तो लौटनेकी जल्दी मत करना। कल्याणदास, धरमदास, प्रेमकुँवर और जिन दूसरे भाइयों या बहनोंसे मैं मिला था किन्तु जिनके नाम मैं भूल गया हूँ उन सबको मेरा आशीर्वाद कहना। कल्याणदास और धरमदास आजकल क्या करते हैं?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५४५) की फोटो-नकलसे। सौजन्य: नारणदास गांधी

३८८. पत्र : शान्ता शंकरभाई पटेलको

यरवडा मन्दिर
३ नवम्बर, १९३०

चि० शान्ता (शंकरभाई),

पत्र लिखते समय तू अशान्त थी। अपने छोटे-से पत्रमें तूने तीन बार लिखा है कि "कुछ सूझता नही।" अपनी लिखनेकी नोटबुकमें तू लिखनेका अभ्यास करने बैठी है, ऐसा मानकर यदि सावधानीसे धीरे-धीरे लिखे तो लिखावट जरूर अच्छी आयेगी। जिसे सारे दिन काम करना होता है उसे तो लिखनेका विषय आसानीसे सूझना चाहिए। मिलनेकी इच्छा होना स्वाभाविक है। ईश्वर मिलायेगा तब मिलेंगे। जबतक वह मिलनेकी घड़ी नही लाता तबतक हम धीरज रखेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४०५५) की फोटो-नकलसे।

३८९. पत्र : दुर्गा गिरिको

यरवडा मन्दिर
३ नवम्बर, १९३०

चि० दुर्गा,

इस बारके तेरे पत्रको मैं अच्छा मानता हूँ। भाषाकी भूलें जरूर हैं, पर उसमें कोई हर्ज नही। लिखे हुए पत्रोको दुबारा पढ़नेकी आदत डालनी चाहिए। इससे कुछ भूलें सुधारी जा सकती हैं। दतौन प्रार्थनासे पहले हो तो अधिक अच्छा रहे। सिलाईमें क्या सीख रही है? चरखे और तकली पर एक घंटेमें कितना और किस अंकका सूत कात लेती है? लिखना। अगर गति निकाली न हो, तो निकाल कर लिखना। अंक निकालना जानती है न? बिछौनेमें लेटते समय रामनाम लेती है, सो बहुत ही अच्छी आदत है।[1]

बापूके आशीर्वाद

बापूकी विराट् वत्सलता

१. मूल पत्र गुजरातीमें था।

२९०. पत्र : नारणदास गांधीको

३० अक्टूबर/४ नवम्बर, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा पुलिन्दा आज मिला। चप्पलके लिए भेजा गया चमड़ा तल्लेके लायक नहीं था। अभी तो मुश्किलसे एक महीना हुआ है, उतनेमें वह घिस गया है। तल्ले और एड़ीके लिए सख्त चमड़ेकी जरूरत होती है। वह जानवरके किसी खास भागका होता है और भैंसकी खालसे बनता है। ऐसा टुकड़ा मिले तो भेज देना। अथवा जिस नम्बरकी चप्पल काकासाहब के लिए भेजी है उस नम्बरकी या उससे एक नम्बर ज्यादा हो तो भी भेजनेसे काम चलेगा।

काँटा न भेजनेके बारेमें तो मैं शायद लिख ही चुका हूँ। नही, तो इससे मालूम हो जायेगा। भाई त्रिवेदी काँटा दे गये हैं।

तुम्हारा तरीका मैं जानता हूँ। जबतक महादेव बाहर हैं, तबतक तुम अपने तरीके के मुताबिक अन्तिम निर्णयका बोझ नही उठाओगे; और वह ठीक है। केशुका बहुत लम्बा पत्र आया है। वह बहुत दुखी लगता है। तुम्हारी बहुत शिकायत की है। उसका मुझपर कुछ असर नहीं हुआ। किन्तु तुम उसे एक ओर ले जाकर सब पूछ लेना। उसकी प्रकृति उतावली करनेकी है, मैं यह जानता हूँ। किन्तु वह निर्मल-हृदय नवयुवक है। उसे सेवा करनेका बहुत उत्साह है। किन्तु उसे बहुत जानने और मौलिक काम करनेका लोभ है। मेरी परीक्षामें भूल हो सकती है, किन्तु तुम उसे बुलाकर सब बात सुनना और जो छाप तुमपर पड़े वह मुझे लिखना। वह खर्चीला है, यह मैं जानता हूँ, किन्तु खर्चीला होते हुए भी उसमें सादगी है, ऐसा मेरा अनुभव है। . . .[1] पर उसका आरोप कायम है और गम्भीर है।

कान्ता और सुमंगलके बारेमें हमें निर्भय रहना है। वे निकटके सम्बन्धी हैं। वे सगे चचेरे भाई-बहन हैं और एक साथ पले हैं। यह होते हुए भी मुझे जरा शक हुआ था, वह मैंने दोनोंसे कहा था। किन्तु मुझे लगा कि दोनों बिलकुल निर्मल हैं। सुमंगल कान्ताका शिक्षक था और कान्ताको उसपर भारी विश्वास है। अन्तमें भाई-बहनके सम्बन्धमें भी वहम करके हम कहाँ जायेंगे? बहनोंके बारेमें हमने पूर्ण विश्वासकी नीति ग्रहण की है। ऐसा करते हुए हाथ जले तो उसे भी सहन करेंगे। हम जोखिम उठाये बिना स्त्रियोंके प्रति अपने धर्मका पालन नहीं कर सकते। हिन्दू स्त्रियोंका हिन्दू पुरुषों पर बहुत भारी कर्ज है।

१. नाम नहीं दिया गया है।

३१ अक्तूबर, १९३०

ऊपरका लिख चुकने पर नौ का घंटा बजा, इसलिए कलम रख दी। जहाँ तक हो सके, नौ बजेके बाद काम न करनेका निश्चय किया है।

अमीदासके बारेमें तुम्हारा पत्र मिला था। अब मुझे सन्तोष है। उसका आग्रह उसे फल देगा। मैं जो जानता था वह उसे बताना मुझे अपना धर्म लगा। भाई चितालियाकी माँगके बारेमें मुझे ही निर्णय करना हो, तो १५०० रुपये तो भेज देना। मेरे कथनमें भूतकालका उल्लेख था, भविष्यका नही। उस कथनके कारण यह रकम नही माँगी जा सकती, ऐसा मैं मानता हूँ। किन्तु मेरे पास निर्णय करने लायक पूरे साधन नही हैं। भाई करसनदास पर मुझे विश्वास है, और उन्होंने रकम माँगी है इसलिए दे देना ही धर्म मानता हूँ। किन्तु इसके बाद जरूरत लगे तो वे जमनालालजी अथवा भाई किशोरलालकी सम्मतिसे लें। लगता है यही ठीक होगा। भाई करसनदासको रकमके साथ इस पत्रकी एक नकल करके भेज देना। यह ठीक है या नही, इसके बारेमें भाई करसनदास अपनी राय लिखें।

१ नवम्बर, १९३०

इसके साथ प्रभावती, जयप्रकाश और उनके बारेमें घनश्यामदासको लिखा पत्र है। तीनो एक लिफाफेमें फौरन भेज देना। ये दोनो जयप्रकाशकी माँके देहान्तके कारण इस समय महादु:खमें पडे हैं। क्या आश्रममें कातनेवाले बिगडे सूतकी तौल करते हैं? न तौलते हों तो रोज तौलना चाहिए। यदि कोई रोज ऐसा करता हो तो कितना सूत खराब होता है यह लिखना। कातनेवाले औसतन घंटेमें ज्यादासे-ज्यादा कितनी गतिसे कात पाते हैं? एक बार तैयारी करलेके बाद अच्छी गतिसे कातना एक बात है, और यदि कोई पूरे वर्षका हिसाब रखता हो तो उसकी कितनी गति होती है, यह दूसरी बात है। ठीक तरहसे देखें तो इसमें माल टूटने, दूसरी लगाने, साफ करने आदिमें जो समय गया हो, वह भी गिनना चाहिए। यह गिने तो सही हिसाब किया गया माना जायेगा।

मंगल प्रभात, ४ नवम्बर, १९३०

आश्रममें जिन व्रतोंका पालन किया जाता है उनके बारेमें यज्ञके अर्थ और उसकी आवश्यकताके बारेमें हम विचार कर चुके हैं। अब जिस पुस्तकका हम हर सप्ताह नित्य थोडा-थोडा करके पारायण और मनन करते हैं, जिसे अपने लिए हमने आध्यात्मिक दीप-स्तम्भरूप बना रखा है, उसे मैंने जैसा समझा है, उसपर अपने विचार देनेकी इच्छा है। यह खयाल पहले एक पत्र पाकर हुआ था। लेकिन गत सप्ताह भाई गोविन्दजीके पत्रने मुझे इसके लिए तैयार कर दिया। वह लिखते हैं कि वह 'अनासक्तियोग' पढते हैं, लेकिन समझनेमें बहुत कठिनाई पडती है। सबकी समझमें आने योग्य भाषामें अर्थ करनेका प्रयत्न करते हुए भी शब्दश: अनुवाद देनेमें समझनेकी कठिनाई तो अवश्य रहेगी। जहाँ विषय ही कठिन हो, वहाँ सरल भाषा क्या कर सकती

है? इसलिए अब विषयको ही सरल रीतिसे रखनेका प्रयत्न करना चाहता हूँ। जिस वस्तुका हम उठते-बैठते उपयोग करना चाहते हैं, जिसकी सहायतासे अपनी सारी आन्तरिक उलझनें सुलझानेका प्रयत्न करते हैं, उस ग्रन्थको जितनी रीतियोंसे, जैसे भी समझा जा सके वैसे समझने और बारम्बार उसका मनन करनेसे अन्तमें हम तन्मय हो सकते हैं। मैं तो अपनी सारी कठिनाइयोंमें गीता-माताके पास दौड़ता हूँ और अबतक आश्वासन पाता आया हूँ। दूसरोंको भी, जो उसमें से आश्वासन पानेके इच्छुक हैं, शायद, जिस रीतिसे मैं उसे रोज-रोज समझता जाता हूँ, वह रीति जानकर कुछ अधिक मदद मिले। उस रीतिको जानकर उनको कुछ नया प्रकाश पाना भी असम्भव नहीं है।

आज तो बारहवें अध्यायका सार देना चाहता हूँ। यह भक्तियोग है। विवाहके अवसर पर दम्पतीको पाँच यज्ञोंमें इसे भी एक यज्ञ रूपसे कंठ करके मनन करनेको हम कहते हैं। बिना भक्तिके ज्ञान तथा कर्म शुष्क हैं और उनके बन्धन रूप हो जानेकी सम्भावना है। इसलिए भक्तिभावसे 'गीता' का यह मनन आरम्भ करना चाहिए।[1]

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

६२ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

३९१. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

यरवडा मन्दिर
४ नवम्बर, १९३०

भाई खम्भाता,

तुम्हारे दोनों पत्र और जीवन-चरखा मिला। तुम्हारे नाम पूनाके पते पर मैंने जो पत्र लिखा था वह तुम्हें मिला या नहीं, यह तुम्हारे पत्रसे स्पष्ट नहीं होता। जीवन-चरखा तो मैं अन्ततः तुम्हें वापस करनेके लिए ही सुरक्षित रखूँगा; उसे आजमानेके बाद अपना अनुभव भी तुम्हें बताऊँगा। तुम दोनों अपना स्वास्थ्य सँभालना;

१. गांधीजीने व्रतोंके सम्बन्धमें आश्रमवासियोंको कुछ पत्र लिखे थे, और उसी प्रकार उन्होंने गीताके बारेमें भी लिखे थे; जिन्हें आश्रमकी प्रार्थना-सभामें पढ़ कर सुनाया जाता था; देखिए पृष्ठ ४१। बादमें *गीताबोध* नामसे इनका संकलन प्रकाशित किया गया था। अंग्रेजीमें इसका अनुवाद *डिस्कोर्सेस ऑन द गीता*के नामसे प्रकाशित हुआ था। इन प्रवचनोंके पाठके लिए देखिए खण्ड ४९, "गीता पत्रावलि", २१-२-१९३२।

तुम्हारा मन तो निर्मल है ही। काकासाहब प्रसन्न हैं। वे २८ तारीखतक या उससे
ही रिहा हो जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६५९७) की फोटो-नकलसे।

३९२. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
६ नवम्बर, १९३०

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे खयालमे जो गाण्डीव मुझे मिला है उसमे कोई खास बात नही है। उसने जितना कष्ट तुम्हे दिया था, उतना ही काका को दिया। मैंने खराबीका पता लगा लिया, उसे दूर कर दिया और उसके बाद उसने मुझे एक बार भी तग नही किया। दूसरी माल जितनी पतली हो सके उतनी पतली होनी चाहिए। मै तो नारणदासने आश्रमसे जो भेजी है उसका उपयोग कर रहा हूँ। मेरा खयाल है, वह छह धागोकी है। घूमते हुए चक्रके लिए मालकी गांठ बाहरकी ओरसे बाँधनी चाहिए। दोनोमे से कोई भी बहुत कसी हुई नही होनी चाहिए। चक्रको बिना झटकेके घूमना चाहिए। झटकेका कारण यह हो सकता है कि चक्रोमें लोहेके छल्लोको मजबूतीसे न जमाया गया हो या धुरियाँ सीधी न हो या वे सीधी लाइनमे न हो। मेरी दृष्टिमें तो इसका सौन्दर्य इसके निर्विघ्न चलनेमे तथा कम बिगडनेमे है। लेकिन जैसाकि मैने पिछले पत्रमें बताया है, तुम्हे चरखेके लिए अपना ध्यान दूसरी चीजोंसे हटानेकी जरूरत नही है। मेरे खयालसे अधिकाश वस्तुओकी तरह चरखोंके बारेमे भी यह सही है कि जो चरखा एकके अनुकूल हो यह जरूरी नही कि वह और सबके भी अनुकूल हो। विशेषज्ञोको अलग-अलग किस्मके चरखोंके मूल्योंका समजन करना पडता है। हम कार्यकर्त्ताओको तो उस चरखेमे सन्तोष होना चाहिए, जिस पर कमसे-कम कष्ट उठाकर अधिकसे-अधिक काम हो सके। अगर मुझे आवश्यक यन्त्र-शिक्षा मिली होती या इस कलामे मेरी प्रतिभा होती, तो मुझे धुनाई और कताईमे और धुनकियो, चरखो और तकलियोंकी परख करनेमे पारगत बननेमें बडी खुशी होती। मगर मुझे तो यही समझना चाहिए कि यह महत्वाकाक्षा मेरे लिए निषिद्ध है, यद्यपि मै खोज नही छोडूँगा। यहाँ खोज मेरे लिए स्वधर्म है।

लम्बा हो या छोटा, मुझे आशा है कि कमसे-कम एक भजन [का अनुवाद] तो रोज कर लूंगा। मराठी भजन मैने काका की सहायतासे पूरे किये। बगाली भजन भी शुरू कर दिये थे। परन्तु काकासे यह जानकर कि उन सबका अनुवाद स्वय रवियाबूने किया है या उनकी निगरानीमे हुआ है, मैने उन्हे छोड दिया, क्योंकि मुझे लगा कि सब तो प्रयत्न करना भी अधर्म-कार्य होगा। इसलिए अब केवल ८२ भजन ही और रह

गये हैं। मराठी भजन बहुत छोटे होनेके कारण कभी-कभी हर रात तीन भी कर लेता था। ४२ दिन बीतनेसे पहले-पहले खत्म कर लेनेकी आशा रखता हूँ।

तुम्हारे पत्रमें गाण्डीवके सम्बन्धमें एक प्रश्नका उत्तर मुझे अभी भी देना बाकी है। मै चरखेके चक्र-भागको लगभग ३ इंच ऊँची लकड़ीकी छड़में चढ़ा कर उसे दो कीलोसे जड़ देता हूँ। ये कीलें आसानीसे निकाली और लगाई जा सकती हैं। इस तरह यह सिरेसे नीचेकी ओर आड़ी स्थितिमें होता है। इसे किसी पेटीके ऊपर इस प्रकार भी चढ़ाया जा सकता है कि यह समतल स्थितिमें रहे। काकाने तो उसे एक कुर्सीकी बेंतवाले तलेमें बाँध दिया और एक कुर्सी पर बैठे-बैठे उसे चलाया। मुझे खुशी है कि तुमने अलेक्जेंडरसे भेंट की। उन्होंने मुझे उसके फौरन बाद चिट्ठी लिखी। यह पत्र यहाँ प्राप्त होनेके १० दिन बाद मुझे दिया गया था। उनसे मुझे पता चला कि तुमसे उनकी मुलाकात बिलकुल संयोगवश ही हो गई थी। जब तुम उन्हें पत्र लिखो तो उन्हें मेरा प्यार भेज देना और लिख देना कि मुझे उनका पत्र मिल गया है। मुझे उन्हें अलगसे पत्र लिखनेकी कोशिश नही करनी चाहिए। आजके लिए इतना काफी है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४१८) से। सौजन्य: मीराबहन; जी० एन० ९६५३ से भी।

३९३. पत्र: मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
७ नवम्बर, १९३०

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे खुशी है कि तुम फिर पूर्णतः स्वस्थ महसूस कर रही हो। यह न समझना कि गाण्डीव चरखा तुम्हें आजमाना ही है। मुझे मालूम है कि तुम्हें बहुत-से काम करने पड़ते हैं और बढ़िया चलनेवाला चरखा होने पर शायद तुम अपना कताई-यज्ञ बिना किसी झंझटके पूरा कर सकोगी।

एन्ड्रयूजसे मेरा प्यार कहना। मैं उन्हें एक औपचारिक पत्र लिख सकता हूँ। परन्तु मैं उन्हें मात्र एक औपचारिक पत्र नहीं लिखना चाहता। इससे तो यही अच्छा होगा कि मेरा मौन ही उनसे बात करे। हृदयके प्रवाहके लिए अकसर कलम बाधक नहीं तो अनावश्यक जरूर होती है।

महादेवको बहुत परिश्रम नहीं करना चाहिए। मैंने इस बारेमें उसे सख्त पत्र लिखा है। मगर जब कभी वह अपने स्वास्थ्यके बारेमें लापरवाही करे, तब उसे डाँट दिया करो। मेरा जुकाम बिलकुल मिट गया था और इसीलिए मैंने पिछले

सप्ताह जब तुम्हें पत्र लिखा, तब मुझे उसका खयाल तक नहीं आया। हाँ, आजकल तो खजूर और तरकारियाँ मिलाकर लेता हूँ, तरकारियाँ बहुत कम मात्रामें। सर्दी न हुई होती तो तरकारियोंसे मेरा काम मजेसे चल रहा था। इस सप्ताहमें मैं तुम्हें इससे ज्यादा वक्त नहीं दे सकता।

सप्रेम,

बापू

[पुनश्च :]

आशा है भजन मैं अनुमानसे भी जल्दी पूरे कर लूँगा।

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४१९) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६५२ से भी।

३९४. पत्र : पद्माको

यरवडा मन्दिर
७ नवम्बर, १९३०

चि० पद्मा,

तेरा पत्र मिला। गाँठ मिटनी ही चाहिए। उसके विषयमें लापरवाही मत करना। यदि गंगाबहन साथ न होतीं, तो तेरे बाहर जाने से मुझे चिन्ता तो अवश्य होती। पर वे साथ हैं इस लिए मैं निश्चिन्त हूँ। मुझे नियमित रूपसे लिखती रहना। अक्षर बड़े और सुडौल होने चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६११४) की फोटो-नकलसे।

३९५. पत्र : सुशीला गांधीको

यरवडा मन्दिर
७ नवम्बर, १९३०

चि० सुशीला,

तेरा पत्र मिला। मणिलालने ४० पौंड वजन खोया है, लेकिन उसने मुझसे अपने अध्ययनके सम्बन्धमें सलाह माँगी है जिससे लगता है कि उसकी शक्ति सुरक्षित रह गई है। फीनिक्सके बारेमें प्रागजी जो चाहते हैं, वह मुझे उचित मालूम होता है। किन्तु तू और मणिलाल मिलकर जो निर्णय करोगे वही ठीक होगा। मेरे पास निर्णय करनेके लिए आवश्यक पूरे तथ्य भी कहाँ हैं? इसके सिवा सामान्य अनुभव यह है कि जिसे अन्तमें कार्यका उत्तरदायित्व उठाना होगा, वही उसके बारेमें सन्तोष-कारक निर्णय कर सकता है। भारतीकी लिखावट बुरी हो तब भी उसे लिखना तो चाहिए। मित्रको लिखनेमें लज्जा किस बातकी? कृष्णकान्तसे तो माफी ही माँगनी चाहिए। उसका चेहरा मैं बिलकुल भूल गया हूँ। और नाम तुझसे सुन रहा हूँ याकि तेरे पत्रमें लिखा हुआ देख रहा हूँ। कृष्णकान्तको ढेर-सारा आशीर्वाद भेजूं तब तो वह माफ करेगा न? उससे पूछना; तब भी माफी न दे तो मेरी ओरसे वकालत करना। क्या सीता अब उतनी ही स्वस्थ हो गई कही जा सकती है, जितनी वह दक्षिण आफ्रिकामें थी? उसे खानेके लिए फल देती हो न? प्रागजीको मेरा आशीर्वाद देना और [मेरी ओरसे] कहना कि सेवा सहज कर्त्तव्यके पालनमें ही है। गोमतीके साथ कौन है? उन्हें खानेको क्या मिलता है? उनके जितने समाचार तेरे पास हों, मुझे देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७७४) की फोटो-नकलसे।

३९६. पत्र : भगवानजी पण्डचाको

यरवडा मन्दिर
७ नवम्बर, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम जैसे-जैसे दूसरोंके कार्योंमें रुचि लेना बन्द करोगे और अपने कर्त्तव्यमे लीन होगे वैसे-वैसे तुम्हें सत्यके अधिक दर्शन होंगे। बहुत ज्यादा सोच-विचारमें पडना भी अच्छा नही है। मनुष्यको एक हदतक ही सोचना चाहिए, उसके वाद श्रद्धाका आश्रय लेना चाहिए। जिस तरह ज्यादा खुराकसे अपच हो जाती है और शरीर विगड जाता है उसी तरह मनको भी ज्यादा खुराकसे अपच हो जाती है और वह खराव हो जाता है। जिस तरह शरीरको शान्तिकी जरूरत है उसी तरह मनको भी है। इसीसे रामनाम आदि मन्त्रोके निरन्तर उच्चारणका विधान किया गया है। इससे मन तुरन्त शान्त हो जाता है। अब अर्थ लें। पर और अपर अर्थात् अव्यक्त और व्यक्त, निराकार और साकार। इसका 'गीता'मे वार-वार निरूपण किया गया है। हम उसका संक्षिप्त अर्थ ईश्वर अथवा ब्रह्म करते हैं अथवा सत्य भी करते हैं। स्वतन्त्र सत्य तो पर है और किसी व्यक्ति द्वारा देखा गया सत्य, मर्यादित अपर है। जो मनुष्य इस ईश्वरकी झाँकी कर लेता है उसकी सारी समस्याएँ, समस्त शंकाएँ और कर्मोके अच्छे वुरे फलका भोग भी नष्ट हो जाता है। दूसरे अध्यायके "रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते"का भी यही अर्थ है। जो मनुष्य सहज प्राप्त कर्त्तव्यमें तन्मय रहता है वह पर[1]के दर्शन करता है। इसीलिए उसकी समस्त उलझनें नष्ट हो ही जानी चाहिए। जिसे यह अनुभव नही होता [उसके लिए कह सकते हैं कि] वह कर्त्तव्यमें तन्मय नही हुआ। मैंने इसे इस ढगसे प्रस्तुत करनेका प्रयत्न किया है जिससे यह सब अच्छी तरह तुम्हारी समझमे आ जाये। फिर भी यदि समझमें न आया हो तो पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३२९)से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्डया

१. साधन सूत्रमें 'अपर' दिया गया है जो स्पष्टत: भूल है।

३९७. पत्र : बलीबहन वोराको

यरवडा मन्दिर
७ नवम्बर, १९३०

चि० बली,

तेरा पत्र बहुत दिनके बाद मिला। मनको अपनी इच्छाके अनुसार और जैसा बा को अच्छा लगे वैसा रखना। मैं तो तुम बहनोंका जी बिलकुल नहीं दुखाना चाहता और यहाँ बैठे हुए तो कैसे चाह सकता हूँ? बच्चोंके प्रति तुम दोनोंका प्रेम तो मैं समझता ही हूँ। कान्तिकी चिन्ता मत करना। वह बहादुर लड़का है और फिर ईश्वर-जैसा हम सबका स्वामी तो बैठा ही है। वह सबकी रक्षा करता है। जब भी उससे मिलनेकी सुविधा हो, मिलती रहना, और मिलनेके बाद समाचार मुझे लिखना। वैसे, उसके समाचार मुझे दूसरोंसे तो मिलते ही रहते हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ५०५८) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : सुरेन्द्र मशरूवाला

३९८. पत्र : कृष्णमैया देवीको

यरवडा मन्दिर
७ नवम्बर, १९३०

चि० कृष्णमैया,

तुम्हारे किसी भी पत्रका जवाब मैंने न दिया हो, ऐसा तो मुझे याद नहीं आता। किसी प्रश्नका उत्तर बाकी रह गया हो तो मुझसे दुबारा पूछना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६२२०) की फोटो-नकलसे।

३९९. पत्र : तारामती मथुरादास त्रिकमजीको

७ नवम्बर, १९३०

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। रोटीके सिवाय मथुरादास और क्या लेता है? दूध, फल आदि लेता है क्या? बाहरसे कुछ भोजन मँगाना है या जो-कुछ जेलमें मिलता है वही लेता है? वहाँ घूमने-फिरने लायक जगह है? घूम-फिर सकता है? उसके पास कोई साथी है? यह सब मालूम करके मुझे लिखना। प्यारेलाल मजेमें है। शकरने भी मुझे पत्र लिखा था। जब आये, तब उससे कह देना कि मैंने उसे जवाब दिया था। दिलीप काफी कसरत कर पाता है क्या? तुमने खुद घूमना जारी रखा है? छोड दिया है, तो शुरू कर देना चाहिए। कुछ पढ़ना प्रारम्भ किया हो, तो मुझे यह भी लिखना कि क्या पढ रही हो।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी

४००. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
८ नवम्बर, १९३०

चि० मनु,

पिताजीका अन्तिम पत्र मुझे मिल गया है। उन्हें अलगसे नहीं लिखता। अब तो तू शीघ्र ही पहले-जैसा स्वस्थ हो जायेगा। यह भी हो सकता है कि तेरे शरीरमें पहले जो जहर था वह भी इस बीमारीसे निकल गया हो। मेरा खयाल है, अब तो तुम सब पूनामें होगे। इसलिए यह पत्र तुम लोगोंके पास थोड़ा घूम-फिरकर पहुँचेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७६९) की फोटो-नकलसे।

४०१. पत्र : दूधीबहन वालजी देसाईको

यरवडा मन्दिर
८ नवम्बर, १९३०

चि० दूधीबहन,

यहाँ हालमें तुम्हारा कोई पत्र नही मिला। वालजी फिर मन्दिरमें जा पहुँचे हैं इसलिए यह लिख रहा हूँ। घबड़ाती तो नही हो? वालजी-जैसे सरल हृदय और निर्दोष व्यक्तियोंके बलिदानसे ही हम सच्चा स्वराज्य प्राप्त कर सकेंगे। इसलिए वालजीके इस बलिदान पर हमें प्रसन्न ही होना चाहिए, किसी प्रकारका दुःख कदापि नही। प्रभु सबकी रक्षा करनेवाला है। अपना सारा हाल लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७४०९) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : वालजी गोविन्दजी देसाई

४०२. पत्र : नानाभाई इच्छाराम मशरूवालाको

यरवडा मन्दिर
८ नवम्बर, १९३०

भाई नानाभाई,

ताराके पत्रके नीचे तुम्हारे लिखे शब्द पढ़े। तुम जितना करते हो, वह पर्याप्त है। तीन फुट ऊँचा मनुष्य अपना हाथ वहाँ तक पहुँचाना चाहे जहाँ छः फुट ऊँचे मनुष्यका हाथ पहुँचता है और ऐसा न कर सकने पर दुखी हो, तो वह मानो जगत्कर्त्ताकी निन्दा करता है। जो यथाशक्ति भक्तिपूर्वक अपना कर्त्तव्य करता है वह अपना ऋण पूरी तरह चुकाता है। मेरा विश्वास है कि तुम ऐसा ही कर रहे हो। हाँ, यह बात जरूर सोचने-विचारने लायक है कि तुम्हारा शरीर इतना निर्बल क्यों है। लेकिन ऐसा मालूम होता है कि तुम सब भाइयोंके शरीर जन्मसे ही निर्बल हैं। इसके कारणोंको जाननेका प्रयत्न करना चाहिए और यदि ऐसा मालूम हो कि अपने लिए तो इसका कोई इलाज सम्भव नही है तो जिनकी रक्षाका भार हमपर है उनके सम्बन्धमें तो उन कारणोंको दूर करनेकी कोशिश करनी ही चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७७६) की फोटो-नकलसे।

४०३. पत्र : तारा मशरूवालाको

यरवडा मन्दिर
८ नवम्बर, १९३०

चि० तारा (अकोलावाली),

तेरा पत्र (कितने महीनों बाद?) मिला। तेरे माथेमें चोट लगनेके बाद मुझे जो दर्द रहा करता था, उसके बारेमें तू कुछ नहीं लिखती। अपनी डायरीमें किसी एक दिनका विवरण भेजना। सीताको खेल-खेलमें बहुत-कुछ संस्कृत सिखाई जा सकती है। "झंडा ऊँचा रहे हमारा" वह जरूर गाये, किन्तु उसी तरह वह 'गीता' से कोई सरल-सा श्लोक भी गुनगुना सकती है।

बा को मेरा आशीर्वाद कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७७५) की फोटो-नकलसे।

४०४. पत्र : रोहिणी कन्हैयालाल देसाईको

यरवडा मन्दिर
८ नवम्बर, १९३०

चि० रोहिणी,

तेरा पत्र मिला, उसके पहले ही समाचारपत्रमें कानजीभाईके पकड़े जानेकी खबर पढ़कर मैं तुझे लिख चुका था। तुम सब कितने भाग्यशाली हो। पिताजीको कितने दिनकी सजा हुई है? उनकी उम्र क्या है? अकेली तू ही रह गई है, ऐसा नहीं है। यह कुछ कम बहादुरी नहीं थी कि तूने घोड़ेको कैद कर लिया था। उस समय ईश्वरने तुझे ऐसी प्रेरणा दी और उसके लिए आवश्यक बल दिया। तुझे भविष्यमें भी ऐसी ही सफलताएँ मिलती रहें।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २६५४) की फोटो-नकलसे।

४०५. पत्र : ललिताको

यरवडा मन्दिर
८ नवम्बर, १९३०

चि० ललिता,

तेरा पत्र मिला। तू गंगाबहनके साथ गई सो ठीक ही किया। अब काम अच्छी तरह करना और बहादुर बनना। तेरी उम्रको देखते हुए तेरी लिखावट खराब कही जायेगी और तेरी भाषा भी ठीक नही है। प्रयत्न करके लिखावट और भाषा दोनोको सुधारना। इसमें ज्यादा समयकी नही, केवल लगनकी जरूरत है। धीरे-धीरे बहुत प्रगति की जा सकती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९२१८) की फोटो-नकलसे।

४०६. पत्र : गोविन्द पटेलको

यरवडा मन्दिर
९ नवम्बर, १९३०

चि० गोविन्द,

तेरा पत्र मिला। आँखें कमजोर हों तो न पढ़ना ही ठीक है। 'गीता' के कितने अध्याय मुखाग्र हैं? सम्पूर्ण 'गीता' मुखाग्र हो गई हो तो चलते-फिरते चिन्तनके लिए पर्याप्त सामग्री सुलभ हो जाती है। फिर कुछ पढ़नेकी जरूरत नही रहती। हाँ, जो-कुछ कण्ठ किया जाये उसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

तेरा काता हुआ सूत मजबूत तो होता है न? इकसार होता है? पूनियाँ कौन बनाता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३९४३) की फोटो-नकलसे।

४०७. पत्र : जुगतराम दवेको

यरवडा मन्दिर
९ नवम्बर, १९३०

भाई जुगतराम,

तुम्हारे पत्रमें वे सारे समाचार हैं जो दिये जाने चाहिए। अभी तक तो सब ठीक चल रहा है। हमारी परीक्षा हर तरहसे और बहुत सुन्दर हो रही है। जब तक बाहर हो, नियमित रूपसे लिखते रहना। हमारा हरएक कार्य यथारीति चल रहा है, इसे मैं बहुत कुशलता-सूचक मानता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २६८६) की फोटो-नकलसे।

४०८. पत्र : रामचन्द्र खरेको

यरवडा मन्दिर
९ नवम्बर, १९३०

चि० रामभाऊ,

तुम्हारा पत्र मिला। पत्र सुन्दर है। अक्षर भी सुन्दर हैं। लाउन सीख कर अच्छा ही किया। तुम्हारे पत्रका जवाब देना बाकी रह गया हो, ऐसा याद नहीं आता।

ठंड बढ़नेके साथ-साथ वजन भी बढ रहा है, यह तो बहुत अच्छी बात है। ठीक-ठीक कसरत करोगे, तो ठंडसे हारनेके बजाय तुम ही उसे हरा दोगे।

क्या लक्ष्मीबहन को समय-समय पर पत्र लिखते रहते हो? भजनोंको याद करना तो अच्छा ही है। तुम्हे तो पण्डितजीकी गद्दी सँभालनी है और उसकी शोभा बढ़ानी है। और शोभा तो तुम तभी बढ़ा सकते हो जब तुम उनसे आगे बढ़ जाओ। तुम्हें जो अवसर इस आयुमें मिला है, वह पण्डितजीको कहाँ मिला था।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २८६) से। सौजन्य : लक्ष्मीबहन खरे

४०९. पत्र : कुँवरजी मेहताको

यरवडा मन्दिर
१० नवम्बर, १९३०

भाई कुँवरजी,

तुम्हारा उत्साहपूर्ण पत्र मिला। यह जानकर बहुत आनन्द हुआ कि तुम्हारा शरीर स्वस्थ हो गया है। सेवाका सच्चा अवसर उपस्थित होने पर जिन लोगोंको उसमें रस मिलता है और जो उसमें कूद पड़ते हैं उनका स्वास्थ्य मैंने अकसर सुधरते देखा है।

प्रागजीको लिखना कि उनका देशान्तर-प्रवास भी एक प्रकारकी सेवा ही है। जिस समय विधाताको उनकी जरूरत यहाँ होगी उस समय वह उन्हें यहाँ पहुँचा देगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २६८८) की फोटो-नकलसे।

४१०. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
१० नवम्बर, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरा पत्र मिला। तुझे मेरा विस्तारपूर्वक लिखा पत्र मिल गया होगा। तेरे लिए गुजराती अखबारका प्रबन्ध कर रहा हूँ। तूने मुझे इस सम्बन्धमें पहले भी लिखा था, लेकिन मैं बिलकुल भूल गया। कितना लापरवाह हूँ। तू जल्दी अच्छी हो जा, यही मेरी इच्छा है। मैंने जयप्रकाशको पत्र लिखा है, उससे उसे शान्ति मिली होगी। तू मुझे जब भी लिखना चाहे, तब अलगसे पत्र लिख सकती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३७८) की फोटो-नकलसे।

४११. महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको लिखे पत्रका अंश[1]

यरवडा मन्दिर
१० नवम्बर, १९३०

. . पीछे नहीं रहेगा। हमें तो दोनों स्थितियां स्वीकार्य हैं। निर्णय हो गये, तो फिर किस बातकी चिन्ता? सब बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८०३)की फोटो-नकलसे।

४१२. पत्र : बुलाखीदासको

यरवडा मन्दिर
१० नवम्बर, १९३०

भाई बुलाखीदास,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे और तुम्हारी पत्नीके जैसे बलिदानोंसे ही शराबखोरी-जैसी जघन्य बुराईका नाश होगा। आशा है कि अब तुम्हारी पत्नीकी तबीयत बिलकुल ठीक होगी। उसे मेरी बधाई और आशीर्वाद देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३१३८) की फोटो-नकलसे।

१. यह पत्र किसे लिखा गया, यह ज्ञात नहीं हो पाया। तथापि, जी० एन० रजिस्टरमें इसे महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको लिखे पत्रोंके साथ रखा गया है।

४१३. पत्र : अब्बासको

यरवडा मन्दिर
१० नवम्बर, १९३०

चि० अब्बास,

तेरा पत्र मिला। हमें सूतका अंक निकालनेकी एक बहुत सरल रीति मिल गई है — इकन्नी-भर वजनमें जितने तार आयें, उतना उस सूतका अंक माना जाये। और तूने जो-कुछ लिखा है सो मैंने समझ लिया।

स्वास्थ्य अच्छा रहता होगा।

बापूकी दुआ

गुजराती (जी० एन० ६३०४) की फोटो-नकलसे।

४१४. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

१० नवम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। किन्तु मेरे लिए वह लम्बा नहीं है। मेरे कारण हिज्जोंकी कोई अड़चन नहीं मानना। मुझे तो तुम्हारा अर्थ समझना है, और वह मैं समझ लेता हूँ।

तुमने बहुत बड़ी जिम्मेदारी उठाई है, किन्तु ईश्वर तुम्हारा रक्षक है। आज तक उसने तुम्हारे कामको शोभायमान किया है, आगे भी करेगा।

लीलाबहनको मैं लिख रहा हूँ। लीलाबहन स्वयं हिम्मत छोड़ दे तो कोई क्या करेगा? बहनोंकी समस्याको हमें सुलझाना ही है। अच्छी तरह देखें तो वह सुलझ रही है। उनकी बहुत भारी परीक्षा हो रही है। सारी दुनियाकी नजरें हिन्दुस्तानकी बहनोंकी तरफ है। मुझे ब्यौरेवार पत्र लिखती रहा करो। स्वयं लिखनेका समय न मिले तो किसी औरको लिखनेके लिए कह देना। तुम्हें एक बहनको मन्त्री नियुक्त करना चाहिए।

काकासाहब का पत्र अभी नहीं मिला।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-६ : गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७६१ से भी।
सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

४१५. पत्र : मनु गांधीको

१० नवम्बर, १९३०

चि० मनुड़ी,

तेरा पत्र अच्छा है। लिखावट भी ठीक है। अभी और सुधारना। तू तो घंटेमें मुझसे ज्यादा कातती है। ३०६ तार कातती है या ३०६ गज। दोनोंमें फर्क है, यह तो जानती है न? तार होता है ४ फुटका, और गज ३ ही फुटका। फिर नरने पर और कितने अकका सूत कातती है? मैं कब रिहा होऊँगा, इसका मुझे या किसीको भी कोई पता नहीं है। सरकारको भी नहीं है। लेकिन हमें उससे क्या मतलब? रिहा हो या न हो — इससे क्या आता-जाता है? तूने चित्र मांगा है। जेलमें चित्र कैसे? जेलमें ऐसी चीजें नहीं मिल सकती। लेकिन यदि कोई चित्र हाथ आया तो उसे तेरे लिए सुरक्षित रखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५०५) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : मनुबहन मशरूवाला

४१६. पत्र : रेहाना तैयबजीको

१० नवम्बर, १९३०

खुदा हाफिज

बेटी रेहाना,

तुम्हारा खत मिला, बहुत खुश हुआ।[1]

आजके लिए इतनी उर्दू काफी है न? तू मुझे दूसरा पाठ सिखा चुकी है; उसके बाद भी यदि मैं चन्द शब्द उर्दूमें न लिखूं और तू मुझे मूर्ख शिष्य मानकर मेरा त्याग कर दे तो मेरा क्या हाल होगा? इतनी सावधानी और सफाईसे उर्दू लिखनेमें तुझे देर न लगती हो और ज्यादा मेहनत भी न होती हो तो उर्दूमें लिखती रहना। इस तरह मुझे उर्दूका कुछ अभ्यास अनायास ही हो जायेगा। मेरी बुरी लिखावट और उससे भी बुरी वर्तनी पर तुम सब लोगोंको जितना हँसना हो उतना हँसनेकी छूट है। लेकिन मुझे जड़ समझकर सिखाना मत छोड़ देना।

१. आरम्भकी ये तीन पंक्तियाँ उर्दूमें हैं। शेष पत्र गुजरातीमें है।

लेकिन यह तो मैं कहूँगा कि तेरी धूर्तताकी हद नहीं है। पता नहीं कहाँसे सीखी? मैंने तो नहीं सिखाई। उर्दूमें लिखनेकी छूट दी तो बेचारी आगे बढ़कर मुझसे ही उर्दू लिखवाने लगी। लेकिन तुझे अपनी गोद ली बेटी माना है तो अब मेरा छुटकारा भी कैसे हो सकता है! अम्माजानको मेरा 'वन्देमातरम्' कहना; बाबाजानको मेरी ओरसे गले भेंटना और उनकी दाढ़ी खूब खींचना।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती रेहानाबहन

गुजराती (एस० एन० ९६२३) की फोटो-नकलसे।

४१७. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

यरवडा मन्दिर
१० नवम्बर, १९३०

चि० जयसुखलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। शरीर ठीक रहे, तो मैं तुमसे दूध पीनेका आग्रह नहीं करूँगा। ऐसा न करना कि शरीर बिलकुल ही सूख जाये, तब लेनेकी सोचो।

अभी कुछ दिन मुझे पत्र नियमित रूपसे लिखते रहो। चलालाके बारेमें शंकरलालसे परामर्श करके जो ठीक मालूम हो, सो करना। रावजीभाई तथा जीवनलालका स्वास्थ्य कैसा रहता है? दोनोंको मेरा आशीर्वाद पहुँचाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एम० एम० यू०/३) की माइक्रोफिल्मसे।

४१८. पत्र : शान्ताको

यरवडा मन्दिर
१० नवम्बर, १९३०

चि० शांता,

तुमारा खत मिला। काशीनाथ लिखते हैं तुमको फिर बुखार आ गया। यह कैसे? सब बातमें सावधानीके साथ रहना आवश्यक है। गंगा बहनके साथ भले गई। यदि वहांका जलवायु अनुकूल न रहे तो वापिस आ जाना।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२६० की फोटो-नकलसे।

४१९. पत्र : नारणदास गांधीको

[११ नवम्बर, १९३०][1]

चि० नारणदास,

इस बार भी तुम्हारा पुलिंदा दो हिस्सोंमें मिला। पहले अंग्रेजी पत्र और उसके बाद अन्य पत्र दूसरे दिन। पहले भी ऐसा ही हुआ था। पुलिंदा खोलकर और अपनी इच्छानुसार वे थोडी-बहुत जाँच करके देते हैं। देखना तो जरूरी है ही। जल्दी दे पाये इसलिए भी कई बार दो भागोंमें देखकर देते हैं।

केशुने फिर लम्बा पत्र लिखा है। उसके कथनमें मुझे बहुत सार लगता है। उसने काफी गहरी जाँच की है। . . .[2] छुपा रहा है, मुझपर यह छाप पड़ी है। केशु और . . .[3] को लिखे पत्र पढकर देना। केशुके बारेमें उससे पूछ रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि उसकी अनियमितता आदि सहन करने योग्य है। वह सच्चा है, इसलिए दम्भ नहीं करना चाहता। जो उसकी इच्छा या शक्तिसे बाहर है, उसे करनेसे इनकार करता है। किन्तु उसमें सेवाभाव तो है ही। उसका हृदय साफ है इसलिए उसके छोटे-छोटे दोष सहन करना धर्म ही है, ऐसा लगता है। फिर अब वहाँ महादेव है। वह महादेवके निर्णयको माननेके लिए कह रहा है। महादेव क्या कहता है, यह मालूम करो। यदि महादेव इसको हल नहीं कर सका, तब अन्तमें मैं तो करूँगा ही।

हरिइच्छाके बारेमें तुमने जो लिखा है वह ठीक है। वहाँ शादीको न रोका जा सके तो निभा लेना। मुझे शक हुआ था इसलिए ही मैंने हरिलालसे पत्रमें यह पूछा था।

तकलीकी गतिके बारेमें बालकृष्णके पत्रमें ज्यादा हकीकत थी। क्या उसे तुमने देखा था? वहाँ अभी गति बढ़ रही है। मैं इस गतिको बहुत महत्वपूर्ण खोज मानता हूँ। मुझे याद है कि चार वर्ष पहले एक घंटेमें सौ तार कातना अच्छी गति मानी जाती थी। अब १६० तार कात पाना विनोबा द्वारा 'पास' किये जानेका माप है। गंगाबहनने बहुत साहस दिखाया है। किन्तु ईश्वर उसके कामको निभाता और शोभायमान करता आया है। अच्छा हुआ कुसुम गई। तुम्हारी सेवामें अब खास कौन व्यक्ति रहेगा? तुमपर बोझ तो बहुत पड़ेगा। काम करनेवाले इतने लोगोंके जानेसे काम कम होनेके बजाय बढनेकी ही सम्भावना है। कान्ताकी जगह कौन लेगा? जानेवाली बहनोंकी अन्तिम सूची भेजना।

तुम्हारी खुराक मुझे अच्छी लगी है। इसलिए यदि हजम हो जाये तो लगभग आदर्श मिश्रण है। मूँगफलीकी मात्रा न बढने देना। मूँगफली और खोपरा एक ही दिन न लेना। दूधकी मात्रा अब कम नहीं होने देना। कमसे-कम आधा पौंड तो हो ही। इतना दूध सत्त्वपोषक पदार्थ देता है, ऐसी डाक्टर मुत्तुकी राय है। कम-

१. गांधीजीने पत्र स्पष्टतः ११ से पहले लिखना शुरू किया होगा।

२ और ३. नाम नहीं दिये गये हैं।

जोरी लगे तो दूध या दहीकी मात्रा बढ़ाना। भणसालीको लिखा पत्र पढ़ना। अब भी वह आश्रममें आना चाहे तो जैसा तुम्हें ठीक लगे वैसा करना। भणसालीके साथ दृढ़ रहोगे तो वह ज्यादा तकलीफ नहीं देगा। लीलावहनको लिखा पत्र भी पढ़ लेना।

मैथ्यूके वहममें मुझे कुछ सार नहीं लगता। मेरा जवाब पढ़ लेना। पारनेरकरको आराम करना चाहिए। और शायद उसके लिए वायु-परिवर्तन भी आवश्यक है। उसे अपना स्वास्थ्य सुधार लेना चाहिए।

अब मुझे तल्लेके लिए मजबूत चमड़ा या नया जूतेका जोड़ा मिल जाना चाहिए। कितने ही लोग "जूते"के लायक होने पर भी जब उसे पाते हैं तो दुखी होकर लेते हैं। मैं उसके लायक तो कबका बन गया हूँ और अब तो प्राप्त करनेके लिए अधीर हो रहा हूँ।

काशी और कृष्णदासकी पुस्तकें जब कोई आये तभी भेजना। मुझे जल्दी नहीं है।[1]

मंगल प्रभात, ११ नवम्बर, १९३०

देवदाससे कहना कि उसका पत्र मुझे अभी नहीं मिला। उसने भेजा किस तरह था? उसमें क्या था? चाहे तो फिर पत्र लिखे। तारीख आदि बता सके तो ज्यादा जाँच कर सकता हूँ।

सोमाभाई आदि जो लोग जेलमें हैं क्या कोई उनसे मिलने जाता है? इतने सारे लोगोंसे मिलना मुश्किल है, यह मैं जानता हूँ। तो भी जिनसे मिलना किसीके लिए सम्भव न दिखे, ऐसे लोगोंको चुन लेना चाहिए। और उनसे मुलाकात करनेका कुछ प्रबन्ध हो सके तो अच्छा।

प्रभावतीको गुजरातीके अखबार बिल्कुल नहीं मिलते। हमारे पास 'मुंबई समाचार' आदि आते रहते हैं। उसमें से एक-दो उसे भेजे जाने चाहिए। उसने दो-एक बार मुझे लिखा भी, किन्तु मैं लिखना भूल गया था। ...[2]का अलग पत्र मुझे कल मिला। उसे मुझे पत्र लिखना था, पर लिख सकूँ इससे पहले उसका पश्चात्तापका पत्र मिल गया। इसलिए मैंने अब जो उत्तर दिया है वह बिलकुल ही अलग हो गया है। उसके पत्रकी मुझपर यह छाप पड़ी है कि वह अभी बहुत छिपा रहा है। मेरा पत्र पढ़ोगे तो मालूम होगा। दुखपूर्ण कथा ही है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

सुरेन्द्र मशरूवालाको लिखा पत्र पढ़ना। उसे बुलाकर कहना कि वह आश्रममें आना चाहे तो मजेसे आये और रहे।

८२ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

१. इसके बाद गांधीजीने गीताके बारेमें लिखा था। गीता-सम्बन्धी पत्रांशके पाठके लिए देखिए खण्ड ४९, "गीता-पत्रावलि", अध्याय १।

२. नाम नहीं दिया गया है।

४२०. पत्र : सुरेन्द्र मशरूवालाको

यरवडा मन्दिर
११ नवम्बर, १९३०

चि० सुरेन्द्र (विद्यापीठवाले),

तेरा पत्र मिला। तुझे चिन्ता करनेका कारण नही है। तुझे जो रोग है वह आजकल बहुत देखनेमें आता है। जायफल लेना हो तो उसका केवल चुटकी-भर चूर्ण ही लेना। किन्तु सच्चा उपाय तो मानसिक है। मन और शरीरको सदा काममें लगाये रखो। एकान्तका सेवन मत करो। खुराक सादी और हमेशा निश्चित समय पर लो। शरीरको सह्य हो तो ठडे पानीसे स्नान करो। आश्रममें अच्छा लगे तो आश्रममें रहो या वर्धा चले जाओ। वर्धामें रहना शायद ज्यादा कठिन होगा। आश्रम जाना पसन्द करो तो नारणदास तुझे बुला लेंगे। चिन्ता बिलकुल न करना। मैं तुझे जरूर लिखता रहूँगा। तू मुझे नि.सकोच लिखते रहना। विशेप अगले पत्रमें।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

काकासाहब बाहर आयें तब उनसे पूछकर जो ठीक लगे सो करना।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५०६) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : मनुबहन मशरूवाला

४२१. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

यरवडा मन्दिर
११ नवम्बर, १९३०

भाईश्री खम्भाता,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा जीवन-चरखा मैंने चलाकर देखा। ठीक चलता है किन्तु फिलहाल मैं गाण्डीवकी परीक्षा कर रहा हूँ। जीवन-चरखा काकासाहब चलाते हैं। उन्हें वह सुविधाजनक मालूम हुआ है जबकि गाण्डीव उन्हें अनुकूल नहीं आया था। मैं तो गाण्डीवके सादेपन और सस्तेपन पर मोहित हूँ। परन्तु अभी मैं कोई अन्तिम निर्णय नही दे सकता। दूधका प्रयोग बम्बईमें क्यों नहीं हो सकता? उसमें डरनेकी कोई बात नही है। दूधकी तुलनामें सम्भवतः दही ज्यादा अनुकूल

आयेगा। यदि स्वादका सवाल न हो तो दूधका प्रयोग तुरन्त करने लायक है। उससे नुकसान नहीं हो सकता और उससे पर्याप्त पोषण मिलता है।

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

भाई बहरामजी खम्भाता
२७५, हार्नबी रोड
फोर्ट, बम्बई

गुजराती (जी० एन० ६५९८) की फोटो-नकलसे।

४२२. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
११ नवम्बर, १९३०

प्रिय भगिनी,

प्रतिष्ठानमें गीतापाठ साबरमतीके माफक हि चलता है क्या? यदि ऐसा हि है तो अब इरादा कीया है कि चौदा दिनके बदलेमें सात दिनमें परायण समाप्त करना। इस बारेमें तुमारी और सतीशबाबुकी क्या राय है लीखीयो। यदि वहां स्वतन्त्र दिनका पाठ होता है तो इस खतका कुछ ख्याल करनेकी आवश्यकता नहिं है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६७५ की फोटो-नकलसे।

४२३. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

यरवडा सेंट्रल जेल
१२ नवम्बर, १९३०

प्रिय चार्ली,

हालाँकि मैंने मीराको अभी उसी दिन पत्र लिखकर तुम्हें अपना प्रेम भेजा था और उसे बताया था कि मुझे तुम्हे पत्र नही लिखना चाहिए क्योंकि मै जो-कुछ लिखना चाहता था वह सब लिख नही सकता था, लेकिन मै तुम्हे लिख कर यह बतानेसे अपने-आपको रोक नही सकता कि सीधे तुम्हारा पत्र पाकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई है। मैं तुम्हारी याद रोज और अकसर करता हूँ। तुम जहाँ कही भी रहोगे, अच्छे कार्य ही करोगे, और ऐसा तुम इसलिए करते हो क्योंकि दैवी संकेत तुम्हें जहाँ जानेको कहता है तुम वहाँ होते ही हो।

मुझे तुम्हारी दोनोंमें से एक भी पुस्तक अभी तक नहीं मिली है। एक स्थानीय पत्रमें 'टाइम्स'में छपी समीक्षा मैंने पढ़ी है।

मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि गुरुदेवकी तबीयत अमेरिकामें ठीक नहीं रही और वह वापस लौट रहे हैं। आश्चर्यकी बात तो यह है कि इस आयुमें भी वह इतना श्रम सह लेते हैं। कृपया उनको और ग्रेग-दम्पतिको मेरा प्रेमाभिवादन देना।

सप्रेम,

मोहन

[पुनश्च :]

काका मुझे साथीके रूपमें दिये गये हैं। वह तुम्हें अपना प्रेमाभिवादन भेजते हैं। हम दोनो ठीक हैं।

श्री सी० एफ० एन्ड्रयूज
द्वारा फेल्प्स स्टोक्स फण्ड
१०१, पार्क एवेन्यू
न्यूयॉर्क सिटी
यू० एस० ए०

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९३१८) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : आफ्रिकाना म्यूजियम, जोहानिसबर्ग

४२४. पत्र : मीराबहनको

यरवडा मन्दिर
१३ नवम्बर, १९३०

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। 'गीता' के अध्यायो पर मैं जो-कुछ लिख रहा हूँ, उसके अनुवादकी व्यवस्था विलकुल ठीक है। मैं इस सम्मिलित प्रयासके फलकी प्रतीक्षा करूँगा। उन अध्यायोमें मैं अपना हृदय उँडेलना चाहता हूँ। इसका अर्थ होगा तुम्हारे लिए अतिरिक्त काम, और वह तुम्हारा वहुत-सा समय ले लेगा। परन्तु मैं जानता हूँ कि उसमें तुम्हे थकान महसूस नही होगी, क्योंकि उस कार्यसे तुम्हें प्रेम है।

यह लो, इस वार तुम्हारे पास भेजनेको एन्ड्रयूजका पत्र भी है। मुझे फौरन लिखे विना उनसे रहा नही गया। अन्तमें मैंने उन्हें कुछ पंक्तियाँ लिखकर भेज ही दी। जवतक केशु गाण्डीव पर पूरा कावू न पा ले और चरखेको चालू हालतमें तुम्हें न दे दे, तवतक तुम गाण्डीव पर विलकुल समय न लगाना। मुझे तो वह नये-नये आनन्द देता ही रहता है। गतिचक्रकी मूल मालको आखिर छोड़ना ही पड़ा, क्योंकि उसे कसनेके लिए मैं उसे और ज्यादा नही काट सकता था। वह

काफी मजबूत और मोटी होनी चाहिए। हाथकती मालोंमें उतनी मोटी मेरे पास कोई थी नहीं। तुम तो जानती हो, मैंने इन छोटी-छोटी चीजोंको बनाना न सीखकर कितनी बुरी गफलत की है। और मैं इस बात पर तुला हुआ था कि माल हाथकी ही बनी हुई होनी चाहिए। पहली कोशिशमें मुझे पूरे दो घंटे लगाने पड़े। वह सफल हुई और इसीलिए हुई कि छोटी-सी ही माल बनानी थी। दूसरी कोशिशमें तो मुझे मुश्किलसे आधा घंटा लगा होगा। आकस्मिक आवश्यकताके लिए मुझे दूसरी भी बना लेनी पड़ी। और वह आवश्यकता भी तुरन्त ही पैदा हो गई, क्योंकि जिन मूल धागोंसे मैंने माल बनाई थी वे कमजोर थे। अब मैंने जरूरी मजबूती लानेके लिए कितने ही धागोंमें जल्दीसे बल डालनेकी एक तरकीब सोच ली है। इसलिए मेरे तीसरे प्रयत्नमें और भी कम समय लगेगा। और इस बीचमें हाथ-कती मजबूत डोरियोंके छोटे-छोटे टुकड़े जमा कर रहा हूँ। इन्हें मैं जहाँ जरूरत हो वहाँ दो चीजोंको साथ बाँध कर रखने आदिके काममें ले सकता हूँ। इन सब बातोंमें मुझे आनन्द और आराम मिलता है, क्योंकि इनसे चरखे पर अधिक दक्षता प्राप्त होती है। गाण्डीवकी अविश्वसनीय सादगीके कारण यह सब बड़े आरामसे सम्भव हो गया है। लेकिन जबतक मेरी रायकी परिपुष्टि किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा नहीं होती जो चरखेकी रचनाके बारेमें मुझसे अधिक जानता हो तबतक मैं अपनी रायको अन्तिम और प्रामाणिक नहीं मानूँगा। लेकिन मैं तुम्हें यह चेतावनी दे दूँ कि इस विस्तृत विवरणको तुम गाण्डीवमें जुट जानेके लिए दी गई कोई प्रेरणा मत समझना। मुझे मालूम है कि यदि मैं बाहर होता तो मैं इस चीज पर इतना सब समय, विचार तथा ध्यान नहीं दे सकता था। अन्य आवश्यक कार्योंकी उपेक्षा करके इसे करना तो अवांछनीय भी होता। यह विवरण मैंने तुम्हें अपने आनन्दमें हिस्सेदार बनानेके खयालसे दिया है। चरखा, तकली और बुनकीने तो मेरे ऊपर सम्मोहन कर दिया है। मुझे उनसे थकान ही महसूस नहीं होती। रोज लगता है कि काश इन्हें देनेको मेरे पास और अधिक समय होता। मैं चाहता हूँ कि इन तीनों पर और अधिक उत्पादन हो सके। लेकिन मैं बड़ा फूहड़, मूर्ख और सुस्त हूँ। मै ज्यादा उत्पादन नहीं कर पाता, इसका कारण न जाने क्यों मुझे लगता है कि बुढ़ापेकी जड़ता नहीं है। शायद मुझमें वह कुशलता ही नहीं है। फिर भी मुझे यही जानकर सन्तोष होता है कि इस हालतमें ईश्वर मेरी इस छोटी-सी भेंटको ही उत्तम समझकर स्वीकार कर लेगा। अगर तुम जाड़ेमें ठंडे पानीसे स्नान बरदाश्त कर सको, तो इससे अधिक स्फूर्तिदायक और कुछ नहीं है। हाँ, प्रकृतिके विरुद्ध कोशिश न करना। अगर नहानेके बाद फौरन गर्मी महसूस न हो, तो तुम फिर गर्म पानीसे ही नहाने लग जाना। उस प्रतिक्रियाके लिए शर्त यह है कि खाली हाथोंसे जोरके साथ मालिश की जाये। मुझे १९१४ में लन्दनमें प्लूरिसीके उस कमबख्त दौरेके बाद ही ठंडे जलसे स्नान करना दुःखके साथ छोड़ना पड़ा था। तुम्हारी खुराक बिल्कुल अच्छी है। घी अधिक लेनेकी जरूरत हो सकती है। अनुभवने बता दिया है कि तुम्हें शक्ति, गर्मी और वजन कायम रखनेके लिए काफी मात्रामें घीकी आवश्यकता है।

गगा देवी थोड़ा-बहुत टहल सकती है। उन्हें नपे-तुले कदम चलने चाहिए और शुरूमें एक बारमे कुछ ही मिनट घूमना चाहिए। तबीयत फिर से खराब होनेके हर खतरेसे बचना चाहिए। कटि-स्नान लेने पर उनकी पेशाबकी तकलीफ दूर हो जायेगी। यदि पानी ठडा हो तो ठडक कम करनेके लिए थोड़ा गर्म पानी मिलाया जा सकता है। यह कटि-स्नान बिल्कुल अचूक उपाय है।

ये चाचा, जिन्होने शादी की है, क्या जरा अधेड़मे नही है, और बहुत विद्वान होकर भी हिज्जोंकी गलतियाँ करनेमे तो तुमसे भी होड लगाते है?

तो अपनी जन्मतिथिके अनुसार तो तुम कुछ माहकी बच्ची ही हो!! इस प्रकार तुम्हे तो अभी बहुतसे वसन्त देखने है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४२०)से। सौजन्य: मीराबहन; जी० एन० ९६५४ से भी।

४२५. पत्र: शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
१३ नवम्बर, १९३०

चि० शारदा,

तेरा पत्र मिला। सूर्य-स्नान और तेलकी मालिश जारी रखना। तकली पर तो तार टूटना ही नही चाहिए। चरखे पर कुछ टूटन निकलती है— इस बातका कोई अर्थ नही होता। किन्तु यदि तूने ऐसा लिखा होता कि अमुक अकके इतने तारोमें इतनी टूटन निकलती है तो बात अर्थपूर्ण होती। इसका हिसाब निकालना। एक दूसरी बात भी बताता हूँ। यह देखो कि आधा घंटेमे तूने कितने तार खीचे और उस अवधिमें वे कितनी बार टूटे। यह तो तेरी समझमें आता है न, कि इसमें और टूटनके वजनमें फर्क है। यदि तू यह बात समझ गई हो तो मुझे लिखना कि वह फर्क क्या है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८९४) से। सौजन्य: शारदाबहन जी० चोखावाला

४२६. पत्र : वसुमती पण्डितको

१३ नवम्बर, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा सूखा-सा पत्र मिला। यह कैसी बात है कि हम इतने महान परिवर्तनसे गुजर रहे हैं और तुझे कुछ लिखनेको न सूझे। हाँ, यह हो सकता है कि इस महान् परिवर्तनके प्रभावमें मन स्तब्ध हो जाये और बुद्धि विमूढ़। फिर तो स्वाभाविक है कि लिखनेकी कोई बात न सूझे। ऐसे समय मन केवल काममें निमग्न हो जाता है; दूसरी कोई बात उसे नहीं सूझती। तेरी ऐसी भव्य स्थिति हो तब तो मुझे कुछ कहना नहीं है। तब तो मैं तेरा इतना लिखना भी काफी मानूंगा कि "बापू, सब कुशल है। वसुमती"

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२९३) की फोटो-नकलसे।

४२७. महादेव देसाईको लिखे पत्रका अंश[1]

१३ नवम्बर, १९३०

चरखे और फ्रेंचके विषयमें तुमने जो लिखा है, उसमें भी सिद्धान्त दृष्टिसे त्रुटि पाता हूँ। जो समय चरखेको सर्मापण कर दिया है, उसे दूसरे काममें नहीं लगाया जा सकता। कोई बात करने आ जाये, तो शिष्टताके विचारसे बात कर सकते हैं; पर इस आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि बातोंके बजाय कुछ सीखा ही जाये तो उसमें क्या बुराई है। बातसे तो जब चाहे छुट्टी पाई जा सकती है। बात करनेवाला भी बहुत देर तक बैठ कर बातें नहीं करेगा। पर कोई सिखाना स्वीकार करने पर पूरा समय देनेको मजबूर हो जाता है। यह सब तब लागू समझना चाहिए जब हम चरखेको यज्ञरूपमें चलाते हों। अपने विषयमें मैं इस सत्यका प्रत्यक्ष अनुभव करता हूँ। चरखा चलाते समय जब अन्य विचारोंमें उलझता हूँ तब गति पर, नम्बर पर, समानता पर उसका असर पड़ता है। कल्पना करो कि रोमाँ रोलाँ या बीथोवन पियानो पर बैठे हैं। उसपर वे ऐसे तन्मय हो जाते हैं कि बात नहीं कर सकते, न मनमें अन्य विचार कर सकते हैं। कला और कलाकार पृथक नहीं

१. पत्र किसे लिखा गया था, साधन-सूत्रमें यह स्पष्ट नहीं है। किन्तु १३/१७-११-१९३० को नारणदास गांधीको लिखे पत्रमें गांधीजीने यज्ञार्थ कताईका उल्लेख किया है और इस सम्बन्धमें महादेव देसाईको लिखे पत्रको पढ़नेके लिए कहा है। सम्भवतः यह वही पत्र है।

होते। यदि यह बात पियानोके लिए सत्य हो तो फिर चरखा-संगीतके लिए कितना अधिक सत्य होना चाहिए? यह अलग बात है कि ऐसा करना आज सम्भव नहीं है। अपने विचार-क्षेत्रको बावन तोला पाव रत्ती शुद्ध रख सकें तो तदनुसार आचरण किसी दिन हो ही जायेगा। यह न समझो कि इसमें जो-कुछ कहा है, उसकी आलोचना है। मैं खुद बहुत अधूरा हूँ, मुझे आलोचना करनेका हक भी कहाँ है? जितना जानता हूँ उसपर मैं खुद कहाँ पूरी तरह चलता हूँ? चलता होता तो कबका चरखा सात लाख गाँवोमे गूंज जाता। आज भी जो जानता हूँ उसके अनुसार सौ फीसदी चल सकूँ तो मेरे यहाँ बैठे रहने पर भी चरखा हवाकी तरह फैल जाये। पर यदि मालवीयजी भागवत-पुराणकी चर्चामें थकें तो मैं चरखा-संगीतकी बातोंसे थकूँ। चरखापुराण तो कैसे कहूँ? पुराण तो भविष्यकी पीढ़ी रचेगी, बशर्ते कि हम कुछ रचने लायक कर जाये। आज तक तो हम इसका टूटा-फूटा संगीत रचते रहे हैं। अन्तमें उसमें से कैसा सुर निकलता है यह हमारी तपश्चर्या और हमारे समर्पण पर निर्भर रहेगा।

. . .[1] अब मैं पिछले पत्रमें कही बातको आगे बढ़ाऊँगा।

मुझे आदर्श तो यह लगता है कि यज्ञके समय मौन रखा जाये। उस समय जो विचार करें वह चरखे, या कहो खादी-सम्बन्धी अथवा रामनामका करें। रामनाम को विस्तृत अर्थमें लेना चाहिए। वास्तवमे रामनाम तो जाने-अनजाने हमेशा मनमे होना ही चाहिए, जैसे संगीतमें तानपूरा। पर हाथ जो काम कर रहे हो, हम उनमें लीन न हो तो रामनामका इच्छापूर्वक जाप करना चाहिए। चरखा चलाते हुए हम बातें करें, कुछ सुनें या और कोई काम करें तो यह क्रिया यज्ञ तो नही होगी। यदि यह यज्ञ कर्त्तव्य है तो उतने समयके लिए उसमे लीन हो जाना चाहिए। जिसका सारा जीवन यज्ञरूप है और जो अनासक्त है, वह एक समयमें एक ही काम करेगा। इतना जानते हुए भी (अल्पाधिक प्रमाणमें) मैं ही पहला पापी ठहरता हूँ; क्योंकि कह सकते है कि मैंने किसी दिन चुपचाप एकान्तमें बैठकर अर्थात मौन रहकर नहीं काता। मौनवारके दिन कातते-कातते डाक सुनता या किसीकी कोई बात सुननी होती तो वह सुनता। यह कुटेव यहाँ भी नही गई। इसलिए कोई ताज्जुब नही कि कातनेमें बहुत नियमित होते हुए भी मेरी गति ठीक नही है और अब जाकर घंटेमें मुश्किलसे २०० तार तक पहुँचा हूँ। और भी अनेक दोष अपनेमें पाता हूँ, जैसे तार टूटना, माल बनाना न जानना, चमरखका अल्पज्ञान, रुईकी किस्म न पहचानना, समानता वगैरा पूरी तरहसे न निकाल सकना, तारकी परख न कर सकना इत्यादि। क्या यह सब किसी याज्ञिकको शोभा देता है? फिर खादीकी गति धीमी रह गई तो इसमें क्या आश्चर्य है? यदि दरिद्रनारायण है, और उसके होनेमें कोई शक नही है, और यदि उसकी प्रसादी खादी है, और यह कहनेवाला, जाननेवाला जो-कुछ कहो वह मैं हूँ, फिर भी मेरा अमल कितना ढीला-ढाला है? इसलिए इस विषयमें किसी औरको दोषी ठहराने का जी नही होता। मैं तो सिर्फ तुम्हें अपने दोषका, दुःखका और उसमेंसे उत्पन्न

१. साधन-सूत्रमें छूटा हुआ है। इसके बादका अंश सम्भवतः इससे अगले पत्र में से लिया गया है।

होनेवाले खयालका और ज्ञानका दर्शन कराना चाहता हूँ। यद्यपि काका के साथ यदा कदा ऐसी बातें हुई हैं, तथापि इतनी स्पष्टतासे यह पहले-पहल तुमसे ही कह रहा हूँ। और यह स्पष्टता भी आई तुम्हारे उस फ्रेंचको चरखेके साथ जोडनेके कारण। तुमने जो किया उसमें मैं तुम्हारा तनिक भी दोष नही पाता। मै देख रहा हूँ कि चरखेका कैसा कच्चा 'मन्त्रा' हूँ मैं। मन्त्रको तो जाना, पर उसकी पूरी विधि आचारमें नही उतारी, इसलिए मन्त्र अपनी पूरी शक्ति नही प्रकट कर सका। चरखेकी भाँति ही इस बातको सारे जीवन पर घटाकर देखो तो कल्पनामें तो तुम्हे जीवनकी अद्‌भुत शान्तिका अनुभव होगा और सफलताका भी। 'योग: कर्मसु कौशलम्'[1] का तात्पर्य यह है, इस बातको ध्यानमें रखकर जितना हो उतना ही करनेको हाथमें लें और सन्तोष मानें। मेरा दृढ़ विश्वास है कि इससे हम अपनेको और समाजको अधिकसे अधिक बढ़ानेमें अपना कर्त्तव्य करते हैं। जबतक इसका पूरा-पूरा अमल न हो ले, तबतक तो यह कोरा पाण्डित्य ही कहा जायेगा। दिन-दिन इस दिशामें बढ़ तो रहा हूँ। बाहर निकलने पर क्या होगा, वह भगवान जानें। तुम इसमें से बन सके तो इतना तो अमलमें ला सकते हो कि यज्ञके निमित्त जितने तार तय कर लो उतने तो शास्त्रीय रीतिसे कातो। और फिर तो चाहे जिस दिशामें हिन्दुस्तानकी सम्पत्ति बढ़ानेके इरादेसे कातते रहो। अभी लिखते जानेकी इच्छा होती है। पर अब बस करता हूँ।

[गुजरातीसे]

गीता-बोध

४२८. पत्र : शिवाभाई पटेलको

१३ नवम्बर, १९३०

चि० शिवाभाई,

तुम जेलसे छूट चुके हो, इसका पता तो तुम्हारे पोस्टकार्डसे ही लगा। प्यारेलाल तो भूल ही गया था। खुजली कैसे हो गई? यह तो ऐसी बीमारी है जो तुरन्त अच्छी हो सकती है। खानेमें परहेजका पालन तो करते होगे। जेल-मन्दिरमें तुम कितने दिन रहे और तुम्हें क्या अनुभव हुए सो लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९५०१) की फोटो-नकलसे।

१. भगवद्‌गीता २, ५०।

४२९. पत्र : गंगादेवी सनाढ्यको

यरवडा मन्दिर
१३ नवम्बर, १९३०

चि० गगादेवी,

बहोत दिनोसे मैंने नहिं लिखा है और मैं न लिखु तो तुमने न लिखनेका व्रत लिया लगता है। घूमनेके बारेमें और जो दर्द होता है इस बारेमें मैंने विस्तारसे सीता-बहनको लिखा है वे समजावेगी। मुझको निःसकोच जो लिखना है लिखो। तोतारामजी कैसे हैं।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० २५४३ की फोटो-नकलसे।

४३०. पत्र : अब्बास तैयबजीको

यरवडा मन्दिर
१४ नवम्बर, १९३०

ओ सफेद दाढीवाला नौजवान, तीन हफ्तेका मेहमान, भुर्रर्र!

जो है तो बच्ची, पर दिखाना चाहती है बडी, ऐसी उस लडकीको यदि मैं गुजरातीमें लिखता हूँ; तो जो है तो बूढा, पर रोज-रोज जवान बन रहा है उस पिताको भी मातृभाषामें ही क्यो न लिखूं? पश्चिमके लोग तार पर बातचीत करते हैं और अब तो तारके जरिये तसवीरें भी भेजी जाती हैं। मेरे पास तो पूर्वकी विद्या है। सो मैं [तारकी सहायताके बिना ही] मुक्त हास्यसे भरपूर एक ऐसा चेहरा देख रहा हूँ जिसके सफेद दाढी है लेकिन फिर भी जिसपर तरुणाई खेल रही है और वह उस रिपोर्टरसे कह रहा है कि "मैं तीन हफ्तेमें फिर अपने उसी विश्राम-धाममें पहुँचने वाला हूँ।" उसके चेहरेकी यह तसवीर तो मेरी जेबमें ही पड़ी हुई है। मेरे जेब नहीं है, इसकी मुझे कोई चिन्ता नही है। बूटेने खूब कमाल किया। और तिसपर खूबी यह कि सारा कुटुम्ब ही ऐसा है! खुदा उसे सलामत रखे! खुदा हाफिज।

बापूका भुर्रर्र

गुजराती (एस० एन० ९५७३) की फोटो-नकलसे।

४३१. पत्र : कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
१४ नवम्बर, १९३०

चि० कुसुम (वड़ी),

तुझे क्या कहूँ? लिखने वैठी तव तो तू काफी खवर दे सकी। अव तू अपने किये हुए निश्चयका पालन करना। यदि तू चाहे तो मेरे पास अपना रोना भी रो सकती है। हमें तो दुःखमें सुख मानना है। यही 'गीता' का सार है, यों भी कहा जा सकता है। लेकिन मैं तुझे कोई उपदेश नहीं देना चाहता।

चप्पलें तो अन्ततः मुझे मँगवानी पड़ी हैं। कपड़े कोई नहीं चाहिए। यहाँका कम्वल इस्तेमाल करता हूँ। कूचके लिए जो कम्वल साथ लिया था वह तो है ही। खादी तो वहुत आ गई है। तेरा स्वास्थ्य तो अव अच्छा है न? काकासाहव २८ तारीख तक छूटेंगे।

वापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८०९) की फोटो-नकलसे।

४३२. पत्र : तहमीना पी० जोशीको

यरवडा मन्दिर
१४ नवम्बर, १९३०

प्रिय वहन,

तुम्हारा पत्र मिला है। मैं वोर नहीं हुआ हूँ और न होऊँगा। तुम्हारा जव मन हो तव मुझे पत्र लिखो। अपने पत्रमें दादाभाई [नौरोजी] का उल्लेख करके तुमने अच्छा किया। वह मेरे लिए पिता-तुल्य थे। जव मैं इंग्लैंड पहुँचा, उस समय वही एक वुजुर्ग व्यक्ति थे जिनके नाम मेरे पास चिट्ठी थी। उन्होंने मुझे अपनी देखभालमें ले लिया और फिर मुझे कभी नहीं छोड़ा।

दक्षिण आफ्रिकाके हमारे आरम्भिक दिनोंमें उन्होंने ही हमारा नेतृत्व किया था। लगभग हर पखवाड़े मुझे उनका एक पत्र मिलता था। आज मैं उनके आशीर्वादों का सुफल प्राप्त कर रहा हूँ।

मोहनदासके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ११५) की फोटो-नकलसे।

४३३. पत्र : भगवानजी पण्डयाको

१४ नवम्बर, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। सच्ची प्रगति [देखनेमें] धीमी लगती है लेकिन वस्तुतः वह हमें शीघ्रातिशीघ्र गन्तव्य स्थान पर पहुँचाती है। जैसे-जैसे मनुष्य परिणामके प्रति मोह रखे बिना सहज प्राप्त सेवा-कर्ममें लीन होता जाता है वैसे-वैसे वैराग्य उसके लिए सहज होता जाता है और उस समय इन्द्रियो पर नियन्त्रण रखना भी उसके लिए नितान्त सहल हो जाता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३३०)से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्डया

४३४. पत्र : पद्माको

यरवडा मन्दिर
१४ नवम्बर, १९३०

चि० पद्मा,

कितनी लापरवाह लडकी है तू? मक्खीकी टाँग जैसे टेढे-मेढे अक्षर लिखकर तू अभीसे अपनी लिखावट खराब क्यो कर रही है? और वहाँ क्या स्याही नही है? तू अपनी तबीयतके बारेमें कुछ भी नही लिखती। तेरी बात सच है कि वहाँकी बहनोंके त्यागको देखते हुए हमारे त्याग नगण्य है। बस अब तू वहाँ रहकर वैसी ही त्यागकी भावनाका विकास करना और खूब सेवा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६११५) की फोटो-नकलसे।

४३५. पत्र : अब्दुल कादिर बावजीरको

यरवडा मन्दिर
१४ नवम्बर, १९३०

भाई इमामसाहब,

जबतक यह पत्र आपके पास पहुँचेगा तबतक आप रिहा हो चुके होंगे। मुझे अभी हाल ही में आपके बीमार पड़नेकी खबर मिली थी; आशा है, अब आप बिलकुल ठीक हो गये होंगे। अब आप फिर कब सरकारके मेहमान बनेंगे, यह देखना है। आपकी जेलकी प्रवृत्तिके बारेमें मैंने सुना तो है लेकिन वह सब मैं आपके मुखसे सुनना चाहूँगा। अमीना अब शान्त हो गई है क्या? कुरेशीसे मिले थे?

बापूकी दुआ और वन्देमातरम्

गुजराती (जी० एन० ६६४६) की फोटो-नकलसे।

४३६. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

१४ नवम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन,

काकासाहब को लिखा तुम्हारा पत्र देरसे मिला। बात उसे पढ़ने पर ज्यादा समझमें आई। तुम्हें तो यश मिलता ही है। किन्तु खूब धीरजसे काम लेना। बहुत जोखिम उठाया है। किन्तु हम जो तीन नये श्लोक[1] गाते हैं, उन्हीका रटन करना। जो भगवानका ही नाम रटता है और उसके लिए ही काम करता है, उसकी सफलताका भार भगवान उठाते हैं। उसका पथप्रदर्शन भी वही करते हैं। फिर हम क्यों चिन्ता करें?

पद्माको बुखार आ गया लगता है। उसे कही कोई सूजन भी है। क्या बात है, यह तुम न समझ पाओ तो हरिभाईको दिखा देना। और यदि तुम्हारी ही समझमें आ जाये तो जो इलाज ठीक लगे, निर्भय हो कर करना। भगवान ही मार्गदर्शक हैं, यह समझकर जिस अवसर पर जैसा ठीक लगे वह करके पीछे एकदम निश्चिन्त हो जायें। शक्तिसे बाहर बोझ न उठाना।

पुरुषोंने स्त्रियोंके साथ अन्याय किया है और अब भी करते हैं। किन्तु इसका उपाय अन्ततः स्त्रियोंके हाथमें ही है। स्त्री स्वयं अपने-आपको अबला मानना छोड़ दे तो आज ही स्वतन्त्र बन सकती है। जिसके शरीरमें बल है वही बलवान नहीं

१. अभिप्राय कदाचित् द्रौपदीकी प्रार्थनासे है।

है। रावण-जैसा राक्षस अर्थात् शरीरमें बलवान पुरुष भी निर्बल लगनेवाली सीताके सामने अपंग-जैसा था। तुम्हें याद है न? सीताको वरदान था कि उसके ऊपर कोई भी कुदृष्टि करे तो भस्म हो जायेगा। रावण यह जानता था, इसीलिए सीताको उठा कर ले गया किन्तु उसका मलिन स्पर्श नही कर सका। उसके लिए तो वह सीतासे विनय ही करता था। वह सीताको धमकाता भी था कि वह डर जाये। पर जबतक सीता डरे नही या द्रवित न हो तबतक रावण शरीरसे बलवान होते हुए भी बकरी-जैसा था। सीता शरीरमें कुछ भी बल न होते हुए भी सिंहनी-जैसी थी।

हम इस वरदानका अर्थ जान ले। वरदान कल्पना है। जिस स्त्रीमें अडिग पवित्रता है, उसे सीता-जैसा ही वरदान है। उसपर कुदृष्टि डालनेवाला भस्म हो जायेगा। अब तक पुरुष स्त्रियोंको दुःख देते आ सके है, इसका कारण यही है कि वह उनकी तरह विकारवश हो गई है। दोनो लालचमें फँसे, इसलिए सुध-बुध खो बैठे, आत्माको भूल गये; इसलिए फिर तो शरीर ही बाकी रहा। उसमें तो पुरुष बलवान है ही। इसलिए स्त्री उसके अधीन हो गई और उसे ऐसा ही सोचनेकी आदत पड़ गई कि वह अपंग है, अबला है और हमेशा पुरुषकी शरण लेने लायक है।

आत्मा तो दोनोकी एक-सी है। किन्तु पुरुष आत्माको न पहचाने और स्त्री ही पहचाने तो स्त्री बलवती हो जाती है, जैसे सीता; और पुरुष हो गया रावणकी तरह। यह रामके ही युगमें शक्य था, सो भी मत मानना। आज भी ससारमें अनेक सीताएँ पड़ी हैं जो एक भी पुरुषकी मददकी जरूरत नही रखती और फिर भी सुरक्षित है। जानकी मैया एक ऐसी स्त्री है। उन्हें तुमने देखा होगा। मैं बम्बई जाता हूँ तब हर बार मुझे मिल जाती है। उस बेचारीमें बुद्धिबल ज्यादा नही है, किन्तु आत्मबल तो अपार है। वे जवानीमें रूपवती रही होगी। भरी जवानीमें उन्होने कठिन सेवा हाथमें ली। ऐसी दूसरी भारतीय स्त्रियाँ भी मेरे सामने हैं, अंग्रेज स्त्रियाँ भी है, और ये सब उदाहरण अल्प आत्मशक्तिवाली स्त्रियोके है। जिसमें आत्मा पूर्ण रूपसे विकसित है, वह जगदम्बा होनेके लायक है। जो इच्छा करे उसके लिए आज भी सतयुग है। इसलिए तुम्हारा काम स्त्रियोको बलवान बनाना है। पुरुषसे इसाफ पानेकी यह सही रीति है। मेरे जैसे व्यक्ति मार्ग-दर्शन करें, पुरुषको अपने धर्मका भान करायें। किन्तु स्त्री-सेवा करनेकी मेरी शक्ति सीमित ही है।

स्त्रीकी पूरी तरह सेवा तो स्त्री ही करेगी। ऐसी एक नही, अनेक स्त्रियाँ आश्रम में तैयार करना मेरी एक बहुत बड़ी अभिलाषा है। यह अवसर इस समय सहज ही हाथ आ गया है।

यह बात समझमें न आई हो, तो फिर पूछना।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ६ : गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७६४ से भी। सौजन्य : गगाबहन वैद्य

४३७. पत्र : प्रेमलीला ठाकरसीको

यरवडा मन्दिर
१४ नवम्बर, १९३०

प्रिय बहन,

रुईकी पहुँच और आपके पत्रके उत्तर देते हुए मैंने जो पत्र लिखे थे, वे मिल गये होंगे। कृपया डेढ़ सेर रुई और भेज दीजिए। आशा है सब बहनें आनन्दपूर्वक होंगी।

मोहनदासके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ४८१६) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : प्रेमलीला ठाकरसी

४३८. पत्र : गंगाबहन झवेरीको

यरवडा मन्दिर
१५ नवम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन (झवेरी),

तुम्हारा पत्र मिला। जान पड़ता है कि तुम सचमुच बीमार हो। फलोंमें यदि नारंगी, मुसम्बी, ताजा अंगूर खानेको मिले तो काफी है। और यदि पानीमें डुबोये हुए काले सूखे अंगूर तथा मुनक्का ले सको तो वह भी ठीक रहेगा। जबतक पेचिशका असर दिखाई दे तबतक अत्यन्त सावधानीके साथ उनके छिलके निकाल कर अथवा उनका रस निकालकर लेना चाहिए। जब पेट खराब हो, तब चाहे कितनी ही कम-जोरी क्यों न हो, थोड़ा बहुत उपवास करनेसे अवश्य लाभ होता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३१०८) की फोटो-नकलसे।

४३९. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
१५ नवम्बर, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। डाक्टरसे मिली यह तो अच्छा ही किया। लेकिन मैं अपने उपचारपर ही कायम हूँ। चाहे तो डाक्टरका इलाज बादमें करना। लेकिन कमसे-कम सात दिनका उपवास तो कर ही डालना। हमें उपवाससे नही डरना चाहिए। सात दिनके उपवासमें तू अपने अधिकाश कार्योको पूरा कर सकेगी। अपने जीवनमें जब पहली बार मैंने लम्बा उपवास किया था उस समय मैंने एक दिन भी आराम नही किया था और मुझे कोई दिक्कत भी नही हुई थी। वह उपवास सात दिनका था। शरीरमें उस समय थोडी बहुत चर्बी थी। जिस व्यक्तिके शरीरमें ज्यादा चर्बी नही होती, उसे ही उपवासमें विवश हो बिस्तर पर पडे रहना पडता है। दो दिन बाद तो तुझे पहलेमे ज्यादा शक्ति मालूम होगी। दो दिन झूठी भूख लगेगी जरूर, फिर तो भूख भी नही लगती। और अन्तमें रक्तके शुद्ध होनेपर भूख लगती है। उस बीच एनिमा लेकर पेट अवश्य साफ रखना चाहिए। एनिमा लेनेके बाद अर्धसर्वांगासन करनेसे पानी ऊपरकी अँतड़ियो तक पहुँचता है। लेकिन यदि तुझे इस आसनकी जानकारी न हो तो आसन न करना। उपवासके दिनोमें पानीमें सोडा और नमक डालकर खूब पीना चाहिए। हर आठ औंस पानीमें पाँच ग्रेन नमक, दस ग्रेन सोडा मिलाकर ऐसे आठ प्याले तक आसानीसे पिये जा सकते हैं। धूपमें बैठना। मेरी इच्छा है कि तू नि.शक होकर उपवास करना। डाक्टरसे कहना चाहो तो भले कहना। शायद वे भी यह इलाज पसन्द करे। अब तो बहुतसे डाक्टर उपवासके चमत्कारको मानने लगे हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६९०) से। सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२४१ की फोटो-नकलसे भी।

४४०. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
१५ नवम्बर, १९३०

चि० हेमप्रभा,

अच्छा 'प्रिय भगिनि,' छोड देता हुं। कैसे भी लिखता था मैं कोशीष तो पितादि बननेकी करता हुं। तुमारे प्रेम और विश्वासका मै पात्र बनुं ऐसी प्रार्थना ईश्वरसे प्रतिदिन करता हुं। तुमारे ऐसी बहनोंका खयाल कर मै जानता हुं कि इस आत्म शुद्धि पक्षमें भगवानका हाथ है हि। तुमारी हिंदी भाषा ऐसी सरल है मुझको समजनेमें कोई कष्ट नहिं है। सच्ची बात यह है हृदयके भावोंके लिये भाषा क्या कर सकती है। हृदयके भाव ऐसी हि प्रगट हो जाते है। क्रिश्नदास अब छुटा है, उसे अपनाइये। उसका खत मेरे पास आया है। तुमसे मिलनेका तो मैंने लिखा हि है।

गीताके बारेमें मेरा खत मिला होगा।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६७६ की फोटो-नकलसे।

४४१. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

यरवडा मन्दिर
१६ नवम्बर, १९३०

प्रिय कुमारप्पा,

यदि कोई व्यक्ति कोई कार्य करने या न करनेका अपरिवर्तनीय निर्णय करता है, तो मेरे लिए इसका अर्थ व्रत है। अत्यन्त शक्तिशाली व्यक्तियोंको भी कभी-कभी दुर्बल होते सुना गया है। हमारी शक्तिको चूर्ण कर देनेका भी ईश्वरका अपना एक तरीका है। इसीलिए व्रतोंकी, अर्थात् संकटके क्षणोंमें ईश्वरसे हमें शक्ति प्रदान करनेकी प्रार्थना करनेकी आवश्यकता है। लेकिन मुझे तुमसे बहस नहीं करनी चाहिए। मुझे लगता है कि हम दोनोंका तात्पर्य एक ही है, लेकिन हम उसे भिन्न-भिन्न ढंगसे व्यक्त करते हैं — कहें कि तुम स्पेनी भाषामें और मैं इतालवी भाषामें?

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १००८२) की फोटो-नकलसे।

४४२. पत्र : सुशीला गांधीको

यरवडा मन्दिर
१६ नवम्बर, १९३०

चि० सुशीला,

मुझे अभी-अभी मणिलालका लिखा पहला पत्र मिला है। उसमें उसने लिखा है कि उसकी तबीयत बहुत अच्छी है। उसका वजन ४० पौंड नही, बल्कि २२ पौंड कम हुआ है। यह भी ज्यादा है। लेकिन वह खूब प्रसन्न दीख पडता है। विद्याभ्यास भी खूब कर रहा है। ईश्वरने उसे हर तरहकी परिस्थितियोको निभा ले जानेकी शक्ति दी है। और चूंकि वह सरल हृदय व्यक्ति है इसलिए भगवान हमेशा उसकी रक्षा करता है। तुम्हे तो कदाचित यह सब मालूम ही होगा – फिर भी इन गुणोकी जितनी ज्यादा चर्चा होगी, तुम्हे तो उतनी ही खुशी होगी। मुझे नियमित रूपसे लिखती रहना। भारतीको अक्षर लिखनेके लिए प्रेरित करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७७७) की फोटो-नकलसे।

४४३. पत्र : शान्ता शंकरभाई पटेलको

यरवडा मन्दिर
१६ नवम्बर, १९३०

चि० शान्ता (शंकरभाई),

तेरा पत्र मिला। यह सच है कि तू योजनाएँ बहुत बनाती है; लेकिन तू अभी इतनी बूढी नही हो गई है कि इनमें से अनेक योजनाओको समयपर कार्यान्वित न कर सके। फिर भी फिलहाल हमने जिस कामको हाथमें लिया है उसमें तल्लीन होना। चित्रकला है, सगीत है, सस्कृत है — विवाह करने [की इच्छा] वालेके लिए यह विवाहके समान है और कन्याओके लिए यह कौमार्य-व्रत है। मुझे इसी तरहसे लम्बे पत्र लिखती रहना और उलटे-सीधे जितने भी विचार मनमें उठें, उन्हें नि:सकोच होकर मेरे आगे प्रस्तुत करती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४०५६) की फोटो-नकलसे।

४४४. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
१६ नवम्बर, १९३०

चि० मनु,

तेरा पत्र मिला। जबतक तुझे बुखार आता है और डाक्टर तुझे बिस्तर छोड़नेसे मना करता है तबतक तुझे हाथसे पत्र लिखनेकी कोई जरूरत नही है। तेरी देखभाल के लिए जो व्यक्ति तेरे पास हो उसे दो शब्द लिखनेके लिए कह देना ही काफी होगा। पत्र पढ़कर तो हम दोनोंको आनन्द आया। अलमोड़ा जानेके सम्बन्धमें जल्द-बाजी करनेकी जरूरत नही है। मेरा आग्रह तो नही है, केवल सुझाव-भर है। इस बारेमें विचार तो डाक्टर ही कर सकते हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७७०) की फोटो-नकलसे।

४४५. पत्र : महावीर गिरिको

१६ नवम्बर, १९३०

चि० महावीर,

बहुत दिनों बाद तुम्हारा पत्र आया। काकासाहब तुम्हारे पत्र अवश्य पढ़ते हैं। तुम मुझे जो पत्र लिखते हो उन्हें काकासाहब को लिखा हुआ ही समझो। मेरे पत्रमें उनके लिए अलगसे कुछ नही लिखा जा सकता। लेकिन अब तो उनके छूटनेमें दो सप्ताह भी नहीं बच रहे हैं। तुम्हारे अनुभव अच्छे हैं। तुम जब यह कहते हो कि अधिकांश तो सीखनेवालेकी मेहनतपर निर्भर करता है तो ठीक ही कहते हो। शिक्षक तो केवल इतना ही कर सकता है कि जहाँ भूल दिखाई दे वहाँ बता दे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६२२१) की फोटो-नकलसे।

४४६. पत्र : राधाबहन गांधीको

१६ नवम्बर, १९३०

चि० राधिका,

तेरा पत्र मिला। एक अच्छी पुस्तक भी सद्गुरुका काम दे सकती है। सच्चा सद्गुरु तो भगवान है। उसे जब हम अपने हृदयमें प्रतिष्ठित करते हैं, तब समझो कि सद्गुरु मिल गये।

हरिइच्छाकी सगाईकी बात सुनी थी। विवाहका समाचार तो स्वयं उसने ही दिया। कहाँ हुआ, किसके साथ हुआ? हरिइच्छा यदि अभी वहाँ हो तो उससे कहना कि मुझे पत्र लिखे। इसमें लज्जाकी क्या बात है? वरकी आयु कितनी है, क्या करता है, आदि समाचार यदि तुझे मालूम न हो तो जानकर मुझे लिखना। रुखीकी अच्छी परीक्षा ली जा रही है। क्या अब तू बिलकुल ठीक हो गई है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९३१५) से। सौजन्य : राधाबहन चौधरी

४४७. पत्र : प्रभावतीको

१६ नवम्बर, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरा दुःखपूर्ण पत्र मिला। रोज दौरे पड़ना सचमुच असहनीय है। तुझे वहाँसे हर हालतमें निकल आना चाहिए और आश्रम आकर यह सिलसिला खत्म करना चाहिए। यह रोग दवासे दूर नहीं होता। यह तो वायु-परिवर्तन और अनुकूल संगतिसे जाता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३७९) की फोटो-नकलसे।

४४८. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

यरवडा मन्दिर
१६ नवम्बर, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

तुम्हारे पत्र काफी नपे-तुले होते हैं। उनसे मुझे बहुत-कुछ सीखनेको मिलता है। वचन देकर बदल जानेवाली बहनोंसे निराश न होना, क्रोध भी न करना। अनेक वर्षोंकी बुरी आदतें एक-क्षणमें दूर नहीं हो सकतीं। लेकिन रस्सीके रोज घिसनेसे पत्थर पर भी निशान पड़ जाते हैं; विश्वास रखो कि उसी तरह पाषाणसम कठोर हृदय भी प्रेमरूपी रस्सीके घर्षणसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। मैंने चन्द्रको पत्र लिखा है। यदि उसने बिना किसीकी मददके अपने-आप ही वह सब लिखा है तो पत्र सचमुच बहुत अच्छा है। बहनोंको मेरा आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८०४) की फोटो-नकलसे।

४४९. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

यरवडा मन्दिर
१६ नवम्बर, १९३०

चि० रुक्मिणी,

एक लम्बे अर्सेके बाद तेरा पत्र मिला। तेरी तबीयत अच्छी हो गई है, यह जानकर खुशी हुई। अन्य सब लोग भी ठीक हो गये होंगे। बनारसीलाल वहाँ क्या करेगा? काशीकी आबोहवा कैसी लगती है? वहाँ लीमडीके नागरदास गांधी रहते हैं, तू यह जानती है न? इनकी पत्नी आश्रममें आकर रही थी और फिर वहाँ आनन्दशंकरभाई[1] भी तो हैं। इन सबसे न मिली हो, तो अवसर मिलते ही इन सबके पास हो आना। बनारसीलालसे कहना कि वह मुझे पत्र लिखे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९०५४) की फोटो-नकलसे।

१. आनन्दशंकर बापूभाई ध्रुव।

४५०. पत्र : जयप्रकाश नारायणको

यरवडा मन्दिर
१६ नवम्बर, १९३०

चि० जयप्रकाश,

मेरा खत तुमको मिला होगा। प्रभावतीको नित्य वाई होती है यह असह्य बात है। वाई मिटानेका इलाज हवाका फेरफार और अनुकूल संग है। मेरा आग्रह है प्रभावतीको आश्रम ले जाओ अथवा भेज दो। अच्छी होनेसे वापिस आ जावे।

बापूके आशीर्वाद

जी० एन० ३३८० की फोटो-नकलसे।

४५१. पत्र : नारणदास गांधीको

सुबहके ४-३० बजे
१३/१७ नवम्बर, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा पुलिंदा कल बुधवार शामके ४-३० बजे मुझे भेजा गया।

भक्त "आरम्भ नहीं करेगा'," अर्थात् उसने किसी भी व्यवसायकी योजना नहीं की होगी। जो व्यापार करता हो वह आज कपड़ेका व्यापार करे और कल लकड़ीका व्यापार करनेका भी प्रयत्न करे या कपड़ेके व्यापारमें आज एक दुकान है तो कल पांच खोल बैठे, उसीका नाम आरम्भ है। भक्त उस झंझटमें नहीं पड़ेगा। यही नियम सेवा-कार्यमें भी लागू होता है। आज खादी द्वारा करे और कल गाय द्वारा, परसों सेनी द्वारा और चौथे दिन डाक्टर बनकर, इस तरह सेवक भी नहीं भटकेगा। उसके हिस्सेमें जो-कुछ आयेगा, उसीको अच्छी तरह पूरा करेगा। जहाँ 'मैं' समाप्त हो गया, वहाँ 'मुझे' क्या करना है? 'सूनरने तातणे मने हरजीये बांधी जेम ताणे तेम तेमनी रे मने लागी कटारी प्रेमनी।' भक्तके सब काम भगवान आरम्भ करता है। उसके सभी कार्य स्वाभाविक ढंगसे होते हैं; इसलिए वह 'सन्तुष्टो येनकेनचित्' रहता है। सब काम त्याग देनेका भी यही अर्थ है। आरम्भ करनेका अर्थ प्रवृत्ति या कार्य नहीं है किन्तु उसे करनेका विचार, योजना बनाना आदिका त्याग करना है; इसीका अर्थ आरम्भ न करना है। ख्याली घोड़े दौड़ानेकी आदत हो तो उसे छोड़ देना चाहिए। "इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।"[२] इस तरह आरम्भ, त्यागसे उल्टा है। मुझे लगता है कि इसमें तुम्हारा

१. देखिए खण्ड ४९, "गीता-पत्रावलि", २१-२-१९३२।

२. भगवद्गीता, १६, १३।

पूरा प्रश्न आ जाता है। कुछ बाकी रह गया हो तो पूछ लेना। यह भाग, जो विवेचन चल रहा था, उसीके साथ रखना।

यदि चप्पल भेज दी है और उसके साथ तल्लेके लिए चमड़ा न भेजा हो तो प्राप्त करके किसी आनेवालेके साथ भेज देना अथवा सम्ना पड़े तो, डाकसे भेजना ताकि जो चप्पल टूट गई है वह भी थोड़ी-बहुत पहनी जा सके।

जमनालालको लिखना कि उसके शुभ संकल्प फलें। अन्तमें उसे ऐसे मनोरथोंको मनमें लाना ही नहीं है। ईश्वर तो उसपर सेवा-कार्य लादता ही रहेगा। उनको ढूँढ़ने या उनका संकल्प करनेकी जरूरत नहीं रहेगी। फिलहाल तो ये संकल्प ठीक हैं। उन्हींसे भक्ति-रस पूरा मिलेगा। जबतक बरसात न हो तबतक कुँआ, नदी, नाला आदिसे प्रयत्नपूर्वक सिंचाई करनी ही होती है। ऊपरसे बादल बरस पड़ें और घर बैठे ही गंगा बह उठे तब इनकी क्या आवश्यकता? वह जो काम नासिकमें कर सका है उसे दूसरे किसी व्यक्तिकी शक्तिसे बाहर मानता हूँ। फिर भी सभी लोग प्रयत्न करें तो अच्छा ही है। मुझे तो प्रयत्नसे ही सन्तोष मानना पड़ता है। दूसरों का माप भी मैंने अपनेसे ही लगाया है। कहने और लिखनेको तो और भी बहुत कुछ है, पर वह सब तो मिलने पर। इतना उसके लिए है।

. . .[1] के बारेमें लिख चुका हूँ। उसने जो-कुछ स्वीकार किया है उससे हममें से किसीको सन्तोष नहीं हुआ, यह ठीक है। उसके मनमें मैलकी परतें जमी हैं। मैंने तो उसे सख्त भाषामें लिखा ही है। तुम सबने उसके सामने असन्तोष व्यक्त किया ही होगा। जबतक उसकी सफाईकी दलीलसे हम सन्तुष्ट न हों, तबतक उससे सार्वजनिक सेवा नहीं ली जा सकती। वह स्वयं यत्न करता रहे। इस बारेमें तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करते रहना। उसपर क्रोध न करें। प्रेमसे जितना कर सकें उतना करें। किसी विशेष अवसर पर प्रेम क्या करनेको कहता है इसका विचार तो वही कर सकता है जो पासमें मौजूद हो। दूर बैठा हुआ व्यक्ति हुक्म नहीं दे सकता।

४-४५ बजे, १५ नवम्बर, १९३०

मणिलालसे कहना कि उसका जो पत्र इस बार मिला है वही एक पत्र मिला है। उससे पहले नहीं मिला। उसने लिखा था सो किस तरह और किसकी मारफत? पक्की खबर मिले तो जाँच करूँ। जिस तरह वह मेरे पत्रकी इच्छा करता है उसी तरह मुझे भी लिखनेकी इच्छा होती है; तो भी अपनी इच्छाको दबाना पड़ता है। अधिकारियोंका यह सामान्य संकेत है कि मैं कैदियोंको पत्र न लिखूँ, अतः उसका पालन करता हूँ। औरोंको लिखनेकी पूरी-पूरी छूट है इसलिए किसी कोरे सन्तोषके लिए बेकारके झगड़ेमें नहीं पड़ता। एक भी पत्र न लिखने दें तो भी जहाँ कैद भोगनेकी बात हमने मान ली है वहाँ ऐसी बातोंके बारेमें झगड़ा नहीं किया जा सकता। फिर मैंने सन्देश तो भेजा ही था। उसे जितनी छूट मिले, उसके अनुसार वह तो लिखे ही। उसके अध्ययनके बारेमें मैं लिख चुका हूँ और वह उसे मिल गया होगा। आज-

१. नाम नहीं दिया गया है।

कल वह जो पढ रहा है, सो ठीक है। किन्तु मैंने जो क्रम लिख भेजा है, वह अधिक नियमानुसार और पूर्ण लगता है। इसलिए उसमे मन लग सके तो उसी तरह पढे। सुशीलाने उसका वजन ४० पौंड कम होनेकी बात लिखी थी। वह तो भूल ही थी न? या किसी समय वजन इतना कम हो गया था? अब कुछ बढ रहा है या जो कमी हुई थी वह बनी हुई है? शक्ति कितनी है? फीनिक्सके बारेमें वह जो विचार करता है, सो ठीक है। मणिलाल उनको ऐसा लिख दे यदि कि पत्रमें घाटा ही चलता रहे तो उसे बन्द कर दिया जाये। अनुमति मिलने पर मैं भी लिखूंगा। प्रागजीने मुझे पत्र लिखा है। मुख्य अधिकारी बाहर गया हुआ है। उसके आनेके बाद जवाबके बारेमें फैसला होगा। इस बीच तुम इस तरहका पत्र लिख सकते हो कि प्रागजी जो अधिकार मांगते हैं, मैं मानता हूँ कि वे सब उन्हे मिलने चाहिए।

देवदासके लिखे हुए पत्रके बारेमे तुम्हारे जवाबकी राह देख रहा हूँ।

कताईके बारेमे मीराबहनको लिखे पत्रमे देख लेना। उसे कल लिखूंगा। उससे भी ज्यादा महत्वकी बात महादेवके पत्रमे है। मैं चाहता हूँ उसे सब समझ ले। यज्ञार्थ कातना और आमदनी बढानेके ध्यानमे कातनेमें श्रम करना, ये दो अलग चीजें हैं। यज्ञमे क्रिया अत्यन्त आवश्यक होते हुए भी गौण है। मजदूरीमें क्रिया ही सब कुछ है। और कुछ हो न हो तो भी क्रिया रूपमे उसका फल मिलता है। यज्ञमें याज्ञिकका फलके साथ कोई सम्बन्ध नही; इसलिए फल अनन्त है। अर्थात् उसका मनोवाछित फल मिलता है। यज्ञ-सम्बन्धी ऐसी क्रियाके साथ तादात्म्य होना चाहिए। यदि ऐसा करे तो उसका शास्त्र समझमें आ जाता है। इसलिए याज्ञिकमें पवित्रता आदि होनी चाहिए। यज्ञ करते समय उसमे एकाग्रता होनी चाहिए। उस समय मनमें दूसरा विचार तक न आये। ऐसे याज्ञिकको चरखेका जानने लायक सारा शास्त्र सीख लेना चाहिए। और नित्य तद्विषयक नया ज्ञान प्राप्त करते रहना चाहिए। असावधानी या साधनोंके अभावके कारण या किसी और कारणसे ऐसे याज्ञिकसे कोई भूल हो जाये तो उसे सुधारनेकी उसमे शक्ति होनी चाहिए। और चरखा शब्द तो यहाँ सिर्फ एक संज्ञा है, उसमे तो रुईसे सम्बन्धित सभी क्रियाओका ज्ञान सूचित होता है। यह काम बहुत बडा लगने पर भी बडा नही है और है भी। जिसने इसकी आवश्यकताको समझ लिया है, उसके लिए वह बड़ा या कठिन नही है। क्योकि वह रोज धीरे-धीरे इस दिशामें प्रगति करता रहेगा और अपने इस कामके ज्ञानमें वृद्धि करता रहेगा और अपनी पवित्रतामें भी वृद्धि करता रहेगा। क्योकि याज्ञिक सत्यका पुजारी होता है इसलिए इतना समझमें आनेके बाद अपने-आप बिना किसी कष्टके उसके ज्ञानमें और काममें वृद्धि होती रहेगी। और यदि कष्ट होगा भी तो वह उसे कष्ट न समझकर ईश्वरकी प्रसादी समझेगा। इसलिए मैंने अपने पिछले पत्रमें जो पद्धति बताई है, मुझे लगता है कि हम सबको उसे अपना लेना चाहिए और यज्ञका सूक्ष्म और सही स्वरूप समझ लेना चाहिए। ऐसा नही हुआ, इसके लिए मैं स्वय कितनी हद तक दोषी हूँ, इसका दर्शन तो मैंने महादेवके पत्रमें कराया ही है।

५ बजे, १६ नवम्बर, १९३०

'गीता' के पारायणका समय ठीक आधा कर देनेके बारेमें काकासाहब के सुझावके विषयमें मैं तुम्हें पिछली बार लिखना भूल ही गया। विनोबाका पत्र पढ़ा हो तो उसमें देखा ही होगा। उसे पढ़ लो, यह बात लिखना याद नहीं रहा। काकासाहब का सुझाव है कि यदि पारायण सप्ताहमें करें तो वह परम्परा ज्यादा अनुकूल ही होगी। जो बीचमें शामिल होगा, उसको कितना पाठ हो चुका है, इसका हिसाब लगानेकी जरूरत ही न होगी। निश्चित दिनोंमें निश्चित पाठ ही हुआ करेगा। पन्द्रह दिनका समय रखनेसे हर सप्ताहमें दिनका पाठ बदल जायेगा। यह सही है कि सप्ताहमें पढ़नेसे समय दुगुना लगेगा। पूरी 'गीता' का पारायण एक ही समय करें तो सवासे डेढ़ घंटा लग जाता है। डेढ़ घंटेके हिसाबसे १४ दिनोंमें लगभग ६½ मिनट लगेंगे। सात दिनोंमें करनेसे १३ मिनट लगेंगे। जिन्हें इसके पाठमें रस है वे ६½ मिनट ज्यादा देनेमें बुरा नहीं मानेंगे; जिन्हें रस नहीं उनके लिए तो आजकलके ६½ मिनट भी बोझ ही हैं। यह काकासाहब के तर्कके समर्थनमें है। मुझे उनका सुझाव और तर्क दोनों पसन्द आये हैं। तुम स्वतन्त्र रूपसे विचार करना और तुम्हें ठीक लगे तो सबको बता कर इस पर चर्चा करना। महादेव वहाँ हो तो उसके साथ भी बात करना। जो अपनी इच्छासे सोच समझ कर यह पारायण करते हैं उन्हें तो पहले पूछ लेना। उनकी मर्जी न हो तो आगे चर्चा करनेकी जरूरत ही नहीं। यदि वे इस सुझावको पसन्द करें तो सब लोगोंके सामने रखना। सात दिवसके पारायणके लिए तालिका भी बनाई है। उसे अभी यहाँ नहीं लिखता। यदि और लोग सहमत हुए तो भेज दूँगा। अभी तो भेजनेकी जरूरत नहीं है क्योंकि दो सप्ताहके अन्दर-अन्दर काकासाहब वहाँ पहुँच जायेंगे और वही समझायेंगे। इतना और कहूँगा कि जिन्हें आज भी 'गीता'-पारायण अच्छा न लगता हो वे यदि पारायणके समय उठकर चला जाना चाहें तो शायद उन्हें आज्ञा दे देना ज्यादा ठीक होगा। आखिरकार पारायण तो होगा ही। इसलिए प्रार्थनाके मूल भागमें मेहमानों वगैराको छोड़कर बाकी सभी लोग उपस्थित होंगे। वर्धामें साबरमतीकी तरह ही पारायण किया जाता है। और प्रतिष्ठानोंमें भी बहुत-कुछ वैसा ही किया जाता है। इसलिए वहाँ ऐसा परिवर्तन करना कहाँ तक अनुकूल है, हम यह भी देख लेंगे। इसीलिए मैंने पिछली बार विनोबा और हेमप्रभादेवीको लिखा है। जैसे-जैसे हम पारायणका महत्व समझते जायेंगे, वैसे-वैसे हम 'गीता' को अपने आचारको सही स्थान पर रखनेका दीप-स्तम्भ मानते जायेंगे। उसका पारायण कम दिनोंमें करनेके विचारको बुरा नहीं मानेंगे। बहुत-कुछ तो पारायण करानेवाले पर निर्भर रहेगा ही। यदि वह पारायणमें जान लगा देगा तो 'गीता' रसमय बने बिना न रहेगी। जिस अध्यायका पारायण किया हो, दिनभर मनमें उसीका ध्यान करें तो उस दिशामें नया अर्थ मालूम होगा और जो अर्थ जानते हैं वह भी दृढ़ होगा। महावाक्योंके अर्थ अनन्त हैं। 'गीता' एक महावाक्य ही है।

दोपहरको

चप्पल आज मिल गई है। तो भी तल्लेके लिए मजबूत चमड़ा जब हाथमें आये, भेज देना। तब पुरानी भी कुछ महीने पहनी जा सकती है।

सोमवार सुबह, १७ नवम्बर, १९३०

यदि डाक मंगलवारको रवाना होनी हो तो मेरे ११ बजे तक दे देने पर ही वैसा हो पाता है। इसलिए उस दिन प्रवचन लिखूं, तो जल्दी-जल्दी लिखना पड़ता है। इसलिए सोमवारको लिख डालूं तो सब काम ठीक निबट जाता है और काका साहब भी उसे धैर्यपूर्वक पढ़ पाते हैं।[1]

बापूके आशीर्वाद

सोमवार दोपहर, १७[2] नवम्बर, १९३०

[पुनश्च :]

चप्पल एक दिन पहन कर भी देखी है। बिलकुल ठीक बैठी है। लेडी विट्ठलदास मुझे रुई पहुँचा देती है, इसलिए तुमसे नहीं मंगाता। यदि वे भेजनेको कहें तो भेज देना।

भेजने लायक और न भेजने लायक पत्रोंके भेदका ध्यान रखना। जिस सार्वजनिक कामकी खबर समाचारपत्रोंमें नहीं दी जा सकती, वह मुझे भी न दी जाये, यह नियम ठीक है।

६० पत्र हैं।

गुजराती (एस० एन० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

४५२. पत्र : बबलभाई मेहताको

यरवडा मन्दिर
१८ नवम्बर, १९३०

भाई बबलभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। काकासाहब छूटने पर तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करेंगे। तुम मुझे लिखते रहा करो। यदि अभी तक तुमने तकली पर पूर्ण अधिकार प्राप्त नहीं किया है तो कर लेना। चरखे अथवा तकली पर तुम्हारी गति कितनी है? तुम कितने घंटे पीज सकते हो? कितने अंकका सूत तैयार करते हो, आदि-आदि लिखना।

बापूके आशीर्वाद

१. इसके बाद गांधीजीने गीताके बारेमें लिखा था। उस पत्रांशके पाठके लिए देखिए खण्ड ४९, "गीता-पत्रावलि" — अध्याय २।

२. साधन-सूत्रमें "१८ नवम्बर" है, किन्तु सोमवार १७ तारीखको था।

[पुनश्च :]

काकासाहबने तुम्हारा पत्र पढ़ा है। उनका आशीर्वाद।

गुजराती (एस० एन० ९४५४) की फोटो-नकलसे।

४५३. पत्र : बी० जे० बी० गैलविनको

यरवडा सेंट्रल जेल
१८ नवम्बर, १९३०

प्रिय मेजर गैलविन,

(१) साथमें वह सामान्य डाक संलग्न है जो मैं मंगलवारको भेजता हूँ। क्या आप उसे आज भिजवानेका आदेश देनेकी कृपा करेंगे?

(२) मेरे लिए वहाँ एक चरखा होगा। क्या मैं उसे पा सकता हूँ?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४५०४) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : प्रोफेसर बी० जे० बी० गैलविन

४५४. पत्र : प्यारेलाल गोविलको[1]

यरवडा सेंट्रल जेल
१९ नवम्बर, १९३०

प्रिय मित्र,

आपका पिछले माहकी २८ तारीखका लिखा मर्मस्पर्शी पत्र मुझे दिया गया है। मेरा मन आपके दुखसे दुखी है और यदि इस पत्रसे आपको कुछ सान्त्वना मिले तो मुझे खुशी होगी।

१. यह पत्र प्यारेलाल गोविल, सब-जज, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश द्वारा २८ अक्टूबर, १९३० को लिखे पत्रके उत्तरमें था। श्री गोविलके माता-पिताका देहान्त १५-२० वर्ष पहले हो चुका था और उनकी एकमात्र बहनका देहान्त यह पत्र लिखनेके १६ वर्ष पूर्व हुआ था। उनकी एकमात्र सन्तान, २४ वर्षीया पुत्रीकी मृत्यु एक बच्चेका जन्म होनेके बाद हो गई। अपनी पुत्रीकी मृत्युकी परिस्थितियोंका विवरण देते हुए उन्होंने अपने पत्रमें लिखा था कि उनकी लड़कीको जहरबाद हो गया था जिसका निदान समय रहते नहीं हो सका। उन्होंने अपनी बेटीकी मृत्युके लिए अपने-आपको "भयंकर चूक" करनेका दोषी माना था। उन्होंने आगे लिखा था : "यदि ईश्वरने भाग्यकी रचना की है और हर चीज पूर्व-निर्धारित नियतिके अनुसार घटित होती है तब दयाकी याचना करनेसे कोई फायदा नहीं है। यदि ईश्वर अशक्त है तो उससे फरियाद करनेकी जरूरत नहीं है।

निम्नलिखित शंकायें उत्पन्न होती हैं :

१. इस घोर लापरवाहीका पाप धोनेके लिए मुझे क्या प्रायश्चित्त करना चाहिए?

२. उसकी (लड़कीको) आत्माको शान्ति कैसे प्रदान की जाये?

मेरी रायमें आपका कोई दोष नहीं है। लेडी डाक्टर बुलानेके बाद आपने उस-पर विश्वास करके ठीक ही किया। मैं डाक्टरों और हकीमोंको बार-बार बदलनेमें विश्वास नहीं रखता। जिन्हें हम बुलायें उन पर हमें यह विश्वास करना ही चाहिए कि सहायताकी जरूरत होने पर या रोग-विषयक अपने निदानके बारेमें शंकालु होने पर वे हमें वैसा बता देंगे। कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि किसी व्यक्ति पर यह विश्वास करना गलत सिद्ध हो। लेकिन ये तो जीवनके ऐसे खतरे हैं जिन्हें हमें हमेशा उठाना ही होगा। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि आप जिसे अपनी लापरवाही समझते हैं, उसको लेकर मनमें परेशान नहीं होंगे। इतनी बात तो आप स्वयं जानते हैं कि आपने जानबूझ कर किसी चीजकी उपेक्षा नहीं की। इससे अधिक कोई मनुष्य कुछ नहीं कर सकता।

और अब आपके प्रश्नोंके उत्तर ये रहे :

(१) किसी प्रायश्चित्तकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि मेरी रायमें आपकी तरफसे कोई लापरवाही नहीं हुई थी।

(२) कोई व्यक्ति किसी दूसरेकी आत्माको शान्ति नहीं दे सकता। उसकी शान्ति स्वतः उसके भीतरसे ही आयेगी।

(३) यह कहना असम्भव है कि अगर अन्य कोई सहायता प्राप्त हो जाती तो क्या होता। योग्यतम विशेषज्ञोंकी सहायताके बावजूद राजाओंको भी तो मरना ही होता है।

(४) एक अवश्यम्भावी घटनाके ऊपर बहुत ज्यादा शोक या बतंगड़ नहीं होना चाहिए। जिसका जन्म हुआ है ऐसे प्रत्येक जीवकी मृत्यु निश्चित है। न ऐसा ही मानना चाहिए कि यह बहुत बड़ा संकट है। मृत्यु वास्तवमें मुक्ति है।

(५) शरीर छोड़नेके बाद आत्मा क्या करती है, यह हर मामलेमें एक अनुमानकी बात है, किन्तु इतना निश्चित है कि शरीरके साथ आत्माका नाश नहीं होता। इसके आगे हमें ईश्वर या प्रकृतिके नियमोंमें भरोसा करना चाहिए।

---

३. सही और सामयिक सहायता दी जाती तो क्या उसे बचाया नहीं जा सकता था?

४. क्या ईश्वर प्रारब्धकी दिशा बदलनेमें अशक्त है? यदि ऐसा है तो प्रार्थना करनेका, अथवा दवा देनेका या डाक्टरी सहायता मांगनेका अथवा उस दिशामें कोई प्रयत्न करनेका कोई लाभ नहीं है।

५. क्या शरीर छोड़नेके बाद आत्मा कुछ समय तक इधर-उधर भटकती है?

६. मैं यह कैसे जान सकता हूँ कि क्या उसने कहीं और जन्म ले लिया है?

७. मुझे प्रतिक्षण यह विचार सताता है कि मैंने बहुत लापरवाहीसे काम लिया, हालांकि मैं सौगन्ध उठा सकता हूँ कि मुझे पता ही नहीं था कि मैं कोई गलती कर रहा हूँ, अन्यथा मैं गलतियाँ करता ही नहीं। मुझे पता नहीं कि मेरी बुद्धि और विवेक कहाँ चले गये थे। अब मैं और कुछ नहीं चाहता, केवल यह जानना चाहता हूँ कि क्या मैं उसकी आत्माको शान्ति पाने और स्वर्गमें रहनेमें किसी प्रकारकी सहायता कर सकता हूँ। यदि हाँ, तो मुझे क्या करना चाहिए?

कृपापूर्वक मृतात्माको अपना आशीर्वाद दें।"

(६) जन्मसे पूर्व और मृत्युके बादकी स्थितियाँ अदृश्य हैं, जैसा कि 'गीता' में कहा गया है, और अनुभवसे इसकी पुष्टि होती है; लेकिन हम अपनी वर्तमान स्थितिसे ऐसा निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि मृत्युके बादकी स्थिति कमसे-कम वर्तमान स्थितिका ही दूसरा, यद्यपि कुछ परिवर्तित, रूप होती होगी।

(७) जो नहीं रहे उनके सभी अच्छे गुणोंको स्वयं अपने जीवनमें अपना कर हम अपने मृत आत्मीयजनोंकी निश्चय ही सहायता कर सकते हैं। क्योंकि यदि उन्हें यहाँ जो-कुछ होता है उसका पता होता है तो उन्हें इस बातसे सान्त्वना मिलेगी कि उनके अन्दर जो अच्छाइयाँ थीं उनको अपना कर हम उनकी स्मृतिकी रक्षा कर रहे हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[पुनश्च :]

चूकसे एक प्रश्न रह ही गया। ईश्वर तो कभी अशक्त है ही नहीं। लेकिन उसके नियम अपरिवर्तनीय हैं। हम उन्हें नहीं जानते। हम यह भी नहीं जानते कि अमुक समय उसकी क्या इच्छा है। इसलिए हम एक मर्यादाके अन्दर ऐसे उपाय अपनाते हैं जो हमें ठीक लगते हैं। प्रार्थना अपने अन्तरमें स्थित ईश्वरकी होती है। प्रार्थनासे भगवानकी इच्छाको नहीं बदला जा सकता, लेकिन उसके जरिये हमें उसकी इच्छाका ज्ञान हो जाता है, और यही सबसे बड़ी चीज है।

मो० क० गांधी

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९३०५)से। सौजन्य: द० बा० कालेलकर; हरिजन, १५-२-१९४८ से भी।

४५५. पत्र : पुरुषोत्तम गांधीको

२२ नवम्बर, १९३०

चि० पुरुषोत्तम,

वहाँके कुशल समाचार और प्रवृत्तिकी सूचना देनेका बोझ नारणदास पर नहीं पड़े, इसलिए तुम्हें चाहिए कि तुम मुझे पत्र लिखो। उसमें जमनादासकी खबर भी देना। गुरुजनोंको मेरा दण्डवत् प्रणाम कहना। उन दोनोंकी मुझे रोज याद आती है और उनके आशीर्वादकी कामना करता हूँ। क्या तुम अब स्वस्थ हो गये हो? तुम अपने [किसी भी] एक दिनका कार्यक्रम लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९००)की फोटो-नकलसे। सौजन्य: नारणदास गांधी

४५६. पत्र : कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
२२ नवम्बर, १९३०

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र मिला। ['गीता' के] श्लोक हमारी प्रार्थना के अंग है, इसलिए उन्हें याद कर लेना चाहिए -- यदि तुझमें ऐसी श्रद्धा उत्पन्न हो जाये तो तू प्रयत्नपूर्वक उनमें तल्लीन हो सकेगी। यदि न हो सके तो उससे निराश न होना। जो लोग श्लोकोका पाठ करते हैं वे सब तल्लीन नही होते। लेकिन श्रद्धापूर्वक इनका पाठ करनेसे किसी-न-किसी दिन तल्लीनता अवश्य आ जाती है। इसके अतिरिक्त श्लोकोके अर्थमें गम्भीर रहस्य भरा हुआ है। यदि तू उनका मनन करेगी तो भी तू उनमें तल्लीन हो सकेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८१०) की फोटो-नकलसे।

४५७. पत्र : शिवाभाई जी० पटेलको

यरवडा मन्दिर
२२ नवम्बर, १९३०

चि० शिवाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला है। मेरी स्मरण-शक्ति तुम्हारे समान ही खराब है लेकिन जो-कुछ भी मैं कण्ठस्थ कर पाया हूँ और अवसर मिलने पर अभी भी जो-कुछ कण्ठस्थ करता हूँ, उसका तरीका यह रहा है, और यह उत्तम है, इस बारेमें मुझे तनिक भी सन्देह नही है : हम जो पंक्तियाँ कण्ठस्थ करना चाहते है उन्हें पहले अच्छी तरहसे समझ ले, उनके पूर्वापर सम्बन्धको अर्थात् सन्दर्भको जान ले। इतना सब हो जानेके बाद तो कविकी उन पंक्तियोको जिनके अर्थ और पूर्वापर सम्बन्धको तुमने हृदयगम किया है, बार-बार पढनेकी बात ही रह जाती है। तब वे सहज ही याद हो जाती हैं। 'गीता' के बारहवे अध्यायके विषयमें तुम ऐसा ही करना। उसमें अर्जुन पूछता है, "जो इस तरह आराधना करता है और जो अव्यक्तकी साधना करता है, उन दोनोंमें कौन श्रेष्ठ है?" तुम पहले इसके उत्तर पर अच्छी तरहसे मनन करना और बादमें श्लोकोको कण्ठस्थ करना। ऐसा करनेसे आनन्द आता है, व्यर्थका परिश्रम नही करना पड़ता, और हृदयमें श्रद्धा होनेके कारण श्लोक कण्ठस्थ करते समय अर्थ भी हृदयमें रिस जाता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९५०२) की फोटो-नकलसे।

४५८. पत्र : बलभद्रको

यरवडा मन्दिर
२२ नवम्बर, १९३०

चि० बलभद्र,

तुमने इस बार निस्सन्देह बहुत अच्छा पत्र लिखा है। तथापि अभी तुम्हारी लिखावट तुम्हारी उम्रको देखते हुए खराब है। उसे धैर्यपूर्वक सुधारना। नारणदास भाईका चरखा तुम्हें अच्छा लगता है, क्योंकि वह प्रतिष्ठित है और उसकी अच्छी तरहसे देखभाल की जाती है। तुम राबके साथ दूध लेते हो, यह अच्छा करते हो। चावलके स्थान पर चपाती लेते हो, यह भी अच्छी बात है। तुम यदि अपनी सामर्थ्यानुसार काम करते रहोगे तो तुम्हारा स्वास्थ्य अवश्य अच्छा हो जायेगा और वजन भी बढ़ेगा। रावजीभाई ले जायें तो जाऊँगा, नहीं ले जायें तो यहीं रहूँगा – यदि तुम इस भावनासे काम करोगे तो यह अनासक्त भावसे की गई . . .[1] सेवा होगी। सेवकको तो जहाँ रहे वहीं सेवा करनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९२१४) की फोटो-नकलसे।

४५९. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२२ नवम्बर, १९३०

चि० मनु,

तेरा पत्र मिला। अब तो काकासाहब थोड़े ही दिनोंमें तुझसे मिलेंगे। अपने बुखार और दर्दको अपनी दृढ़ इच्छाशक्तिके द्वारा दूर करना। तुझे इस बातका गर्व है कि काकासाहब और तेरा जन्म-दिवस एक ही दिन पड़ता है, सो यह बात समझमें आती है। और जिसके प्रति हम गर्वका अनुभव करते हैं उसके गुणोंका अनुकरण करनेका प्रयत्न भी करते हैं। सो तू कर रहा है। ईश्वर तुझे दीर्घायु बनाये।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७७१) की फोटो-नकलसे।

१. मूलमें यहाँ एक शब्द पढ़नेमें नहीं आता।

४६०. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
२२ नवम्बर, १९३०

चि० काशिनाथ,

यदि माताजी आश्रमके निकट रहेगी तो तुम उनके बारेमें निश्चिन्त हो जाओगे और सेवा भी कर सकोगे।

यह जरूरी नही है कि किसी व्यक्तिका किसी-न-किसीके साथ विवाह होना ही चाहिए। लेकिन यदि कोई हिन्दू स्त्री अच्छे और उचित कारणोकी वजहसे किसी मुसलमानके साथ विवाह करनेकी इच्छा रखती है तो वह पाप करती है, हमें ऐसा नही मानना चाहिए। अस्पृश्यके बारेमें तो कहनेकी कोई जरूरत ही नही है। अस्पृश्य कोई अहिन्दू नही है। विवाहका वर्णके साथ कोई सम्बन्ध नही है। स्त्री-पुरुषकी वासनाको मर्यादित करनेके लिए विवाह एक सर्वसामान्य धार्मिक व्यवस्था है। इस बातको ध्यानमें रखकर पसन्दगीका क्षेत्र हमेशा सीमित होना चाहिए। इसमें मुझे लगता है तुम्हारे समस्त प्रश्नोका उत्तर आ जाता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२६१) की फोटो-नकलसे।

४६१. पत्र : मथुरी खरेको

२२ नवम्बर, १९३०

चि० मथुरी,

तुम्हे कातना अच्छा नही लगता, इसके दो कारण है। एक यह कि वह गरीबो की खातिर है, इसका तुम्हे अन्दाज नही है; और तुम यह भी नही जानती कि भूखे मरनेवाले कितने गरीब होते है। दूसरा कारण यह कि तुम्हें अच्छी तरह कातना नही आता। यदि कोई गरीबोके बारेमें जान ले, और उनपर दया करना अपना धर्म समझ ले, तो कताईमें सहज ही रस आने लगे। फिर उनके लिए कातना है इसलिए अच्छेसे-अच्छा और ज्यादासे-ज्यादा कातना चाहिए, ऐसा तो तुम्हे लगेगा ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २५७) से। सौजन्य : लक्ष्मीबहन खरे

४६२. पत्र : मीराबहनको

२३ नवम्बर, १९३०

चि० मीरा,

फिर बुखार आ गया, यह बुरी बात हुई। लेकिन मेरे विचारसे इसकी चिन्ता करना बेकार है। तुम्हारे शरीरमें जरूर जहर है। वह जरा-सा बहाना मिलते ही शरीरमें गड़बड़ी पैदा कर देता है। भविष्यमें जहाँ कारणका पता लग सके लगाकर उससे बचनेकी कोशिश करो। अगर आरामकी ही जरूरत हो और आश्रममें न ले सको, तो जहाँ तुम्हारे खयालसे आराम मिल सके वहाँ जाकर ले लो। तुम बीजापुर भी जा सकती हो। वहाँ छगनलाल है। या ऐसी ही किसी और शान्त जगह चली जाओ। एक सप्ताहका आराम भी तुम्हें बिलकुल दुरुस्त कर देगा।

तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि मैंने बिहारी चरखेको चला लिया है। मैंने तुम्हारी हिदायतों पर अमल किया और वह चलने लगा। चमरखों पर ध्यान देनेकी जरूरत थी। मैंने सूराखोंको बड़ा कर दिया है। मैं उस पर सूत नही कात रहा हूँ क्योंकि मैं गाण्डीव पर परीक्षण कर रहा हूँ। उससे अभी और अच्छे परिणामोकी आशा है। मैंने जो परिवर्तन किये हैं उनकी सूचना केशुको पत्र लिख कर दे रहा हूँ। तुमसे मैं बिहारी चरखेके बारेमें बात करूँगा। तुमने जो परिवर्तन किये हैं उनसे चरखेकी उपयोगिता बढ़ी हो, ऐसा मुझे नही लगता। चौखटेकी मूल लम्बाई ही आदर्श लम्बाई है। 'सुधरे हुए' चरखेके चौखटकी लम्बाई सूतको बाहर खीचनेके लिहाज-से ज्यादा है और अपनी तरफ खीचनेके लिहाजसे बहुत कम है। मूल चमरखोमें परिवर्तनकी गुंजाइश हैं। मै गाण्डीवमें जूटकी डोरके चमरखोसे प्रयोग कर रहा हूँ और ये बहुत अच्छा काम दे रहे हैं। इस डोरीवाले चमरखेमें तकुआ डोरकी मोटी और चिकनी उन्नतोदर सतह पर घूमता है। इसलिए वह न्यूनतम घर्षणके साथ घूमता है। बिहारवाले चमरखोंमें तकुआ $\frac{१}{२}$ इंच चौड़ी समतल सतह पर मन्थर गतिसे घूमता है। इसलिए उसमें घर्षण होता है जिसे बचाया जा सकता है। जूटकी डोरके चमरखे निस्सन्देह ज्यादा टिकाऊ होते हैं, जल्दी बनाये जा सकते है और उसमें तेल ज्यादा ठहरता है। जूटकी डोरी सर्वत्र सुलभ है। कूड़ेमें मिल सकती है। ये कुछ बातें हैं जिन्हें तुम ध्यानमें रख लो और जहाँ फुर्सत हो वहाँ इनको अमलमें लाओ। एक और खुशखबरी। तुम जो तकलियाँ यहाँ छोड़ गई थी उनमें से एकको पिछले तीन दिनसे आजमा रहा हूँ। इससे मुझे उस तकलीसे भी ज्यादा सन्तोष मिल रहा है जो मैंने बनाई थी और जिस पर मैं कात रहा था। मेरी तकलीका मुँह भद्दा बना है। तुम्हारी तकलीका कही ज्यादा अच्छा है। 'गीता' के

पहले अध्यायके अपने सारका अनुवाद मैंने आज पढ़ा। मुझे उसमें तुम्हारा हाथ दिखाई देता है। भावार्थकी काफी रक्षा हुई है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४२१) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६५५ से भी।

४६३. पत्र : प्रभावतीको

२४ नवम्बर, १९३०

चि० प्रभावती,

तेरे पत्र मुझे मिलते रहते हैं। मैंने तुझे जो पत्र लिखा है, वह अवश्य मिला होगा। चूँकि तूने पटनाका पता दिया था इसलिए मैंने वह पत्र पटना भेजा था। मैंने जयप्रकाशको तार दिया था कि वह तुझे आश्रम भेज दे। उसने उत्तरमें कहा है कि यदि तेरी तबीयत नहीं सुधरी तो वह ऐसा ही करेगा। आजकल तू क्या करती है, यह जाननेके लिए मैं उत्सुक हूँ। भगवान तुझे शान्ति और आरोग्य प्रदान करे। मुझे तो पत्र लिखती रहना। हिम्मत न छोड़ना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३८१) की फोटो-नकलसे।

४६४. पत्र : वसुमती पण्डितको

२४ नवम्बर, १९३०

चि० वसुमती,

अपने पत्रमें तू हस्ताक्षर करना ही भूल गई है। सरभोणके बारेमें तूने जो कहा सो मैं समझ गया हूँ। नाथ, नारणदास, महादेवके साथ सलाह-मशविरा करके तूने सरभोणको छोड़ा है, यह ठीक ही है। तब मुझे ब्यौरेवार बतलानेकी जरूरत भी नहीं है।

मुझे तेरा कब्ज हटता नहीं दिखता। मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२७८) की फोटो-नकलसे।

४६५. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

२४ नवम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। जहाँ हम अपने अभिमानके कारण नही, परन्तु ईश्वरकी प्रेरणासे जाते हैं वहाँ पहुँच कर ऐसा ही लगता है कि हम एक भी क्षण जल्दी नही पहुँचे। और यदि एक पल भी देरसे पहुँचे होते तो वह विलम्ब या गलत माना जाता। काम बहुत बड़ा है, किन्तु ईश्वर पार उतारनेवाला है।

बहनोंकी प्रार्थनाका ध्यान करना। कौन जानता है कि उसका एक-एक श्लोक ऐसे समयके लिए ही खोजा गया हो। द्रौपदीकी प्रार्थनाकी कीमत आज स्पष्ट हो जानी चाहिए।

. . .[1] का विरोध तो कोई नही करता न? सबको उसके बारेमें मालूम है न?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो–६ : गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७६५ से भी। सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

४६६. पत्र : हरिलाल देसाईको

२४ नवम्बर, १९३०

चि० हरिलाल (देसाई),

तुम्हारा खरा पत्र मिला। विवाहके बारेमें तुमने जो कहा है, सो समझा। वरके कोई सन्तान है क्या? उसकी माँ जीवित है? हरिइच्छा ससुराल गई? तुमने चर्मालयका काम छोड़ दिया, यह तो सचमुच अनर्थ हुआ। इसमें मैं हमारे समाजकी सामान्य दुर्बलताका अनुभव करता हूँ। जिन कारणोंवश तुमने उसे छोड़ा, वे तो उस समय भी तुम्हारे सामने थे, जिस समय तुमने इस कामको अपने हाथमें लिया था। कल ही मैं १२७वें भजनका अनुवाद कर रहा था; उसमें यह कहा गया है :

कार्य आरम्भ करनेसे पूर्व अच्छी तरह सोच-विचार करो। किसीकी प्रतिस्पर्धामें किसी कामको हाथमें मत लो और यदि लो तो उसे पूरा करके रहो।

एक बार टेक छूट जानेसे बाजी हाथसे जाती रहती है। माताके प्रति अपन धर्मको भी तुमने ठीक तरहसे नहीं समझा। मान लो कि माता मद्यपान करनेवालोंके

१. नाम यहाँ नहीं दिया गया है।

समाजकी है; उसका बच्चा मद्यपानको खराब समझ उसका त्याग करता है। माता शराब न छोड़नेके लिए बालकको फुसलाती है; यदि वह नहीं मानता तो आत्महत्या करनेकी धमकी देती है। तो क्या पुत्रका यह धर्म है कि जिसे उसने धर्म माना, उसका त्याग कर दे? दशरथको मरने दिया, फिर भी उनके वचनका पालन करनेके लिए राम वनको चल दिये। कैकेयीने भरतसे राज्य अपनानेके लिए अनुनय-विनय की; लेकिन भरतने गद्दी नहीं ली। सामान्य दृष्टिसे देखा जाये तो कैकेयीने क्या कोई गलत काम किया था? बहुत रानियोंमें वह एक रानी थी और फिर उसे पतिका वचन भी प्राप्त था। अपने लड़केके लिए उसने गद्दी माँगी तो उसमें क्या पाप किया? लेकिन भरतको यह पापरूप जान पड़ा और उसने अपनी माताका त्याग किया।

यह बात मैंने तुम्हें उलाहना देनेके लिए नहीं लिखी है। मैं तुम्हारे ऊपर रुष्ट होऊँ, ऐसी बात नहीं। यह बात तो इस विचारसे लिखी है कि तुम्हें धर्मका बोध कराना मेरा धर्म है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६६२५) की फोटो-नकलसे।

४६७. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
२४ नवम्बर, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा ब्यौरेवार पत्र मिला। खुश हुआ। जो निर्णय मैं करता हूँ उनके सभी कारण मुझे हमेशा याद नहीं रहते। तू सच्ची सैनिक सिद्ध हुई है। आश्रममें रहनेसे सिपहगरी नहीं होती, ऐसा यदि तू मानती हो तो यह तेरी भूल है। लड़ाईमें सब आगे ही रहें, ऐसा नहीं होता। बहुत-से सिपाही रोक कर रखे जाते हैं ताकि समय पड़ने पर उनसे काम लिया जा सके। और फिर केन्द्र-स्थान पर बहुत जिम्मेदार व्यक्तियोंकी जरूरत होती है। खतरा उठानेके भयका त्याग तो करना ही चाहिए; और खतरा सामने उपस्थित हो जाये तो वीरताके साथ उसका सामना करना चाहिए। लेकिन जो व्यक्ति बिना किसी कारण खतरा मोल लेता है वह सिपाही नहीं, मूर्ख है। नारणदासको मैं सच्चा सिपाही मानता हूँ। कौन जानता है कि तुझे किस तरहके खतरोंका सामना करना पड़े। सच्ची सिपहगरी ईश्वर जैसा रखे, वैसा रहनेमें है। इसमें अनासक्ति है। इसे सामान्य भाषामें कहें तो इसका अर्थ यह हुआ कि जिस सेनापतिके अधीन हम विचारपूर्वक और स्वेच्छापूर्वक गये हों वह जैसा कहे हमें वैसा करना चाहिए। यह पाठ तूने अच्छी तरह सीख लिया है।

[आश्रमके बच्चोंने] अपने पत्रमें धर्मकुमारके बारेमें शिकायत की है कि वह गन्दा रहता है। लगता है, धीरूको इसकी जानकारी है। जाँच करना।

गीता-पारायणके बारेमें तेरी जो राय है उसे मैं समझता हूँ। काकासाहब के साथ तू जी भर कर लड़ना। लेकिन ऐसा लगता है कि तेरे विरोधके मूलमें तो प्रार्थनाके प्रति ही तेरी अरुचि या अश्रद्धा है। तेरा बस चले तो तू धुनके साथ ही प्रार्थना समाप्त कर दे। मेरी सलाह है कि तू प्रार्थनाकी सारी विधि पर श्रद्धा रख। हो सके तो अर्थ पर ध्यान रख। वैसा न कर सके तो वे शब्द संस्कारी है, उन्हे सुननेमें भी लाभ है, ऐसी श्रद्धा रखकर विनयपूर्वक सुन। इससे यह मत समझना कि मैं तुझे सात दिनके पारायणके लिए राजी करना चाहता हूँ। जिस प्रार्थनाके पीछे कुछ लोगोंकी अनन्य श्रद्धासे की हुई १५ वर्षकी तपश्चर्या है, उसमें कुछ तो [सार] है ही, यह बात तेरे गले उतारनेके लिए मैंने यह सब लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६९१) से। सौजन्य: प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२४३ की फोटो-नकलसे भी।

४६८. पत्र: महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

२४ नवम्बर, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

माधवजी लिखते हैं कि तुम्हें बराबर बच्चोंकी चिन्ता बनी रहती है। यह क्यों? हम जिन श्लोकोंका पाठ करते हैं उनका स्मरण करना और चिन्ता छोड़ देना। बच्चोंकी देखभाल करनेवाला प्रभु है। मैंने कलकत्ता पत्र लिखा है। हमें चाहिए कि हम यथासम्भव बड़ोंसे अनुरोध करें और फिर उनके प्रति विश्वास-भाव रखते हुए ईश्वरका आश्रय लें।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८०५) की फोटो-नकलसे।

४६९. पत्र : वनमाला परीखको

यरवडा मन्दिर
२४ नवम्बर, १९३०

चि० वनमाला,

तुम्हारा पत्र मिला। लेखन-कलाके विषयमें मैंने रामदास स्वामीकी कविताका जो अनुवाद भेजा था, तुमने क्या वह सुना था? यदि तुम्हे न मालूम हो तो प्रेमाबहनसे जान लेना और उसके अनुसार लिखनेका प्रयत्न करना। काकासाहब तो अब स्वयं ही आकर तुम सबको आशीर्वाद देंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५७५५) की फोटो-नकलसे।

४७०. पत्र : अमीना कुरेशीको

२४ नवम्बर, १९३०

चि० अमीना,

बहुत दिनोंके बाद तेरा पत्र मिला। कुरेशीके फिरसे जेल जानेकी खबर मिली है। ऐसा ही होना भी चाहिए। थथुकामें तुम सब लोगोंका स्वास्थ्य अच्छा रहा अथवा नहीं? वहाँ सर्दी ज्यादा है या कम? वहाँ कुछ घूमना-फिरना होता है क्या?

बापूकी दुआ और आशीर्वाद

[पुनश्च :]

अपने ससुरजीसे मेरा सलाम कहना।

गुजराती (जी० एन० ६६६८) की फोटो-नकलसे।

४७१. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

२४ नवम्बर, १९३०

चि० मथुरादास,

प्रश्न यह है: विट्ठल कहता है कि मोमबत्ती लगानेके बाद पत्तीकी जरूरत नहीं रह जाती। तुम कहते हो कि जरूरत होती है। यदि होती है तो किसलिए? विट्ठलको अपनी भूल सुधारनी चाहिए। हमारे लिए मोमबत्ती ही ठीक है, उसमें रुई साथ नहीं चिपकती।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७४८) की फोटो-नकलसे।

४७२. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

२४ नवम्बर, १९३०

चि० हेमप्रभा,

तुमरा खत मिला है।[1] सतीशबाबुका प्रवचन उत्तम है। उनकी मनोदशाका सूचक यह प्रवचन है। सोदपुरमें आश्रमवासी बनकर रहना चाहें उनको आश्रमके नियमोंका भल भांति पालन करना हि चाहिये। यदि ऐसे न मिले तो वेतनदारोंसे सोदपुर भले चले या बंध हो जाय। इसीमें हमारी परीक्षा है। वेतनदारोंके मार्फत चलाना कहां तक उचित होगा यह अलग बात है? ऐसा समय न आवे ऐसी हम आशा करें। आश्रमका चलाना न चलाना ईश्वराधीन है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६७७ की फोटो-नकलसे।

१. हेमप्रभा दासगुप्तने अपने पत्रमें सोदपुर आश्रमके कार्यकर्ताओंकी निष्ठाके प्रति सन्देह प्रकट किया था। सतीशचन्द्र दासगुप्तकी अनुपस्थितिमें वह आश्रमको चलानेकी कोशिश कर रही थी। आश्रमवासियोंके प्रयत्न नाकाफी होनेपर उन्होंने वैतनिक कार्यकर्ताओंकी नियुक्तिकी सम्भावना व्यक्त की थी तथा सतीशचन्द्र दासगुप्तके पत्रमें से उद्धरण भी संलग्न किये थे जिसमें उन्होंने तारिणीकी मृत्युके विषयपर अपने उद्गार और विचार व्यक्त किये थे। (एस० एन० १६९५८-एम०)

४७३. पत्र : नारणदास गांधीको

रात, २१/२५ नवम्बर, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र गुरुवार (२० तारीख)को सवेरे मिला। बन्द पत्र तो भेजो ही मत। खोलकर ही भेजा करो। लिखनेवाला मना करे तो न पढो, इतना ही काफी है। किन्तु उसमें भी यही शर्त होनी चाहिए कि जिस बातकी मनाही है ऐसी कोई बात न लिखी जाये। इसलिए कोई निजी पत्र हो ही तो उसका सम्बन्ध लेखकके निजी जीवनमें ही होना चाहिए। तुम आजकल जिस पद्धतिसे काम ले रहे हो उसे जारी रखना। हरिइच्छाकी शादीमें नाजायज छूट ली गई, यह दुखकी बात तो है ही। किन्तु तुमने धैर्यपूर्वक उसे सहन कर लिया और जितनी हो सकी उतनी मदद की, यह ठीक किया। कई बार ऐसे नियमोंके भंग होनेमें ही कर्त्तव्यका पालन निहित होता है। तुमने जो रुख अपनाया वह अहिंसात्मक था। सिद्धान्तका अपवाद नहीं होता। सिद्धान्तको मूर्तिमन्त करनेके लिए जिन नियमों या उपनियमोंको बनाया जाता है, यदि उनमें सिद्धान्त शिथिल पडता हो तो उनका त्याग किया जा सकता है। हरिइच्छाका विवाह भी ऐसा एक प्रसंग था।

मैं तो आजकल कताई आदिकी साधना कर रहा हूँ। इसलिए अनेक विचार आते रहते हैं। यह हमारा यज्ञ है इसलिए उसमें बहुत सावधानी, नियमितता, उत्साह, सच्चाई और कुशलता होनी चाहिए। कई लोगोंको उसके बारेमें थोडा बहुत भी सामान्य ज्ञान नहीं है, सो अब होना चाहिए; यानी हरएक को अपने सूतका अंक, समानता आदि निकालना आना चाहिए; और यह सब दर्ज करके रखना चाहिए। रोज कितना समय लगाया इसका भी हिसाब होना चाहिए। आदत डाल ले तो इस काममें बहुत कम समय लगता है। सबको गति बढानेकी चिन्ता भी करनी चाहिए और फिर भी सूत अच्छा कतना चाहिए। कताईके लिए चरखा तैयार करनेकी विधि भी सबको मालूम होनी चाहिए। इसलिए सबको माल, मोढियेकी रस्सी, चमरख आदि तैयार करना आना चाहिए। अलग-अलग तरहके चरखोंका ज्ञान होना चाहिए। इस सबपर विचार करने और अमलमें लानेका बोझ तुमपर नहीं होना चाहिए। मेरे पास तो एक ही धन्धा है और तुम्हारे सिर रोज नई जिम्मेदारी और प्रश्न। इसलिए मैं जो-कुछ भी लिखूं उसको मनपर बोझरूप नहीं लेना है। इसमें से जितना सहज ही पचाया जा सके और अमलमें लाया जा सके उसे कर-कराकर बाकी को भूल जाना। फिर इस बातको दूसरे लोग भी सोचे-विचारे। जिसे जितनी दिलचस्पी, जितनी जानकारी हो, उसी प्रमाणमें वह करे। इस सम्बन्धमें मुझे जो अनुभव हुए हैं उनका कुछ अंश लक्ष्मीदासको लिखे पत्रमें होगा। उसे पढ लेना।

शनिवार सुबह

तुम्हारी सेवाका वर्णन बड़ा रोचक है। तुम यह श्रम करते हुए बीमार मत पड़ जाना। अनासक्ति तुममें अच्छी खासी है। इसलिए बीमार पड़नेकी सम्भावना कम है। प्रीत्यर्थ सेवा करनेवालेके कामको कृष्ण न निभायें, यह कैसे हो सकता है? वजन कम होना तो शुभ चिह्न ही है। आश्रममें फल तो अच्छे आये हैं। मैथ्यूने अपनी छूट-छाटका वर्णन तो भेजा नहीं। छूट लेता है बस इतना ही लिखा है। किस प्रकारकी लेता है, यह तुम्हें मालूम हो तो लिखना। मैथ्यू अच्छा व्यक्ति है इसलिए उसे अपने यहाँ रहने दें। मैं तो यह भी मानता हूँ कि वह किसी दिन ठिकाने आ जायेगा।

ज्यादा काम हो तो एक-दो सतरें लिख भेजनेसे भी काम चलेगा। मुझे कुछ खास लिखना ही हो तो छोटे-छोटे टुकड़ों पर लिख डालना आसान होगा। मुझे यहाँ तुम्हारी तरह काम नहीं है, फिर भी मैं यही करता हूँ, यह तुमने देखा है न? जिस कामके लिए जो समय नियुक्त किया है, उस समय वह काम छोड़ कर पत्र नहीं लिखना। खाने, पीने, सोने, शौच, चरखा आदि कामोंसे बचा हुआ सारा‌का सारा समय, मंगलवारका दिन छोड़कर, पत्रोंमें ही जाता है। तुम अपने कामको ठीक तरहसे व्यवस्थित कर सकते हो, यह जानता हूँ, तब भी इतना लिखनेका जी हो आता है। यह अनासक्ति पानेका एक उपाय भी है। खूब काम करते हुए भी अनासक्तको थकावटका अनुभव नहीं होता। अंग्रेजीमें एक बहुत अच्छा विचार है– जिसे बहुत काम रहता है, उसके पास और कामोंके लिए भी सदा अवकाश रहता है। मतलब यह है कि ऐसा मनुष्य काम करते हुए भी हमेशा खाली बैठे हुए व्यक्ति जैसा निश्चिन्त दिखाई देता है और फिर कोई उससे निराश नहीं होता।

तुम बीरू और बिमुको ले सके यह तो बहुत अच्छा हुआ। ये बच्चे स्वयं भी आश्रममें आनेके इच्छुक थे, यह भी अच्छा हुआ है। अब बीरू कैसा व्यवहार करता है, यह लिखना।

अमीदासका प्रयोग देखने लायक है। यहाँ बैठे-बैठे उसके कुछ दोष दिखाई देते हैं। वह कुछ काम-काज न कर सके और पड़ा ही रहे तो फल पर शरीर जरूर निभा सकेगा। किन्तु यह प्रयोग सफल नहीं माना जायेगा। जिस खुराकसे शरीरमें सामान्य सेवा-कार्य करनेकी शक्ति रहती है, वही खुराक अच्छी मानी जायेगी। ऐसी शक्ति प्राप्त करनेके लिए शरीरमें बादाम-जैसे स्नायु मजबूत करनेवाले पदार्थको पचानेकी शक्ति होनी चाहिए। अभी तक तो मुझे यही अनुभव है कि हाजमा कमजोर हो जानेके बाद बादाम आदि हजम नहीं होते जबकि व्यक्ति दूधसे वे ही तत्त्व प्राप्त कर सकता है और उन्हें हजम कर सकता है। तो भी अमीदासको यह लिखने या प्रकारान्तरसे भी कहनेकी मेरी इच्छा नहीं होती। उसकी गहरी श्रद्धासे उसे आवश्यक ज्ञान मिलनेकी सम्भावना है। भूल होगी तो सुधार लेगा और अपने प्रयोगसे दूध या ऐसी वनस्पतियाँ खोज निकालेगा जिनसे ऐसे तत्व प्राप्त हो सकें, हम यही आशा करें।

. . .[1] का किस्सा करुणाजनक है। मुझे उसके चेहरेमें कुछ अरुचिकर लगता था। किन्तु वह अच्छा ही है, यह सोचकर मनसे विचार निकाल दिया था; ऐसा

१. नाम नहीं दिया गया है।

करना ठीक भी था। जब कभी वह गिरता था तभी सँभलनेका प्रयत्न करता था और हो सकता है, अब प्रयत्नमें सफल हो गया हो। ऐसा हुआ होगा तो चेहरा भी बदल जाना सम्भव है। सुकरातके बारेमें कहते है कि उसका चेहरा तो अन्त तक साधु-पुरुष जैसा नही लगता था। इसलिए हम भूलोसे भरे प्राणियोके लिए तो एक ही मार्ग है। जबतक किसीके बारेमें कोई बुरी बात निश्चित रूपसे मालूम न हो सके तबतक उसे अच्छा ही मान कर चले।

चन्द्रकान्ताके पिताका नाम लिखना और माँ का भी, जिससे मै उनके नाम पर्चियाँ लिख सकूँ। तुमने उन्हे ठीक ही लिखा है। उन्हे उसकी (कान्ताकी) चिन्ता छोड ही देनी चाहिए। कान्ताकी माँ आश्रम न आये, तो अच्छा ही है। गगाबहनको शायद परेशान करेगी।

पुंजाभाईका बेहोश होना भी ईश्वरकी दया है। इससे लगता है कि उन्हे उतनी देर आराम मिल जाता है। चम्पाको प्रसवके लिए अमीनावाले अस्पतालमें भेजें तो अच्छा है। वहाँ उसे सब तरहकी सुविधा मिलेगी और देखभाल भी ठीक होगी। और किसीको कष्ट न होगा। आश्रमसे जो बहन जा सके, वह समय-समय पर जाये या उनके साथ रहे। यदि ऐसा हो सकता हो तो चम्पाको सूचना देना। वह मान जाये तो उसे आराम रहेगा।

सोमवार सुबह, २४ नवम्बर, १९३०

रतुभाईका भेजा हुआ वल्कल मिल गया है और शायद मैंने उन्हें लिख भी दिया है। आजतक मैंने उसे ओढनेके लिए इस्तेमाल किया है, पर वह मुलायम नही पडा। धोया जा सकता है या नही, सो नही मालूम। किन्तु सख्त ही बना हुआ है इसलिए बिछौनेकी तरह ज्यादा अच्छा रहेगा, यह सोचकर आजसे बिछाया है। इस समय उसीपर बैठा हूँ।

विनोबा लिखते है कि दो तकलियाँ भेजी है। पता लगाया। अभी तक तो यहाँ आई नही लगती। वहाँ तो नहीं आई? आई हो तो भेज देना।[1]

इस अध्यायको मैंने 'गीता' समझनेकी कुजी कहा है। एक वाक्यमें उसका सार यह जान पड़ता है कि जीवन सेवाके लिए है, भोगके लिए नही है। अतः हमें जीवनको यज्ञमय बना डालना उचित है। पर इतना जान लेने भरसे वैसा हो जाना सम्भव नही हो जाता। जानकर आचरण करने पर हम उत्तरोत्तर शुद्ध होते जायेंगे। पर सच्ची सेवा क्या है, यह जाननेके लिए इन्द्रियदमन आवश्यक है। इस प्रकार उत्तरोत्तर हम सत्यरूपी परमात्माके निकट होते जाते है। युग-युगमें हमें सत्यकी अधिक झाँकी होती है। स्वार्थ-दृष्टिसे होनेवाला सेवा-कार्य यज्ञ नही रह जाता। अत. अनासक्तिकी बड़ी आवश्यकता है। इतना जानने पर हमें इधर-उधरके वाद-विवादमें नही उलझना पडता। भगवानने अर्जुनको क्या सचमुच ही स्वजनोको मारनेकी शिक्षा दी? क्या

१. इसके बाद गांधीजीने गीताके बारेमें लिखा था। उस पत्रांशके पाठके लिए देखिए खण्ड ४९, "गीता-पत्रावलि", — अध्याय ३।

उसमें धर्म था? ऐसे प्रश्न आते रहते हैं। अनासक्ति आने पर यों ही हमारे हाथमें किसीको मारनेको छुरी हो तो वह भी छूट जाती है। पर अनासक्तिका ढोंग करनेसे वह नही आती। हमारे प्रयत्न पर वह आज आ सकती है, अथवा सम्भव है, हजारो वर्ष तक प्रयत्न करते रहने पर भी न आये। इसकी भी फिक्र छोड़ देनी चाहिए। प्रयत्नमें ही सफलता है। यह हमें सूक्ष्मतासे जाँचते रहना चाहिए कि प्रयत्न वास्तवमें हो रहा है या नही। इसमें आत्माको धोखा नही देना चाहिए और इतना ध्यान रखना तो सभीके लिए सम्भव है।

इस तरह तीसरा अध्याय मैं दो भागोमें समाप्त कर सका हूँ। इस समय मेरे पास लगभग पन्द्रह मिनट हैं। उतनी देरमें इस पत्रको पूरा करना है। इन प्रकरणोके लिए तुमने जो नाम लिखा है वह लम्बा है। प्रकरण अलग-अलग छापनेका इरादा लगता है। काकाने सक्षिप्त नाम 'गीताबोध' का सुझाव दिया है। मुझे यह नाम पसन्द आया है। इस प्रयत्नके पीछे भावना यह है कि 'गीता' पढ़ते हुए उसे जैसे मैंने समझा है, उसी तरह समझनेके इच्छुक दूसरे लोगोके लिए यह काम सरल हो जाये। ऐसा हो सकेगा या नही, यह तो ईश्वर जानता है। मेरा यही प्रयत्न है। इसलिए 'गीताबोध' नाम ठीक बैठता है। इन प्रकरणोंका अंग्रेजीमे अनुवाद करनेकी आवश्यकताके बारेमें मुझे शंका है। किन्तु इसका निर्णय वही हो सकता है। सप्ताहके पारायणके बारेमें ज्यादा बात तो अब काकासाहब ही कर लेंगे। जो सबको न रुचे वह हमें नही ही करना है।

बापूके आशीर्वाद

मंगलवार, सुबहके आठ बजेके बाद

दूधाभाई जेलमें हैं। कौन-सी जेलमें, यह मालूम करना। साबरमती जेल हो तो कोई उनसे जाकर मिले। सोमाभाई कहाँ काम करने गये हैं? जयरामदासको मैंने लिखा था कि मैं ताजे फल नही लेता। उसका कारण था। सरकारी लाठी-विभागका[1] ऐसा वक्तव्य था कि मैंने लाठी चलाये जानेके विरोधमें ताजे फल छोड़े नही हैं और मैं आजकल भी उन्हें लेता हूँ। मैं क्या लेता हूँ, वह तुम्हें बता ही चुका हूँ। फिर भी आज तकका इतिहास यहाँ लिख रहा हूँ ताकि अगर तुम्हें कुछ उत्तर देनेका अवसर मिले तो तुम अधिकारपूर्वक दे सको। बहुत हद तक तो ताजा फल मैंने नमक-यात्रामें ही छोड़ा था। यहाँ आकर शुरू किया। लेकिन पुलिस द्वारा लाठी चलानेकी बात सुनकर छोड़ दिया। यहाँ तीन-चार दिन ही लिया था, जब लाठी चलनेकी खबरें सुनी। जब जयरामदास मिला तब यह स्थिति थी। बादमें कब्ज दूर करनेके लिए और खर्च कम करनेके इरादेसे जो सूखा मेवा अर्थात खजूर, मुनक्का और किशमिश लेता था वह छोड़कर सब्जी लेना शुरू किया। कई दिन तो दोनो चीजें ली। फिर ऐसा लगा कि सिर्फ सब्जीसे नही निभेगा। इसलिए फिर सब्जी और खजूर, मुनक्का लेना शुरू किया। सब्जीमें कच्चा पपीता मिलने लगा। उसमें कई

१. कदाचित् गृह विभाग।

बार पका हुआ आये तो उसे भी लेता हूँ। ऐसा जयरामदासके समय तो हुआ ही नही। यहाँके बगीचेसे पका हुआ पपीता कोई दसेक बार लिया होगा। खट्टा नीबू तो रोज लेता ही हूँ। जयरामदासने उसका उल्लेख किया है। इसलिए जयरामदासकी सारी बातें सच है और सरकारी बात लगभग झूठ है। पपीता तो अभी-अभी मिलने लगा है। उसे लेनेका अर्थ है मैं ताजे फल खा रहा हूँ, ऐसा कोई कह ही नही सकता। शायद किसी भी अधिकारीको इसकी जानकारी तक नही है। क्योंकि पपीता तो कच्ची सब्जीके साथ आता है, बाजारसे कभी नही। वर्तमान स्थिति यही है। काकासाहब २९ को छूटेंगे इसलिए ज्यादा स्पष्टीकरण तो वे करेंगे ही। मेरा विचार है कि सरकारी अधिकारीने सूखे और ताजेका भेद नही किया। या सम्भव है कोई फलकी टोकरी लाया हो और उसे मैंने ले लिया हो और काकासाहब को दे दिया हो तो विभागने शायद ऐसा भी मान लिया हो कि मैंने ही खाया होगा। ईश्वर जाने इसे क्यो छापा गया है। यदि कोई चर्चा न हो तो तुम्हे जान-बूझ कर कुछ लिखनेकी जरूरत नही है।

बापू

[पुनश्च :]

आज ६४ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

४७४. पत्र : रमाबहन जोशीको

यरवडा मन्दिर
२५ नवम्बर, १९३०

चि० रमाबहन,

कितने हफ्तो बाद आज मुझे तुम्हारा पत्र मिला। छगनलालको जो आराम मिला है, उम्मीद है वह उसका समुचित उपयोग करेगा। विमलाने अब अपने बाल कटवा लिये हैं, यह ठीक ही हुआ। हर वस्तुका एक निश्चित समय होता है। उसने पहले नही कटवाये, इसमें पश्चात्ताप करनेकी कोई बात नही है। बाल कटवानेका विचार इतना नया है कि यदि वह किसी माताके गले नही उतरता तो इसमें आश्चर्यकी कोई बात नही। बेहतर यही है कि मेरी बात ठीक तरहसे समझ आनेपर ही उसपर अमल किया जाये। उसका प्रभाव स्थायी होगा। और मेरा धर्म यह है कि जबतक मैं अपनी बात तुम्हें अच्छी तरहसे नही समझा देता, तबतक धीरज रखूं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५३२७) की फोटो-नकलसे।

४७५. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

२५ नवम्बर, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुम्हारा पत्र मिला। यदि माताजी आयें ही नहीं और कलावती भी उनकी सेवामें न रहे, तब तो मुझे केवल एक ही मार्ग दिखाई देता है और वह यह कि या तो तुम्हें उनके पास चले जाना चाहिए अथवा उनकी सेवाके लिए किसी नौकरकी व्यवस्था कर देनी चाहिए। इन दोनोंमेंसे तुम्हारा क्या कर्त्तव्य है, यह तो केवल तुम्हारा हृदय ही तुम्हें बता सकता है। इसमें किसी तीसरे व्यक्तिकी राय नहीं ली जा सकती। और यदि कोई इसपर राय दे भी तो वह अनुचित होगा। यह प्रश्न इतना नाजुक है कि तुम्हारे अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति इसका समाधान नहीं कर सकता।

जिस महिलाने आत्महत्या की थी, उसके बारेमें कुछ और जानकारी मिली?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२६२) की फोटो-नकलसे।

४७६. पत्र : मथुरी खरेको

२७ नवम्बर, १९३०

चि० मथुरी,

तुम्हारा पत्र मिला। प्रेमाबहन छड़ीसे मारती है, तो क्या तुमने खुद उससे शिकायत की है? मैं तो तुम्हारी और चन्दनकी वकालत करूँगा ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २५८) से। सौजन्य : लक्ष्मीबहन खरे

४७७. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

२७ नवम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन,

तुम्हारा पत्र और रिपोर्ट मिली। रिपोर्ट अच्छी है। तुम जिन गाँवोमें गई वहाँ गाय नही देखी। ऐसी स्थिति लगभग पूरे खेडा जिलेकी है। स्वार्थके कारण किसीको गाय रखना अच्छा ही नही लगता। इसीलिए तो हमने गो-सेवाका काम उठाया है।

तुम्हारे भोजनका क्या प्रबन्ध है?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो – ६: गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७६६ से भी। सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

४७८. पत्र : रामदास गांधीको

२८ नवम्बर, १९३०

चि० रामदास,

तुम्हारा पत्र मिला। दाँत निकलते समय अनेक बच्चोंको कष्ट होता है, इसमें आश्चर्यकी कोई बात नही। लेकिन जुकाम दूर होना चाहिए। उसे धूपमें घूमाना चाहिए, माथा ढका रहना चाहिए। इससे चमडी खूब सिकेगी, कठोर होगी और सर्दी दूर हो जायेगी, ऐसी मेरी मान्यता है।

पैसोंका हिसाब-किताब रखनेका काम आदत पड जानेके बाद भार-रूप नही लगता और इसकी कीमत तो अनुभवके बाद ही जानी जा सकती है। शान्त अथवा अशान्त जीवनमें इसमें कोई अन्तर नही पडता। और फिर कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो भले ही कितना अशान्त वातावरण क्यों न हो हमें अवश्य करनी चाहिए। हमें वैसा करनेकी आदत डालनी चाहिए। मुझे हर सप्ताह पत्र लिखा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८५९) की फोटो-नकलसे।

४७९. पत्र : प्रभावतीको

२८ नवम्बर, १९३०

चि० प्रभावती,

आरासे लिखा तेरा पत्र मिला। मैंने तो कल तुझे सीताबदियाराके पते पर पत्र भेजा है। उम्मीद है कि तुझे यह भी मिल जायेगा। यदि स्वास्थ्य वहाँ सुधर सकता है तो मुझे कुछ नही कहना है। लेकिन शरीरके बिलकुल टूट जानेके बाद तू आश्रममें जाये यह कोई समझदारीकी बात नही है। जब स्वास्थ्य सुधर सकता है, ऐसी हालतमें यदि तू अभी आश्रम जाती है तो यह ठीक होगा। वहाँ तू शान्तिके साथ विचार कर सकती है और तुझे अपने कर्त्तव्यका भान भी हो सकता है। तुझे इतना जानना चाहिए कि तू पराधीन नहीं है। परतन्त्र अथवा स्वतन्त्र होना तो प्रत्येकके अपने हाथमें है। इतना समझ ले तो जग जीत लिया।

मैं अच्छा हूँ। काकासाहब कल सबेरे रिहा होनेवाले हैं — सच पूछो तो कैदमें जानेवाले है। वे जेलमें ही स्वतन्त्र है।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती प्रभावती देवी
मार्फत बाबू हरसू दयालजी
राजस्व अधिकारी
आरा, बिहार

गुजराती (जी० एन० ३३८२) की फोटो-नकलसे।

४८०. पत्र : वसुमती पण्डितको

२८ नवम्बर, १९३०

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला। मनमें हमेशा यह विचार बना रहता है कि वहाँकी भाग-दौडमें तेरा स्वास्थ्य कैसा रहेगा? जानता हूँ कि मुझे चिन्ता नहीं करनी चाहिए। सब ईश्वराधीन है। मुझे वे सब बातें लिखी जा सकती है जो अखबारोंमें प्रकाशित करने योग्य हो। और जो अखबारोंमें भेजने लायक बात न हो, वह बात मुझे नहीं लिखी जा सकती। वर्तमान गतिविधियोकी सूचना देते समय तू नियमका पालन करना। अपने बारेमें तो तू जो चाहे सो लिख सकती है। मेरी गाड़ी ठीक चल रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२९४) की फोटो-नकलसे।

४८१. पत्र : अब्दुल कादिर बावजीरको

२८ नवम्बर, १९३०

भाई इमामसाहब,

आपका पत्र मिला; सुन्दर है। मै तो जैसे-जैसे धर्मका विचार करता हूँ, वैसे-वैसे उसके मूलमें मुझे सत्य और अहिंसाके ही दर्शन होते है। शुरूमें ही रहीमका नाम आता है। इस नाममें भी अहिंसा ही व्याप्त है न? हमें इस वस्तुका उपयोग करना नही आता इसीसे हम इसका तिरस्कार करते है। यदि हम उसका उपयोग करना सीखें तो बादमें यह कभी न छूटे।

पेशावरमें अभी तक मधुका जाना खराब बात है। यदि आपसे निभ सके अर्थात् अपनी जीभको वशमें रखा जा सके तो आपको केवल कच्चे दूध पर ही रहना चाहिए। उसमें कुछ भी नही डालना चाहिए। यह सम्पूर्ण खुराक है। और उससे शक्कर आनी भी बन्द हो जाती है। आपको फलादि भी नही लेने चाहिए। वस्तुतः दूधके अलावा अन्य कुछ भी नही लेना चाहिए, दही अवश्य लिया जा सकता है। हो सके तो आप देशके लिए इतना अवश्य कीजियेगा।

बापूकी दुआ

गुजराती (जी० एन० ६६४७) की फोटो-नकलसे।

४८२. पत्र : अमीना कुरेशीको

२८ नवम्बर, १९३०

चि० अमीना,

तेरा पत्र मिला। इमामसाहब लिखते हैं कि तू जेल जानेके लिए अधीर हो रही है, लेकिन यह ठीक नही है। जब खुदाकी मरजी तुझे वहाँ भेजनेकी होगी तो समय अपने-आप उपस्थित हो जायेगा। तू तैयार है, इतना ही पर्याप्त है। इस बीच बच्चोंको सँभाल, अपने स्वास्थ्यको ठीक रख और घर बैठे-बैठे जो सेवा हो सके, सो कर। यह आन्दोलन ही कुछ ऐसा है कि घर बैठे रहकर भी सेवा हो सकती है। तेरा भय दूर हो गया, इतना ही काफी है।

बापूकी दुआ और आशीर्वाद

[पुनश्च :]

उर्दूका क्या हुआ?

गुजराती (जी० एन० ६६५९) की फोटो-नकलसे।

४८३. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
२८ नवम्बर, १९३०

चिरंजी हेमप्रभा,

तुमारा खत मिला। मेरे विचारोंका कम प्रचारके कारण बंगलामें हिंसाका वायु है यह ठीक नहिं लगता। यह वायु हमेशा ज्यादा रहा है इसलिये मेरे विचारो का प्रचार कम हो सका है। परंतु हम सच्चे रहेंगे तो बंगालका वायुका भी परिवर्तन अवश्य होगा। इसका अर्थ यह नहिं है कि तुमने जो विचार किया है उसे छोड़ दो। यथाशक्ति प्रचार अवश्य करो उसमें से ज्यादा परिणामकी शीघ्र आशा मत रखो।

आश्रमवासी भाई बहनोंको आशीर्वाद।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६७८ की फोटो-नकलसे।

४८४. सत्याग्रही बन्दियोंका कर्त्तव्य[1]

[२९ नवम्बर, १९३० से पूर्व]

जब हम कैद होनेका प्रयत्न करते हैं तो उसके साथ ही हमारी सविनय अवज्ञा परिपूर्ण हो जाती है। यदि हम जेलके वैध अनुशासनकी अवहेलना करेंगे तो अवज्ञा सविनय नही रह जायेगी। इसलिए हमें जेलमें नारे लगाना या झगड़ा खड़ा करना नही चाहिए। नियमानुसार यदि हमसे काम करनेको कहा जाये तो हम काम करनेसे इनकार नही कर सकते, बल्कि जितना काम हम कर सके उतना काम करनेके लिए हमें उत्सुक रहना चाहिए, और सो भी जितनी अच्छी तरह हो सके उतनी अच्छी तरह करे। यह अच्छी चीज होगी कि "साधारण कैदी" भी स्वेच्छासे कुछ उपयोगी काम करे, जिसके पीछे यह मंशा होना जरूरी नही है कि उससे उनकी कैदकी अवधि में कुछ माफी मिल जायेगी। साधारण कैद भोगनेवाले कैदियोने महज मशक्कतका काम करनेका प्रस्ताव करके तनावपूर्ण स्थितियोंको सामान्य बनानेमें बड़ी मदद की है। हम जितना कुछ भी काम करते हैं उससे राष्ट्रीय सम्पत्तिमें वृद्धि ही होती है।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, १-१-१९३१

१. बॉम्बे क्रॉनिकलके सम्वाददातासे बात करते हुए द० बा० कालेलकरने गांधीजीके इस कथनको उद्धृत किया था। २९ नवम्बर, १९३० को जेलसे रिहा होनेसे पूर्व गांधीजीके साथ हुई अपनी चर्चाओंके आधारपर उन्होंने कहा: वह (गांधीजी) अपनी मौजूदा हालतमें अपनेको राजनीतिक संघर्षका मार्ग-दर्शन करनेके योग्य नहीं समझते क्योंकि वह कर्मक्षेत्रसे दूर हैं। सत्याग्रहीको जेलमें पहुँचनेके बाद ऐसा समझना चाहिए कि बाहरी दुनियाके लिए वह मर गया है। किन्तु एक कैदीके नाते वह (गांधीजी) भावी सत्याग्रही कैदियोंके लिए आधिकारिक निर्देश दे सकते हैं। यरवडा जेलमें उनके साथ रहनेके दौरान मैंने उनके साथ जेलजीवनके विभिन्न पहलुओंपर चर्चा की और कुछ उपयोगी निर्देश प्राप्त किये। मैं उनके उन विचारोंको स्वराज्यकी लड़ाई लड़नेवाले कार्यकर्त्ताओंको बताऊँ, इसमें उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। जैसा मुझे याद आता है मैं उन बातोंको उसी प्रकार नीचे लिखता हूँ।

सत्याग्रहीको यह बात समझनी चाहिए कि अदालत द्वारा अपराधी करार दिये जाते ही उसका विरोधभाव या अवज्ञाभाव समाप्त हो जाता है। उसका उद्देश्य जेलके अनुशासनको समाप्त करना नहीं है। युद्धमें पकड़ लिये जानेपर सिपाही अपने शस्त्र रख देता है और आत्म-समर्पण कर देता है। एक सच्चे "सैनिक-कैदी" के शब्दोंपर शत्रु सदैव भरोसा कर सकता है। अपने वचनके बलपर यदि युद्ध-बन्दीको थोड़ी-बहुत स्वतन्त्रता प्रदान की जाती है तो वह भाग निकलनेकी या धोखा देनेकी कोशिश नहीं करेगा। हमें सत्याग्रही कैदियोंके नाते जेलोंके अन्दर आदर्श कैदी बननेकी कोशिश करनी चाहिए। जबतक जेलके नियम मानवताके साधारण नियमों और आत्म-सम्मानके विरुद्ध न हों तबतक हमें जेलके अनुशासन-सम्बन्धी नियमोंका पालन करनेके लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। मैंने अक्सर कुछ युवक सत्याग्रहियोंको जेलके अनुशासनको स्वीकार करनेके विरुद्ध बहस करते सुना है। वे कहते हैं: 'हम जेल इसलिए आये हैं क्योंकि हम सरकारके कानूनोंकी अवज्ञा करना चाहते थे। आप हमसे जेलके अन्दर नियमोंका पालन करनेको कैसे कहते हैं? हमने केवल अहिंसाकी शपथ ली है, लेकिन हम जेलोंमें भी सरकारकी अवज्ञा अवश्य करेंगे।'"

४८५. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
रात्रि, ३० नवम्बर, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र पढ़कर बहुत खुश हुआ। आज तो तेरा उपवास छूटे हुए दो दिन हो गये हैं। जबतक यह पत्र तेरे हाथमें पहुँचेगा तबतक तो उपवासको तू भूल चुकी होगी और नये जीवनका आनन्द ले रही होगी। यदि तू ऐसा महसूस न करती हो तो मैं उपवासको अधूरा मानूँगा। इसके बारेमें तूने मुझे ब्यौरेवार पत्र अवश्य लिखा ही होगा। तेरे अनुभवसे दूसरोंको मदद मिलनी चाहिए। उपवास छोड़नेके बाद किन बातोंकी सावधानी रखनी चाहिए, यह तो तू जानती है। उपवासके बाद बहुत भूख लगती है, परन्तु उस प्रमाणमें कभी पेट नही भरना चाहिए। दूध-दही धीरे-धीरे बढ़ाते जाना चाहिए। अंट-शंट चीजें नही खानी चाहिए। रसयुक्त फलोका सेवन करना चाहिए। मुझे उम्मीद है, तू उसमें कंजूसीसे काम नही लेती होगी। शरीर नीरोग हो जाना चाहिए। उपवासके दिनोंमें तू ठीक तरहसे काम करती रही, यह बात सुनकर मुझे कोई आश्चर्य नही हुआ। मैंने अनेक व्यक्तियोको ऐसा करते हुए देखा है और मेरा अपना अनुभव भी यही है। जिन लोगोंको कोई रोग होता है, वे लोग तो उपवासके दिनोंमें ज्यादा शक्ति महसूस करते हैं। उनके चेहरे पर ज्यादा रौनक आ जाती है।

बच्चोंका हिसाब तूने ठीक-ठीक भेजा। कृष्णविजय सबसे तेज मालूम होता है। दूधीबहनकी अनुपस्थितिमें उनके वर्ग ले सके, ऐसा कोई नही है? यह तो मैं समझता हूँ कि अभी इस सम्बन्धमें निश्चित रूपसे कुछ कहा नही जा सकता। जब बहुत सारी बहनें आश्रमसे बाहर हों तब क्या हो सकता है? फिर भी किसीको यह काम सौंपा जा सकता हो, तो उसे कहनेमें संकोच न रखना।

धुरन्धर छूट गया होगा। उससे कहना कि उसके साथ हुआ वार्तालाप मुझे याद है। उसकी डायरीकी भी मुझे याद है। उससे कहना कि वह मुझे पत्र लिखे। अपना अनुभव भी बताये। भविष्यका कार्यक्रम भी लिखे।

तेरे विरुद्ध मथुरीकी शिकायत है। तू बच्चोंको मारती है। कभी-कभी लकड़ीसे भी काम लेती है। ऐसा हो तो यह आदत दूर करना। बच्चोको हरगिज नही मारना चाहिए। क्रॉसबीने 'टॉल्सटॉय ऐज टीचर' (टॉल्स्टॉय शिक्षकके रूपमें) नामक पुस्तक लिखी है। बहुत करके हमारे संग्रहमें है। देख लेना। अब तो यह बात सिद्ध हो चुकी है कि मारनेसे बच्चे सुधरते नही। लेकिन मैं जानता हूँ कि जिन लोगोको मारकर पढ़ानेकी आदत पड़ गई हो, उन्हें इसको छोड़नेमें कठिनाई होती है। लेकिन यह तो बन्दूकधारी सिपाहीके अनुभव जैसा हुआ। वह तो यही मानेगा कि गोलीके बिना दुनियामें

कोई काम नही हो सकता। हो सकता है — इस बातको सिद्ध करनेके लिए ही हमारा अर्थात् आश्रमका अस्तित्व है। यही बात बच्चो पर भी लागू होती है। अभी इससे ज्यादा नही लिखूंगा। तेरा उत्तर आने पर जरूरत हुई तो और लिखूंगा।

मै आशा करता हूँ कि उपवासके दिनोमें तूने खूब नीद ली होगी। और अब तू नियमपूर्वक जल्दी सोती होगी। पूरी नीद लेनी चाहिए। मनुष्यको भोजनकी अपेक्षा नीदकी अधिक आवश्यकता होती है। भोजनको लेकर किया गया उपवास लाभदायक है। लेकिन नीदके सम्बन्धमें किया गया उपवास शरीरको क्षीण बनाता है। उससे सिर चकराने लगता है और मनुष्य अस्वस्थ हो जाता है। इसलिए नीदके बारेमें लापरवाह न रहना। यदि तू रातको ९ बजेसे सुबह ४ बजे तक गहरी नीद सोये, तो मै शिकायत नही करूँगा।

मैंने अपने प्रयोगके बारेमें मीराके पत्रमें लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६९१) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कटक; जी० एन० १०२४४ की फोटो-नकलसे भी।

४८६. पत्र : मूलचन्द अग्रवालको

३० नवम्बर, १९३०

भाई मूलचन्दजी,

आपका पत्र मिला। दृढतापूर्वक चार बजे उठ ही जाना चाहीये। उस समय शौच न आवे तो कुछ परवा नहि मु साफ करके प्रार्थना करना मु साफ करनेके बाद एक कटोरा ठडा पानी पी लेना। प्रार्थनाके बाद घूमनेके लिए चला जाना। जोरोमे चलना। इसमे शौचकी हाजत होगी। शर्दीके बदलेमें गर्मी लगेगी फिर भी शौच न आवे तो परवा नहि। घूमनेके बाद दिल चाहे ऐसे काममें लग जाना। शौचकी हाजत होवे तब जाना। ऐसा थोडे दिन करनेसे अच्छा हो जायगा।

आपका,
मोहन

जी० एन० ७६८ की फोटो-नकलसे।

४८७. पत्र : मीराबहनको

२९ नवम्बर/१ दिसम्बर, १९३०

चि० मीरा,

यह २९-११-१९३० को प्रातःकालीन प्रार्थनाके बादका समय है। काफी ठंड है। लेकिन मैं प्रार्थनाके बाद और ५-३० बजेके बिगुल पर सैरको निकलनेसे पहले कुछ लिखनेका काम करता हूँ।

मुझे प्रसन्नता है कि जब तुमने पत्र लिखा तब तुम्हारी तबीयत पहलेसे अच्छी थी। स्वास्थ्य-रक्षाके मामलेकी तरह हर बातमें दरअसल हम बार-बार भूलें करके और उनसे लाभ उठाकर सीख सकते हैं। यह तुम्हें चेतावनी देनेके बजाय अपनी भूल स्वीकार करनेकी भूमिका है। गत गुरुवारको मुझे अचानक सख्त पेटका दर्द हो गया। मैं उसे टाल सकता था, मगर बेवकूफीमें टाला नहीं। जैसाकि तुम्हें मालूम है, कुछ दिनोंसे मैं दही पर रह रहा हूँ। वह खासा माफिक आया था, हालाँकि टट्टी तो एनीमासे ही होती थी। लेकिन, जैसा तुमने देखा, वजन बढ़ रहा था और अन्यथा भी मेरा स्वास्थ्य ठीक था। इसलिए मैंने दही जारी रखा और वह भी उसका गाढ़ा हिस्सा। इससे एनीमाके बावजूद कब्ज बढ़ गया। यह कमसे-कम दही बन्द कर देनेके लिए, या जो इससे भी बेहतर होता, एक दिनके लिए भोजनमात्र छोड़ देनेके लिए काफी चेतावनी थी। ऐसा मैंने नहीं किया और दिन-भर कष्ट पाया। मैंने जो-कुछ खाया था उसे खुद ही उल्टी करके निकाल दिया, तो कुछ ही घंटोंमें दर्द मिट गया। दूसरे दिन द्राक्षके पानीके सिवाय कुछ नहीं लिया और बिल्कुल ठीक हो गया, हालाँकि वजन ३ पौंड घट गया। मेरा सदा यही हाल होता है। स्पष्ट है कि ९५ से ऊपर मेरे वजनका कोई ठिकाना नहीं और बहुत करके वह जहरीले माद्देसे बनता है। मैंने यह भी निश्चय कर लिया कि हो सके तो कब्जसे पिण्ड छुड़ा लूँ। इसलिए मैंने दही अब भी बन्द कर रखा है। (लो बिगुल हो रहा है और फिलहाल लिखना बन्द करता हूँ।) शामके ८ बजे फिर लिख रहा हूँ। और आजकल उबली हुई पत्तियाँ, टमाटर और खजूर या द्राक्ष लेता हूँ। दस्त अपने-आप हो जाता है, शक्ति बनी हुई है और वजनमें और कमी नहीं हुई है। कल मैंने शकरकन्द और आज १२ बादाम भी लिये। इन परिवर्तन पर किसीको चौंकनेकी जरूरत नहीं। अगर मुझे बराबर कमजोरी महसूस हुई या वजन घटता रहा, तो फिर फौरन दूध लेने लगूँगा और दुग्धोपवासके कारण तबीयत और भी अच्छी हो जायेगी। इसके विपरीत यदि परिवर्तन माफिक आ गया तो और भी हर्षका कारण होगा। इसलिए तुम सब इस परिवर्तन पर खुशी मनाना। अगर यह चल गया तो ठीक है। न चला तो भी ठीक ही है। मैं कोई जोखिम नहीं उठाऊँगा।

तो काका चले गये और जाते समय रो दिये। हम एक-दूसरेके बहुत निकट आ गये थे। उनके जानेके दो घंटेके भीतर ही मेरे पास प्यारेलालको भेज दिया

गया और कुदरती तौर पर उसने मुझे अपने सरक्षणमें ले लिया है। मैंने उसे तुम्हारे चरखे पर बैठाया। उसने ८३ तार काते। उसे जैसा मैंने ठीक करके रखा था वह लगभग वैसा ही चलता रहा। अब हमने चमरखमें कुछ सुधार कर लिये है। मै इधर यह पत्र लिख रहा हूँ, और उधर प्यारेलाल ऐसे ही एक सुधारमें लगा हुआ है। जाने क्यो मैं केवल चरखेके बारेमें और चरखा जिन चीजोका प्रतीक है उन्ही तमाम बातोको सोचनेमें लगा रहता हूँ। गाण्डीवमें भी बहुत सुधार हो रहा है। सुधरे हुए चरखेको कल आजमानेकी आशा रखता हूँ। उसमें खिसकाया जा सके एक ऐसा चक्र और खिचावके लिए स्प्रिंग लगाई जायेगी। अगर वह अच्छी तरह चला, तो सूत जरूर ज्यादा निकलेगा। तकली पर धीरे-धीरे मेरा काबू होता जा रहा है। तुम्हारी तकली पर मेरी गति ८७ तार फी घटे तक पहुँच गई है। परन्तु विनोबा कहते है कि मुझे पहले लोहेकी तकलीको आजमाना चाहिए। उन्होने मुझे दो तकलियाँ भेजी है और मैं उनमें से एक तकली पर काम करनेकी कोशिश कर रहा हूँ। जिस परिणामकी आशा रखी जाती है, वह अभी मुझे मिला नही है। लेकिन दिन-दिन मेरा विश्वास बढ़ता जा रहा है और मुझे आशा है कि मैं तकली पर फी घटे जल्दी ही १०० तार निकालने लगूँगा। (क्योंकि रातके ९ बज गये थे इसलिए मुझे यहाँ पर लिखना बन्द करना पडा। इतवारको सुबह ४–३० बजे प्रार्थनाके पश्चात् फिर लिख रहा हूँ।) कुमारप्पाके मतभेदोको मैं समझता हूँ। यदि महादेव चला गया है तो अब काका आ गये हैं। मतभेदोको दूर करनेमें वह शायद मदद कर सके। स्वर्ण नियम तो यह है कि यदि बातें किसीकी इच्छाके प्रतिकूल हो तो भी खीझना नही चाहिए और जहाँ किसी सिद्धान्त पर आँच न आती हो तथा किसी सगठनमे सारी जिम्मेदारी अपने ही ऊपर न हो, वहाँ यदि प्रतिरोध व्यर्थ हो या गलत समझे जानेकी सम्भावना हो तो आग्रह छोडकर मान जाना चाहिए। उदारताका गुण तो केवल तब काममें आता है जब कोई विभिन्न विचारो तथा आचरणवाले व्यक्तियोंके सम्पर्कमें आता है। हमे अपने प्रति कठोर एव निष्ठुर तथा दूसरोके प्रति उदार और मृदु बनना चाहिए। अन्तमें हम देखते है कि हम अपने प्रति न तो कठोर है और न दूसरोंके प्रति मृदु ही। तथ्य यह है कि जितनी जल्दी हम दूसरोके दोष देख सकते हैं उतनी जल्दी हम अपने दोष नही देखते। इसीलिए कठोर सत्य यह है कि दूसरोंके दोष देखने और उन्हे सुधारनेकी कोशिश करनेके बजाय हमें अपने ही बडे दोष देखने चाहिए और उन्हे सुधारना चाहिए। या बर्न्सके शब्दोमें (उक्ति बर्न्सकी ही है न?) 'काश जैसा हमें दूसरे देखते है हम अपनेको वैसा ही देखें।' व्यवहारमें तो मैंने पाया है कि सबसे अच्छा तो यह है कि हम स्वय अपने मनको टटोलें तथा मित्रो द्वारा की गई अपनी आलोचनाकी सच्चाईको मान ले एव जब वे अपने दोष तथा बुराईको स्वीकार न करे तब पहले-पहल तो उनका कहा ही ठीक माने। बस आज सुबहके लिए काफी उपदेश दे चुका। तुम्हारी आत्मा जैसा कहे तुम वैसा ही करो।

सप्रेम,

बापू

रात्रि ८–४५ वजे, १–१२–३०

[पुनश्च :]

प्यारेलालने बिहारी चरखेपर अच्छी शुरुआत की थी। परन्तु उसमें सफलता नही मिली। मैंने दूसरा गाण्डीव ठीक कर दिया और वह बिना किसी बाधाके मजेसे चलने लगा। सुपरिंटेंडेंटकी मेहरबानीसे मैंने गाण्डीवमें अपने सुधार करवा लिये है। आशा है वह अच्छी तरह काम देगा। मैंने उसे अभी १–१२–१९३० को रातके पौने नौ बजे चलाकर देख लिया है। भोजनका प्रयोग जारी है।

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४२२) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६५६ से भी।

४८८. पत्र : कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
२९ नवम्बर/१ दिसम्बर, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

तेरे हर सप्ताह लिखनेकी प्रतिज्ञा करने पर भी इस हफ्ते कोई पत्र नही आया। इसे मै एक गम्भीर भूल मानता हूँ। एक बार ली हुई प्रतिज्ञाको भंग करने जैसी भयंकर बात और कोई नही हो सकती। हमारी यह बुरी आदत इतनी सामान्य वन गई है कि आम तौर पर हमें उसकी भयंकरताका पता नही चलता। परन्तु यह एक भयंकर भूल है, इतना निश्चित जान और सावधान हो जा। तेरे पास लिखनेको कुछ न हो, तब तू छोटेलालकी तरह कोरे कागज पर हस्ताक्षर कर दिया कर। लेकिन माता-पिताके आगे बच्चोंको कुछ कहना ही न हो, यह सम्भव नही।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

१ दिसम्बर, १९३०

काकासाहब की जगह २९ तारीखको प्यारेलाल आ गया।

गुजराती (जी० एन० १८११) की फोटो-नकलसे।

४८९. पत्र : मानशंकर जयशंकर त्रिवेदीको

१ दिसम्बर, १९३०

चि० मनु (त्रिवेदी),

जैसा कि प्यारेलाल तुम्हारे बारेमें बताते हैं, उसपर से अनुमान होता है कि अब तुम सशक्त हो गये हो। उम्मीद है, तुमने काकासाहब के साथ जी भरकर बातें की होगी। फिरसे बीमार न पडना। काम करनेमें अधीरता न दिखलाना। जिनका हेतु शुभ है, जो हमेशा सेवा करनेकी इच्छा रखते हैं, उनके अकर्ममें भी कर्म है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ७७७२) की फोटो-नकलसे।

४९०. पत्र : नारणदास गांधीको

२७ नवम्बर/३ दिसम्बर, १९३०
गुरुवार सुबह

चि० नारणदास,

इस वार तुम्हारा पुलिंदा मुझे कल शामको ही दे दिया गया था। 'व्रतविचार' नामक पुस्तक मिल गई है।

चि० कुसुम यदि अपने निश्चय पर दृढ हो तो मुझे उसकी बात पसन्द है। जव स्वराज्य-प्राप्तिके बाद ही शादी करनी है तब अभीसे क्यो बन्धन डाल लें। उस समय जो विचार होगा उसके अनुसार चलना ही ठीक है। इसलिए देवचन्दभाई और जमनालालजी दोनोको मेरा यह विचार बताना। कुसुमके विचार तुम अच्छी तरह जान लेना। कही मन ही मन और बात हो और यह केवल बहाना न हो। उसे जो करना हो, उसके लिए वह पूर्णतया स्वतन्त्र है। मै तो इन दोनो नवयुवकोंके वारेमें भी यही कहूँगा कि यदि वे स्वराज्य तक राह देखनेको तैयार है तो आजसे ही किस लिए बँध जाना चाहते है या क्यों किसी लडकीको आजसे बाँधना चाहते हैं ? यह शूरवीर या भक्तका लक्षण नही है, और यदि कुसुम वीर बालिका है और उसकी शादी करनी ही हो तो वह वीरका ही वरण करे। घनश्यामदासको पत्र लिखूंगा।

मणिलाल क्यो दूध लेनेसे इनकार करता है? ऐसा होने पर भी उसमें ताकत ठीक बनी रहती हो तो मुझे कोई आग्रह नही। किन्तु हठपूर्वक दूध न ले, ऐसा भी नही होना चाहिए। वजन कम ही हो रहा हो तो दूध लेना चाहिए। देवदास पत्र क्यों नही लिखता?

शुक्रवार सुबह

अमीदासके बारेमें जबसे सुना है तबसे उस पर मुग्ध हो गया हूँ। वह तो पूरी तरह जीत गया है। उसकी टेक तो प्रौढ़ ऋषि-मुनियों जैसी थी। मैं तो मानता हूँ कि उसके आश्रममें रहनेसे आश्रम पवित्र ही हुआ। टेकके लिए हँसते-हँसते जान देना हम सब अमीदाससे सीखें। दूधादिके त्यागका व्रत उसने मेरा जीवन देखकर लिया हो तो उसमें उसने कुछ जल्दबाजी की। मुझे लगता है कि जबतक मैं स्वयं इस व्रतका सफल रीतिसे पालन न कर सकूँ, तबतक उसका अनुकरण नही किया जाना चाहिए। फिर भी ऐसा व्रत लेने पर अमीदास उसे भंग नही कर सकता यह दीपक-जैसा स्पष्ट है। सोच-समझ कर लिया गया व्रत देहके लिए हानिकर होते हुए भी नही तोड़ा जा सकता। आत्माके लिए हानिकर व्रत तो लिया ही नही जा सकता और यदि लिया हो तो उसे त्याग देना ही धर्म है। जैसे कि कोई 'झूठ बोलूँगा,' ऐसा व्रत नही ले सकता। वह आत्माके विरुद्ध है। सत्य बोलेंगे, यह देह-विरुद्ध हो सकता है, इससे देह जायेगी, देश जायेगा, ऐसा भी लगे तो भी उसका पालन करना ही ठीक है। उसके पिताको पत्र लिख रहा हूँ। पढ़कर उसे भेज देना।

शनिवार सुबह

सोराबजीको लिखना कि बीमेकी किस्त चुकाना हमारी शक्तिसे बाहर है। उन्हें जैसे हो वैसे भरकर उसकी पहुँच भेज देनी चाहिए। इस बारेमें जालभाईको भी पत्र लिखना। नानीबहनके बारेमें बुधाभाईने जो निश्चय लिखा हो उसे लिखकर रख लेना। नानीबहनको खबर देना और जबतक पैसा मिलता है, वसूल करते रहना। . . .[1] के पत्रसे मुझे सन्तोष नही हुआ। उसे जवाब लिखा है वह पढ़ लेना। जबतक उसपर शक रहता है तबतक वह संघर्षमें भाग न ले। आश्रमसे संघर्षमें भाग लेने वही जाये जो हमारी नजरमें शुद्ध है।

यज्ञके विषयमें खूब सावधान रहना। यही कोशिश करना कि दोष कम हो। सभी सूतकी मजबूती और अंक निकालना सीख ले और रोज ऐसा करें। कस मालूम करनेकी कोई मोटी रीति तो सहज ही निश्चित की जा सकती है। सभी उसके अनुसार कस निकालें। हरएक का सूत अलग बुना जाये तो ज्यादा मालूम होगा।

सीतलासहाय आ गया, यह तो बहुत अच्छा हुआ है। किन्तु मैं किस तरह बच सका? शिवाभाईका पत्र काकासाहब को पढ़ा कर भेजना। उसे प्रकाशित किया जा सकता हो, ऐसी बात हो तो यह मुझे लिख भेजनेमें कोई हानि नही है। इतना ही नही, भेज देनेसे फायदा भी होगा। अन्तमें इसकी जिम्मेदारी काकासाहब पर छोड़ देना।

. . .[2] का किस्सा हृदयद्रावक है। ऐसे सम्बन्धमें . . [3] कैसे पड़ा, यह समझ नहीं आता। . . .[4] को पत्र लिख रहा हूँ। वह पढ़कर भेज देना।

१, २, ३ और ४. नाम नहीं दिये गये हैं।

रविवार रात

यह पत्र लिख दिया है। बहुत महत्त्वपूर्ण बन गया है। मैं चाहता हूँ उसे पहुँच जाये।

विनोबाकी तकलियाँ मिल गई हैं। मेरे स्वास्थ्यके बारेमें मीराबहनके पत्रमें समाचार है, पढ लेना। काका के जानेके फौरन बाद प्यारेलालको भेज दिया है। प्रवचनके लिए पहले पन्नेका पिछला भाग पढना।

२ दिसम्बर, १९३०

महादेवसे कहना, जेलमें भी उसे समय मिले और अनुमति मिले तो लिखा करे। बाकी अगले सप्ताह।[1]

बापूके आशीर्वाद

तीसरा, चौथा, और पाँचवाँ अध्याय, तीनो एक-साथ मनन करने योग्य हैं। उनमें से अनासक्तियोग क्या है, इसका अनुमान हो जाता है। इस अनासक्ति – निष्कामता – से मिलनेका उपाय उनमें थोडे-बहुत अंशमें बतलाया गया है। इन तीनो अध्यायोको यथार्थ रूपमें समझ लेनेपर आगेके अध्यायमें कम कठिनाई पड़ेगी। आगेके अध्याय हमें अनासक्ति-प्राप्तिके साधनकी अनेक रीतियाँ बतलाते हैं। हमें इस दृष्टिसे 'गीता' का अध्ययन करना चाहिए, इससे अपनी नित्य पैदा होनेवाली समस्याओंको हम 'गीता' द्वारा बिना परिश्रमके हल कर सकेंगे। यह नित्यके अभ्याससे सम्भव होनेवाली वस्तु है। सबको आजमा देखनी चाहिए। क्रोध आया कि तुरन्त उससे सम्बन्धित श्लोकका स्मरण करके उसे शान्त करना चाहिए। किसीसे द्वेष हो, अधीरता हो, आहारैषणा आये, किसी कामको करने या न करनेका संकट आये, तो ऐसे सब प्रश्नोका निपटारा, श्रद्धा हो और नित्य मनन हो, तो गीता-मातासे कराया जा सकता है। इसके लिए नित्यका यह पारायण है और तदर्थ यह प्रयत्न है।

अभी ५-३० का बिगुल हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

५२ पत्र हैं।

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की माइक्रोफिल्मसे।

१. इसके बाद गांधीजीने गीताके बारेमें लिखा था। उस पत्रांशके पाठके लिए देखिए खण्ड ४९, "गीता-पत्रावलि", — अध्याय ४।

४९१. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

३ दिसम्बर, १९३०

भाई घनश्यामदास,

जमनालालके तरफसे संदेशा मिला है कि आपके कोई मित्र या भागीदारने सट्टा किया और उसमें काफी नुकसान हुआ। संदेशामें यह भी है कि उससे आपको दुःख हुआ है। सट्टा करनेके साथ हि नुकसान तो रहा हि है। उसमें दुःख कैसे। इस नुकसानका सीधा अर्थ किया जावे तो सुख भी मिल सकता है। आप और मित्रवर्ग ऐसी प्रतिज्ञा क्यों न करे कि अबसे सट्टा बिलकुल नहिं किया जायगा। सट्टासे मिला हुआ धन नीतिकी कमाई कभी नहिं हो सकती। पू० मालवीजीके स्वास्थ्यके हाल लिखें।

आपका,
मोहन

सी० डब्ल्यू० ६१९० से। सौजन्य: घनश्यामदास बिड़ला

४९२. पत्र : मीराबहनको

४ दिसम्बर, १९३०

चि० मीरा,

आश्रमकी डाक कल शामको मिली। उसमें तुम्हारा अशान्तिप्रद पत्र भी है। उससे चिन्ता तो नहीं होती, परन्तु विचारके लिए सामग्री मिलती है। इस स्वास्थ्यके बिगड़नेका क्या कारण है? बहरहाल, तुम्हें पूरा आराम अवश्य लेना ही चाहिए। तुम्हें मन और शरीर दोनोंको विश्राम देना चाहिए। इसलिए धीरे चलो। 'गीता' का छठा अध्याय पढ़ लो। योग धीरे-धीरे करना चाहिए। जो काम हम कर रहे हैं वह योग ही है। मुझे रोज एक कार्ड डाल दिया करो।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४२३) से। सौजन्य: मीराबहन; जी० एन० ९६५७ से भी।

४९३. पत्र: काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
४ दिसम्बर, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुम्हारे दोनो पत्र मिले। माताजी वगैरा आ गये है, यह अच्छा हुआ। यदि तुम नारणदासकी सम्मतिसे माताजीको अपने साथ खिलाते हो तो इसमें मुझे कोई आपत्ति नही है। फिर भी इसमें दोप तो है ही। तुम्हे माताजीको बता देना चाहिए कि तुम दोनोका जोवन कौटुम्बिक जीवनसे भिन्न है। बेशक, इसका आर्थिक पहलू भी है, जो कठिन है। लेकिन यहाँ तो मैंने आदर्शकी बात की है। हम हमेशा अपने आदर्श तक नही पहुँच सकते और कई बार तो आदर्शके ठीक पालनकी खातिर ही हमें उसके पालनमें कुछ सीमा निर्धारित करनी पडती है। इसलिए मैंने जो यह सब लिखा है, उसपर से यह मत समझना कि तुम्हे अब सम्मिलित रसोईमें भोजन के लिए जाना चाहिए। जहाँतक पिताजीके साथ तुम्हारे सम्बन्धका प्रश्न है तुम्हें कडाईसे काम लेना चाहिए। तुम्हे उनसे स्पष्ट शब्दोमें कह देना चाहिए कि वे तुम्हारे द्वारा नौकरी करने और उसके द्वारा पैसा जमा करनेकी आशा छोड दें। इसीमें उनकी सेवा है। जबतक उन्हे तनिक भी आशा बनी रहेगी, तबतक वे प्रयत्न करते रहेंगे। जब आशा छोड़ देंगे तब इसके लिए प्रयत्न करना भी छोड देंगे। यह मानव-स्वभाव है। जब आशा बिलकुल नष्ट हो जाती है तब निराशा हृदयको एक तरहका आश्वासन देती है। यहाँ अनेक ऐसे कैदी हैं जिन्हे उम्र कैदकी सजा मिली है, उन्हें छूटनेकी कोई आशा नही है। इससे वे आनन्दमग्न रहते हैं। मेरे जैसे अनिश्चित स्थितिवाले लोग दु खी होते होंगे। आज छूटेंगे कि कल — आशा-निराशाके सागरमें इस प्रकार डूबते-उतराते होंगे। कहनेका तात्पर्य यह है कि पिताजीके साथ तुम्हारे सम्बन्धमें जो दु खका भाव है, वह तुम्हारे अपने मनकी उपज है। यदि तुम्हे अपने कर्त्तव्यका भान हो गया हो तो तुम्हें पिताजीकी बातोका तनिक भी विचार नही करना चाहिए। पिताजीका कर्ज चुकाने और उन्हे राहत देनेके लिए मित्रवर्गसे उधार लेनेकी नीति कदापि सराहनीय नही है। मित्रोसे ऐसा व्यक्तिगत लाभ न उठानेमें ही भलाई है। यहाँ फिर मैंने कोरे आदर्शकी बातकी है। यदि महावीरप्रसाद आदिके साथ तुम्हारा निकटका सम्बन्ध हो और पैसा उधार लेनेकी आवश्यकता हो तो कदाचित लेना ही उचित होगा। इन समस्त समस्याओका समाधान तुम अनासक्ति रूपी रामबाण उपायसे करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२६३) की फोटो-नकलसे।

४९४. पत्र : रमाबहन जोशीको

४ दिसम्बर, १९३०

चि० रमाबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। सुन्दर है। धीरूकी दृढ़ता आश्चर्यजनक है। उसके तूफानी स्वभावमें उसकी दृढ़ताकी छाप है। हम यही आशा करें कि आश्रमके कई बालक सेवा-कार्यमें हम सबसे आगे बढ़ जायेंगे। यदि हमारा अन्तःकरण शुद्ध है और रोज और भी शुद्ध होता जायेगा, तो परिणाम यही होगा।

काठियावाड़के वर्णनसे मुझे आश्चर्य नहीं होता। इस सुस्तीसे यह जाहिर होता है कि अभी हमें काफी मार्ग तय करना है। इसीमें हमारी साधना निहित है। इसलिए चिन्ता करनेकी कोई बात नहीं।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो–७ : श्री छगनलाल जोशीने

४९५. पत्र : तारामती मथुरादास त्रिकमजीको

४ दिसम्बर, १९३०

मैं जो समाचार चाहता था, वे सब मुझे मिल गये हैं। मथुरादास अपने समयका इतना सुन्दर उपयोग करे, इसपर मुझे कुछ आश्चर्य नहीं होता। यह अनुभव उसके लिए लाभदायक है। वियोग तुम्हारी कसौटी है। दिलीप और ज्योत्स्नाका स्वास्थ्य अच्छा है यह पढ़कर सन्तोष हुआ। इस समय प्यारेलाल मेरे साथ है। हम दोनों ठीक हैं। मुझे पत्र लिखती रहना।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी

४९६. पत्र : कलावती त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
४ दिसम्बर, १९३०

चि० कलावती,

तुमारे खत मिले। अक्षर सुधारना चाहिये। सावधानीसे लिखनेसे अच्छे हो सकते है। माताजी[1] इ० आ गये अच्छा हुआ। खेड़ामें जाओ तो खूब सावधानीसे रहो और सेवामें तन्मय वन जाना। गंगाबहनकी आज्ञाका पालन करना।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मीलकी पुणीके बारेमें मैं समजा। अवी कुछ कहनेकी आवश्यकता नहि है।

बापु

जी० एन० ५२६४ की फोटो-नकलसे।

४९७. पत्र : रोहिणी कन्हैयालाल देसाईको

५ दिसम्बर, १९३०

चि० रोहिणी,

तुमने जो लिखा है सो ठीक है। सरकार जितना चाहे, उतना सामान ले जा सकती है और उसे कौड़ीके भाव बेच सकती है। सच बात तो यही है कि अन्यायी शासनके अन्तर्गत सत्य पर चलनेवाले लोगोंके पास सम्पत्ति रह ही नही सकती। यदि रहे भी तो समझ लो कि जब वह चाहे तब उस सम्पत्तिको छीन ले सकती है। हमारे इस आन्दोलनका आधार तो धनपर है ही नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २६५५) की फोटो-नकलसे।

१. कलावती त्रिवेदीकी सास।

४९८. पत्र : मनु गांधीको

यरवडा मन्दिर
५ दिसम्बर, १९३०

चि० मनुड़ी,

तेरा पत्र मिला। यदि तू लाठी चलाना सीख रही है तब तो मुझे भी तुझसे इसकी शिक्षा ग्रहण करनी ही पड़ेगी। एक शब्दके अक्षर अलग-अलग नही होने चाहिए। यदि पंक्तिमें अन्तिम शब्दको पूरा करनेकी जगह नही रह जाती तो उस स्थानको रिक्त ही छोड़ देना चाहिए। मूल शब्द 'नवडाई' नही 'नबलाई' है। ह्रस्व उ "ु" इस तरह लिखा जाना चाहिए। "ू" [भी जिस तरह लिखा है] उस तरह नहीं। अभी तो तुझे अक्षर शुद्ध करनेकी ओर ध्यान देना चाहिए, शाब्दिक सौन्दर्य पर नही। शाब्दिक सौन्दर्य तो अक्षर शुद्ध होनेसे स्वयमेव आ जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५०७) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : मनुबहन मशरूवाला

४९९. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

यरवडा मन्दिर
५ दिसम्बर, १९३०

चि० प्रेमा,

अपने उपवास और उस बीच तूने जो उत्साह दिखाया उसके लिए तुझे बधाई चाहिए? खुराकके बारेमें तो लिख ही चुका हूँ। अभी तुझे कच्ची सब्जियाँ नही खानी चाहिए। दाल तो कतई न खाना। दूध, दही, खाखरी, उबली सब्जियाँ अथवा फल, जैसे पपीता, मोसम्मी आदि मिलें तो कच्ची सब्जियोंकी जरूरत नही रहती। कमसे-कम मुझे तो दवाकी जरूरत महसूस नही होती। और फिर मेरी हमेशासे यह वृत्ति रही है कि जबतक मुझे यह मालूम न हो कि अमुक दवामें कौन-कौन-सी चीजें हैं तबतक मैं उस दवाको नही लेता। उपवासको दवाका काम देना चाहिए। सूर्यस्नान जारी रखनेकी जरूरत है तो सही। देखना, नीद पूरी लेना।

बच्चोंकी पढ़ाईका कुछ-न-कुछ इन्तजाम जरूर करना।

धुरन्धरका पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। उसका सारा काम मुझे बहुत निश्चित और साफ मालूम हुआ है।

सुशीलाको वर्षगाँठके उपलक्ष्यमें मेरा आशीर्वाद कहना।

राजकोट जाने पर तू जमनादाससे मिली होगी। मनुसे मिली थी? पुरुषोत्तमकी तबीयत कैसी है?

जमनादासकी पाठशालामे कुछ होता है या नही? राजकोटमें आन्दोलनके सिल-सिलेमे कुछ हलचल दिखाई दी या नही? इन सब खबरोकी मैं तुझसे आशा रखता हूँ।

धर्मकुमारकी बुरी आदतोंका बराबर ध्यान रखना। दुर्गाको समझाना। दुर्गा ध्यान दे तो बहुत काम कर सकती है।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

'भजनावलि' मे १३१वे भजनकी दूसरी पंक्तिमें 'निजनामग्राही' प्रयोग है। उसका अर्थ नारणदाससे या किसी गुजराती जाननेवाले व्यक्तिसे समझकर भेजना। तू ही समझती हो, तो और क्या चाहिए?

गुजरातीकी (सी० डब्ल्यू० ६६१३) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२४५ की फोटो-नकलसे भी।

५००. पत्र : चंद त्यागीको

५ दिसम्बर, १९३०

भाई त्यागीजी,

तुमारा खत पा कर मुझको बहोत आनंद हुआ। यदि नियम पालनसे भी अशक्ति न हटे तो दूध लेना। उससे पहले पका हुआ अन्न खा कर देख लेना। हठ नहि करना। गुरुकुलके हाल सुन कर मुझे खेद होता है। अभयजी जानते है क्या? रामदेवजीने क्या उत्तर दिया था? बलदेव सुधारी काम भले सीखे। उसे लिखो चरखा, करघा, तकली इ० बनानेका सीख लेवे। वृ० गु०[1] मे आजकल कौन मुख्य अध्यापक है? प्रेमराजजीसे कहो मुझे सब हाल लिखे। वहा क्या चल रहा है?

बापुके आशीर्वाद

भारतीय पाठशाला
फर्रुखाबाद

[पुनश्च :]

मुझे कभी पता नहि था कि तुमारे उर्दु हरफ छपे हुए जैसे है। बहोत हि अच्छे है।

जी० एन० ३२६६ की फोटो-नकलसे।

1. वृन्दावन गुरुकुल।

५०१. पत्र : कुसुम देसाईको

यरवडा मन्दिर
६ दिसम्बर, १९३०

चि० कुसुम (देसाई),

तेरे पत्रके तीन पन्ने थे। बीचका पन्ना इन लोगोंने खो दिया मालूम होता है। मुझे नहीं मिला। तुझे याद हो तो फिर लिखना। प्यारेलालकी तबीयत बहुत ही अच्छी हो गई है। उसका वजन १२२ पौंड है। उसे भोजनमें डेढ़ सेर दूध, आध सेर रोटी और शाक-सब्जी आदि मिलते हैं।

आजकल तो हम दोनों चरखेके पीछे पागल हो गये हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८१२) की फोटो-नकलसे।

५०२. पत्र : बुलाखीदासको

६ दिसम्बर, १९३०

भाई बुलाखीदास,

ईश्वर तो निस्सन्देह हजारों ढंगसे हमारी परीक्षा लेगा। उससे निराश न होना। आप दोनों अन्तिम क्षण तक अपने कर्त्तव्यका पालन करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३१३९)की फोटो-नकलसे।

५०३. पत्र : महेन्द्र देसाईको

६ दिसम्बर, १९३०

चि० मनु (मानसिंह),

तेरा पत्र मिला। तेरी लिखावट सुन्दर होनी चाहिए। रोज कितना सूत कातता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७४११) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : वा० गो० देसाई

५०४. पत्र : भगवानजी पण्ड्याको

६ दिसम्बर, १९३०

चि० भगवानजी,

तुम्हारा पत्र मिला। अभ्यासका अर्थ तुमने ठीक किया है; उसी तरह चित्तवृत्ति निरोधका भी ध्यान, उपासना, अर्थात् श्रद्धापूर्वक स्वधर्मका पालन करना — अप्रत्यक्ष रूपसे ऐसा अर्थ किया जा सकता है। मेरे विचारानुसार यहाँ ध्यानका संकुचित अर्थ किया गया है। ध्यान अर्थात् पूजापाठके समय हम जो चुपचाप बैठते हैं वह। इससे मनुष्यमें ईश्वरके प्रति आत्म-समर्पणकी भावना आती है और उससे निष्काम वृत्ति पैदा होती है। आत्मशुद्धिके बिना समाज-सेवा नहीं होती और समाज-सेवा करते-करते ही आत्मशुद्धि होती है। अतः तुम्हारे मनमें जो प्रश्न उठते हैं वे तो ठीक है, लेकिन तुम्हें उनके चक्करमें नहीं पड़ना चाहिए। प्रश्नोंका [अपने-आप] समाधान मिल जाये तो ठीक है। न हो तो मनमें ऐसी श्रद्धा रखनी चाहिए कि सेवा करते-करते समाधान मिल जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३३४) से। सौजन्य : भगवानजी पुरुषोत्तम पण्ड्या

५०५. पत्र : शान्ता शंकरभाई पटेलको

यरवडा मन्दिर
६ दिसम्बर, १९३०

चि० शान्ता,

तू शंकरभाईसे मिल आई, यह ठीक किया। कमलाके संयमकी बात सुनकर मुझे खुशी होती है। तू यदि अपने नामके अनुरूप धैर्य रखकर पत्र लिखे, तो तेरे अक्षर सुधर जायें। जिन लोगोंसे एक जून भी भूखा नहीं रहा जा सकता उन्हें धीरे-धीरे आदत डालनी चाहिए। और फिर जो ब्रह्मचर्यका पालन करनेकी इच्छा रखते हैं, उन्हें तो विशेष रूपसे ऐसा करना चाहिए। अभी फिलहाल ही प्रेमाबहनने सात दिनका उपवास रखा था, क्या तू यह जानती है? और उपवासके दौरान वह अपने रोजमर्राके काम, यथा कपड़े धोना, पानी भरना आदि भी करती रही है। और एक तू है कि एक जून भोजन न खाने पर तेरे हाथ काँपने लगे। यह मानसिक स्थिति है, शारीरिक नहीं। समझी?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३९९०) की फोटो-नकलसे।

५०६. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

यरवडा मन्दिर
७ दिसम्बर, १९३०

चि० महालक्ष्मी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने जो लिखा है, वह ठीक है। किसी भी व्यक्तिको किसी भी कारणसे अपना काम नही छोड़ना चाहिए, आदर्श इसीको कहते है। सभी इस आदर्शको प्राप्त नही कर सकते, इसपर हमें दुःखी भी नही होना चाहिए, उनकी आलोचना भी नहीं करनी चाहिए। हमें चाहिए कि हम अपने दोषोके प्रति सजग रहें तथा औरोंके दोषोंके प्रति उदार रहें। यह कोरी भलमनसाहत ही नही है, यह तो एक सिद्धान्तकी बात है। हमें जिनके दोष दिखाई देते है वह उन्हें दूर करनेके कितने प्रयत्न कर रहा है, यह हमें दिखाई नहीं देता। वस्तुतः महत्वकी बात तो प्रयत्न करना है। हममें यदि अमुक दोष नही है, तो इसका कारण प्रयत्न न होकर स्वभाव भी हो सकता है। हम जो जन्मसे ही मांस नही खाते सो हमारे मांस-त्यागका कोई महत्व नही। लेकिन जो व्यक्ति नित्य मांस खानेवाला है, यदि वह उसका त्याग करता है और कभी-कभी खा भी लेता है तो भी उसके इस त्यागका बहुत महत्व माना जा सकता है। इसलिए बेहतर यही है कि हम अपने व्रतका यथाशक्ति सम्पूर्ण रूपसे पालन करें। दूसरा व्यक्ति जितना भी करे उतनेसे सन्तोष मानें। तुम्हें ठीक अनुभव मिल रहा है। मुझे पक्का विश्वास है कि तुम परीक्षामें अवश्य सफल होगी। तुम्हारी खुराक बिलकुल ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६८०६) की फोटो-नकलसे।

५०७. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

यरवडा मन्दिर
७ दिसम्बर, १९३०

चि० मथुरादास,

मैं आज तक तुम्हारे लेखोको मुग्ध भावसे पढता-भर रहा हूँ। वह मुग्ध-भाव तो अब भी है, लेकिन अब मैं तुम्हारे लेखोको एक विद्यार्थीके रूपमें और टीकाकारकी हैसियतसे पढने लगा हूँ। मैं देखता हूँ कि तुम्हारी पुस्तक स्वयशिक्षक नही है। उसे पढकर मनुष्य पींजना नही सीख सकता। जिन्हे थोडा-बहुत पींजना आता है, वे लोग भी तुम्हारे सुझाये हुए सुधारो पर अमल नही कर सकते। पुस्तक अपने-आपमें सुन्दर बन पडी है, लेकिन एक शिक्षकके रूपमे वह अधूरी है। जहाँ तक मैं तुम्हारी पुस्तकको समझ पाया हूँ, तुमने मुझे जो पद्धति बताई थी उसे रद करके अब तुमने नई पद्धति को अपनाया है। मेरी यह धारणा थी कि मैं उसे पहले ही अपना चुका हूँ, लेकिन तुम्हारी पुस्तकको दुबारा पढने पर देखता हूँ कि मैंने कोई नई बात नही की है। अब मेरी तुम्हे यह सलाह है कि तुम मुझे एक ऐसा पाठ लिख भेजो, मानो तुम मुझे सिखा रहे हो। तुम्हारी पुस्तकमे जितना कुछ दिया हुआ है उसे फिरसे लिखनेकी जरूरत नही है। मुझे एक समयमे तांत पर कितनी रुई रखनी चाहिए और उसे कितने झटकोमें पींज लेना चाहिए? कितनी रुईसे पींजना आरम्भ करना चाहिए? गद्दी रोज क्यों बनाई जानी चाहिए? और वह कच्ची रुईकी क्यों होनी चाहिए? उसे भी क्या अन्तत: प्रतिदिन पींज डालना होगा? तांतको खीचते समय क्या धुनकी भी झुकती है? तुम्हारे कहनेका तात्पर्य यही है न कि तुम्हारा बायाँ हाथ उतना ही ऊपर-नीचे होना चाहिए जितनी धुनकी होती हो तथा उसको आगे-पीछे ले जानेका — झुलानेका काम — मुठिया करती है। यदि इस झझटमे पडनेका तुम्हारे पास समय न हो तो इस पत्रकी ओर कोई ध्यान न देना। तुम्हारा काम तो वहाँ जो लोग सीख रहे है उनकी जांच करना और उनमे सुधार करना है। मैं तो मात्र एक दर्शकके समान हूँ और मैं जानता हूँ कि अभी मुझे तुम्हारा ध्यान इस ओर आकर्षित करनेका कोई अधिकार नही है। इस पत्रके दो उद्देश्य है — एक तो दोष बताना और दूसरा उससे कुछ सीखना। तुम दूसरे उद्देश्यको गौण समझना। मैंने उपर्युक्त प्रश्नोको विट्ठलके आगे भी रखा है। उसे भी चाहिए कि वह मेरे इन प्रश्नोका उत्तर दे, इससे वह कुछ सीखेगा भी।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३७४९) की फोटो-नकलसे।

५०८. पत्र : रेहाना तैयबजीको

७ दिसम्बर, १९३०

बेटी रेहाना,

अब तो एककी जगह दो उस्ताद हो गये। एक उस्ताद छोटी-सी लड़की और दूसरी उस्ताद एक सफेद दाढ़ी। अब शागिर्दका खात्मा ही समझो। देखें, क्या होता है। इतना सबक काफी है न?[1] क्यों, मैं उर्दूमें तरक्की कर रहा हूँ न? और फिर अब तो प्यारेलाल इस बातका साक्षी है। और उसे तो उर्दू अच्छी तरह आती है। लेकिन मैं इसके लिए उसका ज्यादा समय नही लेना चाहूँगा, क्योंकि अब वह सम्पूर्ण रूपसे चरखेमें खो गया है। इसलिए मेरे हिज्जेको तू सुधारना। चूंकि तबीयत अच्छी नही है, इसलिए तुझे मुझको ज्यादा समय नहीं देना चाहिए। मै तो बेकार हूँ इसलिए मैं तेरे पत्रको धीरे-धीरे पढ़ लिया करूँगा। अम्माजान वालिदके साथ पक्षपात करती हैं। वालिदके अक्षर उनके समान ही बूढ़े हैं और तेरे अक्षर तेरे समान युवा है। खैर, अक्षर जैसे है वैसे रहने दो। [सम्भव है] किसी व्यक्तिकी भले ही सफेद दाढ़ी हो लेकिन मन जवान हो और हजारों नखरे करता हो, किसीको फ्रेंच सिखाता हो, अनुवाद करता हो और अनेक योजनाएँ बनाता हो; तथा [सम्भव है] कोई जवान होने पर भी मनसे बूढ़ा हो। तू ठीक ऐसी ही है, सो तो नही कहता लेकिन तेरी नाककी बीमारीके दूर होने पर तू बुढ़िया नहीं रह जायेगी। चीर-फाड़की खबरसे मुझे भय नही हुआ; इससे मै नही डरता। लेकिन तेरे बारेमें खबर सुननेको लालायित अवश्य रहता हूँ। डाह्याभाईको मेरा आशीर्वाद अथवा वन्देमातरम्, वह जो चाहे सो देना। उसके बारेमें सुनकर मुझे खुशी हुई।

खुदा हाफिज।[2]

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९६२४) की फोटो-नकलसे।

१. प्रथम पांच पंक्तियाँ उर्दू लिपिमें लिखी गई हैं। शेष पत्र गुजरातीमें है।

२. ये शब्द उर्दू लिपिमें हैं।

५०९. पत्र : वसुमती पण्डितको

७ दिसम्बर, १९३०

चि० वसुमती,

तेरे दोनों पत्र मिले हैं। तू अभी तक तो पकडी नही गई है। लेकिन यदि पकडी जाये तो अच्छा ही है। इस विषयमें तटस्थ रहना। सब कुछ धीरजके साथ करना। देखता हूँ, वहां तो तुझे अच्छा अनुभव मिल रहा है। अब मेरे पास प्यारेलाल है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एम० एन० ९२९५) की फोटो-नकलसे।

५१०. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

यरवडा मन्दिर
७ दिसम्बर, १९३०

चि० गंगाबहन (बड़ी),

तुम्हारा पत्र मिला। आग बुझानेके लिए प्रार्थना छोड़ी, इसका अर्थ है प्रार्थना की। यह कर्ममें अकर्मका उदाहरण है। तुमने प्रार्थनाके हेतुको निभाया। फिर आग बुझानेके लिए भागते हुए भी मनमें रामनामका जप हो ही सकता है।

और आखिरकार जिसका जीवन सेवामय है और जिसने अहंकारको मनसे निकाल दिया है, वह प्रार्थनामय ही है। ऐसा बननेके लिए ही सुबह-शाम प्रार्थना करते हैं। किन्तु आग आदि जैसी घटना होनेपर प्रार्थना छोडी भी जा सकती है। ऐसे अवसर बहुत कम आते हैं।

तुम्हारे पत्रमें जिस जहरका वर्णन है, वहां तुम अमृत उँडेल दो। हिंसाका अहिंसासे, असत्यका सत्यसे, कामका संयमसे, क्रोधका अक्रोधसे और लोभका उदारतासे ही सामना किया जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो–६: गं० स्व० गंगाबहेनने; सी० डब्ल्यू० ८७६७ से भी।
सौजन्य : गंगाबहन वैद्य

५११. पत्र : सुशीला गांधीको

यरवडा मन्दिर
७ दिसम्बर, १९३०

चि० सुशीला,

'स्टुअर्ट' नामके मैं दो-तीन व्यक्तियोंको जानता हूँ। एक मजिस्ट्रेट था जो बादमें जुलू विद्रोहके समय सैनिक अधिकारी बन गया था। एक अन्य 'स्टुअर्ट' वकालत किया करता था। पहलेके साथ तो मेरे सम्बन्ध काफी घनिष्ठ हो गये थे। क्या यही व्यक्ति वहाँ है? क्या तू भी मणिलालके स्थान पर जाना चाहती है? सीताको उर्फ धैर्यबालाको अथवा उसका और कोई नाम रखा हो, क्या साथ ले जाना चाहती है अथवा पीछे छोड़ जाना चाहती है?

वहाँ कितनी बहनें काम करती हैं?

तुम सबको

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७७८) की फोटो-नकलसे।

५१२. पत्र : पद्माको

७ दिसम्बर, १९३०

चि० पद्मा,

तेरा पत्र मिला। गुजराती तेरी मातृभाषा नहीं है, इसलिए लिखावट क्यों खराब होनी चाहिए? लिखावटका भाषाके साथ क्या सम्बन्ध है? अच्छा तो तू देवनागरी लिपिमें मुझे पत्र लिख और उसमें अपनी सुघड़ताका परिचय दे। अक्षर तो चित्रके समान हैं। जिसे चित्रकला आती है वह चाहे जिस भाषामें अक्षर चित्रित कर सकता है।

यदि कोई व्यक्ति हमसे ऐसे भोजनको खानेका आग्रह करता है जो हमने कभी न खाया हो और यदि हम विनम्रतापूर्वक उसे खानेसे इनकार कर दें, तो वह अन्ततः हमारी बातको मान जायेगा।

यदि हमसे कोई अंग्रेज अधिकारी मिलने आये तो हमें उसके साथ अभद्र व्यवहार नहीं करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६११६) की फोटो-नकलसे।

५१३. पत्र : तोताराम सनाढ्यको

यरवडा मन्दिर
७ दिसम्बर, १९३०

भाई तोतारामजी,

सरके लिये मट्टीका प्रयोग किया जाय। धूपमें काम करनेके समय मट्टीकी टोपी सरपे रख सकते हैं। कुचमें[1] मैंने बहोत दफा ऐसा किया था। टुवालमें[2] मट्टी रखकर सरपे बांधनेसे टोपी बन जाती है और रक्षा होती है। गंगा देवीका शरीर अब कैसे है? धीरू अच्छी तरह रहता है? तोफान करता है?

बापुके आशीर्वाद

पण्डित तोतारामजी
हरिजन आश्रम
साबरमती जंक्शन[3]
बी० बी० एंड सी० आई० रेलवे[4]

जी० एन० २५४० की फोटो-नकलसे।

५१४. पत्र : बबलभाई मेहताको

यरवडा मन्दिर
८ दिसम्बर, १९३०

भाई बबलभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। जेलमें चाहे जिस व्यक्तिके साथ भोजन किया जा सकता है। उस पर कोई प्रायश्चित्त आवश्यक नहीं होता। प्रायश्चित्त स्वच्छता अथवा अस्वच्छताको लेकर नहीं किया जाता। वह तो बिरादरीके बाहरके किसी व्यक्तिके हाथका खाना खाने पर किया जाता है। जो लोग ऐसे बन्धनोंको नहीं मानते वे प्रायश्चित्त करते ही नहीं हैं। अन्य बातोंके सम्बन्धमें काकासाहब तुम्हारा पथ-निर्देश करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एम० एन० ९४५५) की फोटो-नकलसे।

१. दाण्डी-कूच।
२. तात्पर्य शायद 'टावेल' अर्थात् तौलियासे है।
३ और ४. मूल पत्रमें ये शब्द अंग्रेजी लिपिमें हैं।

५१५. पत्र : मीराबहनको

८ दिसम्बर, १९३०

चि० मीरा,

मैंने तुम्हारा पत्र आखिरके लिए जान-बूझकर इस आशासे रख लिया है कि मैंने तुम्हें गुरुवारको जो पोस्टकार्ड लिखा था और जो तुमको, आशा है, समय पर मिल गया होगा, उसका जवाब मुझे सोमवारके पहले या सोमवारको मिल जायेगा। उसमें मैंने तुम्हारे स्वास्थ्यका हाल पूछा था। यह कब्जका बना रहना चिन्ताकी बात है। मुझे उम्मीद है कि जब यह पत्र तुम्हारे पास पहुँचेगा, तबतक कब्जके दौरेका सारा असर मिट जायेगा। मैंने तो थोड़े दिनके लिए प्रोटीनवाली खुराक छोड़कर ही कब्जसे अपना पिण्ड छुड़ा लिया। अब मैं बादामके जरिये प्रोटीन ले रहा हूँ। अगर फिर दूध न शुरू करना पड़े, तो मुझे बड़ी खुशी होगी। अभी थोड़ी कमजोरी मालूम होनेके सिवाय परिणाम सुन्दर रहा। बादाम मैं बड़ी सावधानीके साथ ले रहा हूँ। और मैं केवल हरी तरकारियों और एक आउन्स बादाम पर शक्ति कायम नहीं रख सकता। मैं एक आउन्स पिछले दो दिनसे ही लेने लगा हूँ। मुझे कोई अन्न लेना पड़ेगा। अभी मैंने निश्चय नहीं किया है कि क्या लूँ। बाजरा या ज्वार, जिसकी भी रोटी जेलमें बनती हो उसीको आजमाना चाहता हूँ। अगर वह अनुकूल आ जाये तो मेरी समस्या सन्तोषप्रद रूपमें हल हो सकती है। लेकिन जल्दबाजी नही की जायेगी और दुराग्रह तो होगा ही नही। ज्योंही मुझे जरूरत महसूस होगी, फिर दूध लेने लगूँगा।

अगले दस दिनोंमें 'भजनावलि' का अनुवाद पूरा कर लूँगा। इससे मुझे बड़ा आनन्द मिला है। अपने कामसे मुझे सन्तोष नही है। इसके सिवाय कि यह प्रेमका काम है, उसमें और कोई गुण नही है — साहित्यिक गुण तो है ही नही। लेकिन इससे तुम्हें भजनोंका अर्थ जाननेमें सहायता मिलेगी, और यही मेरा उद्देश्य था। और जब यह काम पूरा हो जायेगा, तो आशा रखता हूँ कि दूसरा शुरू कर दूँगा; अर्थात् गुजराती 'गीता' की भूमिकाका अनुवाद। मेरा विचार श्लोकोंका अनुवाद करनेका नही है। परन्तु मै मौजूदा अनुवादोंमें से एकको पढ़ जाऊँगा और जहाँ वह मेरे अनुवादसे भिन्न होगा वहाँ उसे लिख लूँगा, और हाशियेकी तमाम टिप्पणियोका अनुवाद कर दूँगा। इससे मेरा काम सरल हो जायेगा और बहुत-सा परिश्रम बच जायेगा। यह काका को भी पढ़ा देना। उन्हें इस प्रस्तावमें दिलचस्पी होगी।

गाण्डीवमें आशासे कही अधिक सुधार हो गये है। अब वह हलका चलता है। पहले जो खिंचाव नही था वह भी आ गया है। लेकिन मैं सुधारोंका वर्णन करके तुम्हें थकाऊँगा नही। उनका वर्णन केशुके पत्रमें कर रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि

गतिमें अब दूसरा कोई चरखा इससे बढ नही सकता। लेकिन अभी उसकी परीक्षा होनी है। मैं जानता हूँ कि मेरे आश्वासनसे अधिक सूत पैदा नही होगा।

तुम्हें अपनेको खूब आराम तो देना ही चाहिए। और मानसिक तनाव रहते हुए काम नहीं करना चाहिए। वह चरखेके लिए तो अच्छा है, परन्तु इन्सानोंके लिए अच्छा नही है।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ५४२४) से। सौजन्य : मीराबहन; जी० एन० ९६५८ से भी।

५१६. पत्र : नारणदास गांधीको

गुरुवार सुबह, ४/९ दिसम्बर, १९३०

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र कल शामको मिला। [अधिकारी] बड़े ध्यानसे पत्रोंका पुलिंदा देते हैं। रवाना भी तत्परतासे करते हैं। लगता है [इस बार] रवाना करनेमें एक दिनकी देरी हुई।

उमरको दीवालीमें आना है अर्थात् नौ महीने बाद या ईसाई दीवालीके बाद? यदि हिन्दू दीवालीमें आनेकी बात हो, तब तो इस अरसेमें कई रंग बदल जायेंगे।

महालक्ष्मी और माधवजीको प्रतिज्ञाका बहुत सूक्ष्म ध्यान है। इसलिए उन दोनोंको एक अक्षरके टूटनेसे भी दुख होगा; होना भी चाहिए। किन्तु यदि सभी अपनी प्रतिज्ञाका यथाशक्ति अर्थ समझकर उसका पालन करें तो भी काफी है। और लगता है कि अधिकांश तो कर ही रहे हैं। तुम चेताते रहा करो।

गिरिराजका तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा करना। भार तुम्हें ही उठाना है; इसलिए तुम्हारा निर्णय ही सही मानूंगा। कृष्ण तो जबरदस्त है ही। उसका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तो मुझे लगता है कि वह बहुत सेवा कर सकेगा।

पुरुषोत्तमके बारेमें भी यही मानता हूँ। वह पत्र लिखता रहे।

प्यारेलालका स्वास्थ्य सुधर रहा है। मेरे पास न बिगड़े तो अच्छा। प्यारेलालका मेरे पास होना ऐसा है जैसे भेड़ियेके पास बकरी। भेड़ियेके पास बकरी बाँध दो और बादमें रोज अच्छीसे-अच्छी खुराक उसको दो तो भी वह रोज सूखती ही जायेगी। प्यारेलालका भी कुछ ऐसा ही था। अब न हो तो अच्छा है। ऐसा होनेमें मैं पूरी तरह अपना दोष मानता हूँ। देखें अब ईश्वर क्या करना चाहता है। उसे जो कुछ खुराक चाहिए वही उसे मिलती है। अभी दूध, दही, रोटी, सब्जी और पपीता लेता है।

पारनेरकर इतना अव्यवस्थित काम करेगा यह मैंने नही सोचा था। वह शुद्ध हेतुसे सेवा करनेवाला है। किन्तु लगता है कि काम कम ही सँभाल सकता है। तुमने दृढ़ होकर हिसाब ठीक कराया यह तो अच्छा ही हुआ है। अब ठीक तरहसे आराम करके शरीरको स्वस्थ बना डाले तो अच्छा है। बीडजके व्यापारमें घाटा है, क्या ऐसा मानना होगा? इन सभी प्रवृत्तियोंमे जिन्हें कम करना या खत्म करना हो उन्हें तदनुसार सँभाल लो। अनासक्त होकर काम करनेवालेको अपने कामका अन्दाज फौरन हो जाता है। उसे लोभ तो करना ही नही चाहिए। अपनी शक्ति-से बढ़कर काम तो उठाना ही नही चाहिए। ठीक तरहसे देखे तो उसे काम लेनेकी जरूरत ही नही होती। काम स्वयं उसके पास आ जाता है और वह उसे पूरी तरह करनेका प्रयत्न करता है। संसारको ऐसा व्यक्ति निकम्मा-जैसा लगता है। क्योकि उसके चेहरे पर कभी ग्लानि नही होती, वह कभी अपने कामके बोझका ढिंढोरा नही पीटता। स्वयं अपने कामका बोझ कभी नही उठाता और सब-कुछ नटवर पर लाद कर जैसे वह नचाये वैसे नाचता है।

जेठालालने कामका हाल लिख भेजनेको कहा था लेकिन उसने अभी तक नही भेजा। कमलाबहन लुडीकी बात समझ गया हूँ। विवाह ऐसी ही चीज है। उसकी उत्पत्ति ही विषयमें, रागमें है। विवाहको धार्मिक क्रिया कहते हैं; क्योंकि वह विषयको काबूमें रखनेकी विधि है इसीलिए उसकी रचना हुई। लेकिन यह बात भुला दी गई है; इसलिए अब बहुत लोगोके लिए विवाह केवल भोगका साधन ही बन गया है। गंगाबहन और नानीबहनको लिखूँगा।

तुम्हारा भोजन-सम्बन्धी प्रयोग देख रहा हूँ। मुझे ब्यौरा लिखते रहा करो। मूँगफलीकी मात्रा कम करनेमें ही लाभ है। दूध, दही मिले तो लो; न लो, तो भी काम चलेगा। सभी चीजें एक ही बार न खानेकी सलाह जो आजकल शोधक देते है, उसमें कुछ तथ्य जरूर है। पूरी खुराकका रस एक ही तरह और एक ही बार हजम नही होता, इसलिए बहुत मिश्रण करनेसे भी हाजमा बिगड़ता है। दयाका वर्णन बहुत सन्तोषदायक माना जायेगा। छपे हुए अध्याय भेजनेको तुमने लिखा है। उसका अर्थ यह भी हो सकता है कि अब भेज रहे हो। वे अभी मुझे नही मिले हैं।

शुक्रवार सुबह

अपने स्वास्थ्य और खुराकके बारेमें पूरी जानकारी मैंने काकासाहब को लिखे पत्रमें दी है। इसलिए यहाँ दुबारा नही लिखता। केशुको बुलाकर उसकी शिकायत सुन लोगे, ऐसा मैंने मान लिया था, इसलिए पत्रमें नही लिखा था। किन्तु अब भी मुझे वह याद है। उसका सार दे रहा हूँ।

१. तुम उसपर अकारण क्रोध करते हो।

२. एक बार वह तुम्हें बताने लगा तो भी तुमने बात नही सुनी, सबके सब सुन सकें इतनी ऊँची आवाजमें फटकारा और उसे बोलने ही नही दिया।

३. तुम कुसुम, नवीन और धीरूके प्रति खूब पक्षपात करते हो। उनके विरुद्ध शिकायत हो तो उसे सुनते भी नही हो।

४. केशुके पाससे बिना किसी कारणके ही कारखानेका काम ले लिया है।

५. दामोदरदासने तुम्हारे पक्षपातसे तंग आकर ही आश्रम छोड़ा।

मैंने तो केशुको लिखा है कि जिस तरह मैं मगनलाल पर मुग्ध था और उसके विरुद्ध कोई बात मेरे मनमें नहीं आती थी वैसा ही तुम्हारे बारेमें भी है। इसलिए जिस बातका मुझे प्रत्यक्ष अनुभव न हो तुम्हारे बारेमें वैसी बात माननेके लिए तैयार नहीं हूँ। तब भी उसे तुम्हारे पास जाकर सब-कुछ साफ-साफ कह देनेकी सलाह दी थी। जवाबमें उसने इतना ही लिखा कि मेरे पत्रसे उसे सन्तोष नहीं हुआ। बादमें महादेवके साथ चर्चा करनेकी बात थी; इसलिए मैं चुप रहा। अब तुम ही उसे बुलाकर जो शिकायतें मैंने लिखी हैं उनकी बात करना। मैंने समझनेमें भूल की हो तो वह बतायेगा और सुधार देगा। मैंने कुछ छोड़ दिया हो तो वह पूरी बातें बताये। बादमें तुम उसे सन्तुष्ट कर सको तो करना। किसी भी काममें लगे रहनेके लिए तो मैंने लिखा ही है। काकासाहब के साथ भी उसके बारेमें बात की है। केशुको भी उनसे मिलनेके लिए लिखा है। वह खाली बैठा रहे, यह तो निःसन्देह अच्छी बात नहीं है।

हरिलाल देसाई नौकरी करना चाहता हो और तुम्हें ठीक लगे तो उसे रख लेना। वह व्यवस्थित नहीं है, तो भी निर्मल-हृदय नवयुवक है। और मैं मानता हूँ कि अपने यहाँ रखने लायक है। . . .[1] ने मुझे लम्बा पत्र लिखा था; क्या वह तुमने देखा है? जबतक वह कोई आँखों देखी पक्की बात न लिख सके तबतक मुझपर कुछ असर नहीं पड़ेगा। . . .[2] को मैं अति निर्मल-हृदया बालिका मानता हूँ। . . .[3] भी निर्मल और साफ बात करनेवाला है, ऐसी छाप मुझपर पड़ी है। [दांडी-]कूचमें भी मुझे इसका मधुर अनुभव हुआ था। काशी विद्यापीठमें भी उसकी सुवास थी। . . .[4] उसका पथ-प्रदर्शन कर रहा है और उसे ऊँचे ले जाना चाहता है यह सच है, किन्तु उसमें मैंने केवल भाई और शिक्षकका ही भाव देखा है।

मौनवार दोपहर

चप्पलके तल्लेके लिए चमड़ा जल्दी प्राप्त करना। नई चप्पलका तल्ला भी नाजुक ही दिखाई देता है। उसमें घिसनेके निशान आजसे ही दिखाई दे रहे हैं। मेरे स्वास्थ्य और खुराकके बारेमें मीराबहनके पत्रमें और कुछ काकासाहब के पत्रमें है। इसलिए यहाँ कुछ नहीं लिखता।

अब छोटी बातोंको ज्यादा ध्यानसे देख पाता हूँ। इसलिए तुम्हारे पुलिंदेमें आनेवाले पत्रोंके अक्षरकी ओर ध्यान चला ही जाता है। अपने खराब अक्षर सुधारनेका प्रयत्न करता हूँ, यह तो तुम मेरे प्रत्येक पत्रमें देखते ही होगे। खराब अक्षरोंमें अविवेक तो है ही; और अविवेकमात्र हिंसा है। किन्तु खराब अक्षर प्रत्यक्ष हिंसा भी है। जिससे हमारे पड़ोसीको या किसी औरको बिना कारण कष्ट हो, वह हिंसा ही है। खराब अक्षर पढ़नेवालेको कितना कष्ट होता है, कितनी असुविधा होती है इसका मुझे दोहरा अनुभव है। एक तो मुझे खराब अक्षरवाले पत्र पढ़ने पड़ते हैं, यह

१, २, ३ और ४. नाम नहीं दिये गये हैं।

अनुभव है। दूसरा, मेरे खराब अक्षर पढ़नेवालेको होनेवाले कष्टका अनुभव। यह लिखनेका उद्देश्य यही है कि आश्रममें रहनेवाला हर व्यक्ति–स्त्री, पुरुष, बालक, बालिका खूब सुन्दर अक्षर लिखनेका ध्यान रखे। इसके लिए समय नहीं सिर्फ विचार करनेभरकी जरूरत है, दूसरे व्यक्तिके प्रति प्रेमकी जरूरत है। सब इन नियमोंका पालन करें:

१. शब्द खुले लिखें।

२. बनावटका त्याग करें।

३. अधूरे अक्षर न लिखें।

४. एक अक्षरको दूसरेमें न मिलायें।

५. जहाँ तक हो सके कोई भी मुझे पेंसिलसे न लिखे।

इतने नियमोंका पालन करते हुए अक्षर लिखें तो जरूर अच्छे होंगे। जल्दबाजीमें आसक्ति है। जल्दीमें कोई न लिखे। धीरजसे जितना लिखा जा सके उतना लिखकर सन्तोष करे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

आज ८३ पत्र हैं। किन्तु ३६ वीं क्र० सं० वाला पत्र छूट गया लगता है; इसलिए ठीक तरहसे देखें तो ८० ही हैं। ८१वाँ पत्र स्वर्गीय सेठ मंगलदासके भाईके लिए है। वह उन्हें तुरन्त पहुँचा देना।

प्रवचन-सम्बन्धी पत्रों पर भी अंक हैं।[1]

गुजराती (एम० एम० यू०/१) की फोटो-नकलसे।

५१७. पत्र : प्रभावतीको

यरवडा मन्दिर
९ दिसम्बर, १९३०

चि० प्रभावती,

बहुत दिनोंसे तेरा कोई पत्र नहीं आया। मैं चिन्तित तो अवश्य हूँ, लेकिन मान लेता हूँ कि वहाँ सब ठीक है। ईश्वर तेरा रक्षक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३८३) की फोटो-नकलसे।

१. इसके बाद लिखे गये गीता-सम्बन्धी पत्रांशके पाठके लिए देखिए खण्ड ४९, "गीता-पत्रावलि," —अध्याय ५।

५१८. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

११ दिसम्बर, १९३०

प्रिय कुमारप्पा,

कमलाबहनके बारेमें तुमने जो लिखा है उसे मैंने ध्यानमें धर लिया है। ईश्वर करे वह सच्चे अर्थोंमें उन्नति करे!! "यह पत्र-व्यवहार" बन्द होनेकी जरूरत नहीं है। यदि तुम मुझसे और आगे जिरह करोगे तो मैं इसे खुशीके साथ जारी रखूंगा। मैंने देखा है कि कई चीजें समय बीतनेके साथ और इस बीच अनजाने ही हम जो देखते रहते हैं उससे स्पष्ट हो जाती हैं।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (जी० एन० १००८३) की फोटो-नकलसे।

५१९. पत्र : कुसुम देसाईको

११ दिसम्बर, १९३०

चि० कुसुम (बड़ी),

तेरा पत्र मिला। मुझे अपने स्वास्थ्यमें कोई खराबी नहीं दिखती। परिवर्तनसे उसमें सुधार ही दिखाई देता है। जरा भी चिन्ता न करना।

प्यारेलालका समय इन कामोंमें बँटा हुआ है:

३७५ तार चरखेपर कातना और १०० तार तकलीपर; जितनी चाहिए उतनी पूनियाँ बनाना — अभी तो इन तीन कामोंसे ही मुश्किलसे फुरसत मिल पाती है। तकली दो घंटे ले लेती है। मैं भी लगभग यही करता हूँ। तकलीके १०० तारके साथ चरखेके २७५ तार रखें तो काम चल सकता है। दोनोंके मिलाकर ३७५ तार।

लड़कियोंके बारेमें तू जो लिखती है सो ठीक है। मुझे और अधिक स्पष्टता-से लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० १८१३) की फोटो-नकलसे।

५२०. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

यरवडा मन्दिर
१२ दिसम्वर, १९३०

चि० व्रज किसन,

तुमारा खत मिला। मैंने लीले[1] फल छोड दिये वहारके दु:खकी कथा पढ़कर। अब साथमें प्यारेलाल है। खाना पीना यज्ञादि सब कर्म हैं। नहि करने योग्य विकर्म है। अकर्म कर्मका अभाव। जो मनुष्य अनासक्तिपूर्वक कर्म करता है वह अकर्म हुआ। विकर्म अनासक्तिपूर्वक हो हि नहिं सकता। जो कुछ शंका उठे उसके वारेमें अवश्य पूछो। स्वास्थ्य अच्छा करके वहार निकलो। हम दोनों अच्छे है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० २३८५ की फोटो-नकलसे।

५२१. पत्र : मीराबहनको

१३ दिसम्वर, १९३०

चि० मीरा,

तुम्हारा पोस्टकार्ड यथासमय प्राप्त हुआ था। तुम्हारी तरफसे और कोई खवर न मिलनेका अर्थ मैं यह मान रहा हूँ कि तुम अव पूर्णत: स्वस्थ हो। प्रत्येक वीमारी-के बाद तुम शीघ्र ही ठीक हो जाती हो, क्योंकि उसमें जो चिकित्सा होती है वह प्राकृतिक होती है, किन्तु यदि शरीरको पूरा आराम न दिया जाये और मनको तनावसे मुक्त न किया जाये तो वीमारी अपने पीछे कमजोरीकी विरासत छोड़ जाती है। मेरी समझमें मन पर नियन्त्रण करना सबसे कठिन चीज है। इसका सर्वोत्तम उपाय है 'गीता'का पालन किया जाये। मनको जितनी वार आघात लगता है, समझो उतनी वार 'गीता'के इस पालनमें व्याघात हुआ। अच्छी खवर हो या बुरी खवर हो, उसे अपने ऊपरसे यों गुजर जाने दो जैसे वत्तखकी पीठ परसे पानी फिसल जाता है। जब हम कोई खवर सुनें तो हमारा कर्त्तव्य मात्र इतना पता चलाना है कि क्या कुछ करनेकी जरूरत है, और यदि हो तो हम अपने-आपको प्रकृतिके हाथका एक साधन मानकर अपने कार्यके परिणामसे प्रभावित हुए विना और तटस्थ भावसे उसे कर दें। किसी भी परिणामके पीछे एकसे अधिक साधनोंका उपयोग होता है इसलिए इस वातको ध्यानमें रखते हुए वैसी तटस्थता या निष्काम-भावका होना एक

१. यह मूलमें अस्पष्ट है। तात्पर्य शायद रसीले, अर्थात् ताजे फलोंसे है।

वैज्ञानिक आवश्यकता प्रतीत होता है। यह कहनेका साहस कौन करेगा कि "यह कार्य मैंने किया है?" मैं जानता हूँ कि तुम्हे यह सब पता है। तथापि मैं इस सत्य-को तुम्हारे मनमें बिठा देना चाहता हूँ ताकि वह बुद्धिसे छनकर हृदयमें उतर जाये। जबतक यह सत्य केवल बुद्धिमें रहेगा तबतक वह उसके ऊपर एक व्यर्थ भार-जैसा बना रहेगा। बुद्धि द्वारा ग्रहण किया हुआ कोई भी सत्य तुरन्त हृदयको सम्प्रेषित कर दिया जाना चाहिए। यदि ऐसा नही किया जाता, तो सत्य निष्फल रह जाता है और तब वह हमारे मनमें विषैले पदार्थकी भाँति फैल जाता है। जो चीज मनको विषाक्त करती है वह सम्पूर्ण शरीरको विषाक्त कर देती है। अत मस्तिष्कको मात्र सम्प्रेषणका साधन मान कर उसका केवल उसी रूपमें उपयोग किया जाना चाहिए। वहाँ जो भी चीज ग्रहण की जाये उसे या तो तत्काल कार्रवाईके लिए हृदयको सम्प्रेषित कर देना चाहिए या फिर सम्प्रेषणके लिए अनुपयुक्त मानकर उसी वक्त रद कर देना चाहिए। शरीरको होनेवाले प्रत्येक रोग और मानसिक थकानका कारण भी मस्तिष्क द्वारा अपने इस कार्यको सुचारु रूपसे सम्पादित न करना ही है। यदि मस्तिष्क सिर्फ अपना कार्य करता रहे तो दिमागी थकान हो ही नही। इसलिए जब हम बीमार पड़ते है तो उसका कारण आहारकी गड़बड़ी मात्र ही नही होता बल्कि मस्तिष्क द्वारा अपने कार्यको सुचारु रूपसे न करनेके कारण हो रही गड़बड़ी भी होता है। गीताकारने स्पष्ट ही इस बातको देख लिया था और स्पष्टसे स्पष्ट शब्दोमें इसका सर्वोत्तम उपाय समारको बताया है। इसलिए जब कभी तुम्हारे दिमागमें कोई बोझ हो तो तुम्हे 'गीता'की इसी मुख्य शिक्षापर ध्यान लगाना चाहिए और बोझ-को निकाल फेंकना चाहिए। हमें आशा करनी चाहिए कि यह भयकर कब्ज फिर कभी नहीं होगा।

जहाँतक कुमारप्पाका प्रश्न है, यदि तुम्हारे मनमें पर्याप्त प्रेम और सद्भावना है तो तुम्हे जो भी आलोचनाएँ प्राप्त हो उन्हे उसके पास भेज दो और परिणामकी चिन्ता मत करो। उसको आलोचनाओंकी जानकारी दे देना उसके प्रति तुम्हारा कर्त्तव्य है। अपने सन्देश भेजनेके लिए अब तुम काका का भी उपयोग कर सकती हो।

मेरा दुग्ध-विहीन आहारका प्रयोग चल रहा है और अभीतक कोई खराब परिणाम नही है। वजनमे ३ पौंडकी और कमी हुई है लेकिन शरीरमें शक्ति बनी हुई है। वजनमे कमी होनेका एक कारण यह है कि मैं जितना अनाज और बादाम लेता हूँ उनकी मात्रा बढानेके मामलेमें अत्यन्त सावधानी बरत रहा हूँ। दोनो समय अर्थात ११ बजे और ५ बजे बादाम तीन तोले और बाजरा तथा जुवारी भाखरी लगभग २ तोले लेता हूँ। शीघ्र ही मेरा वजन बढ़ सकता है। किसी भी सूरतमें, पेटकी दशा असाधारण रूपसे अच्छी है। मैं तुमसे बिल्कुल सहमत हूँ कि एनीमाकी आदत बुरी चीज है और सम्भव हो तो इसे छोड देना चाहिए। दूध छोडनेके बाद इसे छोडना सम्भव हो गया है, जैसाकि तुम्हे याद होगा, वर्धा जानेपर जब मैंने दूध छोड दिया था तब एनीमा छोडना सम्भव हो गया था। सच तो यह है कि यदि मैंने गोपालरावकी सलाह माननेमें जल्दबाजी करनेकी मूर्खता न की होती और उस

समय जो आहार चुना था वही लेता रहता तो आज भी मैं उसीपर पनप रहा होता। वर्तमान आहार वर्धावाले आहारका थोड़ा सुधरा रूप है।

जब कभी बीमार पड़ो तो साप्ताहिक पत्र-दिवसकी प्रतीक्षा किये विना मुझे पत्र लिखनेमें हिचकना नहीं।

सप्रेम,

बापू

अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९२८३) की फोटो-नकलसे। सौजन्य : मीराबहन

५२२. पत्र : वसुमती पण्डितको

१३ दिसम्बर, १९३०

चि० वसुमती,

तेरे सब पत्र मुझे एक-साथ मिले हैं। बहनें पकड़ी गईं, यह अच्छा हुआ। चूँकि सर्वसाधारणको लिखे पत्रमें मैं अपने बारेमें सब-कुछ लिखता हूँ, इसलिए व्यक्तिगत पत्रोंमें कुछ नहीं कहता। मेरी तबीयत अच्छी है। इस समय मैंने दूध छोड़ दिया है तथा ज्वार-बाजराकी रोटी, साग और तीन तोला बादाम लेता हूँ। इनके अतिरिक्त नीबू और कभी-कभी खजूर भी लेता हूँ। इससे मुझे एनीमा नहीं लेना पड़ता। अब देखना यह है कि ऐसा हमेशा कर पाता हूँ या नहीं। वजन कम हो गया है, लेकिन इसकी कोई चिन्ता नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (एस० एन० ९२९६) की फोटो-नकलसे।

५२३. पत्र : निर्मला देसाईको

१३ दिसम्बर, १९३०

चि० निर्मला,

तेरा पत्र मिला। तेरे किसी पत्रका उत्तर देना रह गया हो, ऐसा मुझे याद तो नहीं पड़ता। बा वापस क्यों गईं? वहाँ उन्हें अच्छा नहीं लगा? अथवा वे थोड़े दिनोंके लिए ही आई थीं? तेरा पैर अब कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ९४५७)की फोटो-नकलसे।

५२४. पत्र : रामचन्द्र त्रिवेदीको

१३ दिसम्बर, १९३०

चि० रामचन्द्र,

तुम्हारा खत मिला। तुमारे शाहिसे खत लिखना और अक्षर शुद्ध बनाना। आश्रममें सब आ गए अच्छा हुआ। जीजीसे[1] कहो शांतिसे रहे और छुआछुत छोड देवे। छुआछुतमें धर्म कभी नहिं हो सकता।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२६५ की फोटो-नकलसे।

५२५. पत्र : शारदा सी० शाहको

यरवडा मन्दिर
१४ दिसम्बर, १९३०

चि० शारदा,

तेरे पत्रका जवाब लिखना रह गया हो ऐसा तो मुझे नही लगता। हां, उतावलीमें रह गया हो तो आश्चर्य नही। तुझे यह श्वासका कष्ट होता ही रहता है। तू इसे भगा क्यो नही पाती? तेरे खाने-पीनेमें कुछ बदपरहेजी होती होगी। या फिर तू क्रोधमें आ जाती होगी। मनुष्य उत्तेजित हो जाये तो उसे दमाका दौरा पड जाता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९८९५) से। सौजन्य: शारदाबहन जी० चोखावाला

१. रामचन्द्र त्रिवेदीकी माता, जो उस समय आश्रममें रह रही थीं।

५२६. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

१४ दिसम्बर, १९३०

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। बच्चोंकी सजाके बारेमें भी समझा। तेरी दलील पुरानी है। यह 'दूषित चक्र' है। तुझे मार पड़ी इससे तू सुधरी; इसलिए दूसरोंको सुधारनेके लिए तू उन्हें मारती है। बच्चे भी बड़े होनेपर यही सीखेंगे। बिलकुल इसी दलीलसे लोग हिंसाको ठीक मानते है। इस झूठे अनुभवके उस पार जाना हमारा काम है। उसके लिए धीरज चाहिए, यह मै स्वीकार करता हूँ। यह धीरज पैदा करने और उसे विकसित करनेके लिए हम इकट्ठे हुए हैं। बच्चोंको पढ़ाना या अनुशासन सिखाना ही हमारा ध्येय नही है। उन्हें चरित्रवान बनाना हमारा ध्येय है और उसीके लिए पढ़ाई, अनुशासन वगैरा है। उन्हें चरित्रवान बनानेमें अनुशासन टूटे, पढाई बिगड़े तो भले ही टूटे और बिगडे। लेकिन तेरी दलीलको मैं समझता हूँ। यह भी समझता हूँ कि तेरे मारनेमें द्वेष नही है; फिर भी तेरे मारनेमें रोष और अधीरता तो है ही। मै एक सुझाव तेरे सामने रखता हूँ। तू बच्चोंकी सभा कर। जो बच्चे कहें कि 'हम शैतानी करें या आज्ञा भंग करें तो हमें मारिए और इस तरहसे मारिए', उन्हें मारना और वे जैसे कहें उसी तरह मारना। जो मना करे, उन्हें मत मारना। ऐसा करते-करते तू देखेगी कि मारनेकी जरूरत नही रहेगी। इस विषयकी चर्चा मेरे साथ करती रहना। अधीर बनकर या निराश होकर इसे छोड़ मत देना। जबतक तेरी बुद्धी मेरी बातको स्वीकार न करे, तबतक तू अपने ही मार्गसे चलना। मै जानता हूँ कि तू सत्यकी पुजारी है, इसलिए अन्तमें तुझे सत्य जरूर मिलेगा।

तेरी खुराक ठीक मालूम होती है।

तूने राजकोटका वर्णन नही भेजा।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ६६९४) से। सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक; जी० एन० १०२४६ की फोटो-नकलसे भी।

५२७. पत्र : पद्माको

१४ दिसम्बर, १९३०

चि० पद्मा,

तेरा पत्र मिला। इस बारकी लिखावट ठीक है। अभी और सुधारना। तेरी वह गिलटी कोई गम्भीर रोग नही है यह जानकर मन प्रसन्न हुआ, लेकिन अपनी तबीयत सँभालना। अपनी डायरीमें तू सब-कुछ लिखती है, यह अच्छी बात है। सरोजिनीदेवी को कितने दिनोकी सजा हुई है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ६११७) की फोटो-नकलसे।

५२८. पत्र : वनमाला परीखको

१४ दिसम्बर, १९३०

चि० वनमाला,

चूंकि तूने मेरे लिए एक बहुत बडी कतरन रखी है इसलिए मैंने उसे सँभालकर रख लिया है। धीरू गाली दे तो उसे स्नेहपूर्वक रोकना। प्रेमाबहनसे भी कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५७५६) की फोटो-नकलसे।

५२९. पत्र : नानाभाई इच्छाराम मशरूवालाको

यरवडा मन्दिर
१४ दिसम्बर, १९३०

भाई नानाभाई (अकोला),

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें दामाद सचमुच अच्छा मिला है। वह विश्राम-मन्दिर में जाकर बैठ गया है। अब सुशीला जायेगी और फिर तारा। सुरेन्द्र भी इसकी उम्मीद लगाये बैठा है, यह अच्छा ही है। यही सच्चा धर्म है। आजतक हम धर्मके नामपर सुखोपभोग कर रहे थे। यदि ताराको परेशानी न हो, तो उसे सूर्यस्नान लेना चाहिए। इससे तुम्हें भी बहुत फायदा होगा। इसके साथ-साथ विधिपूर्वक कटि-स्नान भी लो तथा खुराक सादी रखो।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ४७७९) की फोटो-नकलसे।

५३०. पत्र : कुँवरजी मेहताको

१४ दिसम्बर, १९३०

भाई कुँवरजी,

आपका समाचारोंसे भरपूर पत्र मिला। जुगतरामसे भी पत्र लिखनेको कहना। हम तो जेलके बाहर अथवा भीतर सलामत ही हैं। हमारी डोर ईश्वरके हाथमें है। वह जैसा नचायेगा, वैसा नाचेंगे।

कानजीभाईका त्याग महान है। उनमें हिम्मत त्यागसे भी कही अधिक बढ़-चढ़कर है। उन्हें मेरी बधाई देना।

नेपोलियन[1]को लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० २६८९) की फोटो-नकलसे।

१. आशय छोटाभाई कल्याणजी मेहतासे है।

५३१. पत्र : मणिबहन पटेलको

यरवडा मन्दिर
१४ दिसम्बर, १९३०

चि० मणि (सरदारीजी),

अब तू बाहर आ गई है, इसलिए तुझसे ब्यौरेवार पत्रकी आशा करता हूँ। अपने अनुभव लिखना। तेरा स्वास्थ्य कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने

५३२. पत्र : काशिनाथ त्रिवेदीको

यरवडा मन्दिर
१४ दिसम्बर, १९३०

चि० काशिनाथ,

तुम्हारा पत्र मिला। कलावतीको मैंने उत्तर लिख दिया है। माताजीका जो उपचार किया जा रहा है, वह उचित ही जान पड़ता है। इसमें सन्देह नही कि अनेक रोग कब्जके कारण ही होते है। मैंने अपने कब्जको दूर करनेके लिए अभी जो प्रयोग किये है उनसे मुझे लाभ हुआ है। तुम्हारी जानकारीके लिए मै उन्हें यहाँ दे रहा हूँ। मैंने तो सिर्फ उबली हुई सब्जियाँ तथा कच्चे और उबले हुए टमाटर ही लिये है। इससे कब्ज दूर हो गया। तब मैंने पीसे हुए बादाम लेने शुरू किये, उनकी मात्रा मैंने धीरे-धीरे बढाकर तीन तोला कर दी और अब ज्वार-बाजरा की थोड़ी रोटी लेता हूँ। इससे मै अपने शरीरमें शक्तिका अनुभव करता हूँ। अभी तो निश्चयपूर्वक कुछ भी नही कह सकता। यदि दो-तीन महीने ऐसी ही स्थिति बनी रहे तो कुछ कहा जा सकता है। इसपर सावधानीसे ही अमल किया जाना चाहिए। सन्तोक और राधाको कूनेकी पुस्तकमें दिये गये दोनो स्नानोकी जानकारी है। मेरा खयाल है कि ये दोनो स्नान कलावतीके लिए बहुत अच्छे सिद्ध होंगे। 'मुखचर्या विज्ञान' नामक पुस्तक हमारे यहाँ नही है।

डा० सरजूप्रसादजी को मेरी ओरसे बधाई देना। वे जो कार्य कर रहे है उसमें मै उनकी सफलताकी कामना करता हूँ।

अनाजके सस्ता होनेके लिए मैं आशीर्वादका भागी कैसे बन सकता हूँ? किसान लोग मुझे शाप भी तो दे सकते हैं न? अनाजके सस्ता होनेके अनेक कारण हैं। मैंने अपने पत्रोंमें जो कारण प्रस्तुत किये हैं, नारणदासकी सम्मतिसे उनके उद्धरण देनेमें मुझे कोई हर्ज दिखाई नही देता।

प्यारेलाल आनन्दपूर्वक है। उसके पास दो 'रामायण' है। इसलिए अभी उसे किसी अन्य पुस्तककी जरूरत नही। यहाँ आनेपर उसका पढ़ना-लिखना कुछ कम तो हो ही गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ५२६६) की फोटो-नकलसे।

५३३. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

यरवडा मन्दिर
१४ दिसम्बर, १९३०

चि० हेमप्रभा,

तुमारा खत आया। अनासक्तियोगकी बंगला प्रति १००० बिक गई वह शुभ चिह्न है। जाडाके दिनोंमें ९–१० बजेके सूर्यमें जितना अंग खुला रखकर रह सके इतना अच्छा है। जाडाके दिनोंमें औषध रूपसे थोडी कच्ची प्याज रोटीके साथ लेनेसे भी अच्छा रहता है। प्याजमें दोष है ऐसे गुण भी काफी है। प्रधानदोष दुर्गंधीका है। अल्प मात्रा लेनेसे दुर्गंधी प्रतीत नहि रहती है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० १६७९ की फोटो-नकलसे।

५३४. पत्र : शान्ता त्रिवेदीको

१४ दिसम्बर, १९३०

चि० शांता,

तुमारा खत मिला। जीजीकी सेवा भी एक प्रकारकी देश सेवा है। यह सेवा विगतमोह होनी चाहिए अर्थात् दूसरी कोई सेवा कर सके ऐसी नहिं है और जीजीको सेवाकी आवश्यकता है और सेवामें हमारी कुछ निजी स्वार्थ नहिं है।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२६८ की फोटो-नकलसे।

५३५. पत्र : रामचन्द्र त्रिवेदीको

रविवार [१४ दिसम्बर, १९३० या उसके पश्चात्][1]

चि० रामचद्र,

तुमने दस्तखत नहिं दिये हैं परतु तुमारा हि खत है। तुमने अच्छे अक्षर लिखनेका ठीक प्रयत्न किया है। ऐसे हि करते रहो। जीजीसे कहो धर्म पालनमें पिताजीकी प्रसन्नता अप्रसन्नताका प्रश्न रहता हि नहिं। अतमें धर्म पालनसे सब प्रसन्न हो जाते हैं। मीरा बाईका दृष्टान्त हमारे सामने हि है। छुआछुतको जीजी यदि पाप समझती है और समझना चाहिए तो उसे छोड़ दें।

बापुके आशीर्वाद

जी० एन० ५२९१ की फोटो-नकलसे।

१. पत्रकी सामग्रीसे लगता है कि यह पत्र १३ दिसम्बर, १९३० को रामचन्द्र त्रिवेदीको लिखे पत्रके पश्चात् लिखा गया था। इसके बाद रविवार १४ दिसम्बरको था।

५३६. पत्र : प्रभावतीको

१५ दिसम्बर, १९३०

चि० प्रभावती,

जयप्रकाशके पत्रके अनुसार तो शायद तू अबतक आश्रम पहुँच गई होगी। अब ऐसा बन्दोबस्त हुआ है कि तेरे पत्र मुझे तुरन्त दिये जायेंगे। लेकिन आज और कल मुझे कोई पत्र नहीं मिला। यदि तू अबतक आश्रम नहीं गई है तो अविलम्ब चली जाना। वहाँसे भी फिलहाल मुझे रोज पत्र लिखा करना। तुझे जो दौरे पड़ते हैं, वे बन्द होने चाहिए; आश्रममें आनेपर वे अवश्य बन्द हो जायेंगे। फलादि जिन वस्तुओंकी जरूरत हो, उन्हें मँगवानेमें संकोच न करना। जाते ही एकदम काममें न लग जाना। तूने आश्रमकी बहुत सेवा की है, इसलिए पूरा आराम लेना। मनमें किसी तरहकी चिन्ता मत करना। ईश्वरको जो करना होगा, सो करेगा। 'प्रेमल ज्योति'[१] भजनका चिन्तन करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (जी० एन० ३३८४) की फोटो-नकलसे।

१. न्यूमैनकी "लीड, काइंडली लाइट" का नरसिंहराव दिवेतिया द्वारा किया गया गुजराती अनुवाद।

परिशिष्ट

परिशिष्ट १ (क)

नेहरू-द्वयकी टिप्पणी[1]

सेंट्रल जेल
नैनी, इलाहाबाद
२८ जुलाई, १९३०

सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जयकरसे हमारी एक लम्बी बातचीत हुई। उन्होंने उन विभिन्न घटनाओंका जिक्र किया जिनके फलस्वरूप उन्होंने गांधीजी और हमारे साथ जेलमें मुलाकात करनेका निश्चय किया ताकि यदि सम्भव हो तो भारतकी जनता और ब्रिटिश सरकारके बीच चल रहे वर्तमान संघर्षको समाप्त या स्थगित किया जा सके। शान्तिकी उनकी हार्दिक कामनाकी हम कद्र करते हैं और हम खुशीसे उन सभी तरीकोंपर विचार करेंगे जिनसे कि शान्ति स्थापित हो सके, बशर्ते कि यह शान्ति भारतकी उस जनताके लिए, जिसने राष्ट्रीय लड़ाईमें पहले ही इतना ज्यादा बलिदान किया है और जो हमारे देशकी आजादी चाहती है, सम्मानजनक हो। कांग्रेसके प्रतिनिधिकी हैसियतसे हमें कांग्रेसके प्रस्तावोंमें कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्तन करनेका अधिकार नहीं है, लेकिन कांग्रेसने जो बुनियादी स्थिति अपनाई है, यदि उसे स्वीकार कर लिया जाये तो अमुक परिस्थितियोंमें हम तफसीलके मामलेमें मामूली हेर-फेरकी सिफारिश करनेको राजी हो सकते हैं। लेकिन हमारे सामने एक आरम्भिक कठिनाई है। हम दोनों ही जेलमें हैं और पिछले कुछ समयसे बाहरी दुनियासे तथा राष्ट्रीय आन्दोलनसे हमारा सम्पर्क बिलकुल छूटा हुआ है। हममें से एक व्यक्तिको लगभग तीन महीनेतक कोई दैनिक अखबार दिया ही नहीं गया। गांधीजी भी कई महीनेसे जेलमें हैं। वस्तुतः मूल कार्य-समितिके हमारे लगभग सभी सहयोगी जेलमें हैं और खुद कार्य-समितिको ही एक अवैध संगठन घोषित कर दिया गया है। राष्ट्रीय कांग्रेस संगठनमें अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ही सबसे बड़ी सत्ता है जिसके निर्णय केवल कांग्रेसके पूर्ण अधिवेशनमें ही बदले जा सकते हैं। उस अ० भा० कांग्रेस कमेटीके ३६० सदस्योंमें से ७५ प्रतिशत सदस्य जेलमें हैं। राष्ट्रीय आन्दोलनसे हमारा सम्पर्क बिलकुल छूटा हुआ है, और ऐसी स्थितिमें हम अपने सहयोगियोंके साथ, विशेष रूपसे गांधीजीके साथ, पूरी तरह विचार-विमर्श किये बिना कोई निश्चित कदम उठानेकी जिम्मेदारी नहीं ले सकते। जहाँतक गोलमेज सम्मेलनका सवाल है, जबतक सभी महत्वपूर्ण विषयोंपर पहले ही से समझौता नहीं हो जाता, तबतक उससे हमें किसी

१. देखिए "पत्र: मोतीलाल नेहरूको", २३-७-१९३०।

लाभकी आशा नहीं लगती। इस प्रकारके समझौतेको हम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानते हैं। समझौता निश्चित ढंगका होना चाहिए और उसमें किसी प्रकारकी गलतफहमी होने या गलत अर्थ करनेकी गुंजाइश नही होनी चाहिए। सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जयकरने यह बात बिलकुल स्पष्ट कर दी है और लॉर्ड इर्विनने भी उनको लिखे अपने प्रकाशित पत्रमें कह दिया है कि वे दोनों अपनी ही ओर से यह बातचीत कर रहे हैं और वे वाइसराय या वाइसरायकी सरकारकी तरफसे कोई वादा नहीं कर सकते। फिर भी यह सम्भव है कि वे कांग्रेस और सरकारके बीच इस प्रकारके समझौतेका रास्ता निकालनेमें सफल हों। चूँकि हम गाधीजी और अन्य सहयोगियोसे परामर्श किये विना युद्ध-विरामके लिए कोई निश्चित शर्तं नही सुझा सकते, इसलिए हम सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जयकरके सुझावोपर, और गाधीजी द्वारा २३ जुलाईकी टिप्पणीमें, जो हमें दिखाई गई है, दिये गये सुझावोपर यहाँ चर्चा नही करेंगे। हम गांधीजीकी टिप्पणीके मुद्दा संख्या २ और ३ पर सामान्य रूपसे सहमत हो सकते हैं, लेकिन हम इन मुद्दोंकी, और विशेष रूपसे उनके मुद्दा संख्या १ की तफसीलों पर उनके (गांधीजीके) और अन्य लोगोके साथ चर्चा करनेके बाद ही अन्तमें अपने सुझाव दे सकते हैं। हम चाहेंगे कि हमारी इस टिप्पणीको गोपनीय माना जाये और इसे केवल उन्ही लोगोंको दिखाया जाये जो गांधीजीकी २३-७-१९३० की टिप्पणी देखें।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ५-९-१९३०

परिशिष्ट १ (ख)

जवाहरलाल नेहरूका पत्र[1]

सेंट्रल जेल
नैनी
२८ जुलाई, १९३०

प्रिय बापूजी,

एक लम्बे अन्तरालके बाद आपको फिरसे चिट्ठी लिखते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है, भले ही यह एक जेलसे दूसरे जेलको ही भेजी जा रही है। मैं विस्तारसे लिखना चाहूँगा, लेकिन मुझे भय है कि मैं इस समय वैसा कर नहीं सकता। इसलिए मैं केवल विचाराधीन मसलेकी ही चर्चा करूँगा। डा० सप्रू और श्री जयकर कल आये थे और उन्होंने पिताजी तथा मेरे साथ लम्बी बातचीत की। आज वे लोग फिर आ रहे हैं। चूँकि उन्होंने हमें सारे तथ्योंसे अवगत करा दिया है और आपकी टिप्पणी तथा पत्र भी हमें दिखा दिया है, इसलिए हमें लगा कि बिना दूसरी मुला-

१. देखिए "पत्र: मोतीलाल नेहरूको", २३-७-१९३०।

कातका इन्तजार किये हुए हम दोनो इस मसलेपर चर्चा करके कोई निर्णय ले सकते है। बेशक, अगर दूसरी मुलाकातमें कोई नई चीज सामने आती है तो हम अपनी पूर्व-निर्धारित रायमें यथोचित परिवर्तन करनेको तैयार है। फिलहाल हम जिन निष्कर्षोपर पहुँचे है वे उस टिप्पणीमें दिये हुए है जो हम सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जयकरको दे रहे है। यह टिप्पणी कुल मिला कर सक्षिप्त ही है लेकिन मुझे आशा है कि इससे आपको पता चल जायेगा कि हम किस प्रकार सोच रहे है। मै यह भी कह दूं कि हमारा क्या रुख होना चाहिए, इसके बारेमें मेरे और पिताजीके बीच पूरी सहमति है। मै स्वीकार करता हूँ कि सवैधानिक प्रश्नसे सम्बन्धित आपका मुद्दा (१) मुझे कायल नही कर सका है और पिताजीको भी वह पसन्द नही आया। मै नही देख पाता कि हमारी स्थिति या हमारी प्रतिज्ञाओ या वर्तमान वास्तविकताओके साथ इसका मेल किस प्रकार बैठ सकता है। पिताजी और मै आपकी इस बातसे पूरी तरह सहमत है कि हम "ऐसे किसी युद्ध-विरामका समर्थन नही कर सकते जो हमारी उस स्थितिको व्यर्थ कर दे जिसपर कि हम आज पहुँचे है।" यही कारण है कि किसी अन्तिम निर्णयपर पहुँचनेसे पहले पूरी तरह विचार करना अत्यावश्यक है। मै यह स्वीकार करता हूँ कि प्रतिपक्षीकी ओरसे कोई उल्लेखनीय अगला कदम अभी तक नही उठाया गया है, और मुझे बहुत भय है कि कही हम कोई गलत या कमजोर कदम न उठा बैठें। मै अपनी बात कहनेमें संयमसे काम ले रहा हूँ। मुझे तो लडाई लडनेमे मजा आता है। उससे मुझे लगता है कि हाँ, मै जिन्दा हूँ। भारतमे पिछले चार महीनोमें जो घटनाएँ हुई है उनसे मेरा दिल खुश हुआ है, और भारतके मर्दो, औरतो और बच्चो पर मुझे और ज्यादा गर्व होने लगा है। लेकिन मै जानता हूँ कि ज्यादातर लोग लड़ाकू किस्मके नही है और शान्ति पसन्द करते है, इसीलिए मै अपने-आपको दबानेकी और शान्तिपूर्ण दृष्टिकोणसे काम लेनेकी जबर्दस्त कोशिश करता हूँ। आपने अपने जादू भरे स्पर्शसे जो एक नवीन भारतकी रचना कर दी है, उसके लिए मै आपको बधाई देता हूँ। भविष्य क्या लायेगा सो मै नही जानता, लेकिन अतीतने जीवनको जीने लायक बना दिया है, और हमारे नीरस अस्तित्वने अपने अन्दर एक अद्भुत गरिमा और महानता पैदा कर ली है। यहाँ नैनी जेलमें बैठे हुए मैने शस्त्रके रूपमें अहिंसाकी विलक्षण प्रभावकारिता पर विचार किया है और अहिंसामें मेरी आस्था और विश्वास पहलेसे कही ज्यादा बढे है। देशने अहिंसाके सिद्धान्तमें अपने विश्वासका जो प्रदर्शन किया है, आशा है उससे आप असन्तुष्ट नही है। इक्का-दुक्का चूकोको छोडकर देशने अहिंसाका जिस दृढताके साथ पालन किया है वह आश्चर्यजनक है। मैने तो इतनी आशा नही की थी। मुझे भय है कि आपके ग्यारह सूत्रोपर मुझे अभी भी आपत्ति है। ऐसी बात नही कि मै उनमें से किसी एकसे भी असहमत हूँ। वस्तुतः वे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। फिर भी मुझे ऐसा नही लगता कि वे स्वतन्त्रताका स्थान ले सकते है। लेकिन आपकी इस बातसे मै अवश्य ही सहमत हूँ कि हमें "ऐसी किसी चीजसे कोई सरोकार नही रखना चाहिए जो देशको उन्हें (११ सूत्रोको) तत्काल लागू करनेकी शक्ति न प्रदान करता हो।" पिताजीने आठ दिन हुए एक सुई लगवाई थी, और

तबसे ही वह अस्वस्थ हैं। वह बहुत कमजोर हो गये हैं। कल शामकी लम्बी बातचीतने उन्हें बिलकुल थका दिया है।

जवाहरलाल

कृपया मेरे बारेमें चिन्ता न करें। यह तकलीफ तो अपने-आप ठीक हो जायेगी और मैं दो-तीन दिनमें उससे मुक्त हो जाऊँगा।

सप्रेम,

मोतीलाल नेहरू

[पुनश्च :]

हमारी सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जयकरसे दुबारा बातचीत हुई है। उनके सुझावपर हमने अपनी टिप्पणीमें कुछ परिवर्तन किये हैं, लेकिन उनसे कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पड़ता। हमारी स्थिति बिलकुल स्पष्ट है, और उसके बारेमें मुझे कोई सन्देह नहीं है। मुझे आशा है आप उसे पसन्द करेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ५-९-१९३०

परिशिष्ट २

तेजबहादुर सप्रू और मु० रा० जयकरका पत्र कांग्रेस-नेताओंको[1]

विंटर रोड, मलाबार हिल
बम्बई
१६ अगस्त, १९३०

प्रिय मित्रो,

हमने पूना और इलाहाबादमें आप लोगोंसे कई बार भेंट की, और इन सभी अवसरोंपर आपने जिस सौजन्यता और धीरजके साथ हमारी बातें सुनी उसके लिए हम आप सबको धन्यवाद देते हैं। इन लम्बी वार्ताओंके कारण आपको हमने जो असुविधा पहुँचाई उसका हमें खेद है। हमें इस बातका विशेष दुख है कि पंडित मोतीलाल नेहरूको पूना आनेका कष्ट उठाना पड़ा, विशेषकर उस समय जबकि उनकी तबीयत इतनी खराब थी।

हम औपचारिक रूपसे उस पत्रकी प्राप्ति भी स्वीकार करते हैं जो आपने हमें दिया था और जिसमें आपने उन शर्तोंका उल्लेख किया है जिनके आधारपर आप कांग्रेससे सविनय अवज्ञा आन्दोलनको स्थगित करने और गोलमेज सम्मेलनमें भाग लेनेकी सिफारिश करनेको तैयार हैं।

१. देखिए "पत्र: सप्रू और जयकरको", १५-८-१९३०।

जैसा कि हम आपको बता चुके हैं, हमने मध्यस्थता करनेका काम

(१) काग्रेसके तत्कालीन कार्यकारी अध्यक्ष, पडित मोतीलाल नेहरूने २० जून, १९३० को श्री स्लोकोम्बको दी गई भेंटमें जो शर्तें रखी थी उनके आधारपर और विशेष रूपसे

(२) उस वक्तव्यकी शर्तोंके आधारपर हाथमें लिया था जिन्हें श्री स्लोकोम्बने १५ जून, १९३० को बम्बईमें पडित मोतीलाल नेहरूको दिया था और जिसे उन्होने (पडित मोतीलाल नेहरूने) स्वीकार किया था और माना था कि हम उन शर्तोंके आधारपर वाइसरायसे अनौपचारिक वार्ता आरम्भ कर सकते हैं।

श्री स्लोकोम्बने दोनो दस्तावेज हमें दे दिये और उसके बाद हमने वाइसराय महोदयसे अनुमति मांगी कि समझौतेकी सम्भावनाएँ खोजनेके खयालसे वह हमें महात्मा गाधी, पडित मोतीलाल नेहरू और पडित जवाहरलाल नेहरूसे मुलाकात करनेकी अनुमति प्रदान करें। ऊपर जिस दूसरे दस्तावेजका जिक्र किया गया है उसकी एक प्रति आपने हमसे ले ली है।

अब हम देखते हैं कि आपने हमें इसी १४ तारीखको जो पत्र दिया है उसमें उल्लिखित शर्तें ऐसी हैं कि उस पत्रको, जैसा कि हमारे बीच सहमति हुई थी, वाइसराय महोदयके सामने उनके विचारार्थ पेश किया जाना चाहिए और उनके निर्णयकी हमें प्रतीक्षा करनी होगी।

हमने आपकी इस इच्छाको ध्यानमे रख लिया है कि इन शान्ति-वार्ताओंसे सम्बन्धित सारे महत्वपूर्ण दस्तावेजोको, जिनमें आपका हमारे नाम लिखा उपर्युक्त पत्र भी शामिल है, प्रकाशित कर दिया जाये। वाइसराय महोदय द्वारा आपके पत्र पर विचार कर चुकनेके बाद हम उन्हें प्रकाशित कर देंगे।

पत्र समाप्त करनेसे पूर्व आपसे हम यह कहनेकी इजाजत चाहेंगे कि जैसाकि हमने आपसे कहा था, हमारे पास ऐसा माननेके कारण थे कि सविनय अवज्ञा आन्दोलनको वास्तवमें स्थगित करनेके साथ ही सामान्य स्थिति काफी सुधर जायेगी, अहिंसक राजनीतिक कैदी रिहा कर दिये जायेंगे, चटगाँव और लाहौरके षड्यन्त्रके मामलोंसे सम्बन्धित अध्यादेशोंको छोड कर शेष सभी अध्यादेश वापस ले लिये जायेंगे, और गोलमेज सम्मेलनमें काग्रेसको अन्य किसी भी राजनीतिक पार्टीके मुकाबले ज्यादा बड़ा प्रतिनिधित्व मिलेगा। यह कहनेकी जरूरत नही कि हमने इस बातपर भी जोर दिया था कि हमारी रायमें अपनी 'भेंट' में पडित मोतीलाल नेहरूने जो रुख अख्तियार किया था और पडित मोतीलालकी सहमतिसे श्री स्लोकोम्ब द्वारा हमारे पास भेजे गये वक्तव्यमें तथा वाइसराय महोदय द्वारा हमें लिखे गये पत्रमें तत्वत. कोई अन्तर नही है।

हृदयसे आपके,

ते० ब० सप्रू

मु० रा० जयकर

[अंग्रेजीसे]

गाधी-सप्रू करेस्पाडेन्स। सौजन्य: प्रकाशनारायण सप्रू

परिशिष्ट ३

वाइसरायका पत्र सर तेजबहादुर सप्रूको[1]

वाइसरीगल लॉज
शिमला
२८ अगस्त, १९३०

प्रिय सर तेजबहादुर,

कांग्रेसके जो नेता इस समय जेलमें हैं, उनके साथ श्री जयकर और आपने जो बातचीतकी उनके परिणामोंकी सूचना देने तथा उनके १५ अगस्तके संयुक्त पत्र और आप लोगों द्वारा दिये गये उसके उत्तरकी प्रतियाँ भेजनेके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं आपको और श्री जयकरको बताना चाहता हूँ कि भारतमें फिरसे सामान्य स्थिति स्थापित करनेमें मदद देनेके लिए लोक-कल्याणके इस आत्मचारित्र कामर्में आपने जिस भावनाके साथ प्रयत्न किया है उसकी मैं बहुत कद्र करता हूँ। आपने जिन परिस्थितियोंमें इस कामको हाथमें लिया उसकी यहाँ चर्चा करना उपयुक्त होगा। मैंने अपने १६ जुलाईके पत्रमें आपको विश्वास दिलाया था कि मेरी, मेरी सरकारकी, और मुझे कोई शक नहीं था कि सम्राट्की सरकारकी भी, यह हार्दिक इच्छा है कि भारतके लोगोंको अपने मामलोंकी व्यवस्था स्वयं करनेका ज्यादासे-ज्यादा अधिकार प्राप्त करनेमें मदद देनेके लिए हम जो-कुछ कर सकते हों, करें, और केवल उन्हीं विषयोंके बारेमें हम अलगसे व्यवस्था करें जिनकी जिम्मेदारी सँभालनेकी स्थितिमें वे अभी नहीं हैं। सम्मेलनका एक यह भी काम होगा कि वह सभी उपलब्ध सामग्रीके आधारपर इस बातकी जाँच करे कि ये विषय क्या हैं, और इनके बारेमें क्या व्यवस्था की जाये। इससे पूर्व, ९ जुलाईको विधान-सभाके सामने अपने भाषणमें मैंने दो अन्य मुद्दोंको भी स्पष्ट कर दिया था। पहला यह है कि सम्मेलनमें भाग लेने-वाले सभी लोगोंको इस बातका पूरा अधिकार होगा कि वे सम्पूर्ण संवैधानिक समस्या-की उसके पूरे परिप्रेक्ष्यमें जाँच करें। दूसरे, सम्मेलन आपसी सहमतिसे जो भी सम-झौता करेगा, सम्राट्की सरकार बादमें उसी समझौतेके आधारपर अपने प्रस्ताव संसदके सामने पेश करेगी। जैसा कि आप मानेंगे, मुझे भय है कि आपने जो काम स्वेच्छासे अपने ऊपर लिया है उसमें कांग्रेसके नेताओं द्वारा आपको लिखे गये पत्रसे मदद नहीं मिलती। पत्रमें जो सामान्य लहजा अख्तियार किया गया दिखता है, और उसमें जो बातें कही गई हैं, साथ ही जिस तरह पत्रमें कांग्रेसकी नीतिके फलस्वरूप देशको होनेवाली गम्भीर हानि, विशेष रूपसे आर्थिक क्षेत्रमें होनेवाली हानि, को स्वीकार करनेसे साफ इनकार किया गया है, उसे देखते मुझे नहीं लगता कि उन

१. देखिए "पत्र: सप्रू और जयकरको", ५-९-१९३०।

पत्रमें दिये गये सुझावोपर मेरा विस्तारपूर्वक चर्चा करना जरा भी उपयोगी होगा; और मैं स्पष्ट रूपसे कहना चाहूँगा कि उस पत्रमें निहित प्रस्तावोके आधारपर कोई चर्चा करना मैं असम्भव मानता हूँ। मुझे आशा है कि यदि आप कांग्रेसके नेताओंसे फिर मिलना चाहते हो तो यह बात आप उन्हे साफ तौर पर बता देंगे।

आपने उन्हें १६ अगस्तको उत्तर देते हुए जो पत्र लिखा है, उसके अन्तिम अनुच्छेदके बारेमें मैं एक बात और कहना चाहूँगा। जब हमने इन मामलो पर बातचीत की थी उस समय मैंने कहा था कि यदि सविनय अवज्ञा आन्दोलन वास्तवमें बन्द कर दिया जाता है तो मैं लाहौर षड्यन्त्र केस और चटगाँव षड्यन्त्र केससे सम्बन्धित अध्यादेशोको छोड शेष सारे अध्यादेश वापस ले लूंगा क्योंकि तब उनकी आवश्यकता ही नही रह जायेगी। लेकिन मैंने यह बात स्पष्ट कर देनेकी सावधानी बरती थी कि मैं ऐसा कोई आश्वासन नही दे सकता कि सविनय अवज्ञा आन्दोलन समाप्त होनेके बाद स्थानीय सरकारें आन्दोलनसे सम्बन्धित अपराधोके सिलसिलेमें उन सजा-प्राप्त या नजरबन्द कैदियोको रिहा कर देंगी जिनके विरुद्ध हिंसात्मक कार्रवाई करनेका आरोप नही है। मैं चाहूँगा कि इस मामलेमें उदार नीति बरती जाये, लेकिन मैं ज्यादासे-ज्यादा यह वादा कर सकता हूँ कि स्थानीय सरकारोसे अनुरोध करूँ कि वे प्रत्येक व्यक्तिके मामलेपर उसके गुणोके आधारपर सहानुभूतिपूर्वक विचार करे।

कांग्रेस यदि सविनय अवज्ञा आन्दोलन बन्द कर दे और उसके बाद यदि वह सम्मेलनमें भाग लेना चाहे तो सम्मेलनमें कांग्रेसके प्रतिनिधित्वके सवालका आपने जो उल्लेख किया है उसके बारेमें मेरी स्मृतिके अनुसार आपने यह स्पष्ट किया था कि कांग्रेसकी मांग यह नही है कि उसे सम्मेलनमें बहुसख्याके अर्थमें अन्य दलोकी अपेक्षा प्रातिनिधिक प्रधानता दी जाये, और मैंने यह विचार व्यक्त किया था कि सम्राट्की सरकारसे यह सिफारिश करनेमें मुझे कोई कठिनाई नही दिखाई पड़ती कि कांग्रेसको समुचित प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाना चाहिए। मैंने यह भी कहा था कि यदि सूरत वैसी बनी तो मैं कांग्रेस पार्टीके नेताओं द्वारा ऐसे लोगोके नामकी एक सूची माँगनेको तैयार रहूँगा जिन्हे वे उपयुक्त प्रतिनिधि मानते हैं। मुझे लगता है कि आप और श्री जयकर चाहेंगे कि मैं आपको अपनी और अपनी सरकारकी स्थितिसे स्पष्ट रूपसे अवगत करा दूँ क्योंकि यह शायद उचित होगा कि हमारे पत्र-व्यवहारको शीघ्र ही प्रकाशित कर दिया जाये ताकि जनताको पता चल जाये कि वे क्या परिस्थितियाँ हैं जिनके कारण आपके प्रयत्नोका वैसा वांछित परिणाम नही निकल सका जिसकी कि आप आशा करते थे, और जो निकलना भी चाहिए था।

हृदयसे आपका,
इर्विन

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ५-९-१९३०

परिशिष्ट ४

वाइसरायके साथ हुई बातचीतका सार-संक्षेप[1]

(क) संवैधानिक प्रश्नपर स्थिति वही होगी जोकि वाइसरायने २८ अगस्तको हमें लिखे गये अपने पत्रके अनुच्छेद २ में उल्लिखित चार मूलभूत मुद्दोंमें बताई है।

(ख) इस सवालपर, कि क्या श्री गांधीको गोलमेज सम्मेलनमें भारत द्वारा जब भी इच्छा हो तब साम्राज्यसे अलग होनेके अधिकारका सवाल उठानेकी अनुमति दी जायेगी, स्थिति इस प्रकार थी: "जैसा कि वाइसरायने हमें भेजे गये अपने पूर्वोक्त पत्रमें कहा है, सम्मेलन एक स्वतन्त्र सम्मेलन होगा। अतः कोई भी व्यक्ति जो सवाल चाहे उठा सकता है। लेकिन वाइसरायकी राय थी कि श्री गांधी द्वारा इस सवालको अभी उठाना बिलकुल बुद्धिमानीकी बात नहीं होगी। लेकिन यदि वह भारत सरकारके सामने यह सवाल उठायेंगे तो वाइसराय कह देंगे कि सरकार इस सवालको विचारणीय सवाल माननेको तैयार नहीं है। अगर इसके बावजूद श्री गांधी इस सवालको उठाना चाहें तो सरकार भारत-मन्त्रीको सूचित कर देगी कि श्री गांधी गोलमेज सम्मेलनमें यह सवाल उठानेका इरादा रखते हैं।"

(ग) जहाँतक अमुक वित्तीय जिम्मेदारियोंके बारेमें भारतके दायित्वका सवाल उठानेके और उनकी एक स्वतन्त्र अधिकरण द्वारा जाँच करानेके अधिकारका सवाल है, स्थिति यह थी कि वाइसराय किसी भी ऐसे प्रस्तावपर विचार करनेको तैयार नहीं थे जिसके तहत भारत सारे ऋणोंकी देनदारीको माननेसे इनकार करता हो, लेकिन गोलमेज सम्मेलनमें कोई भी व्यक्ति भारतके वित्तीय दायित्वका सवाल उठाने और उसकी जाँचकी माँग करनेको स्वतन्त्र होगा।

(घ) जहाँतक नमक-अधिनियमके खिलाफ राहत देनेका सवाल है, वाइसरायकी स्थिति यह थी कि (१) यदि साइमन कमीशनकी सिफारिश मंजूर कर ली गई तो नमक-करका प्रान्तीयकरण कर दिया जानेवाला है, और (२) पहले ही राजस्वमें बहुत कमी हो गई है और इसलिए सरकार राजस्वके इस साधनको छोड़ना नहीं चाहेगी; लेकिन यदि विधान-सभाको यह अधिनियम रद करनेके लिए राजी कर लिया गया, और अगर कोई ऐसा प्रस्ताव रखा गया जिससे कि उक्त अधिनियमको रद करनेसे होनेवाला घाटा पूरा किया जा सके तो वाइसराय और उनकी सरकार इस प्रश्न पर उसके गुणावगुणकी दृष्टिसे विचार करेंगे। लेकिन जबतक नमक अधिनियम कानूनके रूपमें जारी है तबतक वाइसरायके लिए उस अधिनियमके खुल्लमखुल्ला उल्लंघनको माफ करना सम्भव नहीं है। सद्भावना और शान्ति स्थापित हो जानेके बाद यदि भारतीय नेतागण गरीब वर्गोको आर्थिक राहत देनेके तरीकोंके बारेमें वाइसराय

१. यह बातचीत २१ और २८ अगस्तको शिमलामें सर तेजबहादुर सप्रू और श्री मु० रा० जयकर तथा वाइसरायके बीच हुई थी। देखिए पृष्ठ ११७की पाद-टिप्पणी।

और उनकी सरकारके साथ बातचीत करना चाहेंगे तो वाइसराय खुशीके साथ भारतीय नेताओका एक छोटा-सा सम्मेलन बुलायेंगे।

(ङ) धरनोंके बारेमें स्थिति यह थी कि यदि धरनेके कारण किसी वर्गके लोगोंको किसी प्रकारकी उलझन या परेशानी होती है या धरना देनेके अलावा लोगो को सताया भी जाता है या धमकी दी जाती है या बल-प्रयोग किया जाता है तो वाइसराय सरकारका यह अधिकार मानते हैं कि कानूनके अनुसार जो कदम उठाये जा सकते हैं, वे उठाये जायें, अथवा यदि कोई आपत्कालीन स्थिति उत्पन्न हो जाये तो उसका सामना करनेके लिए जो भी कानूनी अधिकार जरूरी हो वे अधिकार प्राप्त किये जायें। ऊपरकी शर्तोंके तहत, जब शान्ति स्थापित हो जायेगी तब धरनोके खिलाफ जारी किया गया अध्यादेश वापस ले लिया जायेगा।

(च) उन अफसरोके बारेमें जिन्होने सविनय अवज्ञा आन्दोलनके दौरान इस्तीफा दे दिया था या जिन्हें निकाल दिया गया था, स्थिति यह है कि वह मुख्यतः स्थानीय सरकारोके विवेकाधिकारकी बात है। स्थानीय सरकारोसे अपेक्षा की जायेगी कि जिन लोगोंने भावावेशमें आकर या जोशमें बिना विचारे अपने पदोसे त्यागपत्र दे दिया था उन्हें वे फिर नौकरीमें बहाल कर ले, बशर्ते कि स्थान रिक्त हो, और बशर्ते कि उनको बहाल करनेके लिए राजनिष्ठ कर्मचारियोको निकालनेकी जरूरत न पडे।

(छ) जहाँतक प्रेस-अध्यादेशके अन्तर्गत जब्त किये गये छापेखानोको वापस करनेका सवाल है, इसमें कोई कठिनाई नही होगी।

(ज) जहाँतक राजस्व-कानूनके अन्तर्गत किये गये जुर्मानो और जब्त की गई सम्पत्तिको वापस करनेका सवाल है, उसकी और बारीक व्याख्या करनेकी जरूरत है। राजस्व कानूनके अन्तर्गत जब्त की गई या बेची गई सम्पत्तिमें तीसरे पक्षके हित भी निहित हो सकते हैं। जहाँ तक जुर्माने वापस करनेकी बात है, इसमें कठिनाइयाँ हैं। सक्षेपमें, वाइसराय महोदय केवल इतना ही कह सकते थे कि स्थानीय सरकारें न्यायपूर्वक अपने विवेकाधिकारका प्रयोग करेंगी और सभी परिस्थितियो पर विचार करेंगी और जो-कुछ कर सकती हैं करेंगी।

(झ) जहाँ तक कैदियोंकी रिहाईका सवाल है, वाइसराय महोदयने हमें लिखे गये अपने २८ जुलाईके पत्रमें अपने विचार पहले ही बता दिये हैं।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ५-९-१९३०

परिशिष्ट ५

नेहरू-द्वयकी टिप्पणी[1]

नैनी सेंट्रल जेल
३१ अगस्त, १९३०

हम लोगोंकी श्री मु० रा० जयकर और सर तेजबहादुर सप्रूके साथ कल तथा आज आगे और मुलाकातें हुईं और लम्बी बातचीत हुई। उन्होने हमें वाइसराय द्वारा उनको लिखे गये २३ अगस्तके पत्रकी एक नकल दी है। इस पत्रमें यह बात स्पष्ट रूपसे कही गई है कि सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जयकरके नाम लिखे हमारे १५ अगस्तके संयुक्त पत्रमें जो सुझाव दिये गये हैं, उनके आधार पर किसी प्रकारकी बातचीतको वाइसराय महोदय असम्भव मानते है, और इन परिस्थितियोमें उन्होंने यह निष्कर्ष ठीक ही निकाला है कि उनके प्रयत्न विफल मनोरथ हुए है। यह संयुक्त पत्र, जैसा कि आप जानते हैं, पत्र पर हस्ताक्षर करनेवालों द्वारा पूरी तरह विचार-विमर्श करनेके बाद लिखा गया था और हस्ताक्षरकर्त्ता अपनी व्यक्तिगत हैसियतमें ज्यादासे-ज्यादा जिस हद तक जानेको तैयार थे, वह इसमें बताया गया था। हमने उस पत्रमें कहा था कि कोई समझौता तबतक सन्तोषजनक नही होगा जबतक कि वह कुछ महत्वपूर्ण शर्तोको पूरा न करता हो, और जबतक उस आशयकी एक सन्तोषजनक घोषणा ब्रिटिश सरकार नही कर देती। यदि ऐसी घोपणा कर दी जाये तो हम कार्य-समितिसे सविनय अवज्ञा आन्दोलन समाप्त करनेकी सिफारिश करनेको तैयार हैं, बशर्ते कि उसके साथ ही भारत सरकार हमारे पत्रमें उल्लिखित अमुक कदम उठाये।

इन आरम्भिक मुद्दों पर सन्तोपजनक समझौता हो जानेके बाद ही प्रस्तावित लन्दन-सम्मेलनके गठनका सवाल और उसमें कांग्रेसके प्रतिनिधित्वके सवालको तय किया जा सकता था। लॉर्ड इर्विन अपने पत्रमें इन प्रस्तावोके आधार पर बातचीत तकको असम्भव बताते हैं। ऐसी स्थितिमें हमारे बीच बातचीतका कोई समान आधार नही है, और न हो सकता है। पत्रमें जो-कुछ बातें कही गई हैं उनके अलावा भी पत्रकी ध्वनि, और भारतमें ब्रिटिश सरकारकी हालकी कार्रवाइयाँ इस बातकी सूचक हैं कि सरकारके मनमें शान्तिकी कोई इच्छा नही है। कार्य-समितिने दिल्लीमें अपनी बैठक बुलानेकी घोपणा की थी, लेकिन इसके फौरन बाद ही सरकार द्वारा दिल्ली प्रान्तमें कांग्रेस कार्य-समितिको एक अवैध संगठन घोषित कर देने, और बादमें उसके अधिकांश सदस्योंको गिरफ्तार कर लेनेके अर्थ इसके सिवा दूसरे नही हो सकते कि उसकी शान्तिकी इच्छा नही है। हमे इन या अन्य गिरफ्तारियोके खिलाफ या सरकारकी अन्य कार्रवाइयोके खिलाफ कोई शिकायत नही है, हालाँकि इनमें से कुछ

१. देखिए पृष्ठ ११७ की पाद-टिप्पणी।

कार्रवाइयोंको हम 'असभ्यतापूर्ण' और 'बर्बरतापूर्ण' समझते हैं। हम उनका स्वागत करते हैं। लेकिन हमें लगता है कि हमारा यह कहना उचित ही है कि एक तरफ तो शान्तिकी इच्छा करना, और दूसरी ओर एक ऐसे सगठन पर आक्रमण करना जो शान्ति दे सकता है और जिसके साथ सरकार समझौतेकी बातचीत भी करना चाहती है, ये दो ऐसी बातें हैं जिनका मेल नही बैठता। समस्त भारतमें कार्य-समितिके गैर-कानूनी करार दिये जाने और उसकी बैठकको रोकनेके अर्थ ही हैं कि जो भी परिणाम हो, लेकिन राष्ट्रीय सघर्ष जारी ही रहेगा और शान्तिकी कोई सम्भावना नही होगी, क्योकि जिन लोगोको भारतकी जनताका प्रतिनिधित्व करनेका कुछ अधिकार है, वे भारतकी ब्रिटिश जेलोमें बन्द होगे।

लॉर्ड इर्विनके पत्र तथा ब्रिटिश सरकार द्वारा की गई कार्रवाईसे साफ हो जाता है कि सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जयकरके प्रयत्न निष्फल हो गये हैं। वस्तुत. उनका पत्र और हमें जो कैफियतें दी गई थी, वे हमें कुछ दृष्टियोसे पहलेकी स्थितिसे भी पीछे ले जाते हैं। हमारी स्थिति और लॉर्ड इर्विनकी स्थितिके बीच जो गहरा अन्तर है, उसे देखते तफसीलमें जानेकी जरूरत ही नही है, लेकिन हम आपको उनके पत्रकी कुछ बातें बताना चाहेगे। उनके पत्रका प्रथम अश तो विधान सभामें दिये गये उनके भाषण और १६ जुलाईको श्री जयकर और सर तेजबहादुर सप्रूको लिखे गये उनके पत्रकी भाषा-शैलीकी पुनरावृत्ति ही है। जैसाकि हमने अपने सयुक्त पत्रमें कहा था, उसकी यह भाषा और शैली इतनी अस्पष्ट है कि हम उसका मूल्याकन नही कर सकते। उसके कुछ भी अर्थ निकाले जा सकते हैं। अपने सयुक्त पत्रमें हमने स्पष्ट कर दिया है कि एक पूर्णतः राष्ट्रीय सरकार, जोकि भारतकी जनताके प्रति उत्तरदायी हो और जिसे सशस्त्र सेना और आर्थिक मामलो पर पूरा नियन्त्रण प्राप्त हो, भारतकी तात्कालिक माँगके रूपमें स्वीकार की जानी चाहिए। इसमें आम तौर पर जिन्हे पूर्वोपाय कहा जाता है उनका, अथवा किसी विलम्बका कोई प्रश्न नही पैदा होता। सत्ताके हस्तान्तरणके लिए कुछ मामलोमें समजनकी आवश्यकता जरूर होगी, और इसके बारेमें हमारा कहना है कि इसका निर्धारण भारतके निर्वाचित प्रतिनिधियो द्वारा किया जायेगा।

जहाँ तक भारत द्वारा जब मर्जी हो तब ब्रिटिश साम्राज्यसे अलग हो जानेके अधिकारका और ब्रिटेनके दावो और ब्रिटेनको प्राप्त रियायतोके मामलेको एक स्वतन्त्र अधिकरणको सौंपनेके उसके अधिकारका सवाल है, हमें केवल यह बताया जाता है कि सम्मेलन एक स्वतन्त्र सम्मेलन होगा और उसमें कोई भी मुद्दा उठाया जा सकता है। इसे तो पिछली स्थितिसे कुछ आगे बढना नही कहा जायेगा। तथापि हमें आगे यह भी बताया गया है कि यदि भारतमें ब्रिटिश सरकारको यह सम्भावना लगी कि भारत द्वारा साम्राज्यसे अलग होनेका सवाल उसके सामने उठाया ही जायेगा तो लॉर्ड इर्विन कह देंगे कि यह सवाल कोई खुला सवाल नही है। उनके अनुसार भारतकी ब्रिटिश सरकार तो केवल इतना ही कर सकती है कि वह इस सवालको सम्मेलनमें उठानेके हमारे इरादेकी सूचना भारत-मन्त्रीको दे दे।

जहाँ तक दूसरे प्रस्तावका सवाल है, हमें बताया गया है कि लॉर्ड इर्विन कुछ वैयक्तिक आर्थिक लेन-देनके मामलोंकी छानबीनकी बातपर ही विचार कर सकते हैं। व्यक्तिगत मामलोंमें ऐसी छानबीन अवश्य की जा सकती है, लेकिन इस छानबीनकी परिधिको फैलाना होगा ताकि उसमें ब्रिटेनके सारे दावे भी आ जायें, जिनमें भारतका तथाकथित सार्वजनिक ऋण भी शामिल है। हम इन दोनों प्रश्नोंको अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते हैं और हमारी दृष्टिमें इसपर हमारे संयुक्त पत्रमें पहले ही सहमति हो जाना अत्यावश्यक है।

कैदियोंकी रिहाईके बारेमें लॉर्ड इर्विनने जो-कुछ कहा है उसका दायरा अत्यन्त सीमित और असन्तोषजनक है। वह हमें यह आश्वासन देनेमें असमर्थ हैं कि सविनय अवज्ञा आन्दोलनके सिलसिलेमें गिरफ्तार सभी अहिंसक कैदी रिहा कर दिये जायेंगे। वह केवल इतना करना चाहते हैं कि इस मामलेको स्थानीय सरकारोंके हाथमें छोड़ दें। हम ऐसे मामलेमें स्थानीय सरकारों या स्थानीय अधिकारियोंकी उदारता या सहानुभूतिपर भरोसा नही करना चाहते। लेकिन इसके सिवा लॉर्ड इर्विनके पत्रमें अन्य अहिंसक कैदियोंका कोई जिक्र नही है। ऐसे कांग्रेसजन और अन्य लोग बहुत बड़ी संख्यामें हैं जिन्हें सविनय अवज्ञा आन्दोलनसे पहले राजनीतिक अपराधोंके कारण जेलमें डाल दिया गया था। इस सिलसिलेमें हम मेरठवाले मामलेके कैदियोंका उल्लेख करना चाहेंगे जो डेढ़ सालसे जेलमें हैं और जिनपर अभी मुकदमा चलना शुरू भी नहीं हुआ है। हमने अपने संयुक्त पत्रमें स्पष्ट कर दिया है कि इन सभी व्यक्तियोंको रिहा कर दिया जाना चाहिए।

बंगाल और लाहौर केस अध्यादेशोंके सम्बन्धमें लॉर्ड इर्विनने कहा है कि इन्हें छोड़कर अन्य सभी अध्यादेश वापस ले लिये जायेंगे। हमें लगता है कि इन्हे भी वापस ले लिया जाना चाहिए। हमने यदि उन राजनीतिक कैदियोंकी रिहाईकी माँग नहीं की है जो हिंसात्मक कार्योंके दोषी है, तो उसका कारण यह नही है कि हम उनकी रिहाईका स्वागत नही करेंगे बल्कि इस कारण कि हमें लगा कि चूँकि हमारा आन्दोलन पूरी तरह अहिंसात्मक है अतः हम मामलेको उलझायेंगे नही। लेकिन हम कमसे-कम जो कर सकते हैं वह यह है कि हम आग्रह करें कि हमारे अपने इन देशभाइयोंके ऊपर साधारण अदालतमें मुकदमा चलाया जाये, किसी ऐसे अध्यादेशके अन्तर्गत संगठित एक असाधारण अदालतमें नहीं जो उन्हें अपील करनेके अधिकारसे और किसी अभियुक्तको जो साधारण अधिकार प्राप्त होते हैं, उनसे वंचित करता हो।

खुली अदालतमें तथाकथित मुकदमेके दौरान क्रूरतापूर्वक मारने-पीटने तककी जो विस्मयकारी घटनाएँ हुई हैं, उनको देखते यह अत्यावश्यक है कि अदालतमें मुकदमा चलानेकी साधारण प्रक्रियाका अनुगमन किया जाये। हम समझते हैं कि कुछ अभियुक्त अपने साथ किये जानेवाले व्यवहारके विरोधमें काफी अर्सेसे भूख-हड़ताल कर रहे है और अब मौतके दरवाजे पर पहुँच गये हैं। हम समझते हैं कि बंगाल-अध्यादेशका स्थान अब बंगाल विधान-परिषदके एक अधिनियमने ले लिया है। हम इस अध्यादेशको और उसपरसे पास किये गये किसी भी अधिनियमको अत्यन्त आपत्तिजनक

मानते है, और इस तथ्यसे बात कुछ सुधर नही जाती कि बंगालकी वर्तमान विधान-परिषद जैसी गैर-प्रातिनिधिक संस्थाने यह अधिनियम पास किया है।

जहाँ तक विदेशी वस्त्रो और शराबकी दूकानो पर धरना देनेका सवाल है, हमें बताया गया है कि लॉर्ड इर्विन धरनेके विरुद्ध जारी किया गया अध्यादेश वापस लेनेको तैयार है, लेकिन वह यह भी कहते है कि यदि उन्होने जरूरी समझा तो धरनोका मुकाबला करनेके लिए वह नये कानून बनायेंगे। दूसरे शब्दोमें, वह हमें सूचित करते है कि वह जब भी जरूरी समझेंगे, इस अध्यादेशको फिरसे जारी करेंगे या शिमलामें बैठकर इसी प्रकारकी कोई दूसरी चीज करेंगे। हमारे सयुक्त पत्रमें नमक-अधिनियम तथा अन्य चीजोके बारेमें जो-कुछ कहा गया था उसके सम्बन्धमें भी उनका जवाब बिलकुल असन्तोषजनक है। आप नमकके जाने-माने विशेषज्ञ है, अत. हमें यहाँ उसके विषयमें विस्तारसे कुछ कहनेकी जरूरत नही है। हम इतना ही कहेंगे कि इन विषयो पर हमने पहले जो स्थिति अपनाई है, उसमें परिवर्तन करनेका हमें कोई कारण नही दिखता।

इस प्रकार हमारे सयुक्त पत्रमें जो मुख्य प्रस्ताव थे उन सभीको, तथा बहुतसे छोटे-मोटे प्रस्तावोको लॉर्ड इर्विनने स्वीकार करनेसे इनकार कर दिया है। उनके और हमारे दृष्टिकोणमें बहुत अन्तर है, बल्कि यह अन्तर बुनियादी है। हमें आशा है कि आप इस टिप्पणीको श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्री वल्लभभाई पटेल, और श्री जयरामदास दौलतरामको दिखा देंगे और उनसे परामर्श करके श्री जयकर तथा सर तेजबहादुर सप्रूको अपना उत्तर देंगे। हमें लगता है कि पत्र-व्यवहारके प्रकाशनमें और अधिक विलम्ब नही किया जाना चाहिए, और हमारा जनताको अँधेरेमें रखना उचित नही है। इनके प्रकाशनके प्रश्नके अतिरिक्त, हम सर तेजबहादुर सप्रू और श्री जयकरसे अनुरोध कर रहे है कि वे सारे-पत्र-व्यवहार तथा सभी प्रासगिक कागज-पत्रोको भारतीय राष्ट्रीय काग्रेसके कार्यवाहक अध्यक्ष श्री खलीकुज्जमाके पास भेज दें। कार्य-समिति अभी काम कर रही है, इसलिए हमें लगता है कि उसे तत्काल सूचना भेजे बिना हमें कोई कदम नही उठाना चाहिए।

मोतीलाल
सैयद महमूद
जवाहरलाल

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ५-९-१९३०

परिशिष्ट ६

आश्रम भजनावलि[1]

१

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरद् आत्म-तत्त्वम्
सत्-चित्-सुखं परमहंस-गतिं तुरीयम्।
यत् स्वप्न-जागर-सुषुप्तम् अवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलम् अहं न च भूत-संघः ॥[2]

२०-१२-१९३०

२

प्रातर् भजामि मनसो वचसाम् अगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यद् अनुग्रहेण।
यन् 'नेति नेति' वचनैर् निगमा अवोचुस्
तं देव-देवम् अजम् अच्युतम् आहुर् अग्र्यम् ॥

७-५-१९३०

३

प्रातर् नमामि तमसः परम् अर्क-वर्णम्
पूर्णं सनातन-पदं पुरुषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन् इदं जगद् अशेषम् अशेष-मूर्तौ
रज्ज्वां भुजंगम इव प्रतिभासितं वै ॥

८-५-१९३०

१. *आश्रम भजनावलि* गांधीजीके आश्रमोंमें होनेवाली सुबह-शामकी प्रार्थनाओं और प्रधानतः विविध भारतीय भाषाओंके भजनोंका संग्रह है। ये भजन अधिकांशतः सुप्रसिद्ध संत-कवियोंके हैं, किन्तु कुछ ऐसे भी हैं जिनके रचयिताओंका ठीक पता नहीं है किन्तु जो भजनानन्दी गायकोंके गीत-साहित्यका अंग हो गये हैं और इस भजनावलिमें इसीलिए स्थान पा गये हैं। सन् १९३० में जब गांधीजी यरवडा जेलमें थे, उन्होंने मीराबहनके उपयोगके लिए इनमें से अधिकांश प्रार्थनाओं और भजनोंका अंग्रेजी अनुवाद किया था। अनुवाद-कार्य ६ मई, १९३० को आरम्भ हुआ और १५ दिसम्बरको पूरा हुआ था। अंग्रेजी अनुवादके लिए पाठक इस ग्रन्थावलीका खण्ड ४४ देखें। यहाँ तो हम उक्त अंग्रेजी अनुवादमें गृहीत क्रमके अनुसार मूल श्लोक आदि और भजन ही दे रहे हैं और जहाँ कहीं गांधीजीने अपने अंग्रेजी अनुवादमें मूल भाव या विचारको स्पष्ट करनेके लिए कुछ जोड़ा है या कोई टिप्पणी दी है उसे भी दे रहे हैं। प्रत्येक श्लोक और भजनके अन्तमें पड़ी हुई तारीख सूचित करती है कि उसका अंग्रेजी अनुवाद गांधीजीने किस दिन किया था। हिन्दी पाठकोंके सूचनार्थ यहाँ इतना और कहना जरूरी लगता है कि नवजीवन प्रकाशन मन्दिर द्वारा प्रकाशित *आश्रम भजनावलि* में संस्कृत श्लोकोंका गांधीजीके निकट-सहयोगी किशोरलाल मशरूवाला-कृत हिन्दी अनुवाद प्राप्त है जिसे गांधीजीका स्वीकार किया हुआ माना जा सकता है और उसमें अन्तमें भजनोंमें आये हुए कठिन शब्दोंका कोष भी दिया गया है।

२. गांधीजी की टिप्पणी: "प्रथम श्लोकका अनुवाद २०-१२-१९३० को दोबारा किया गया।" गांधीजीने पहले इसका अनुवाद ६ मईको किया, दोबारा २० नवम्बरको और फिर अन्तमें २०-१२-१९३० को।

४

समुद्र-वसने ! देवि ! पर्वत-स्तन-मण्डले ! ।
विष्णु-पत्नि ! नमस् तुभ्यम्; पाद-स्पर्शं क्षमस्व मे ।।

९-५-१९३०

५

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्ड-मण्डित-करा या श्वेत-पद्मासना।
या ब्रह्माऽच्युत-शंकर-प्रभृतिभिर् देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा ।।

१०-५-१९३०

६

वक्र-तुण्ड ! महाकाय ! सूर्य-कोटि-सम-प्रभ ! ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! शुभ-कार्येषु सर्वदा ।।

११-५-१९३०

७

गुरुर् ब्रह्मा, गुरुर् विष्णुर्, गुरुर् देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

१२-५-१९३०

८

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्म-नाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघ-वर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी-कान्तं कमल-नयनं योगिभिर् ध्यान-गम्यम्
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं सर्व-लोकैक-नाथम् ।।

१३-५-१९३०

९

कर-चरण-कृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा
श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितम् अविहितं वा सर्वम् एतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे ! श्रीमहादेव ! शम्भो ! ।।

१४-५-१९३०

१०

न त्वहं कामये राज्यम् न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःख-तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्ति-नाशनम्।।

१५-५-१९३०

११

स्वस्ति प्रजाभ्यः; परिपालयन्ताम्
न्याय्येन मार्गेण मही महीशाः।
गो-ब्राह्मणेभ्यः शुभम् अस्तु नित्यम्;
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु।।

१६-५-१९३०

१२

नमस् ते सते ते जगत्-कारणाय
नमस् ते चिते सर्व-लोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत-तत्त्वाय मुक्ति-प्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय।।

१७-५-१९३०

१३

त्वम् एकं शरण्यं त्वम् एकं वरेण्यम्
त्वम् एकं जगत्-पालकं स्व-प्रकाशम्।
त्वम् एकं जगत्-कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ
त्वम् एकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्।।

१८-५-१९३०

१४

भयानां भयं; भीषणं भीषणानाम्
गतिः प्राणिनां; पावनं पावनानाम्।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वम् एकम्
परेषां परं; रक्षणं रक्षणानाम्।।

१९-५-१९३०

१५

वय त्वां स्मरामो; वयं त्वा भजामो
  वय त्वा जगत्-साक्षि-रूप नमामः।
सद् एक निधानं निरालंबम् ईशम्
  भवाम्भोधि-पोत शरण्य व्रजामः॥

२०-५-१९३०

१६

विपदो नैव विपद, सपदो नैव संपदः;
विपद् विस्मरण विष्णो' सपन् नारायण-स्मृतिः॥

२१-५-१९३०

१७

विष्णुर् वा त्रिपुरान्तको भवतु वा ब्रह्मा सुरेन्द्रोऽथवा
  भानुर् वा शश-लक्षणोऽथ भगवान् बुद्धोऽथ सिद्धोऽथवा।
राग-द्वेष-विषार्ति-मोह-रहित' सत्त्वानुकंपोद्यतो
  य मर्वैः राह् गस्कृतो गुणगणैस् तस्मै नम. सर्वदा॥

२२-५-१९३०

१८

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तन् त्व पूषन्! अपावृणु सत्य-धर्माय दृष्टये॥
[ईश, १५]

२३-५-१९३०

१९

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
  विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणम् एनो
  भूयिष्ठा ते नम उक्ति विधेम॥
[ईश, १८]

२४-५-१९३०

२०

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यम् एतः
  तौ सपरीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते।
  प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥
[कठ, १. २. २]

२५-५-१९३०

२१

सर्वे वेदा यत्पदम् आमनन्ति
तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।
यद् इच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत् ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि ॐ इत्येतत्॥
[कठ, १. २. १५]

२६-५-१९३०

२२

न तत्र सूर्यो भाति, न चन्द्र-तारकम्
नेमा विद्युतो भान्ति, कुतोऽयम् अग्निः?
तम् एव भान्तम् अनुभाति सर्वम्
तस्य भासा सर्वम् इदं विभाति॥
[कठ, २. ५. १५]

२७-५-१९३०

२३

तपःश्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये
शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्यां चरन्तः।
सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति
यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा॥
[मुंडक १. २. ११]

२८-५-१९३०

२४

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथम् एव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहम् एव च॥
इन्द्रियाणि हयान् आहुर् विषयांस् तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तम् भोक्ते त्याहुर् मनीषिणः॥
[कठ, १. ३. ३-४]

२९-५-१९३०

२५

विज्ञानसारथिर् यस् तु मनःप्रग्रहवान् नरः।
सोऽध्वनः पारम् आप्नोति तद् विष्णोः परमं पदम्॥
[कठ, १. ३. ९]

३०-५-१९३०

२६

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस् तत् कवयो वदन्ति ॥
[कठ, १ ३. १४]

३१-५-१९३०

२७

अग्निर् यथैको भुवनं प्रविष्टो
रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।
एकस् तथा सर्व-भूतान्तरात्मा
रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश् च ॥
[कठ, २५. ९]

१-६-१९३०

२८

वायुर् यथैको भुवनं प्रविष्टो
रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।
एकस् तथा सर्वभूतान्तरात्मा
रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश् च ॥

२-६-१९३०

२९

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्
न लिप्यते चाक्षुषैर् बाह्यदोषैः।
एकस् तथा सर्वभूतान्तरात्मा
न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः ॥

३-६-१९३०

३०

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा
एकं रूपं बहुधा यः करोति।
तम् आत्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्
तेषां सुखं शाश्वतं; नेतरेषाम् ॥

४-६-१९३०

३१

नित्योऽनित्यानां चेतनश् चेतनानाम्
एको बहूनां यो विदधाति कामान्।
तम् आत्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्
तेषां शान्तिः शाश्वतो; नेतरेषाम्॥

[कठ, २. ५. १०-१३]

५-६-१९३०

३२

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान्
ब्राह्मणो निर्वेदम् आयान् 'नास्त्यकृतः कृतेन'।
तद्विज्ञानार्थं स गुरुम् एवाभिगच्छेत्
समित्-पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्म-निष्ठम्॥

[मुंडक, १. ३. ११, १२]

६-६-१९३०

३३

तस्मै स विद्वान् उपसन्नाय सम्यक्
प्रशान्त-चित्ताय शमान्विताय।
येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यम्
प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्॥

[मुंडक, १. २. १]

७-६-१९३०

३४

प्रणवो धनुः, शरोह्यात्मा, ब्रह्म तल् लक्ष्यम् उच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यम्; शरवत् तन्मयो भवेत्॥

[मुंडक, २. २. ४]

८-६-१९३०

३५

भिद्यते हृदयग्रन्थिः, छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि, तस्मिन् दृष्टे परावरे॥

[मुंडक, २. २. ८]

९-६-१९३०

३६

ब्रह्मैवेदम् अमृतं पुरस्ताद्, ब्रह्म
पश्चाद्, ब्रह्म दक्षिणतश् चोत्तरेण।
अधश् चोर्ध्वं च प्रसृत, ब्रह्मैवेदम्
विश्वम् इद वरिष्ठम् ॥

[मुडक, २. २. ११]

१०-६-१९३०

३७

सत्येन लभ्यस् तपसा ह्येष आत्मा
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो
यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः॥

११-६-१९३०

३८

सत्यम् एव जयते, नानृतम्
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्ति ऋषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत् सत्यस्य परम निधानम् ॥

[मुडक, ३. १. ५, ६]

१२-६-१९३०

३९

नायम् आत्मा प्रवचनेन लभ्यो
न मेधया न बहुना श्रुतेन।
यम् एवैष वृणुते तेन लभ्यस्
तस्यैष आत्मा विवृणुते तनू स्वाम्॥

१३-६-१९३०

४०

नायम् आत्मा बलहीनेन लभ्यो
न च प्रमादात् तपसो वाप्यलिंगात्।
एतैर् उपायैर् यतते यस्तु विद्वांस्
तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम॥

[मुंडक, ३. २. ३, ४]

१३-६-१९३०

४१

सम्प्राप्यैनम् ऋषयो ज्ञान-तृप्ताः
कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः।
ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा
युक्तात्मानः सर्वम् एवाविशन्ति ।।

१४-६-१९३०

४२

वेदान्त-विज्ञान-सुनिश्चितार्थाः
संन्यास-योगाद् यतयः शुद्ध-सत्त्वाः ।
ते ब्रह्म-लोकेषु परान्तकाले
परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे ।।

[मुंडक, ३. २. ५, ६]

१५-६-१९३०

४३

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे
अस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः
परात्परं पुरुषम् उपैति दिव्यम् ।।

१६-६-१९३०

४४

स यो ह वै तत् परमं ब्रह्म वेद, ब्रह्मैव भवति ।
नास्याब्रह्मवित् कुले भवति ।
तरति शोकं, तरति पाप्मानम्
गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति ।।

[मुंडक, ३. २. ८, ९]

१७-६-१९३०

४५

यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ।
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन ।।
एतं हि वाव न तपति 'किम् अहं साधु नाकरवम् ।
किम् अहं पापम् अकरवम्' इति ।।

[तैत्तिरीय, २. ९]

१८-६-१९३०

४६

युवा स्यात् साधु युवाध्यायक: आशिष्ठोद्रढिष्ठो बलिष्ठः।
तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात्॥
[तैत्तिरीय, २. ८]

१९-६-१९३०

४७

अनृतदर्शी। सभा: समाजाश्चागन्ता।

अजनवादशीलः। रहः शीलः। गुरोरुदाचारेष्वकर्ता स्वैरिकर्माणि। स्त्रीषु यावदर्थसंभाषी। मृदुः। शान्तः। ह्रीमान्। दृढधृतिः। अग्लास्नु.। अक्रोधनः। अनसूयः। सायंप्रातरुदकुम्भमाहरेत्। अरण्यादेधानाहृत्याधो निदध्यात्॥

२०-६-१९३०

४८

बलं वाव विज्ञानाद् भूयः; अपि ह शतं विज्ञानवताम् एको
बलवान् आकम्पयते। स यदा बली भवति अथोत्थाता
भवति, उत्तिष्ठन् परिचरिता भवति, परिचरन् उपसत्ता
भवति, उपसीदन् द्रष्टा भवति, श्रोता भवति, मन्ता
भवति, बोद्धा भवति, कर्ता भवति, विज्ञाता भवति॥
[छान्दोग्य, ७. ८. १]

२१-६-१९३०

४९

मधुवाता ऋतायते। मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर् नः
सन्त्वोषधीः। मधु नक्तम् उतोषसः। मधुमत् पार्थिव
रजः। मधु द्यौर् अस्तु नः पिता। मधुमान् नो वनस्पतिः।
मधुमान् अस्तु सूर्यः। माध्वीर् गावो भवन्तु नः॥
[बृहदारण्यक, ६. ३. ६]

२२-६-१९३०

५०

न जातु कामात् न भयात् न लोभात्
धर्मं त्यजेत् जीवितस्यापि हेतोः।
धर्मो नित्यः सुखदुःखे त्वनित्ये
जीवो नित्यो हेतुर् अस्य त्वनित्यः॥

२३-६-१९३०

५१

यदेव विद्यया करोति श्रद्धयोपनिषदा तदेव वीर्यवत्तरं भवति ।।

[छान्दोग्य, १. १. १०]

२४-६-१९३०

५२

यं ब्रह्मा-वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुत: स्तुन्वन्ति दिव्यै: स्तवैर्
वेदै: सांग-पद-क्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगा: ।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदु: सुरासुरगणा देवाय तस्मै नम: ।।

२५-६-१९३०

५३

विद्या-मन्दिरकी प्रार्थना

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतम् अस्तु। मा विद्विषावहै। ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ।।

[तैत्तिरीय, २ (शान्ति पाठ)]

२६-६-१९३०

५४

ॐ असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर् गमय। मृत्योर् माऽमृतं गमय ।।

[बृहदारण्यक, ३,२८]

२७-६-१९३०

५५

योऽन्त: प्रविश्य मम वाचम् इमां प्रसुप्ताम्
संजीवयत्यखिल-शक्ति-धर: स्वधाम्ना ।
अन्यांश्च हस्त-चरण-श्रवण-त्वगादीन्
प्राणान् नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम् ।।

२८-६-१९३०

५६

स्त्रीवर्गकी प्रार्थना

गोविन्द ! द्वारिकावासिन् ! कृष्ण ! गोपीजनप्रिय ! ।
कौरवै: परिभूतां माम् किं न जानासि केशव ।।
हे नाथ ! हे रमानाथ! व्रजनाथार्तिनाशन ! ।
कौरवार्णव-मग्नां माम् उद्धरस्व जनार्दन ।।

कृष्ण ! कृष्ण ! महायोगिन् ! विश्वात्मन् ! विश्वभावन ! ।
प्रपन्ना पाहि गोविन्द ! कुरुमध्येऽवसीदतीम् ।।

२९-६-१९३०

५७

धर्मं चरत, माऽधर्मम्; सत्य वदत, मानृतम् ।
दीर्घं पश्यत, मा ह्रस्वम्; पर पश्यत, माऽपरम् ।।

३०-६-१९३०

५८

अहिंसा सत्यम् अस्तेयम् शौचम् इन्द्रिय-निग्रहः ।
एत सामासिक धर्मम् चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन् मनुः ।।

१-७-१९३०

५९

अहिंसा सत्यम् अस्तेयम् अकाम-क्रोध-लोभता ।
भूत-प्रिय-हितेहा च धर्मोऽय सार्ववर्णिकः ।।

२-७-१९३०

६०

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर् नित्यम् अद्वेष-रागिभिः ।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस् त निबोधत ।।

३-७-१९३०

६१

श्रूयता धर्म-सर्वस्वम्, श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत् ।।
श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्त ग्रन्थकोटिभिः ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।।

४-७-१९३०

६२

आदित्य-चन्द्रावनिलोऽनलश्च
द्यौर् भूमिर् आपो हृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये
धर्मोऽपि जानाति नरस्य वृत्तम् ।।

५-७-१९३०

६३

द्वादश-पंजरिका-स्तोत्रसे

मूढ! जहीहि धनागम-तृष्णाम् कुरु सद्बुद्धि मनसि वितृष्णाम्।
यल्लभसे निज-कर्मोपात्तम् वित्तं तेन विनोदय चित्तम्॥

६-७-१९३०

६४

अर्थम् अनर्थं भावय नित्यम् नास्ति ततः सुख-लेशः सत्यम्।
पुत्राद् अपि धन-भाजां भीतिः सर्वत्रैषा विहिता रीतिः॥

७-७-१९३०

६५

कामं क्रोधं लोभं मोहम् त्यक्त्वाऽऽत्मानं भावय कोऽहम्।
आत्म-ज्ञानविहीना मूढाः ते पच्यन्ते नरक-निगूढ़ाः॥

८-७-१९३०

६६

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः व्यर्थं कुप्यसि सर्व-सहिष्णुः।
सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानम् सर्वत्रोत्सृज भेदाज्ञानम्॥

९-७-१९३०

६७

नलिनी-दल-गत-सलिलं तरलम् तद्वज्-जीवितम् अतिशय-चपलम्।
विद्धि व्याध्यभिमान-ग्रस्तम् लोकं शोक-हतं च समस्तम्॥

१०-७-१९३०

६८

पाण्डव-गीतासे

पाण्डव : प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक-
व्यासाम्बरीष-शुक-शौनक-भीष्म-दाल्भ्यान्।
रुक्मांगदार्जुन-वसिष्ठ-बिभीषणादीन्
पुण्यान् इमान् परमभागवतान् स्मरामि॥

११-७-१९३०

६९

कुन्ती : स्वकर्म-फल-निर्दिष्टां यां यां योनिं व्रजाम्यहम्।
तस्यां तस्या हृषीकेश! त्वयि भक्तिर् दृढाऽस्तु मे॥

१२-७-१९३०

७०

द्रोण : ये ये हताश् चक्रधरेण राजन्!
त्रैलोक्यनाथेन जनार्दनेन।
ते ते गता विष्णुपुरीं प्रयाताः
क्रोधोऽपि देवस्य वरेण तुल्यः॥

१३-७-१९३०

७१

गान्धारी : त्वम् एव माता च पिता त्वम् एव
त्वम् एव बंधुश्च सखा त्वम् एव।
त्वम् एव विद्या द्रविणं त्वम् एव
त्वम् एव सर्वं मम देवदेव!॥

१४-७-१९३०

७२

विराट : नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

प्रह्लाद :

नाथ! योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम्।
तेषु तेष्वचलाभक्तिर् अच्युतास्तु सदा त्वयि॥
या प्रीतिर् अविवेकाना विषयेष्वनपायिनी।
त्वाम् अनुस्मरतः सा मे हृदयान् मापसर्पतु॥

भरद्वाज :

लाभस् तेषां जयस् तेषां कुतस् तेषां पराजयः।
येषाम् इन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥

मार्कण्डेय :

सा हानिस् तन् महच्छिद्रं सा चान्ध-जड-मूढता।
यन्मुहूर्तं क्षणं वापि वासुदेवं न चिंतयेत्॥

शौनक :

भोजनाच्छादने चिन्तां वृथा कुर्वन्ति वैष्णवाः।
योऽसौ विश्वम्भरो देवः स भक्तान् किम् उपेक्षते ॥

सनत्कुमार :

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्व-देव-नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥

१५-७-१९३०

७३

मुकुन्दमालासे

श्रीवल्लभेति वरदेति दयापरेति
भक्त-प्रियेति भव-लुण्ठन-कोविदेति।
नाथेति नाग-शयनेति जगन्निवासे-
त्यालापिनं प्रतिदिनं कुरु मां मुकुन्द ॥

१५-७-१९३०

७४

मुकुन्द! मूर्ध्ना प्रणिपत्य याचे
भवन्तम् एकान्तम् इयन्तम् अर्थम्।
अविस्मृतिस् त्वच्चरणारविन्दे
भवे भवे मेऽस्तु भवत्-प्रसादात् ॥

नास्था धर्मे न वसु-निचये नैव कामोपभोगे
यद् भाव्यं तद् भवतु भगवन् पूर्व-कर्मानुरूपम्।
एतत् प्रार्थ्यं मम बहु-मतं जन्म-जन्मान्तरेऽपि
त्वत्पादाम्भो-रुह-युग-गता निश्चला भक्तिर् अस्तु ॥

दिवि वा भुवि वा ममास्तु वासो
नरके वा नरकान्तक! प्रकामम्।
अवधीरित-शारदारविन्दौ
चरणौ ते मरणेऽपि चिन्तयामि ॥

भव-जलधि-गतानां द्वन्द्व-वाताहतानाम्
सुत-दुहितृ-कलत्र-त्राण-भारावृतानाम्।
विषम-विषय-तोये मज्जताम् अप्लवानाम्
भवति शरणम् एको विष्णु-पोतो नराणाम् ॥

१६-७-१९३०

७५

भव-जलधिम् अगाधं दुस्तरं निस्तरेयम्
कथम् अहम् इति चेतो मा स्म गाः कातरत्वम्।
सरसिज-दृशि देवे तावकी भक्तिर् एका
नरक-भिदि-निषण्णा तारयिष्यत्यवश्यम् ।।

बद्धेनाञ्जलिना नतेन शिरसा गात्रैः सरोमोद्‌गमैः
कण्ठेन स्वर-गद्‌गदेन नयनेनोद्‌गीर्ण-बाष्पाम्बुना।
नित्य त्वच्चरणारविन्द-युगल-ध्यानामृतास्वादिनाम्
अस्माकं सरसीरुहाक्ष! सततं संपद्यता जीवितम् ।।

मदन! परिहर स्थितिं मदीये
मनसि मुकुन्द-पदारविन्द-धाम्नि।
हर-नयन-कृशानुना कृशोऽसि
स्मरसि न चक्र-पराक्रम मुरारेः ।।

इदं शरीरं शत-सन्धि-जर्जरं
पतत्यवश्य परिणाम-पेशलम्।
किमौषधैः क्लिश्यसि मूढ! दुर्मते!
निरामयं कृष्ण-रसायनं पिब ।।

१७-७-१९३०

७६

नमामि नारायण-पाद-पङ्कजम्
करोमि नारायण-पूजनं सदा।
वदामि नारायण-नाम निर्मलम्
स्मरामि नारायण-तत्त्वम् अव्ययम् ।।

अनन्त! वैकुण्ठ! मुकुन्द! कृष्ण!
गोविन्द! दामोदर! माधवेति।
वक्तुं समर्थोऽपि न वक्ति कश्चिद्
अहो! जनानां व्यसनाभिमुख्यम् ।।

१८-७-१९३०

७७

भजन

(सोरठा)

जेहि सुमिरत सिधि होइ,
गण-नायक करिवर-वदन।
करो अनुग्रह सोइ,
बुद्धि-रासि सुभ-गुण-सदन।।
मूक होइ वाचाल,
पंगु चढ़ै गिरिवर गहन।
जासु कृपासु दयालु,
द्रवौ सकल कलि-मल-दहन।।

१९-७-१९३०

७८

[राग टोडी — द्रुत एक ताल (चार ताल)]

दीन को दयालु दानि दूसरो न कोऊ।
जासों दीनता कहौं, हौं देखौं दीनसोऊ।।१।।
सुर नर मुनि असुर नाग साहिब तो घनेरे
तौलौं, जौलौं रावरे न नेकु नयन फेरे।।२।।
त्रिभुवन तिहुँ काल विदित वदति वेद चारी
आदि अंत मध्य राम! साहिबी तिहारी।। ३।।
तोहि माँगि माँगनो न माँगनो कहायो!
सुनि सुभाउ सील सुजस जाचन जन आयो।। ४।।
पाहन, पसु, विटप, विहँग अपने कर लीन्हें।
महाराज दसरथके! रंक राय कीन्हें।। ५।।
तू गरीब को निवाज, हौं गरीब तेरो।
बारक कहिये कृपालु! 'तुलसिदास' मेरो।।६।।

२०-७-१९३०

७९

(राग देस – ताल दादरा)

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी।।१।।
नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसो?
मो समान आरत नहि, आरत-हरतोसो।।२।।

ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर, हौं चेरो।
तात, मात, गुरु, सखा तू, सब विधि हितु मेरो ॥३॥
तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिय जो भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरन-सरन पावै ॥४॥

२१-७-१९३०

८०

(राग हिंडोल — तीन ताल)

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ कृपालु कृपा तें संत सुभाव गहौंगो ॥
जथा लाभ संतोष सदा, काहू सो कछु न चहौंगो।
परहित-निरत निरंतर मन, क्रम, बचन नेम निबहौंगो ॥
परुष बचन अति दुसह स्रवन सुनि तेहिं पावक न दहौंगो।
बिगत मान, सम सीतल मन, पर गुन, अवगुन न कहौंगो ॥
परिहरि देह जनित चिंता, दुख सुख समबुद्धि सहौंगो।
तुलसिदास प्रभु यहि पथ रहि, अबिचल हरिभक्ति लहौंगो ॥

२२-७-१९३०

८१

(राग सोहनी — पंजाबी ठेका वि० तीन ताल)

ऐसी मूढ़ता या मनकी।
परिहरि रामभक्ति-सुरसरिता आस करत ओस-कनकी ॥
धूम-समूह निरखि चातक ज्यों तृषित जानि मति घनकी।
नहिं तहँ सीतलता, न बारि, पुनि हानि होति लोचनकी ॥
ज्यों गच काँच बिलोकि स्येन जड़ छाँह आपने तनकी।
टूटत अति आतुर अहारवस, छति बिसारि आननकी ॥
कहँ लौं कहौं कुचाल कृपानिधि, जानत हौ गति जनकी।
तुलसिदास प्रभु! हरहु दुसह दुख करहु लाज निजपनकी ॥

२३-७-१९३०

८२

(राग परज — तीन ताल)

यह बिनती रघुबीर गुसाँई।
और आस बिस्वास भरोसो, हरु जियकी जड़ताई ॥
चहौं न सुगति, सुमति, संपति कछु, रिधिसिधि बिपुल बड़ाई।
हेतु-रहित अनुराग रामपद बढ़ै अनुदिन अधिकाई ॥

कुटिल करम लै जाइ मोहि जहँ जहँ अपनी बरिआई।
तहँ तहँ जनि छिन छोह छाँड़िये कमठ-अण्डकी नाईं।।
या जगमें जहँ लगि या तनुकी, प्रीति प्रतीति सगाई।
ते सब तुलसिदास प्रभु ही सों होहिं सिमिटि इक ठाँई।।

२४-७-१९३०

८३

(राग खमाज – तीन ताल)

माधव! मोह-पास क्यों टूटै?
बाहर कोटि उपाय करिय अभ्यन्तर ग्रन्थि न छूटै।।
घृतपूरन कराह अन्तरगत ससि-प्रतिबिम्ब दिखावै।
ईंधन अगन लगाय कल्पसत औंटत नास न पावै।।
तरु कोटर महँ बस विहंग तरु काटे मरै न जैसे।
साधन करिय विचार-हीन मन, सुद्ध होइ नहिं तैसे।।
अंतर मलिन विषय मन अति, तन पावन करिय पखारे।
मरइ न उरग अनेक जतन बलमीक बिबिध बिधि मारे।।
तुलसिदास हरि गुरु-करुना बिनु, बिमल विवेक न होई।
बिनु विवेक संसार-घोर-निधि पार न पावै कोई।।

२५-७-१९३०

८४

(राग कौशिया – तीन ताल)

मैं केहि कहौं बिपति अति भारी। श्रीरघुबीर दीन हितकारी।।
मम हृदै भवन प्रभु तोरा। तहँ आइ बसे बहु चोरा।।
अति कठिन करहिं बरजोरा। मानहिं नहिं विनय निहोरा।।
तम, मोह, लोभ, अहँकारा। मद, क्रोध, बोध-रिपु, मारा।।
अति करहिं उपद्रव नाथा। मरदहिं मोहिं जानि अनाथा।।
मैं एक अमित बटपारा। कोउ सुनै न मोर पुकारा।।
भागेउ नहिं नाथ, उबारा। रघुनायक! करहु सँभारा।।
कह तुलसिदास सुनु रामा। लूटहिं तस्कर तव धामा।
चिन्ता यह मोहिं अपारा। अपजस नहिं होई तुम्हारा।।

२६-७-१९३०

८५

(राग आसावरी या टोडी – तीन ताल)

ऐसो को उदार जग माही।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं।।
जो गति योग विराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी।
सो गति देत गीध सबरी कहँ, प्रभु न बहुत जिय जानी।।
जो सपति दस सीस अरपि करि रावन सिव पहँ लीन्ही।
सो सपदा विभीषन कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्ही।।
तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो।
तौ भजु राम काम सब पूरन करहि कृपानिधि तेरो।।

२७-७-१९३०

८६

(राग खमाज – तीन ताल)

जाके प्रिय न राम वैदेही।
सो छाँडिये कोटि वैरी सम, जद्यपि परम सनेही।।
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी।
वलि गुरु तज्यो, कत व्रजबनितनि, भये मुद-मंगलकारी।।
नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कहा आँखि जेहि फूटै, बहुतक कहौं कहाँ लौं।।
तुलसी सो सब भाँति परमहित पूज्य प्रान ते प्यारो।
जासों होय सनेह रामपद, एतो मतो हमारो।।

२८-७-१९३०

८७

(राग आसावरी – तीन ताल)

कौन जतन विनति करिये।
निज आचरन विचारि हारि हिय मानि जानि डरिये ।।१।।
जेहि साधन हरि द्रवहु जानि जन, सो हठ परिहरिये
जाते विपति-जाल निसिदिन दुख, तेहि पथ अनुसरिये ।।२।।
जानत हूँ मन वचन करम परहित कीन्हें तरिये।
सो विपरीत देखि परसुख बिमु कारन ही जरिये ।।३।।
स्रुति पुरान सबको मत यह सतसंग सुदृढ़ धरिये।
निज अभिमान मोह इरषा बस तिन्हहिं न आदरिये ।।४।।

संतत सोइ प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि परिये
कहो अब नाथ, कौन बल ते संसार-सोग हरिये ॥५॥
जब कब निजु करुना सुभाउते, द्रवहु तो निस्तरिये
तुलसिदास विस्वास आन नहिं, कत पचि पचि मरिये ॥६॥

२९-७-१९३०

८८

(राग खमाज – तीन ताल)

जानत प्रीत-रीत रघुराई।
नाते सब हाते करि राखत, राम सनेह सगाई ॥१॥
नेह निबाहि देह तजि दशरथकी रति अचल-चलाई।
ऐसें हु पितु तें अधिक गीध पर ममता गुन गरुआई ॥२॥
तिय बिरही सुग्रीव सखा लखि प्रानप्रिया बिसराई।
रन पर्‌यो बंधु विभीषन ही को सोच हृदय अधिकाई ॥३॥
घर, गुरुगृह, प्रियसदन सासुरे, भई जब जहँ पहुनाई।
तब तहँ कहिं सबरीके फलनकी रुचि माधुरी न पाई ॥४॥
सहज सरूप कथा मुनि बरनत रहत सकुचि सिरनाई।
केवट मीत कहे सुख मानत बानर बंधु बड़ाई ॥५॥
तुलसी राम सनेह सील लखि जो न भगति उर आई।
तौं तोंहि जनमि जाय जननी जड़ तनु-तरुनता गँवाई ॥६॥

८९

(राग पीलू – तीन ताल)

रघुवर! तुमको मेरी लाज।
सदा सदा मैं सरन तिहारी, तुम बड़े गरीबनिवाज॥
पतित-उधारन बिरुद तिहारो स्रवनन सुनी अवाज॥
हौं तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज॥
अघ-खंडन, दुख-भंजन जनके यही तिहारो काज॥
तुलसिदास पर किरपा करिये भक्ति-दान देहु आज॥

९०

[राग विभास – द्रुत चौताल (एक ताल)]

जागिये रघुनाथ कुँवर! पंछी बन बोले ॥ध्रु०॥
चंद्र-किरन शीतल भई, चकई पिय मिलन गई,
त्रिविध मंद चलत पवन पल्लव-द्रुम डोले ॥१॥
प्रात भानु प्रकट भयो, रजनीको तिमिर गयो
भृंग करत गुंज-गान कमलन दल खोले ॥२॥

ब्रह्मादिक धरत ध्यान, सुर नर मुनि करत गान,
जागनकी बेर भई नयन पलक खोले ॥३॥
तुलसिदास अति अनद निरखिके मुखारविंद।
दीननको देत दान भूषण बहुमोले ॥४॥

३०-७-१९३०

९१

(राग ललित—तीन ताल)

मेरो मन हरिजू! हठ न तजै।
निसदिन नाथ देऊँ सिख बहु विधि करत सुभाव निजै ॥
ज्यों जुवति अनुभवति प्रसव अति दारुन दुख उपजै।
ह्वै अनुकूल बिसारि सूल सठ पुनि खल पतिहिं भजै ॥
लोलुप भ्रमर गृह-पशु ज्यों जहँ तहँ सिर पदत्रान बजै।
तदपि अधम विचरत तेहि मारग, कबहुँ न मूढ लजै ॥
हौं हार्‌यो करि जतन विविध विधि अतिसै प्रबल अजै।
तुलसिदास बस होइ तबहिं जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥

३१-७-१९३०

९२

(राग खमाज—तीन ताल)

कुटुंब तजि शरण राम! तेरी आयो,
तजि गढ़ लंक, महल औ' मंदिर,
नाम सुनत उठि धायो ॥ध्रु०॥
भरी सभामें रावण बैठ्यो चरण प्रहार चलायो।
मूरख अंध कह्यो नहिं मानै बार बार समझायो ॥१॥
आवत ही लंका-पति कीनो, हरि हँस कंठ लगायो।
जन्म जन्मके मिटे पराभव राम-दरस जब पायो ॥२॥
हे रघुनाथ! अनाथके बंधु! दीन जान अपनायो।
तुलसिदास रघुवरकी शरणा भक्ति अभय पद पायो ॥३॥

१-८-१९३०

९३

(राग भैरवी—तीन ताल)

भज मन राम-चरण सुख-दाई ॥ध्रु०॥
जिहि चरननसे निकसी सुर-सरी संकर-जटा समाई।
जटासंकरी नाम पर्‌यो है, त्रिभुवन तारन आई ॥१॥

जिन चरननकी चरन-पादुका भरत रह्यो लव लाई।
सोई चरन केवट धोय लीने तब हरि नाव चलाई! ॥२॥
सोई चरन संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई।
सोई चरन गौतम-ऋषि-नारी परसि परम-पद पाई॥३॥
दंडक-वन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई।
सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक-मृगा सँग धाई॥४॥
कपि सुग्रीव बंधु-भय-व्याकुल तिन जय-छत्र धराई।
रिपुको अनुज विभीषण निसिचर परसत लंका पाई॥५॥
सिव-सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई।
तुलसिदास मारुत-सुतकी प्रभु निज मुख करत बड़ाई॥६॥

२-८-१९३०

९४

(राग गौड़ सारंग — तीन ताल)

अब लौं नसानी, अब न नसैहौं।
रामकृपा भवनिसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं॥
पायो नाम चारु चिंतामनि उर कर तें न खसैहौं।
स्याम रूप सुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहिं कसैहौं॥
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुपहिं प्रन करि, तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं॥

३-८-१९३०

९५

(राग पूर्वी — तीन ताल)

मन पछितै है अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाइ हरिपद भजु, करम, वचन अरु हीतें॥१॥
सहस-बाहु दस-वदन आदि नृप, बचे न काल बली तें।
हम हम करि धन-धाम सँवारे, अंत चले उठि रीते॥२॥
सुत-वनितादि जानि स्वारथ-रत, न करु नेह सब ही तें।
अंतहुँ तोहिं तजेंगे, पामर! तू न तजै अब ही तें॥३॥
अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़, त्यागु दुरासा जीतें।
बुझै न काम-अगिनि तुलसी कहुँ, विषय-भोग बहु घीतें॥४॥

४-८-१९३०

९६

(राग खमाज – तीन ताल)

माधव! मो समान जग माही।
सब विधि हीन मलीन दीन अति लीन विषय कोउ नाही ।।
तुम सम हेतु-रहित, कृपालु, आरत-हित, ईसहि त्यागी।
मैं दुख सोक विकल, कृपालु, केहि कारन दया न लागी ।।
नाहिन कछु अवगुन तुम्हार, अपराध मोर मैं माना।
ग्यान-भवन तनु दियहु नाथ सोउ पाय न मैं प्रभु जाना।
वेनु करील, श्रीखंड वसंतहि दूषन मृषा लगावै।
सार रहित हतभाग्य सुरभि पल्लव सो कहँ कहु पावै ।।
सब प्रकार मैं कठिन, मृदुल हरि, दृढ विचार जिय मोरे।
तुलसिदास प्रभु मोह सृंखला छुटिहि तुम्हारे छोरे ।।

९७

(राग कल्याण – तीन ताल)

कलि नाम कामतरु रामको।
दलनिहार दारिद दुकाल दुख
दोष घोर घन घामको ।।ध्रु०।।
नाम लेत दाहिनो होत मन
बाम विधाता बामको।
कहत मुनीस महेस महातम
उलटे सूधे नामको ।।
भलो लोक परलोक तासु
जाके बल ललित ललामको।
तुलसी जग जानियत नाम ते
सोच न कूच मुकामको ।।

५-८-१९३०

९८

जय राम रमा-रमन समनं।
भव-ताप-भयाकुल पाहि जन ।।
अवधेस, सुरेस, रमेस, विभो।
सरनागत मांगत पाहि प्रभो ।।
दस-सीस-विनासन वीस भुजा।
कृत दूरी महा-महि भूरि-रुजा ।।

रजनी-चर-वृन्द-पतंग रहे।
सर-पावक-तेज प्रचंड दहे॥
महि-मंडल-मंडन चारुतरं।
धृत-सायक-चाप-निषंग-वरं॥
मद-मोह-महाममता-रजनी।
तमपुंज दिवाकर-तेज-अनी॥
मनजात किरात निपात किये।
मृग लोभ कुभोग सरे न हिये॥
इति नाथ अनाथन्हि पाहि हरे।
विषयावन पाँवर भूलि परे॥
बहु रोग वियोगन्हि लोग हये।
भवद्-अंघ्रि-निरादर के फल ये॥
भव-सिन्धु अगाध परे नर ते।
पद-पंकज-प्रेम न जे करते॥
अति दीन मलीन दुखी नित ही।
जिन्हके पद-पंकज प्रीति नही॥
अवलंब भवंत-कथा जिन्हके।
प्रिय संत अनंत सदा तिन्हके॥
नहि राग न लोभ न मान मदा।
तिन्हके सम वैभव वा विपदा॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा।
मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥
करि प्रेम निरंतर नेम लिये।
पद-पंकज सेवित सुद्ध हिये॥
सम मानि निरादर आदर ही।
सब संत सुखी विचरंति मही॥
मुनि-मानस-पंकज-भृंग भजे।
रघुवीर महा-रन-धीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी।
भव-रोग-महा-मद-मान-अरी॥
गुनसील कृपा-परमायतनं।
प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं॥
रघुनंद! निकंदय द्वंद्वघनं।
महिपाल! विलोकय दीनजनं॥

६-८-१९३०

९९

तुलसी-बोध-मौक्तिक

परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
सुमति कुमति सबके उर बसही।
नाथ पुरान निगम अस कहही।।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।।

धन्य सो भूप नीति जो करई।
धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई।।
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा।
धन्य जन्म हरिभक्ति अभंगा।।

साधु चरित सुभ सरिस कपासू।
निरस विसद गुनमय फल जासू।।
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा।
बंदनीय जेहि जग जस पावा।।

जेहिके जेहि पर सत्य सनेहू।
सो तेहि मिलत न कछु सन्देहू।।

परहित बस जिनके मन माँही।
तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाही।।

रघुकुल-रीति सदा चलि आई।
प्राण जाय वरु वचन न जाई।।
नहिं असत्य सम पातक-पुंजा।
गिरि सम होई कि कोटिक गुंजा।।
सत्य मूल सब सुकृत सुहाये।
वेद-पुरान विहित मुनि गाये।।

मोसम दीन न दीन-हित
तुम समान रघुवीर।
अस विचारि रघु-वंश-मणि
हरहु विषम भव-पीर।।

७-८-१९३०

१००

(राग कल्याण—तीन ताल)

चरन-कमल बन्दौं हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै; अंधेको सब कछु दरसाई।।
बहिरो सुनै; मूक पुनि बोलै; रंक चलै सिर छत्र धराई।।
सूरदास स्वामी करुनामय बार-बार बन्दौं तेहि पाई।।

८-८-१९३०

१०१

(राग जयतिश्री—तीन ताल)

जैसे राखहु वैसे हि रहौं।
जानत दुःख सुख सब जनके तुम।
मुखतें कहा कहौं।।

कबहुँक भोजन लहौं कृपा-निधि,
कबहूँ भूख सहौं।
कबहुँक चढ़ौं तुरंग महा-गज,
कबहुँक भार बहौं।।

कमल-नयन घन-श्याम मनोहर,
अनुचर भयो रहौं।
सूरदास प्रभु भक्त-कृपानिधि,
तुम्हरे चरन गहौं।।

९-८-१९३०

१०२

(राग आसा—ताल दादरा)

दीनन दुख-हरन देव सन्तन हितकारी ।। ध्रु० ।।
अजामील गीध व्याध, इनमें कहो कौन साध।
पंछीको पद पढ़ात, गणिका-सी तारी ।। १ ।।
ध्रुवके सिर छत्र देत, प्रह्लादको उबार लेत।।
भक्त हेत बाँध्यो सेत, लंक-पुरी जारी ।। २ ।।
तंदुल देत रीझ जात, साग-पातसों अघात।
गिनत नहिं जूठे फल, खाटे मीठे खारी ।। ३ ।।

गजको जब ग्राह ग्रस्यो, दु:शासन चीर खस्यो।
सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी ॥४॥
इतने हरि आय गये, वसनन आरूढ भये।
सूरदास द्वारे ठाढो आँधरो भिखारी ॥५॥

१०-८-१९३०

१०३

(राग भैरवी—पजाबी ठेका, तीन ताल)

सुने री मैंने निर्बलके बल राम।
पिछली साख भरूँ संतनकी आडे सँवारे काम ॥ ध्रु० ॥
जबलग गज बल अपनो बरत्यो नेक सरो नहिं काम।
निर्बल ह्वै बल राम पुकार्यो आये आधे नाम॥
द्रुपद-सुता निर्बल भइ ता दिन गहलाये निज धाम।
दु:शासनकी भूजा थकित भई वसन रूप भये श्याम॥
अप-बल, तप-बल और बाहु-बल चौथा है बल दाम।
सूर किशोर कृपासे सब बल हारेको हरिनाम॥

११-८-१९३०

१०४

(राग खमाज—तीन ताल)

हम भक्तनके, भक्त हमारे।
सुन अर्जुन, परतिज्ञा मेरी, यह व्रत टरत न टारे॥
भक्तै काज लाज हिय धरिकै, पाइ पयादे धाऊँ।
जहँ जहँ भीर परै भक्तन पै, तहँ तहँ जाई छुडाऊँ॥
जो मम भक्तसों बैर करत है, सो निज बैरी मेरो।
देखि विचारि भक्त हितकारन हाँकत हौं रथ तेरो॥
जीते जीत भक्त अपने की हारे हार विचारी।
सूरदास सुनि भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन जारी॥

१०५

(राग काफी—ताल दीपचंदी)

अबकी टेक हमारी। लाज राखो गिरिधारी ॥ ध्रु० ॥
जैसी लाज राखी अर्जुनकी भारत-युद्ध मँझारी।
सारथि होके रथको हाँको चक्र-सुदर्शन-धारी॥
भक्तनकी टेक न टारी ॥ १ ॥

जैसी लाज राखी द्रौपदीकी होन न दीनि उघारी।
खैंचत खैंचत दोउ भुज थाके दुःशासन पचिहारी॥
चीर बढ़ायो मुरारी ॥ २॥

सूरदासकी लाज राखो, अब को है रखवारी?
राधे राधे श्रीवर प्यारो श्रीवृषभान-दुलारी।
शरण तक आयो तुम्हारी ॥ ३॥

१०६

(राग केदार--तीन ताल)

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमकहरामी ॥ ध्रु० ॥
भरि भरि उदर विषयको धावौं,
जैसे सूकर ग्रामी।
हरिजन छाँड़ हरी-बिमुखनकी
निसि-दिन करत गुलामी ॥ १॥

पापी कौन बड़ो है मोतें,
सब पतितनमें नामी।
सूर पतितको ठौर कहाँ है,
सुनिये श्रीपति स्वामी ॥ २॥

१२-८-१९३०

१०७

(राग सिंध-काफी--तीन ताल)

प्रभु! मोरे अवगुण चित न धरो।
सम-दरशी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो ही नीर भरो।
जब मिलकरके एक बरन भये सुरसरि नाम पर्‌यो॥
इक लोहा पूजामें राखत, इक घर बधिक पर्‌यो।
पारस गुण अवगुण नहिं चितवत, कंचन करत खरो॥
यह माया भ्रम-जाल कहावत सूरदास सगरो।
अबकी बेर मोहिं पार उतारो, नहिं, प्रन जात टरो॥

१३-८-१९३०

१०८

(राग गौरी – तीन ताल)

अँखियाँ हरि दरसनकी प्यासी।
देख्यो चाहत कमलनैनको
निसिदिन रहत उदासी॥ १॥
आये ऊधो फिरि गये आँगन
डारि गये गर फाँसी॥ २॥
केसरि-तिलक मोतिनकी माला
वृन्दावनको वासी॥ ३॥
काहूके मनकी कोऊ न जानत
लोगनके मन हाँसी॥ ४॥
सूरदास प्रभु! तुमरे दरस बिन
लेहौं करवत कासी॥ ५॥

१४-८-१९३०

१०९

(राग भीमपलासी – तीन ताल)

सबसे ऊँची प्रेम सगाई।
दुर्योधनको मेवा त्यागो साग विदुर घर पाई॥ ध्रु०॥
जूठे फल सबरीके खाये बहुविधि प्रेम लगाई॥
प्रेमके बस नृप-सेवा कीन्ही आप बने हरि नाई॥ १॥
राजसुयज्ञ युधिष्ठिर कीनो तामें जूठ उठाई॥
प्रेमके बस अर्जुन-रथ हाँक्यो भूल गये ठकुराई॥ २॥
ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन गोपिन नाच नचाई॥
सूर क्रूर इस लायक नाहीं कहँ लगि करौं बड़ाई॥ ३॥

१५-८-१९३०

११०

(राग-जोगी – तीन ताल)

अब मैं नाच्यो बहुत गोपाल।
काम क्रोधको पहिरि चोलना
कंठ विषयकी माल॥
महा मोहके नूपुर बाजत
निन्दा सब्द रसाल।
भरम भर्यो मन भयो पखावज
चलत कुसंगति चाल॥

तृस्ना नाद करत घट भीतर
नाना विधि दै ताल।
मायाको कटि फेटा बाँध्यो
लोभ तिलक दै भाल।।

कोटिक कला काछि दिखराई
जल-थल सुधि नहिं काल।
सूरदासकी सबै अविद्या
दूर करो नँदलाल।।

१६-८-१९३०

१११

(राग खमाज – विलंबित तीन ताल; पंजाबी ठेका)

अब तो प्रगट भई जग जानी।
वा मोहनसों प्रीति निरन्तर
नाहिं रहेगी छानी।। ध्रु०।।

कहा कहौं सुन्दर मूरत इन
नयन माँझ समानी।
निकसत नाहिं बहुत पचिहारी
रोम रोम उरझानी।। १।।

अब कैसे निर्वार जात है,
मिले दूध ज्यों पानी।
सूरदास प्रभु अन्तर्यामी
ग्वालिन मनकी जानी।। २।।

१७-८-१९३०

११२

(राग भैरवी – तीन ताल)

लज्जा मोरी राखो श्याम हरी!
कीनी कठिन दुःशासन मोसे गहि केशों पकरी।। ध्रु०।।
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नग्न करी।
पाँचों पांडव सब बल हारे तिनसों कछु न सरी।। १।।
भीष्म द्रोण विदुर भये विस्मय तिन सब मौन धरी।
अब नहिं मात पिता सुत बांधव, एक टेक तुम्हरी।। २।।

वसन प्रवाह किये करुणा-निधि, सेना हार परी।
सूर श्याम जब सिंह-शरण लइ स्यालोको काहि डरी ।। ३ ।।

१८-८-१९३०

११३

(राग कानड़ा—मत्त ताल)

दे पूतना विष रे अमृत पायो;
जो कछु दैयत सो फल पैयत नाहक वेदन गायो ।।ध्रु०।।
शतयज्ञ राजा बलि कीनो बाध पताल पठायो
लक्ष गऊ राजा नृगदीनी गिरगिट रूप करायो ।।१।।
रंक जन्मके मित्र सुदामा कचन धाम बनायो
सूरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेति कहि गायो ।।२।।

१९-८-१९३०

११४

(राग बागेश्री—ताल केरवा)

अबके नाथ! मोहि उधारि।
मग नही भव-अम्बु-निधिमें कृपा-सिधु मुरारि।।
नीर अति गभीर माया लोभ लहर तिरग।
लिये जात अगाध जलमें गहे ग्राह अनग।।
मीन इन्द्रिय अतिहि काटति मोट अघ सिर भार।
पग न इत उत धरन पावत उरझि मोह सिवार।।
काम क्रोध समेत तृस्ना पवन अति झकझोर।
नाहिं चितवन देत तिय सुत नाम नौका ओर।।
थक्यो बीच बिहाल बिह्वल सुनो करुना-मूल
श्याम! भुज गहि काढि लीजै सूर व्रजके कूल।

२०-८-१९३०

११५

(राग काफी—तीन ताल)

रे मन! मूरख जनम गँवायो।
करि अभिमान विषय-रस राच्यो स्याम-सरन नहिं आयो।।
यह ससार फूल सेमरको सुन्दर देखि भुलायो।
चाखन लाग्यो रुई गई उडि, हाथ कछू नहिं आयो।।
कहा भयो अबके मन सोचे, पहिले नाहिं कमायो।
कहत सूर भगवंत भजन बिनु सिर धुनि धुनि पछितायो।।

२१-८-१९३०

११६

(राग भूपाली – तीन ताल)

नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो ।। टेक ।।
तुम नाथनके नाथ सुवामी
दाता नाम तिहारो ।।
करमहीन, जनमको अंधो,
मोतें कौन नकारो ?
तीन लोकके तुम प्रति-पालक, मैं तो दास तिहारो।
तारी जाति कुजाति प्रभुजी, मोपर किरपा धारो ।। २ ।।
पतितन में इक नायक कहिये, नीचनमें सरदारो
कोटि पापी इक पासँग मेरे, अजामिल कौन बिचारो ।। ३ ।।
धरम नाम सुनि मेरो, नरक कियो हठ तारो
मोको ठौर नहीं अब कोऊ, अपनो बिरद सम्हारो ।। ४ ।।
छुद्र पतित तुम तारे रमापति, अब न करो जिय गारो
सूरदास साचो तब मानै, जो ह्वै मम निस्तारो ।। ५ ।।

२२-८-१९३०

११७

(राग दरबारी कानड़ा – तीन ताल)

घूंघटका पट खोल रे! तोको पीव मिलेगे।
घट घटमें वह साँईं रमता कटुक वचन मत बोल रे ।।
धन-जोबनको गरब न कीजै झूठा पचरँग चोल रे।
सुन्न महलमें दियना बारिले आसनसों मत डोल रे ।।
जाग जुगुतसों रंग-महलमें पिय पायो अनमोल रे।
कहै कबीर आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ।।

२३-८-१९३०

११८

(राग धनाश्री, भजन केरवाकी धुनमें)

साधो सहज समाध भली।
गुरु प्रताप जा दिनसे जागी,
दिन दिन अधिक चली ।। १ ।।
जहँ जहँ डोलौसे सो परिकरमा,
जो कछु करौं सो सेवा।
जब सोवौं तब करौं दंडवत,
पूजौं और न देवा ।। २ ।।

कहौं सो नाम, सुनौं सो सुमिरन
खावँ पियौं सो पूजा।
गिरह उजाड़ एक सम लेखौ
भाव मिटावौं दूजा ॥ ३ ॥

आँख न मूंदौं, कान न रूँधौं
तनिक कष्ट नहि धारौं
खुले नैन पहिचानों हँसि हँसि
सुन्दर रूप निहारी ॥ ४ ॥

सवद निरन्तरसे मन लागा,
मलिन वासना त्यागी।
ऊठत वैठत कवहुँ न छूटै
ऐसी तारी लागी ॥ ५ ॥

कह कवीर यह उनमुनि रहनी,
सो परगट करि गाई।
दुख सुखसे कोई परे परमपद,
तेहि पद रहा समाई ॥ ६ ॥

२४-८-१९३०

११९

(राग कालिंगडा—तीन ताल)

मन मस्त हुआ तव क्यों वोले ॥ टेक ॥
हीरा पायो गाँठ गठियायो।
वार वार वाको क्यो खोले? ॥ १ ॥

हलकी थी जव चढ़ी तराजू।
पूरी भई तव क्यो तोले? ॥ २ ॥

सुरत कलारी भई मतवारी।
मदवा पी गई विन तोले ॥ ३ ॥

हंसा पाये मान सरोवर।
ताल तलैया क्यो डोले? ॥ ४ ॥

तेरा साहिव है घट माँही
वाहर नैना क्यो खोले? ॥ ५ ॥

कहे कवीर सुनो भाई साधो।
साहिव मिल गये तिल ओले ॥ ६ ॥

२५-८-१९३०

१२०

(राग विंद्रावनी सारंग – तीन ताल (जलद) अथवा धुमाली)

रहना नहिं देस विराना है ॥ ध्रु० ॥
यह संसार कागदकी पुड़िया, बूँद पड़े घुल जाना है ॥
यह संसार काँटेकी वाड़ी, उलझ उलझ मरि जाना है ॥
यह संसार झाड़ औ' झाँखर, आग लगे वरि जाना है।
कहत **कबीर** सुनो भाई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है ॥

२६-८-१९३०

१२१

(राग कालिंगड़ा – तीन ताल)

मन लागो मेरो यार फकीरीमें।
जो सुख पावो राम भजनमें
सो सुख नाहिं अमीरीमें ॥ १ ॥
भला बुरा सबका सुनि लीजै
कर गुजरान गरीबीमें ॥ २ ॥
प्रेमनगरमें रहनि हमारी
भलि बनि आई सबूरीमें ॥ ३ ॥
हाथमें कूँडी, बगलमें सोटा
चारो दिसि जागीरीमें ॥ ४ ॥
आखिर यह तन खाक मिलेगा
कहा फिरत मगरूरीमें? ॥ ५ ॥
कहत **कबीर** सुनो भाई साधो
साहिब मिलै सबूरीमें ॥ ६ ॥

१२२

(राग भीमपलासी – तीन ताल)

समझ बूझ दिल खोज पियारे, आशक होकर सोना क्या? ॥ ध्रु० ॥
जिन नैनोंसे नींद गँवाई, तकिया लेफ बिछौना क्या? ॥ १ ॥
रूखा सूखा रामका टुकड़ा, चिकना और सलोना क्या? ॥ २ ॥
कहत **कमाल**[1] प्रेमके मारग, सीस दिया फिर रोना क्या? ॥ ३ ॥

२७-८-१९३०

१. गांधीजी द्वारा अनुवादमें इसे कबीरका माना गया है।

१२३

(राग केदार—तीन ताल)

तू तो राम सुमर जग लडवा दे ॥ ध्रु० ॥
कोरा कागज काली स्याही लिखत पढत वाको पढवा दे ॥१॥
हाथी चलत है अपनी गतमों, कुतर भुकत वाको भुकवा दे ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधु नरक पचत वाको पचवा दे ॥ ३ ॥

२८-८-१९३०

१२४

(राग भैरवी—ताल रूपक)

मन कर मोह तू, हरि-भजनको मान रे।
नयन दिये दरसन करनेको, श्रवण दिये सुन ज्ञान रे॥
वदन दिया हरिगुण गानेको, हाथ दिये कर दान रे॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, कंचन निपजत खान रे॥

२८-८-१९३०

१२५

(राग हमीर—तीन ताल)

गुरु बिन कौन बताये बाट? बड़ा विकट यमघाट ॥ध्रु०॥
भ्रान्तिकी पहाड़ी नदिया बिचमों। अहंकारकी लाट ॥१॥
काम क्रोध दो पर्वत ठाड़े। लोभ चोर सघात ॥२॥
मद मत्सरका मेह बरसत। माया पवन बहे दाट ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो। क्यों तरना यह घाट ॥४॥

२९-८-१९३०

१२६

(राग विहाग—तीन ताल)

नहीं छोडूं रे बाबा रामनाम,
मेरो और पढनसों नहीं काम ॥ध्रु०॥
प्रह्लाद पठाये पढन शाल,
संग सखा बहु लिये बाल।
मोको कहा पढावत आलजाल,
मेरी पटिया पै लिख देउ श्रीगोपाल ॥१॥

यह षंडामरके कह्यो जाय,
प्रह्लाद वुलाये वेग धाय।
तू राम कहनकी छोड़ वान,
तुझे तुरत छुड़ाऊँ कहो मान ।।२।।

मोको कहा सतावो वारवार,
प्रभु जल थल नभ कीन्हे पहार।
एक राम न छोडूं गुरुहि गार,
मोको घाल जार चाहे मार डार ।।३।।

काढ़ खड्ग कोप्यो रिसाय,
कहँ राखनहारो मोहिं वताय।
प्रभु खंभसे निकसे ह्वै विस्तार,
हरिणाकुश छेद्यो नख विदार ।।४।।

श्री परम-पुरुष देवाधिदेव,
भक्तहेत नरसिंह भेख।
कहे कबीर कोऊ लख न पार,
प्रह्लाद उवारे अनेक वार ।।५।।

३०-८-१९३०

१२७

(राग भैरवी – तीन ताल)

झीनी झीनी बिनी चदरिया ।।ध्रु०।।
काहे कै ताना, काहे कै भरनी
कौन तारसे बिनी चदरिया ।।
इंगला पिंगला ताना भरनी
सुषमन तारसे बिनी चदरिया ।।
आठ कँवल दस चरखा डोलै
पाँच तत्त, गुन तिनी चदरिया ।।
साँईंको सीयत मास दस लागै
ठोक ठोकके बिनी चदरिया ।।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी
ओढ़ीके मैली कीनी चदरिया ।।
दास कबीर जतनसे ओढ़ी
ज्योंकी त्यों धरि दीनी चदरिया ।।

३१-८-१९३०

१२८

(राग पीलू – दीपचंदी)

इस तन धनकी कौन बडाई
देखत नैनोमें मिट्टी मिलाई ।। ध्रु० ।।
अपने खातर महल बनाया ।
आपहि जा कर जगल सोया ।। १ ।।
हाड जले जैसे लकड़ीकी मोली
बाल जले जैसे घासकी पोली ।। २ ।।
कहत कबीर सुन मेरे गुनिया
आप मुवे पिछे डुब गई दुनिया ।। ३ ।।

१-९-१९३०

१२९

(राग खमाज – धुमाली)

भजो रे भैया राम गोविन्द हरी ।।ध्रु०।।
जप तप साधन कछु नहिं लागत
खरचत नहिं गठरी ।।१।।
संतत संपत सुखके कारण
जासे भूल परी ।।२।।
कहत कबीर जा मुख राम नहिं
वो मुख धूल भरी ।।३।।

२-९-१९३०

१३०

(राग आसावरी – दीपचदी)

मन ! तोहे केहि विध कर समझाऊँ ।।ध्रु०।।
सोना होय तो सुहाग मँगाऊँ, बंकनाल रस लाऊँ ।
ग्यान शब्दकी फूंक चलाऊँ, पानी कर पिघलाऊँ ।।१।।
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊँ, ऊपर जीन कसाऊँ ।
होय सवार तेरे पर बैठूं, चाबुक देके चलाऊँ ।।२।।
हाथी होय तो जंजीर गढ़ाऊँ, चारों पैर बँधाऊँ ।
होय महावत तेरे पर बैठूं, अंकुश लेके चलाऊँ ।।३।।
लोहा होय तो एरण मँगाऊँ, ऊपर धुवन धुवाऊँ ।
धूवनकी घनघोर मचाऊँ, जतर तार खिंचाऊँ ।।४।।
ग्यानी होय तो ज्ञान सिखाऊँ, सत्यकी राह चलाऊँ ।
कहत कबीर सुनो भाई साधू, अमरापुर पहुँचाऊँ ।।५।।

३-९-१९३०

१३१

(राग तिलक कामोद—तीन ताल)

पायो सतनाम गरे कै हरवा।
सांकर खटोलना रहनि हमारी,
दुवरे दुवरे पांच कहरवा॥
ताला कूंची हमैं गुरु दीनी
जब चाहौं तब खोलौं किवरवा॥
प्रेम प्रीतीकी चुनरि हमारी
जब चाहौं तब नाचौं सहरवा॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो।
बहुर न ऐवैं एही नगरवा॥

४-९-१९३०

१३२

(राग मालकौस—झपताल)

शूर संग्रामको देख भागै नहीं,
देख भागै सोई शूर नाहीं॥
काम औ' क्रोध, मद, लोभसे जूझना,
मँडा घममान तहँ खेत माही॥
शील औ' शौच, संतोष साही भये,
नाम समसेर तहँ खूब बाजे॥
कहै कबीर कोइ जूझि है शूरमा,
कायराँ भीड़ तहँ तुरत भाजै॥

५-९-१९३०

१३३

(राग आसावरी—दीपचन्दी)

ठाकुर तुम शरणाई आया।
उत्तरि गयो मेरे मनका संशा
जबते दरशन पाया॥ ध्रु०॥
अनबोलत मेरी बिरथा जानी
अपना नाम जपाया।
दुख नाठे सुख सहजि समाये
अनंद अनंद गुण गाया॥ १॥

बाँह पकरि कढ़ि लीने अखुने
गृह अंध कूपते माया।
कहु नानक गुरु बन्धन काटे
बिछुरत आनि मिलाया ।। २ ।।

६-९-१९३०

१३४

(राग मल्हार-तीन ताल)

साधो मनका मान त्यागो।
काम क्रोध सगत दुर्जनकी, ताते अहनिस भागो ।। ध्रु० ।।
सुख दुख दोनो सम करि जानै, और मान अपमाना।
हर्ष शोक ते रहै अतीता, तिन जग तत्त्व पिछाना ।। १ ।।
अस्तुति निन्दा दोऊ त्यागे, खोजै पद निरवाना।
जन नानक यह खेल कठिन है, कोऊ गुरु-मुख जाना ।। २ ।।

७-९-१९३०

१३५

(राग शंकरा–ताल तेवरा)

बिसर गई सब तात पराई।
जब ले साध-सगत मोहि पाई ।। ध्रु० ।।
ना को बैरी नाहि बिगाना,
सकल सगि हमको बनि आई ।। १ ।।
जो प्रभु कीन्हो सो भल मान्यो,
एक सुमति साधुन तें पाई ।। २ ।।
सब महँ रम रहिया प्रभु एकै,
पेखि पेखि नानक बिगसाई ।। ३ ।।

८-९-१९३०

१३६

(राग दुर्गा–ताल कहरवा)

रे मन! रामसो कर प्रीत ।। ध्रु० ।।
श्रवण गोविन्द-गुण सुनो
अरु गाउ रसना गीत ।। १ ।।
कर साधु-सगत सुमिर माधो
होय पतित पुनीत ।। २ ।।
काल व्याल ज्यो पर्यो डोलै
मुख पसारे मीत ।। ३ ।।

आजकल पुनि तौहि ग्रसिहै
समझ राखो चीत ।। ४ ।।
कहे नानक राम भज ले
जात अवसर बीत ।। ५ ।।

९-९-१९३०

१३७

(राग शंकरा – तीन ताल)

काहे रे। बन खोजन जाई।
सर्व-निवासी सदा अलेपा, तोही संग समाई ।। ध्रु० ।।
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, मुकुर माहि जस छाई।
तैसे ही हरि बसै निरंतर, घट ही खोजो भाई ।। १ ।।
बाहर भीतर एकै जानो, यह गुरु ज्ञान बताई।
जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटै न भ्रमकी काई ।। २ ।।

१०-९-१९३०

१३८

(राग कौशिया — विलंबित, तीन ताल)

सुमरन कर ले मेरे मना।
तेरि बिति जाति उमर, हरिनाम बिना ।। ध्रु० ।।
कूप नीर बिनु, धेनु छीर बिनु, धरती मेह बिना।
जैसे तरुवर फल बिन हीना, तैसे प्राणी हरिनाम बिना ।।
देह नैन बिन, रैन चन्द बिन, मन्दिर दीप बिना।
जैसे पंडित वेद बिहीना, तैसे प्राणी हरिनाम बिना ।।
काम क्रोध मद लोभ निहारो छाँड़ दे अब संतजना।
कहे नानकशा, सुन भगवंता या जगमें नहि कोइ अपना।

११-९-१९३०

१३९

(राग बिहाग – तीन ताल)

नाम जपन क्यों छोड़ दिया?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा,
सत्यवचन क्यों छोड़ दिया? ।। ध्रु० ।।
झूठे जगमें दिल ललचा कर
असल वतन क्यों छोड़ दिया?
कौड़ीको तो खूब सम्हाला
लाल रतन क्यों छोड़ दिया? ।। १ ।।

जिहि सुमिरनते अति सुख पावे
सो सुमिरन क्यो छोड़ दिया?
खालस इक भगवान भरोसे
तन, मन, धन क्यो छोड़ दिया? ।। २ ।।

१२-९-१९३०

१४०

(राग मुलतानी—तीन ताल)

मनकी मन ही माँहि रही।
ना हरि भजे न तीरथ सेवे
चोटी काल गही ।। ध्रु० ।।
दारा, मीत, पूत, रथ, संपति,
धन-जन-पूर्न मही।
और सकल मिथ्या यह जानो
भजना राम सही ।। १ ।।
फिरत फिरत बहुते जुग हार्यो
मानस देह लही।
नानक कहत मिलतकी बिरियाँ
सुमिरत कहा नही? ।। २ ।।

१३-९-१९३०

१४१

(राग तिलक कामोद—तीन ताल)

पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो ।। टेक ।।
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो ।। १ ।।
जनम जनमकी पूंजी पाई,
जगमें सभी खोवायो ।। २ ।।
खरचै न खुटै, वाको चोर न लूटै,
दिन दिन बढ़त सवायो ।। ३ ।।
सतकी नाव, खेवटिया सतगुरु,
भवसागर तर आयो ।। ४ ।।
मीरांके प्रभु गिरिधर नागर
हरख हरख जस गायो ।। ५ ।।

१४-९-१९३०

१४२

(राग देस या पूर्वी – तीन ताल)

नहिं ऐसो जन्म बारंबार।
क्या जानूं कछु पुन्य प्रकटे मानुसा अवतार ।। ध्रु० ।।
बढ़त पल पल, घटत छिन छिन, चलत न लागे वार।
विरछके ज्यों पात टूटे, लागे नहिं पुनि डार ।। १ ।।
भवसागर अति जोर कहिये विषम ओखी धार।
सुरतका नर बाँधे बेड़ा वेगि उतरे पार ।। २ ।।
साधु संता ते महंता चलत करत पुकार।
दासि मीरां लाल गिरिधर जीवना दिन चार ।। ३ ।।

१५-९-१९३०

१४३[1]

(राग तोड़ी – ताल तेवरा)

मन रे परसि हरिके चरण
सुभग शीतल कँवल कोमल त्रिविध ज्वाला हरण।
जिण चरण प्रह्लाद परसे इन्द्र पदवी धरण।।
जिण चरण ध्रुव अटल कीन्हें राखि अपनी सरण।
जिण चरण ब्रह्मांड भेंट्यो नखसिखाँ सीरी धरण।।
जिण चरण प्रभु परसि लीने तरी गोतम धरण।
जिण चरण कालीनाग नाथ्यो गोपी लीला करण।।
जिण चरण गोवर्धन धार्यो गर्व मघवा हरण।
दासि मीरा लाल गिरधर अगम तारण तरण।।

१६-९-१९३०

१४४

(राग झिंझोटी – ताल दादरा)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई, साधो, सकल लोक जोई।।ध्रु० ।।
भाई छोड़्या, बंधु छोड़्या, छोड़्या सगा सोई।
साधु संग बैठ बैठ लोक-लाज खोई ।। १ ।।
भगत देख राजी हुई, जगत देख रोई,
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम-बेलि बोई ।। २ ।।
दधि मथ घृत काढ़ि लियो, डार दई छोई।
राणा विषको प्यालो भेज्यो, पीय मगन होई ।। ३ ।।

१. डॉ० भुवनेश्वर मिश्र 'माधव' कृत ग्रन्थ मीराकी प्रेम साधना, पृष्ठ २५८ से उद्धृत।

अब तो वात फैल पडी, जाणे सब कोई।
मीरां एम लगण लागी, होनी होय सो होई।। ४।।

१७-९-१९३०

१४५

(राग मांड – ताल दादरा)

माई मैंने गोविन्द लीनो मोल। गोविन्द लीनो मोल।। ध्रु०।।
कोई कहे सस्ता, कोई कहे महँगा, लीनो तराजू तोल।। १।।
कोई कहे घरमें, कोई कहे वनमें, राधाके सग खिलोल।। २।।
मीरांके प्रभु गिरधर नागर, आवत प्रेमके डोल।। ३।।

१४६

(राग झिझोटी – खमाज – ताल धुमाली)

मेरे राणाजी, मैं गोविन्द-गुण गाना।। ध्रु०।।
राजा रूठे नगरी रक्खे अपनी, मैं हर रूठ्या कहाँ जाना ?।। १।।
राणे भेज्या जहर पियाला, मैं अमृत कह पी जाना।। २।।
डवियामें काला नाग भेजा, मैं शालग्राम कर जाना।। ३।।
मीरांवाई प्रेम-दीवानी, मैं सांवलिया वर पाना।। ४।।

१४७

(राग मालकस – तीन ताल)

मोरी लागी लटक गुरु-चरननकी।। ध्रु०।।
चरन विना मुझे कछु नही भावे,
झूठ माया सव सपननकी।। १।।
भवसागर सव सूख गया है,
फिकर नही मुझे तरननकी।। २।।
मीरां कहे प्रभु गिरिधर नागर!
उलट भई मोरे नयननकी।। ३।।

१४८

(राग अडाणा – ताल तेवरा)

हरि! तुम हरो जनकी भीर।। टेक।।
द्रौपदीकी लाज राखी,
तुम वढ़ायो चीर।। १।।
भक्त कारन रूप नरहरि,
धर्यो आप शरीर।। २।।
हरिनकश्यप मार लीन्हो,
धर्यो नाँहिन धीर।। ३।।

बूड़ते गजराज राख्यो,
किये वाहर नीर ॥ ४ ॥
दासि मीरां लाल गिरधर,
दुख जहाँ तहाँ पीर ॥ ५ ॥

१४९

(राग माँड – ताल धुमाली अथवा तेवरा)

म्हाँने चाकर राखो जी!
गिरिधारी लला! चाकर राखो जी ॥ टेक ॥
चाकर रहसूं, बाग लगासूं, नित उठ दरसन पासूं।
वृन्दावनकी कुंज गलिनमें, गोविन्द-लीला गासूं ॥ १ ॥
चाकरीमें दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची।
भाव-भगति जागीरी पाऊँ, तीनों वातां सरसी ॥ २ ॥
मोर मुकट, पीताम्वर सोहे, गल वैजंती माला।
वृन्दावनमें धेनु चरावे, मोहन मुरलीवाला ॥ ३ ॥
ऊँचे ऊँचे महल वनाऊँ, विच विच राखूं वारी।
साँवरियाके दरसन पाऊँ, पहिर कुसुम्वी सारी ॥ ४ ॥
जोगी आया जोग करनकूं, तप करने संन्यासी।
हरी-भजनकूं साधू आये, वृन्दावनके वासी ॥ ५ ॥
मीरांके प्रभु गहिर गँभीरा, हृदे रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हों, जमुनाजीके तीरा ॥ ६ ॥

१७-९-१९३०

१५०

(राग कौशिया –– तीन ताल)

निंदक वावा बीर हमारा
विन ही कौड़ी वहै विचारा ॥
कोटी कर्मके कल्मष काटै
काज सँवारै विनही साटै ॥
आपन डूवे और को तारै
ऐसा प्रीतम पार उतारै ॥
जुग जुग जीवौ निंदक मोरा
रामदेव! तुम करो निहौरा ॥
निंदक मेरा पर उपकारी
दादू निंदा करै हमारी ॥

१८-९-१९३०

१५१

(राग वागेश्री—तीन ताल)

अजहुँ न निकसै प्राण कठोर! ॥ टेक ॥
दरसन विना वहुत दिन वीते,
सुन्दर प्रीतम मोर ॥ १ ॥
चारि पहर चारौ जुग वीते,
रैनि गँवाई भोर ॥ २ ॥
अवधि गई अजहूँ नहिं आये,
कतहुँ रहे चितचोर! ॥ ३ ॥
कवहूँ नैन निरखि नहिं देखे,
मारग चितवत चोर ॥ ४ ॥
दादू ऐसे आतुर बिरहिणी,
जैसे चद चकोर ॥ ५ ॥

१९-९-१९३०

१५२

(राग कौशिया—तीन ताल)

प्रभुजी! तुम चदन, हम पानी।
जाकी अँग अँग बास समानी ॥ ध्रु० ॥
प्रभुजी, तुम घन वन, हम मोरा।
जैसे चितवत चद चकोरा ॥ १ ॥
प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती ।
जाकी जोति वरै दिन राती ॥ २ ॥
प्रभुजी, तुम मोती, हम धागा ।
जैसे सोनहि मिलत सुहागा ॥ ३ ॥
प्रभुजी, तुम स्वामी, हम दासा।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥ ४ ॥

२०-९-१९३०

१५३

(राग भैरवी—तीन ताल)

नरहरि! चचल है मति मेरी, कैसे भगति करूँ मै तेरी? ॥
तू मोहिं देखै, हौ तोहिं देखूं, प्रीति परस्पर होई ।
तू मोहिं देखै, तोहिं न देखूं, यह मति सब वुधि खोई ॥
सब घट अंतर रमसि निरतर, मैं देखन नहिं जाना ।
गुन सब तोर, मोर सब औगुन, कृत उपकार न माना ॥

मै तै तोरि मोरि असमझि सों कैसे करि निस्तारा?
कह **रैदास** कृष्ण करुणामय जै जै जगत-अधारा! ॥

२१-९-१९३०

१५४

(राग आसा-पहाड़ी, गजल धुन)

क्यों सोया ग़फलतका मारा, जाग रे नर जाग रे।
या जागे कोई जोगी भोगी, या जागे कोई चोर रे।
या जागे कोई संत पियारा, लगी रामसों डोर रे॥
ऐसी जागन जाग पियारे! जैसी ध्रुव प्रह्लाद रे।
ध्रुवको दीनी अटल पदवी, प्रह्लादको राज रे॥
मन है मुसाफ़िर, तनुका सरा बिच, तू कीता अनुराग रे।
रैनि बसेरा कर ले डेरा, उठ चलना परभात रे॥
साधु-संगत सतगुरुकी सेवा, पावे अचल सुहाग रे।
नितानन्द भज राम, गुमानी! जा़गत पूरन भाग रे॥

२२-९-१९३०

१५५

(राग बिभास – तीन ताल)

अकल कला खेलत नर ज्ञानी!
जैसे हि नाव हिरे फिरे दसों दिश,
ध्रुव तारे पर रहत निशानी॥ ध्रु०॥
चलन वलन अवनी पर वाकी
मनकी सुरत अकाश ठहरानी॥
तत्त्व-समास भयो है स्वतंतर
जैसे हिम होत है पानी॥ अकल०॥ १॥
छुपी आदि अन्त नहिं पायो
आइ न सकत जहाँ मन बानी॥
ता घर स्थिती भई है जिनकी
कहि न जात ऐसी अकथ कहानी॥ अकल०॥ २॥
अजब खेल अद्‌भुत अनुपम है
जाकू है पहिचान पुरानी॥
गगनहि गेब भया नर बोले
एहि **अखा** जानत कोई ज्ञानी॥ अकल०॥ ३॥

२३-९-१९३०

१५६

जाग जीव सुमरण कर हरिको, भोर भयो है भाई रे
सतगुरु ज्ञान विचार कहत है, चेतो राम दुहाई रे।।
ना कोई तेरो सजन सनेही, ना कोई बेन न भाई रे
जम की मार पडे जब रोवे तब तो कौन सहाई रे।।
मातपिता कुल लोग लुगाई स्वारथ मिले सगाई रे
सुमरण बिना संग नहि कोई, जीव अकेलो जाई रे।।
अघमोचन भवहरण मुरारी चरण सरण वड आई रे
सहजराम भज रामसनेही दुख मेटन सुखदाई रे।।

२४-९-१९३०

१५७

(राग भैरव—तीन ताल)

नद-भवनको भूषन माई
यशोदाको लाल, वीर हलधरको,
राधारमन परम सुखदायी ।। ध्रु० ।।
शिवको धन, संतनको सर्वस,
महिमा वेद-पुरानन गाई।
इन्द्रको इन्द्र, देव देवनको,
ब्रह्मको ब्रह्म, अधिक अधिकाई ।। १ ।।
कालको काल, ईश ईशनको,
अति हि अतुल तोल्यो नही जाई।
नन्ददासको जीवन गिरिधर,
गोकुल-गामको कुँवर कन्हाई ।। २ ।।

२५-९-१९३०

१५८

(राग बहार—ताल विलंबित—तीन ताल)

अब हौं कासों वैर करौं?
कहत पुकारत प्रभु निज मुखते।
"घट घट हौ विहरौं" ।। ध्रु० ।।
आपु समान सबै जग लेखौं।
भक्तन अधिक डरौं।।
श्रीहरिदास कृपाते हरिकी
नित निर्भय विचरौं ।। १ ।।

२६-९-१९३०

१५९

(राग देस – ताल तेवरा)

कोई वन्दो, कोई निन्दो, कोई कैसे कहो रे।
रघुनाथ साथे प्रीत बाँधी, होय तैसे होय रे ॥ ध्रु० ॥
कमल म्याने मोट बाँधी, नीर था भरपूर रे।
रामचन्द्रने कूर्म होकर राख लीनी पीठ रे ॥ १ ॥
चंद्र सूर्य जिमि ज्योत, स्तंभ बिनु आकाश रे।
जल ऊपर पाषाण तारे, क्यों न तारे दास रे? ॥ २ ॥
जपत शिव, सनकादि मुनिजन नारदादि संत रे।
जन्म जन्मके स्वामी रघुपति दास जनि जसवंत रे ॥ ३ ॥

२७-९-१९३०

१६०

(राग भैरवी – तीन ताल)

संत परम हितकारी, जगत माँही ॥ ध्रु० ॥
प्रभुपद प्रगट करावत प्रीति, भरम मिटावत भारी ॥ १ ॥
परम कृपालु सकल जीवन पर, हरि सम सब दुखहारी ॥ २ ॥
त्रिगुणातीत फिरत तन त्यागी, रीत जगतसे न्यारी ॥ ३ ॥
ब्रह्मानन्द संतनकी सोवत, मिलत है प्रगट मुरारी ॥ ४ ॥

२८-९-१९३०

१६१

(राग कालिंगड़ा – तीन ताल)

प्राणि! तू हरिसों डर रे। तू क्यों रहा निडर रे? ॥ ध्रु० ॥
ग़ाफ़िल मत रह चेत सवेरा मनमें राख फ़िकर रे
जो कुछ करे वेग ही कर ले, सिर पर काल ज़बर रे ॥ १ ॥
काले गोरे तन पर भूला, तन जायेगा जर रे
यमके दूत पकड़ करे घीसें, काढ़ें वहुत कसर रे ॥ २ ॥
हरि भज हरि भज हरि भज प्रानी, हरिको भजन तू कर रे
ब्रजकिशोर प्रभु-पद नौका चढ़, भवसागरको तर रे ॥ ३ ॥

२९-९-१९३०

१६२

(राग भैरवी – तीन ताल)

हे जग-त्राता, विश्व-विधाता,
हे सुख-शान्ति-निकेतन हे!
प्रेमके सिन्धो, दीनके बन्धो,
दुःख-दरिद्र-विनाशन हे! ॥ ध्रु० ॥

नित्य, अखंड, अनत, अनादि,
पूरण ब्रह्म, सनातन हे!
जग-आश्रय, जग-पति, जग-वदन,
अनुपम, अलख, निरजन हे!
प्राणसखा, त्रिभुवन-प्रतिपालक,
जीवनके अवलबन हे! ॥ १ ॥

३०-९-१९३०

१६३

(राग मालकस — झपताल)

धर्ममणि मीन, मर्यादमणि रामचद्र
रसिकमणि कृष्ण और तेजमणि नरहरि ॥ ॥ ध्रु० ॥
कण्ठमणि कमठ, वल-विपुलमणि वाराह,
छलनमणि वामन, देह विक्रमधरि ॥ १ ॥
गिरिनमणि कनकगिरि, उदधिनमणि क्षीरनिधि,
सरनमणि मानसर, नदिनमणि सुरसरी ॥ २ ॥
खगनमणि गरुड, द्रुमनमणि कल्पतरु
कपिनमणि हनुमान, पुरिनमणि अवधपुरी ॥ ३ ॥
सुभटमणि परशुधर क्रातमणि चक्रवर,
शक्तिमणि पार्वती, जान शंकरवरी ॥ ४ ॥
भक्तमणि प्रह्लाद, प्रेममणि राधिके
मणिनकी माल गुहि कठ कान्हार धरी ॥ ५ ॥

१-१०-१९३०

१६४

(राग विहाग – तीन ताल)

विसर न जाजो मेरे मीत, यह वर मांगूं मैं नीत ॥ ध्रु० ॥
मैं मतिमद कछू नहिं जानूं, नहिं कछु तुम सँग हीत।
वाँह गहेकी लाज है तुमको, तुम सँग मेरी जीत ॥ १ ॥
तुम रीझो ऐसो गुण नाही, अवगुणकी हूँ भीत।
अवगुण जानि विसारोगे जीवन, होऊँगी मैं बहुत फजीत ॥ २ ॥
मेरे दृढ भरोसो जियमें, तजिहौ न मोहन प्रीत।
जन अवगुण प्रभु मानत नाही, यह पूरबकी रीत ॥ ३ ॥
दीनवन्धु अति मृदुल सुभाऊ, गाऊँ निसिदिन गीत।
प्रेमसखी समझूं नहिं ऊँडी, एक भरोसो चीत ॥ ४ ॥

२-१०-१९३०

१६५

(राग भैरवी – तीन ताल)

हो रसिया, मैं तो शरण तिहारी,
नहिं साधन बल वचन चातुरी,
एक भरोसो चरणे गिरिधारी ॥ ध्रु० ॥
कडुइ तुंबरिया मैं तो नीच भूमिकी,
गुण-सागर पिया तुम हि सँवारी ॥ १ ॥
मैं अति दीन बालक तुम सरन,
नाथ न दीजे अनाथ बिसारी ! ॥ २ ॥
निज-जन जानि सँभालोगे प्रीतम,
प्रेम सखी नित जाऊँ बलिहारी ॥ ३ ॥

३-१०-१९३०

१६६

(राग सारंग – तीन ताल)

दरसन देना प्रान-पियारे !
नन्दलाला मेरे नैनोंके तारे ॥ ध्रु० ॥
दीनानाथ दयाल सकल गुण,
नवकिशोर सुन्दर मुखवारे ॥ १ ॥
मनमोहन मन रुकत न रोक्यो,
दरशनकी चित चाह हमारे ॥ २ ॥
रसिक खुशाल मिलनकी आशा,
निशिदिन सुमरन ध्यान लगारे ॥ ३ ॥

४-१०-१९३०

१६७

(राग बिहाग – तीन ताल)

चेतन ! अब मोहिं दर्शन दीजे।
तुम दर्शन शिव सुख पामीजे,
तुम दर्शन भव छीजे ॥ ध्रु० ॥
तुम कारन तप संयम किरिया, कहो कहाँ लौ कीजे ?
तुम दर्शन बिनु सब या झूठी, अंतर चित न भीजे ॥ १ ॥
क्रिया मूढमति कहे जन कोई, ज्ञान औरको प्यारो,
मिलत भाव रस दोउ न भाखे, तू दोनोंते न्यारो ॥ २ ॥
सबमें है और सबमें नाही, पूरन रूप अकेलो,
आप स्वभावे वे किम रमतो ? तू गुरु अरु तू चेलो ॥ ३ ॥

अकल अलख प्रभु ! तू सब रूपी, तू अपनी गति जाने,
अगम रूप आगम अनुसारे, सेवक सुजस बखाने ॥ ४ ॥

५-१०-१९३०

१६८

(राग धनाश्री -- तीन ताल)

अब हम अमर भये न मरेंगे।
या कारन मिथ्यात दियो तज, क्योंकर देह धरेंगे ? ॥ अब० ॥ १ ॥
राग दोष जग बंध करत है, इनको नाश करेंगे
मर्यो अनंत काल ते प्रानी, सो हम काल हरेंगे ॥ अब० ॥ २ ॥
देह विनाशी, हूँ अविनाशी, अपनी गति पकरेंगे।
नासी नासी हम थिरवासी, चोखे है निखरेंगे। ॥ अब० ॥ ३ ॥
मर्यो अनंत वार बिन समज्यो, अब सुख दुःख विसरेंगे।
आनन्दघन निपट निकट अक्षर दो, नही सुमरे सो मरेंगे। ॥ अब० ॥ ४ ॥

६-१०-१९३०

१६९

(राग केदार – तीन ताल)

राम कहो, रहमान कहो कोऊ, कान्ह कहो, महादेव री
पारसनाथ कहो, कोऊ ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयमेव री ॥ ध्रु० ॥
भाजन-भेद कहावत नाना, एक मृत्तिका रूप री
तैसे खंड कल्पनारोपित, आप अखंड सरूप री ॥ १ ॥
निजपद रमे राम सो कहिये, रहिम करे रहिमान री
कर्षे करम कान्ह सो कहिये, महादेव निर्वाण री ॥ २ ॥
परसे रूप पारस सो कहिये, ब्रह्म चिन्हे सो ब्रह्म री
इह विधि साधो आप आनन्दघन, चेतनमय निष्कर्म री ॥ ३ ॥

७-१०-१९३०

१७०

(राग छाया कालिंगडा -- तीन ताल)

बंधन काट मुरारी, हमरे बंधन काट मुरारी ॥ ध्रु० ॥
ग्राह गजराज लई जल भीतर, ले गयो अंबु मझारी
गजकी टेर सुनी यदुनन्दन, तजी गरुड-असवारी ॥ १ ॥
पांचाली प्रभु कारण मोटे, पग धायो गिरिधारी।
पट शठ खेंचत निकसत नाही, सकल सभा पचिहारी ॥ २ ॥
चरण स्पर्श परमपद पायो, गौतम ऋषिकी नारी
गणिका शबरी इन गति पाई, बैठ विमान सिधारी ॥ ३ ॥

सुन सुन सुयश सदा भक्तनको, मुख सो भजो इक बारी
विधिचंद दरशनको प्यासो, लीजिये सुरत हमारी ॥ ४ ॥

८-१०-१९३०

१७१

(राग तिलंग — तीन ताल)

मैं तो बिरद भरोसे बहुनामी।
सेवा सुमिरन कछुवे न जानूँ,
सुनियो परमगुरु स्वामी ॥ ध्रु० ॥
गज अरु गीध तारि है गणिका,
कुटिल अजामिल कामी ॥ १ ॥
यही साख श्रवणे सुनि आयो,
चरण-शरण सुखधामी ॥ २ ॥
प्रेमानन्द तारो के मारो,
समरथ अन्तरयामी ॥ ३ ॥

९-१०-१९३०

१७२

(राग ग़ज़ल)

अगर है शौक़ मिलनेका, तो हरदम लौ लगाता जा।
जलाकर खुदनुमाईको, भसम तन पर लगाता जा ॥
पकडकर इश्ककी झाड़ू, सफ़ा कर हिज्र-ए दिलको।
दुईकी धूलको लेकर, मुसल्ले पर उड़ाता जा ॥
मुसल्ला छोड़, तसबी तोड़, किताबें डाल पानीमें।
पकड़ दस्त तू फ़रिश्तोंका, ग़ुलाम उनका कहाता जा ॥
न मर भूखा, न रख रोज़ा, न जा मस्जिद, न कर सिजदा।
वज़ूका तोड़ दे कूज़ा, शराबे-शौक़ पीता जा ॥
हमेशा खा, हमेशा पी, न ग़फ़लतसे रहो इकदम।
नशेमें सैर कर अपनी, ख़ुदीको तू जलाता जा ॥
न हो मुल्ला, न हो बम्मन, दुईकी छोड़कर पूजा।
हुक्म है शाह कलंदरका, 'अनलहक़' तू कहाता जा ॥
कहे मंसूर मस्ताना, हक मैंने दिलमें पहचाना।
वही मस्तोंका मयख़ाना, उसीके बीच आता जा ॥

१०-१०-१९३०

१७३

(राग गजल)

है वहारे वाग दुनिया चंद रोज।
देख लो इसका तमाशा चंद रोज॥
ऐ मुसाफिर! कूचका सामान कर।
इस जहांमें है वसेरा चंद रोज॥
पूछा लुकमांसे, जिया तू कितने रोज?
दस्ते हसरत मलके वोला 'चद रोज'॥
वाद मदफन कब्रमे वोली कजा।
अव यहांपे सोते रहना चंद रोज॥
फिर तुम कहां औ' मै कहां, ऐ दोस्तो!
साथ है मेरा तुम्हारा चंद रोज॥
क्यों सताते हो दिले वेजुर्मको।
जालिमो, है ये जमाना चद रोज॥
याद कर तू ऐ नजीर कवरोंके रोज।
जिन्दगीका है भरोसा चद रोज॥

११-१०-१९३०

१७४

(राग गजल, सिंध काफी)

वस, अव मेरे दिलमें वसा एक तू है।
मेरे दिलका अव दिलरुवा एक तू है॥
फकत तेरे कदमोसे अय मेरे खालिक।
लगा अव मेरा ध्यान शामो सुवू है॥
मेरा दिल तो तुझसे हि पाता है तसकी।
वसी मग़ज़में प्रेमके तेरी वू है॥
समझते हैं यूं मुझको अकसर दिवाना।
तेरा जिक्र विरदे जवां कूवकू है॥
नही मुझको दुनयवी खुशवूसे उलफत।
तेरा प्रेम ही अव मेरा मुश्को वू है॥
रंगूं प्रेमसे तेरे दिलका ये चोला।
जिसे ज्ञानसे अव किया कुछ रफू है॥
न पाला पडे नफ्से शैतांसे मुझको।
तेरे दासकी अव यही आरजू है॥

१२-१०-१९३०

१७५

(राग ग़ज़ल, भैरवी)

अजब तेरा क़ानून देखा, खुदाया!
जहाँ दिल दिया फिर वही तुझको पाया।।
न याँ देखा जाता है मंदिर औ' मसजिद।
फ़क़त यह कि तालिब सिदक़ दिलसे आया।।
जो तुझपै फ़िदा हुआ एक वारी।
उसे प्रेमका तूने जलवा दिखाया।।
तेरी पाक सीरतका आशिक़ हुआ जो।
वही रँग रँगा फिर जो तूने रँगाया।।
है गुमराह, जिस दिलमें बाक़ी खुदी है।
मिला तुझसे जिसने खुदीको गँवाया।।
हुआ तेरे विश्वासीको तेरा दरसन।
गदाको दुरे बेबहा हाथ आया।।

१३-१०-१९३०

१७६

(राग अड़ाणा – ताल झुमरा)

नैया मेरी तनकसी, बोझी पाथर भार।
चहुँ दिसि अति भौरे उठत, केवट है मतवार।। ध्रु०।।
केवट है मतवार, नाव मँझधारहि आनी।
आँधी उठी प्रचंड, तेहुँ पर बरसत पानी!।। १।।
कह **गिरधर** कविराय, नाथ हो तुमहि खेवैया।
उठे दयाको डाँड, घाट पर आवे नैया।।२।।

१४-१०-१९३०

१७७

(राग आसावरी — तीन ताल)

कर ले सिंगार, चतुर अलबेली
साजनके घर जाना होगा।। ध्रु०।।
मिट्टी ओढवन, मिट्टी बिछावन,
मिट्टीसे मिल जाना होगा।।१।।
नहा ले, धो ले, सीस गुँथा ले,
फिर वहाँसे नहिं आना होगा।। कर।।२।।

१४-१०-१९३०

१७८

[गुजराती]

(राग खमाज – ताल धुमाली)

वैष्णव जन तो तेने कहीए, जे पीड पराई जाणे रे;
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे. ध्रु०
सकळ लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे;
वाच काछ मन निश्चळ राखे, धन धन जननी तेनी रे. १
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे;
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे. २
मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे;
रामनामशुं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेना तनमां रे. ३
वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे;
भणे **नरसैंयो** तेनुं दरसन करतां, कुळ एकोतेर तार्यां रे. ४

१५-१०-१९३०

१७९

मराठी भजन

(राग जोगीमांड – ताल कव्वाली)

जे का रंजले गांजले, त्यांसि म्हणे जो आपुले।
तोचि साधु ओळखावा, देव तेथेंचि जाणावा।।
मृदु सबाह्य नवनीत, तैसें सज्जनाचें चित्त।
ज्यासि आपंगिता नाहीं, त्यासि धरी जो हृदयीं।।
दया करणें जे पुत्रासी, तेचि दासा आणि दासी।
तुका म्हणे सांगों किती, तोचि भगवंताची मूर्ति।।

१८०

(राग पूर्वी अगर बिभास – ताल कवाली)

देव जवळी अंतरीं, भेटी नाहीं जन्म वेरी।
मूर्ति त्रैलोक्यीं संचली, दृष्टि विश्वाची चुकली।
भाग्यें आले संतजन, झालें देवाचें दर्शन।
रामदासीं योग झाला, देहीं देव प्रगटला।।

१८१

(राग पूर्वी – तीन ताल)

तें मन निष्ठुर कां केलें, जें पूर्ण दयेनें भरलें।।
गजेन्द्राचे हाकेसरिसें, धाउनियां आलें।
प्रह्लादाच्या भावार्थासी, स्तंभी गुरगुरलें।।
पांचाळीच्या करुणा-वचनें, कळवळुनी आलें।
एका जनार्दनीं पूर्ण कृपेनें निशिदिनिं पदी रमलें।।

१५-१०-१९३०

१८२

(राग केदार – ताल केरवा अगर धुमाळी)

पापाची वासना नको दावूं डोळां,
त्याहुनी अंधळा बराच मी।
निंदेचें श्रवण नको माझे कानी,
बधिर करोनि ठेवी देवा।
अपवित्र वाणी नको माझ्या मुखा,
त्याजहुनि मुका बराच मीं।
नको मज कधी परस्त्रीसंगति,
जनांतूनि माती उठतां भली।
तुका म्हणे मज अवघ्याचा कंटाला,
तूं एक गोपाळा आवडसी।।

१६-१०-१९३०

१८३

(राग खमाज – तीन ताल)

स्मरतां नित्य हरि, मग ती माया काय करी?
श्रवणें मननें अद्वय-वचनें, पळतो काळ दूरी।
करुणाकर वर-दायक हरि जो, ठेवित हात शिरीं।
तोचि निरंतर उद्धव-चरणी, अमृत पान करी।।

१७-१०-१९३०

१८४

(राग धनाश्री – तीन ताल)

सत-पदाची जोड, दे रे हरि! सतपदाची०
सत-समागमें आत्म-सुखाचा सुन्दर उगवे मोड।
सुफलित करुनी पूर्ण मनोरथ, पुरविसि जीविचे कोड।
अमृत म्हणे रे हरि-भक्ताचा शेवट करिसी गोड।।

१७-१०-१९३०

१८५

(राग झिंझोटी - ताल धुमाळी)

भाव धरा रे, अपुलासा देव करा रे।।
कोणी काय म्हणो या साठी, बळकट प्रेम असावे गाठी।
निंदा-स्तुति वर लावुनि काठी, मी-तू हरा रे-अपुलासा०
सकाम साधन सर्वहि सांडा, निष्कामे मुळ भजनी मांडा।
नाना कुतर्क वृत्तिसि दवडा, आलि जरा रे—अपुलासा०
दुर्लभ नरदेहाची प्राप्ति, पुन्हा न मिळे हा कल्पांती।
ऐसा विवेक आणुनि चित्ती, गुरुसि वरा रे- अपुलासा०
केसरिनाथ गुरुचे पायी, सृष्टी आजि बुडाली पाही।
शिवदिनि निश्चय दुसरा नाही, भक्त सखा रे-अपुलासा०

१८-१०-१९३०

१८६

(राग खमाज — तीन ताळ)

अशाश्वत संग्रह कोण करी?
कोण करी घर सोपे माड्या,
झोपडि हेंचि वरी।
चिरगुट चिंध्या जोडुनि कथा
गोधडी हेंचि वरी।
नित्य नवे जे देइल माधव
भक्षू तेंचि घरी।
अमृत म्हणे मज भिक्षा डोहळे
येति अशा लहरी।।

१९-१०-१९३०

१८७

(राग झिंझोटी — ताल दादरा)

हरि-भजनावीण काळ घालवूं नको रे।।
दोरिच्या सापा भिउनी भवा, भेटि नाहिं जिवा शिवा।
अंतरीचा ज्ञान-दिवा, मालवूं नको रे।।
विवेकाची ठरेल ओल, ऐसे बोलावे की बोल।
आपुलें मतें उगिच चिखल, कालवूं नको रे।
संत-संगतीनें उमज, आणुनि मनीं पुरतें समज।
अनुभवावीण मान हालवूं नको रे।।
सोहिरा म्हणे ज्ञान-ज्योति, तेथें कैंचि दिवस राती।
तयाविणें नेत्रपाती, हालवूं नको रे।।

२०-१०-१९३०

१८८

पवित्र तें कुळ पावन तो देश जेथें हरिचे दास जन्म घेती।
कर्मधर्म त्याचे जाला नारायण त्याचेनि पावन तिन्ही लोक।
वर्णअभिमानें कोण जाले पावन? ऐसें द्या सांगून मजपाशीं
अंत्यजादि योनि तरल्या हरिभजनें तयांचीं पुराणें भाट झाली।
वैश्य तुळाधार गोरा तो कुंभार धागा हा चांभार रोहिदास
कबीर मोमीन लतिफ मुसलमान सेना न्हावी आणि विष्णुदास।
कान्होपात्र खोदु पिंजारी तो दादू भजनी अभेदु हरिचे पायी।
चोखा मेळा बंका जातीचा महार त्यासी सर्वेश्वर ऐक्य करी
नामयाची जनी कोण तिचा भाव? जेवी पंढरीराव तियेसवें
मैराळ जनक कोण कुळ त्याचें? महिमान तयाचें काय सांगों?
यातायातिधर्म नाहीं विष्णुदासा निर्णय हा ऐसा वेदशास्त्री।
तुका म्हणे तुम्हीं विचारावे ग्रंथ
तारिले पतित नेणों किती।

२१-१०-१९३०

१८९

(राग छाया खमाज - ताल धुमाली)

नियम पाळावे, जरि म्हणविल योगी व्हावें ।। ध्रु० ।।
रसनेचा जो अंकित झाला, समूळ निद्रेला जो विकला,
तो नर योगाभ्यासा मुकला, असें समजावें - जरि०
रात्रीं निद्रा परिमित घ्यावी, भोजनांत ही मिति असावी,
शब्द-वल्गना बहु न करावी, साधक जीवें - जरि०

यापरि सकलाहार-विहारी, नियमित व्हावें मनिं अवधारी,
निज-रूपोन्मुख होउनी अंतरी, चित्त मग धावें - जरि०
विषयापासुनि वळता वृत्ति, येइल सहजचि आत्म्यावरती,
जैसा निश्चळ दीप निवाती, समाधि पावे - जरि०
बुद्धि-ग्राह्य अतीन्द्रिय सुख तें, वर्णाया श्रुति अक्षम त्यातें,
मग तें कैसें कृष्णसुतातें बोलतां यावे - जरि०

१९०

जेथें जातो तेथें तूं माझा सांगाती
चालविसी हाती धरूनिया।
चालो वाटे आम्ही तुझाचि आधार
चालविसी भार सर्वे माझा।
बोलों जातां बरळ करिसी तें नीट
नेली लाज धीट केलो देवा।
अवघे जन मज झाले लोकपाळ
सोईरे सकळ प्राणसखे।
तुका म्हणे आतां खेळतो कौतुकें
झालें तुझें सुख अतर्बाहीं॥

२२-१०-१९३०

१९१

(राग भैरवी—ताल कवाली)

न कळतां काय करावा उपाय
जेणें राहे भाव तुझ्या पायी ?
येउनियां वास करिसी हृदयी
ऐसें घडे कई कासयानें ?
साच भावे तुझें चिंतन मानसीं
राहे हें करिसी कै गा देवा ?
लटिकें हें माझें करूनियां दूरी
साच तू अंतरी येउनी राहें।
तुका म्हणे मज राखावें पतिता
आपुलिया सत्ता पांडुरंगा॥

१९२

मुक्ति-पांग नाही विष्णूचिया दासां
संसार ते कैसा न देखती।
बैसला गोविंद जडोनियां चित्ती
आदि तेचि अंती अवसानी।
भोग नारायणा देऊनी निराळी
ओवियां मंगळी तोचि गाती।
बळ बुद्धि त्यांची उपकारासाठी
अमृत तें पोटी सांठविलें।
दयावंत तरी देवाच सारिखी
आपुली पारकी नोळखती।
तुका म्हणे त्यांचा जीव तोचि देव
वैकुंठ तो ठाव वसती ते।।

२३-१०-१९३०

१९३

काय वाणूं आतां न पुरे हे वाणी
मस्तक चरणी ठेवीतसें।
थोरीव सांडिली आपुली परिसे
नेणें शिवों कैसें लोखंडासी।
जगाच्या कल्याणा संतांच्या विभूति
देह कष्टविती उपकारें।
भूतांची दया हें भांडवल संतां
आपुली ममता नाही देही।
तुका म्हणे सुख पराचिया सुखें
अमृत हें मुखें स्रवतसे।।

१९४

नाही संतपण मिळत तें हाटी
हिंडतां कपाटी रानीं वनी।
नये मोल देतां धनाचिया राशी
नाही तें आकाशी पाताळी तें।
तुका म्हणे मिळे जीवाचीये साटी
नाही तरी गोष्टी बोलों नये।।

२४-१०-१९३०

१९५

भक्त ऐसे जाणा जे देही उदास
गेले आशापाश निवारूनी।
विषय तो त्याचा झाला नारायण
नावडे धन जन मातापिता।
निर्वाणी गोविंद असे मागेंपुढें
काहीच साकडें पडो नेदी।
तुका म्हणे सत्य कर्मा व्हावे साह्य
घातलिया भय नर्का जाणें।।

१९६

वेद अनत बोलिला, अर्थ इतुकाचि साधिला।
विठोबासी शरण जावे, निजनिष्ठें नाम गावे।
सकळ शास्त्राचा विचार, अती इतुकाचि निर्धार।
अठरा पुराणी सिद्धात, तुका म्हणे हाचि हेत।।

२५-१०-१९३०

१९७

आणीक दुसरे मज नाही आतां
नेमिले या चित्तापासुनिया।
पाडुरग ध्यानी, पाडुरग मनी,
जागृती स्वपनी पाडुरग।
पडिले वळण इद्रिया सकळा
भाव तो निराळा नाही दुजा।
तुका म्हणे नेत्री केली ओळखण
तटस्थ तें ध्यान विटेवरी।।

१९८

न मिळो खावया, न वाढो सतान,
परि हा नारायण कृपा करो।
ऐसी माझी वाचा मज उपदेशी
आणीक लोकासी हेचि सांगे।

विटंबो शरीर, होत कां विपत्ती
परि राहो चित्ती नारायण।
तुका म्हणे नाशिवंत हे सकळ
आठवे गोपाळ तेंचि हित॥

२६-१०-१९३०

१९९

महारासी शिवे, कोपे ब्राह्मण तो नव्हे।
तया प्रायश्चित्त कांहीं, देहत्याग करितां नाही।
नातळे चांडाळ, त्याचा अंतरीं विटाळ।
ज्याचा संग चित्तीं, तुका म्हणे तो त्या याती॥

२००

(राग वडहंस-ताल धुमाली)

देह जावो अथवा राहो
पांडुरंगीं दृढ़ भावो।
चरण न सोडी सर्वथा
आण तुझी पंढरिनाथा।
वदनीं तुझें मंगल नाम
हृदयीं अखंडित प्रेम।
नामा म्हणे केशवराजा
केला पण चालवि माझा॥

२७-१०-१९३०

२०१

पुण्य पर-उपकार, पाप ते पर-पीडा,
आणिक नाहीं जोडा दुजा यासी।
सत्य तोचि धर्म, असत्य तें कर्म,
आणिक हें वर्म नाहीं दुजें।
गति तेचि मुखीं नामाचें स्मरण,
अधोगति जाण विन्मुखता।
संतांचा संग तोचि स्वर्गवास,
नर्क तो उदास अनर्गळ।
तुका म्हणे उघडें आहे हित घात,
जया जें उचित करा तैसें॥

२०२

(राग भैरवी—ताल कवाली)

शेवटीची विनवणी सतजनी परिसावी।
विसर तो न पडावा माझा देवा तुम्हासी।
आता फार बोलो काई अवघें पाया विदीत।
तुका म्हणे पडिलो पायी, करा छाया कृपेची।।

२०३

हेंची दान देगा देवा, तुझा विसर न व्हावा।
गुण गाईन आवडी, हेचि माझी सर्व जोडी।
नलगे मुक्ति धन सपदा, सत-सग देई सदा।
तुका म्हणे गर्भवासी, सुखें घालावे आम्हासी।।

२८-१०-१९३०

२०४

बंगाली भजन

(राग भैरवी—ताल दादरा या राग आसावरी—द्रुत एक ताल)

अन्तर मम विकसित करो अन्तरतर हे।
निर्मल करो, उज्ज्वल करो, सुन्दर करो हे—अन्तर०
जाग्रत करो, उद्यत करो, निर्भय करो हे,
मंगल करो, निरलस नि.संशय करो हे—अन्तर०
युक्त करो हे सवार सगे, मुक्त करो हे बध,
संचार करो सकल कर्मे शान्त तोमार छद—अन्तर०
चरण-पद्मे मम चित्त निप्पदित करो हे,
नदित करो, नदित करो, नदित करो हे—अन्तर०

२०५

वहे निरन्तर अनत आनन्दधारा
वाजे असीम नभ माझे अनादि रव
जागे अगण्य रवि-चन्द्र-तारा—वहे०
एकक अखण्ड ब्रह्माण्ड राज्ये
परम एक सेइ राज-राजेन्द्र राजे
विस्मित निमेप-हृत विश्व-चरणे विनत
लक्ष शत भक्त-चित्त वाक्यहारा—वहे०

२९-१०-१९३०

२०६

(राग अडाणा — ताल झपताल)

तुमि बधु, तुमि नाथ,
निशिदिन तुमि आमार;
तुमि सुख, तुमि शान्ति,
तुमि हे अमृत पाथार. ध्रु०
तुमिइ तो आनन्दलोक,
जुडाओ प्राण, नाशो शोक;
तापहरण तोमार चरण,
असीम शरण दीनजनार. तुमि०

[३०-१०-१९३०][1]

२०७

एकटि नमस्कारे प्रभु! एकटि नमस्कारे
सकल देह लुटिये पडूक् तोमार ए संसारे।
घन श्रावण मेघेर मत रसेर भारे नम्र नत
एकटि नमस्कारे प्रभु! एकटि नमस्कारे
समस्त मन पडिया थाक् तव भवन-द्वारे।
नाना सुरेर आकुल धारा मिलिये दिये आत्म-हारा
एकटि नमस्कारे प्रभु! एकटि नमस्कारे
समस्त गान समाप्त होक् नीरव पारावारे।
हंस जेमन मानस-यात्री, तेमनि सारा दिवस-रात्री
एकटि नमस्कारे प्रभु! एकटि नमस्कारे
समस्त प्राण उडे चलुक् महा-मरण पारे।।

[३०-१०-१९३०]

२०८

गुजराती भजन

(राग खमाज — ताल धुमाली)

भूतळ भक्ति पदारथ मोटु, ब्रह्म-लोकमां नाहि रे;
पुण्य करी अमरापुरी पाम्या, अन्ते चोराशी मांही रे. ध्रु०
हरिना जन तो मुक्ति न मागे, मागे जन्मो-जनम अवतार रे
नित सेवा, नित कीर्तन ओच्छव, नीरखवा नन्दकुमार रे. १

१. साधन-सूत्रमें कोई तिथि नहीं दी गई है। लेकिन इसका और इसके बादवाले भजनका अनुवाद सम्भवतः इसी तारीखको हुआ था।

भरतखंड भूतळमां जनमी, जेणे गोविन्दना गुण गाया रे,
धन धन रे एना मातपिताने, सफळ करी एणे काया रे. २
धन वृन्दावन, धन ए लीला, धन ए व्रजना वासी रे;
अष्ट महासिद्धि आगणिये रे ऊभी, मुक्ति छे एमनी दासी रे. ३
ए रसनो स्वाद शकर जाणे, के जाणे शुकजोगी रे,
कईएक जाणे व्रजनी रे गोपी, भणे **नरसैंयो** भोगी रे. ४

३१-१०-१९३०

२०९

(राग खमाज — ताल धुमाली)

नारायणनु नाम ज लेता वारे तेने तजीए रे;
मनसा वाचा कर्मणा करीने लक्ष्मीवरने भजीए रे. ध्रु०
कुळने तजीए, कुटुम्बने तजीए, तजीए मा ने बाप रे;
भगिनी सुत दाराने तजीए, जेम तज कचुकी साप रे. १
प्रथम पिता प्रह्लादे तजियो, नव तजियु हरिनु नाम रे;
भरत शत्रुघ्ने तजी जनेता, नव तजिया श्रीराम रे. २
ऋषि-पत्नीए श्रीहरि काजे, तजिया निज भरथार रे,
तेमा तेनु कईये न गयु, पामी पदारथ चार रे. ३
व्रज-वनिता विठ्ठलने काजे, सर्व तजीने चाली रे;
भणे **नरसैंयो** वृन्दावनमा, मोहन साथे महाली रे. ४

१-११-१९३०

२१०

(राग आसा – माड — ताल झपताल)

समरने श्रीहरि, मेल ममता परी,
जोने विचारीने मूळ तारु;
तु अल्या कोण ने कोने वळगी रह्यो ?
वगर समज्ये कहे मारु मारुं. १
देहतारी नथी, जो तु जुगते करी,
राखता नव रहे निश्चे जाये;
देहसबध तज्ये अवनवा बहु थशे,
पुत्र कलत्र परिवार बहाये. २
धन तणु ध्यान तु अहोनिश आदरे,
ए ज तारे अतराय मोटी;
पासे छे पियु अल्या, तेने नव परखियो,
हाथथी बाजी गई, थयो रे खोटी. ३

भरनिद्रा भर्यो रूंधी घेर्यो घणो,
　　संतना शब्द सुणी कां न जागे?
न जागतां नरसैंयो लाज छे अति घणी,
　　जनमो-जनम तारी खात भागे. ४

२-११-१९३०

२११

(राग आसा-मांड – ताल झपताल)

अखिल ब्रह्मांडमां एक तुं श्रीहरि,
　　जूजवे रूपे अनंत भासे;
देहमां देव तुं, तेजमां तत्त्व तुं,
　　शून्यमां शब्द थई वेद वासे. १
पवन तुं, पाणी तुं, भूमि तुं, भूधरा,
　　वृक्ष थई फूली रह्यो आकाशे;
विविध रचना करी अनेक रस लेवाने,
　　शिव थकी जीव थयो ए ज आशे. २
वेद तो एम वदे, श्रुति-स्मृति साख दे –
　　कनक कुण्डल विषे भेद न्होये;
घट घडिया पछी नामरूप जूजवां,
　　अंते तो हेमनु हेम होये. ३
वृक्षमां बीज तुं, बीजमां वृक्ष तुं,
　　जोउं पटंतरो ए ज पासे;
भणे नरसैंयो ए मन तणी शोधना,
　　प्रीत करुं प्रेमथी प्रगट थाशे. ४

३-११-१९३०

२१२

(राग आसा-मांड – ताल झपताल)

ज्यां लगी आतमा-तत्त्व चीन्यो नहि
　　त्यां लगी साधना सर्व जूठी,
मानुषा-देह तारो एम एळे गयो
　　मावठानी जेम वृष्टि वूठी. १
शुं थयुं स्नान पूजा ने सेवा थकी,
　　शुं थयुं घेर रही दान दीधे?
शुं थयुं धरी जटा भस्म लेपन कर्ये,
　　शुं थयुं वाळ लोचंन कीधे? २

शु थयु तप ने तीरथ कीधा थकी,
शु थयु माळ ग्रही नाम लीधे ?
शु थयु तिलक ने तुळसी धार्या थकी,
शुं थयु गंगजल पान कीधे ? ३
शुं थयुं वेद व्याकरण वाणी वद्ये,
शु थयु राग ने रग जाण्ये ?
शु थयुं खट दरशन सेव्या थकी,
शु थयु वरणना भेद आण्ये ? ४
ए छे परपच सहु पेट भरवा तणा,
आतमाराम परिब्रह्म न जोयो;
भणे नरसंयो के तत्व-दर्शन विना
रत्न-चितामणि जन्म खोयो. ५

४-११-१९३०

२१३

(राग आसा-माड — ताल झपताल)

जे गमे जगत-गुरु देव जगदीशने
ते तणो खरखरो फोक करवो;
आपणो चितव्यो अर्थ काई नव सरे,
ऊगरे एक उद्वेग धरवो. १
हु करु, हु करु, ए ज अज्ञानता
शकटनो भार जेम श्वान ताणे;
सृष्टि मडाण छे सर्व एणी पेरे
जोगी जोगेश्वरा कोईक जाणे. २
नीपजे नरथी तो कोई ना रहे दुखी
शत्रु मारीने सौ मित्र राखे;
राय ने रक कोई दृष्टे आवे नहि,
भवन पर भवन पर छत्र दाखे. ३
ऋतु लता पत्र फळ फूल आपे यथा,
मानवी मूर्ख मन व्यर्थ शोचे;
जेहना भाग्यमा जे समे जे लख्युं
तेहने ते समे ते ज पहोचे. ४
ग्रन्थ गरबड करी वात न करी खरी
जेहने जे गमे तेने पूजे,
मन कर्म वचनथी आप मानी लहे
सत्य छे ए ज मन एम सूझे. ५

सुख संसारी मिथ्या करी मानजो
कृष्ण विना वीजुं सर्व काचुं;
जुगल कर जोडी करी नरसैंयो एम कहे,
जन्म प्रतिजन्म हरिने ज जाचुं. ६

५-११-१९३०

२१४

(राग आसा-मांड—ताल झपताल)

जागीने जोउं तो जगत दीसे नहि,
ऊंघमां अटपटा भोग भासे;
चित्त चैतन्य विलास तद्रूप छे,
ब्रह्म लटकां करे ब्रह्म पासे. १

पंच महाभूत परिब्रह्म विषे ऊपज्यां,
अणु अणु मांही रह्यां रे वळगी;
फूल ने फळ ते तो वृक्षनां जाणवां,
थड थकी डाळ ते नहि रे अळगी. २

वेद तो एम वदे, श्रुति-स्मृति साख दे—
कनक कुण्डल विषे भेद न्होये;
घाट घडिया पछी नामरूप जूजवां
अंते तो हेमनु हेम होये. ३

जीव ने शिव तो आप इच्छाए थया
रची परपंच चौद लोक कीधा;
भणे नरसैंयो ए, 'ते ज तुं,' 'ते ज तुं'
एने समर्याथी कंई संत सीध्या. ४

६-११-१९३०

२१५

(राग आसा-मांड—ताल झपताल)

ध्यान धर हरि तणुं अल्पमति आळसु
जे थकी जन्मनां दुःख जाये,
अवर धंधो कर्मे अरथ कांई नवसरे
माया देखाड़ीने मृत्यु वहाये ॥ १ ॥

सकल कल्याण श्रीकृष्णना चरणमां
शरण आवे सुख पार न्हाये,
अवर वेपार तुं मेल मिथ्या करी
कृष्णानुं नाम. तुं राख मोये ॥ २ ॥

पटक माया परी, अटक चरणे हरि
वटक मा वात सुणता ज साची,
आगनु भवन आकाश सुधि रच्युं
मूढ ! ए मूळथी भीत काची। ॥ ३ ॥
सरस गुण हरि तणा जे जनो अनुसर्या
ते तणा सुजश तो जगत बोले
नरसैंयो रकनी प्रीत प्रभुशु घणी
अवर वेपार नहि भजन तोले ॥ ४ ॥

७-११-१९३०

२१६

(राग आसा-माड—तीन ताल)

जूनु तो थयु रे देवळ जूनु तो थयु,
मारो हसलो नानो ने देवळ जूनु तो थयु. ध्रु०
आ रे काया रे हसा, डोलवाने लागी रे,
पडी गया दात, मायली रेखु तो रह्यु. मारो०
तारे ने मारे हसा, प्रीत्यु बधाणी रे,
ऊडी गयो हस, पाजर पडी रे रह्यू. मारो०
बाई मीरां कहे छे प्रभु गिरिधरना गुण,
प्रेमनो प्यालो तमने पाउ ने पीउ मारो०

८-११-१९३०

२१७

(राग कालिंगड़ा—ताल दीपचंदी)

नही रे विसारु हरि, अतरमाथी नही रे० ध्रु०
जल जमुनाना पाणी रे जाता
शिर पर मटकी धरी. १
आवता ने जातां मारग वच्चे
अमूलख वस्तु जडी. २
आवता ने जाता वृन्दा रे वनमां
चरण तमारे पडी. ३
पीळा पीताम्बर जरकशी जामा
केसर आड करी ४
मोर मुगट ने काने रे कुडल
मुख पर मोरली धरी. ५

बाई मीरां कहे प्रभु गिरिवरना गुण
विठ्ठलवरने वरी. ६

९-११-१९३०

२१८

(राग झिंझोटी – तीन ताल)

बोल मा, बोल मा, बोल मा, रे
राधा-कृष्ण विना बीजुं बोल मा. ध्रु०
साकर शेलडीनो स्वाद तजीने
कडवो लीमडो घोळ मा रे. १
चांदा सूरजनुं तेज तजीने
आगिया संगाते प्रीत जोड मा रे. २
हीरा माणेक झवेर तजीने
कथीर संगाते मणि तोळ मा रे. ३
मीरां कहे प्रभु गिरिवर नागर
शरीर आप्युं समतोळमां रे. ४

१०-११-१९३०

२१९

(राग काफी – ताल द्रुत–दीपचंदी)

मुखडानी माया लागी रे,
मोहन प्यारा! ध्रु०
मुखडुं में जोयुं तारुं, सर्व जग थयुं खारुं,
मन मारुं रह्युं न्यारुं रे, मोहन०
संसारीनुं सुख एवुं, झांझवानां नीर जेवुं,
तेने तुच्छ करी फरीए रे, मोहन०
मीरांबाई बलिहारी, आशा मने एक तारी,
हवे हुं तो वडभागी है, मोहन०

११-११-१९३०

२२०

(राग आसावरी — तीन ताल)

वैष्णव नथी थयो तुं रे, शीद गुमानमां घूमे
हरिजन नथी थयो तुं रे. टेक
हरिजन जोई हैडुं नव हरखे, द्रवे न हरिगुण गातां,
काम दाम चटकी नथी पटकी, क्रोधे लोचन रातां. १

तुज सगे कोई वैष्णव थाये, तो तु वैष्णव साचो,
तारा सगनो रग न लागे, ताहा लगी तु काचो. २
परदु:ख देखी हृदे न दाझे, परनिंदा नथी डरतो,
वहाल नथी विठ्ठलशु साचु, हठे न हु हु करतो. ३
परोपकारे प्रीत न तुजने, स्वारथ छूटचो छे नही,
कहेणी तेवी रहेणी न मळे, काहा लख्यु एम कहेनी. ४
भजवानी रुचि नथी मन निश्चे, नथी हरिनो विश्वास,
जगत तणी आशा छे जाहा लगी, जगत गुरु, तु दास. ५
मन तणो गुरु मन करेश तो, साची वस्तु जडशे,
दया दुःख के सुख मान पण, साचु कहेवु पडशे. ६

१२-११-१९३०

२२१

(राग हिंडोल — ताल तेवरा)

हरि, जेवो तेवो हु दास तमारो
करुणासिंधु, ग्रहो कर मारो. टेक
गाडाना साथी शामळिया, छो वगडचाना वेली,
शरण पड्यो सन्त अमित कुकरमी, तदपि न मूको ठेली. १
निज जन जूठानी जाती लज्जा, राखो छो श्रीरणछोड,
सन्त-भाग्यने सफळ करो छो, पूरो वरद बळ कोड. २
अवळनु सवळ करो सुन्दर-वर, ज्यारे जन जाय हारी,
अयोग्य योग्य, पतित करो पावन, प्रभु दु:ख-दुष्कृतहारी. ३
विनति विना रक्षक निज जनना, दोष तणा गुण मानो,
स्मरण करता सकट टाळो, गणो न मोटो नानो. ४
विकळ पराधीन पीडा प्रजाळो, अतरनु दु:ख जाणो,
आरत-बन्धु सहिष्णु अभयकर, अवगुण उर नव आणो. ५
सर्वेश्वर सर्वात्मा स्वतत्र, दया प्रीतम गिरिधारी,
शरणागत-वत्सल श्रीजी मारे, मोटी छे ओथ तमारी. ६

१३-११-१९३०

२२२

(राग बिलावल — झपताल)

महाकष्ट पाम्या विना कृष्ण कोने मळ्या ?
चारे जुगना जुओ साधु शोधी
वहाल वैष्णव विषे विरलाने होय बहु
पीड नारा ज भक्ति विरोधी ॥ ध्रु० ॥

ध्रुवजी, प्रह्लादजी, भीष्म, बलि, विभीषण
विदुर, कुन्ती कुंवर सहित दुखियां
वसुदेव देवकी, नंदजी, पशुपति
सकळ व्रजभक्त दुःखी भक्त मुखिया ॥ १ ॥

नळ दमयन्ती, हरिश्चंद्र तारामती,
रुक्मांगद अंबरीपादि कष्टी
नरसिंह महेतो ने जयदेव मीरा जनी
प्रथम पीडा पछी सुखनी वृष्टि ॥ २ ॥

व्यास आधि व्याधि तुलसी मधवादिक
शिव कपाली विधा विश्व निन्दे,
जग जननी जानकी दुःख दुस्तर सह्युं
पाप वण ताप, जेने जगत वंदे ॥ ३ ॥

संचित क्रियमाण प्रारब्ध जेने नथी
तेने भय ताप आवी नडे छे,
अकल गत ईश हेतु न समज्युं पड़े
प्रवल इच्छा सरव ते पड़े छे ॥ ४ ॥

छे कथन मात्र पाप ने पुण्य बे।
नचव्युं नंदकुंवरनुं जगत नाचे
दया प्रीतम रुचि विना पत्र हाले नहि
पण न भागे भ्रमण मनकाचे ॥ ५ ॥

१४-११-१९३०

२२३

(राग धीरानी काफ़ी)

भटकता भवमां रे, गया काल कोटी वही
हद थई हावां रे, राखो हरि हाथ ग्रही ॥ टेक ॥

आव्यो शरण त्रितापनो दाझयो, शीतल कीजे श्याम
करगरी कहूं छुं, कृष्ण कृपानिधि ! राखो चरणे सुखधाम
करुणा कटाक्षे रे, किल्मिषकोप दही ॥ १ ॥

जो मारा कृत सामुं तमे जोशो, तो ठरशे बराबरी
रत्न गुंजा क्यम होय समतोल, हुं तो रंक ने तमे हरि
माटे मन मोटुं रे, करो मुने रंक लही ॥ २ ॥

आशाभर्यो आव्यो अविनाशी, समर्थ लही तम पास
धर्मधोरिवर तम द्वारे थी, हुं क्यम जाऊं निराश ?
निजनो करी लोरे, ना तो मुने कहेशो नहि ॥ ३ ॥

अरज साभळो अनाथ जननी, श्रवणे श्री रणछोड
एकवार सन्मुख जुओ शामळा, पहोचे मारा मनना कोड
हसीने बोलावे रे, 'दया तु मारो' कही ॥४॥

१५-११-१९३०

२२४

(राग छाया खमाज — तीन ताल)

हरिनो मारग छे शूरानो, नहि कायरनु काम जोने;
परथम पहेलु मस्तक मूकी, वळती लेवु नाम जोने. ध्रु०

सुत वित दारा शीश समरपे, ते पामे रस पीवा जोने;
सिंधु मध्ये मोती लेवा मांही पडया मरजीवा जोने. ॥१॥

मरण आगमे ते भरे मूठी, दिलनी दुग्धा वामे जोने;
तीरे ऊभा जुए तमासो, ते कोडी नव पामे जोने. ॥२॥

प्रेमपथ पावकनी ज्वाळा, भाळी पाछा भागे जोने;
माही पडया ते महासुख माणे, देखनारा दाझे जोने. ॥३॥

माथा साटे मोघी वस्तु, सापडवी नहि सहेल जोने;
महापद पाम्या ते मरजीवा, मूकी मननो मेल जोने. ॥४॥

राम-अमलमा राता माता पूरा प्रेमी परखे जोने;
प्रीतमना स्वामीनी लीला ते रजनीनंद नरखे जोने. ॥५॥

१६-११-१९३०

२२५

(राग सारंग — ताल दीपचंदी)

जननी जीवो रे गोपीचदनी, पुत्रने प्रेर्यो वैराग जी;
उपदेश आप्यो एणी पेरे, लाग्यो संसारीडो आग जी. ॥ध्रु०॥

धन्य धन्य माता ध्रुव तणी, कह्या कठण वचन जी;
राजसाज सुख परहरी, वेगे चालिया वन जी. ॥१॥

ऊठी न शके रे ऊटियो, बहु बोलाव्यो बाजद जी;
तेने रे देखी त्रास ऊपन्यो, लीधी फकीरी छोडयो फद जी. ॥२॥

भलो रे त्याग भरथरी तणो, तजी सोळसे नार जी;
मदिर झरूखा मेली करी, आसन कीधलां बहार जी. ॥३॥

ए वैराग्यवन्तने जाउं वारणे, बीजा गया रे अनेक जी;
भला रे भूडा अवनी उपरे, गणता नावे छेक जी. ॥४॥

क्यां गयुं कुळ रावण तणुं, सगरसुत साठ हजार जी;
न रह्युं ते नाणुं राजा नंदनुं, सर्व सुपन-वेवार जी. ॥ ५ ॥
छत्रपति चाली गया, राज मूकी राजंन जी;
देव दानव मुनि मानवी, सर्वे जाणो सुपंन जी. ॥ ६ ॥
समजी मूको तो सारुं घणुं, जरूर मुकावशे जम जी;
निष्कुळानन्द कहे नहि मटे, साचुं कहुं खाई सम जी. ॥ ७ ॥

१७-११-१९३०

२२६

(राग सारंग – ताल दीपचंदी)

त्याग न टके रे वैराग विना, करीए कोटि उपाय जी;
अंतर ऊंडी इच्छा रहे, ते केम करीने तजाय जी? ॥ ध्रु० ॥
वेप लीधो वैरागनो, देश रही गयो दूर जी;
उपर वेष अच्छो वन्यो, मांही मोह भरपूर जी. ॥ १ ॥
काम क्रोध लोभ मोहनुं ज्यां लगी मूळ न जाय जी;
संग प्रसंगे पांगरे, जोग भोगनो थाय जी. ॥ २ ॥
उष्ण रते अवनी विषे, वीज नव दीसे वहार जी;
घन वरसे वन पांगरे, इंद्रिय विषय आकार जी. ॥ ३ ॥
चमक देखीने लोह चळे, इंद्रिय विषय संजोग जी;
अणभेटचे रे अभाव छे, भेटचे भोगवशे भोग जी. ॥ ४ ॥
उपर तजे ने अन्तर भजे, एम न सरे अरथ जी;
वणस्यो रे वर्णाश्रम थकी, अंते करशे अनरथ जी. ॥ ५ ॥
भ्रष्ट थयो जोग-भोगथी, जेम वगडयुं दूध जी;
गयुं घृत मही माखण थकी, आपे थयुं रे अशुद्ध जी. ॥ ६ ॥
पळमां जोगी ने भोगी पळमां, पळमां गृही ने त्यागी जी;
निष्कुळानन्द ए नरनो, वणसमज्यो वैराग जी. ॥ ७ ॥

१८-११-१९३०

२२७

जंगल वसाव्युं रे जोगीए, तजी तनडानी आस जी
वात न गमे आ विश्वनी, आठे पहोर उदास जी ॥ ध्रुव० ॥
सेज पलंग पर पोढता, मंदिर झरुखा मांय जी
तेने नदि तृण साथरो, रहेता तरुतळ छाय जी ॥ १ ॥
शाल दुशाला ओढता, झीणा जरकशी जाम जी
तेणे रे राखी कंथा गोदड़ी, सहे शिर शीतघामजी ॥ २ ॥

भावता भोजन जमता, अनेक विधिना अन्न जी
तेरे मागण लाग्या टुकडा, भिक्षा भवन भवन जी। ॥ ३ ॥
हाजी कहेता हजारु उठता, चालता लश्कर लाव जी
ते तर चाल्यारे एकला, नहि पेंजार पावजी ॥ ४ ॥
रह्यो तो राजा रसाई करुं, जमता जाओ जोगीराजजी
खीर नीपजावु क्षणु एकमा, ते तो भिक्षाने काजजी ॥ ५ ॥
आहार कारण उभो रहे, एकनी करी आश जी
ते जोगी नहि, भोगी जाणवो, अते थाय विनाशजी ॥ ६ ॥
राजसाज सुख परहरि, जे जन लेशे जोग जी
ते धनदारामा नहि वसे, रोग सम जाणे भोगजी ॥ ७ ॥
धन्य ते त्याग वैरागने, तजी तनडानी आश जी
कुळ रे तजी निष्कुळ थया, तेनु कुळ अविनाशजी ॥ ८ ॥

१९-११-१९३०

२२८

(राग सारंग — दीपचंदी ताल)

जडभरतनी जातना, जोगी जे जगमाय जी
इन्द्रिय मननी उपरे, रहे शत्रु सदाय जी ॥ ध्रुव० ॥
विकळ न थाये विषयमा, रहे पर्वतप्राय जी
धरमधीरज मूके नहि, मरे मस्तक जाय जी ॥ १ ॥
आठ पहोरमा एक घडी, नव माते निज देह जी
तेना सुख मारग शु करे, उपाय नर ऐह जी ॥ २ ॥
हरि इच्छाए हरे फरे, करे जीवनो उद्धार जी
जेने मळे एवा जोगिया, पामे ते भव पार जी ॥ ३ ॥
एवा जोगीने आवी मळे, जाण्ये अजाण्ये जन जी
निष्कुळानंद कहे ए नरने, पलमा करे पावनजी ॥ ४ ॥

२०-११-१९३०

२२९

(राग आसा – ताल झपताल)

धीर धुरन्धरा शूर साचा खरा
मरणनो भय ते तो मन नाणे,
खर्व निखर्व दळ एक सामा फरे
तरणने तुल्य तेने ज जाणे. ॥ १ ॥

मोहनुं सेन महा विकट लडवा समे
मरे पण मोरचो नहि ज त्यागे,
कवि गुणी पंडित बुद्धे बहु आगळा
ए दळ देखतां सर्व भागे. ॥ २ ॥
काम ने क्रोध मद लोभ दळमां मुखी
लडवा तणो नव लाग लागे,
जोगिया जंगम तपी त्यागी घणा
मोरचे गये धर्मद्वार मागे. ॥ ३ ॥
एवा ए सेनशुं अडीखम आखडे
गुरुमुखी जोगिया जुक्ति जाणे,
मुक्त आनन्द मोह-फोज मार्या पछी
अखंड सुख अटळ पद राज माणे. ॥ ४ ॥

२१-११-१९३०

२३०

(गरबी)

(शीख सासुजी दे छे रे ए ढ़ाळ)

टेक न मेले रे ते मरद खरा जग मांहि
त्रिविध तापेरे, कदी अंतर डोले नाहि ॥ १ ॥
निधड़क वरते रे, दृढ़ धीरज मन धारी
काळ कर्मनी रे, शंका देवे विसारी ॥ २ ॥
मोडुं वहेलुं रे, निश्चे करी एक दिन मरवुं
जगसुख सारु रे, केदी कायर मन नव करवुं ॥ ३ ॥
अंतर पाडी रे, समजीने सवळी आंटी
माथुं जातां रे मेले नहि ते नर माटी ॥ ४ ॥
कोईनी शंका रे, केदी मनमां नव धारे
ब्रह्मानन्दना रे, वहालाने पल न विसारे ॥ ५ ॥

२२-११-१९३०

२३१

(गरबी – ढाळ : सगपण हरिनुं साचुं)

रे शिर साटे नटवरने वरीए,
रे पाछुं ते पगलुं नव भरीए ॥ध्रु० ॥
रे अन्तरदृष्टि करी खोळचुं, रे डहापण झाझुं नव डहोळचुं;
ए हरि सारु माथुं घोळचुं. ॥ १ ॥
रे समज्या विना नव नीसरीए, रे रण मध्ये जईने नव डरीए;
त्यां मुख पाणी राखी मरीए. ॥ २ ॥

रे प्रथम चडे शूरो थईने, रे भागे पाछो रणमां जईने;
ते शु जीवे भूडु मुख लईने. ॥ ३ ॥
रे पहेलु ज मनमा त्रेवडीए, रे होडे होडे जुद्धे नव चडीए;
रे जो चडीए तो कटका थई पडीए. ॥ ४ ॥
रे रग सहित हरिने रटीए, रे हाक वाग्ये पाछा नव हठीए;
ब्रह्मानन्द कहे त्यां मरी मटीए. ॥ ५ ॥
२३-११-१९३०

२३२

(राग छाया खमाज – तीन ताल)

सद्गुरु शरण विना अज्ञान-तिमिर टळशे नहि रे,
जन्म मरण देनारु बीज खरुं बळशे नहि रे. ॥ ध्रु० ॥
प्रेमामृत-वच-पान विना, साचा खोटाना भान विना,
गाठ हृदयनी ज्ञान विना गळशे नहि रे. ॥ १ ॥
शास्त्र पुराण सदा सभारे, तन मन इद्रिय तत्पर वारे,
वगर विचारे वळमां सुख रळशे नहि रे. ॥ २ ॥
तत्त्व नथी मारा तारामा, सूझ समज नरता सारामा,
सेवक सुत दारामां दिन वळशे नहि रे. ॥ ३ ॥
केशव हरिनी करतां सेवा परमानन्द वतावे तेवा,
शोध विना सज्जन एवा मळशे नहि रे. ॥ ४ ॥
२४-११-१९३०

२३३

(राग छाया खमाज – तीन ताल)

मारी नाड तमारे हाथे हरि संभाळजो रे,
मुजने पोतानो जाणीने प्रभुपद पाळजो रे ॥ ध्रु० ॥
पथ्यापथ्य नथी समजातु, दुःख सदैव रहे ऊभरातुं,
मने हशे शु थातुं, नाथ निहाळजो रे. ॥ १ ॥
अनादि आप वैद्य छो साचा, कोई उपाय विषे नहि काचा,
दिवस रह्या छे टाचा, वेळा वाळजो रे. ॥ २ ॥
विश्वेश्वर शुं हजी विसारो, वाजी हाथ छतां कां हारो?
महा मूझारो मारो नटवर, टाळजो रे. ॥ ३ ॥
केशव हरि मारुं शु थाशे, घाण वळ्यो शु गढ घेराशे?
लाज तमारी जाशे, भूधर भाळजो रे. ॥ ४ ॥
२५-११-२९३०

२३४

(राग बागेश्री – ताल धमार अथवा तेवरा)

दीनानाथ दयाळ नटवर! हाथ मारो मूकशो मा;
हाथ मारो मूकशो मा, हाथ मारो मूकशो मा. ॥ ध्रु० ॥
आ महा भवसागरे, भगवान हुं पड्यो छुं;
चौद-लोक-निवास चपला-कान्त! आ तक चूकशो मा. ॥ १ ॥
ओथ ईश्वर आपनी, साधन विषे समजुं नही हुं;
प्राणपालक! पोत जोई, शंख आखर फूंकशो मा. ॥ २ ॥
मात तात सगां सहोदर, जे कहुं ते आप मारे,
हे कृपामृतना सरोवर! दास सारु सूकशो मा. ॥ ३ ॥
शरण केशवलालनुं छे, चरण हे हरि राम तारुं;
अखिलनायक! आ समय, खाटे मशे पण खूटशो मा. ॥ ४ ॥

२७-१०-१९३०

२३५

(राग कालिंगड़ा — तीन ताल)

भक्ति वडे वश थाय रमापति, भक्ति वडे वश थाय
जो ईश्वरवश थाय नही तो, जन्ममरण नहि जाय ॥ ध्रु० ॥
भक्ति परम सुखनुं शुभ साधन, सफळ करे छे काय,
भक्ति वडे भगवान सदावश, निगमागम पण गाय ॥ १ ॥
बळियाना बळरूप दयाधन, निर्बल थई बंधाय,
संकट सेवक पर आवे तो, त्यां धरणी धर धाय ॥ २ ॥
भक्ताधीन दयानिधि भूधर, भक्ति विना न पमाय,
भक्ति विना व्रत जप तप आदिक, अकळ अनेक उपाय ॥ ३ ॥
धन यौवन बलबुद्धि चतुरता, निर्बळ ते समुदाय,
रंग रूप कुळ जाति विशेषे, न करे कोई सहाय ॥ ४ ॥
अजामील नारदमुनि शबरी, क्यां गणिका गजराय
केशव हरिनी भक्ति तणा गुण, एक मुखे न गवाय ॥ ५ ॥

२७-११-१९३०

२३६

(राग काफी – ताल दीपचंदी)

कोई सहाय नथी, विना हरि कोई सहाय नथी. ॥ ध्रु० ॥
बंधा मा बलमां तुं बालक, ममतामां मनथी;
सूतो केम धरीने धीरज, धाम धरा धनथी? ॥ १ ॥

भज भूधरने भाळ करीने, शम-दम साधनथी;
अवर तणी सेवा शा माटे, अरर! करे अमथी? ॥ २ ॥
काळ कराळ तणो भय भारे, जो मन माही मथी,
करशे ते थई शकशे केशव, आ उत्तम तनथी. ॥ ३ ॥

२८-११-१९३०

२३७

(राग धनाश्री – तीन ताल)

रामबाण वाग्या होय ते जाणे (२) ॥ ध्रु० ॥
ध्रुवने वाग्या, प्रह्लादने वाग्या, ठरी बेठा ठेकाणे,
गर्भवासमा शुकदेवजीने वाग्या, वेद-वचन परमाणे. ॥ १ ॥
मोरध्वज राजाना मन हरी लेवा, वहाला पधार्या ते ठामे,
काशीए जईने करवत मेलाव्या, पुत्र-पत्नी बेउ ताणे. ॥ २ ॥
बाई मीरा उपर क्रोध करीने, राणो खडग लई ताणे,
झेरना प्याला गिरधरलाले, अमृत कर्या एवे टाणे. ॥ ३ ॥
नरसिंह महेतानी हूडी सिकारी, खेप करी खरे टाणे,
अनेक भक्तोने एणे उगार्या, धनो भगत उर आणे. ॥ ४ ॥

२९-११-१९३०

२३८

(धीरा भगतनी काफी)

जेने राम राखे रे, तेने कुण मारी शके?
अवर नहि देखु रे, बीजो कोई प्रभु पखे ॥ ध्रु० ॥
चाहे अमीरने भीख मगावे, ने रकने करे राय,
थळने थानक जळ चलावे, जळ थानक थळ थाय,
तरणानो तो मेरु रे, मेरुनु तरणु करी दाखवे. ॥ १ ॥
नीभाडाथी बळता राख्या माजारीना बाळ,
टिटोडीना ईंडा उगार्यां, एवा छो राजन रखवाळ;
अन्त वेळा आवो रे, प्रभु तमे तेनी तके ॥ २ ॥
बाण ताणीने ऊभो पारधी, सीचाणो करे तकाव,
पारधीने पगे सर्प डसियो, सीचाणा शिर मही घाव,
बाज पड्यो हेठो रे, पखी ऊडी गया सुखे. ॥ ३ ॥
गज कातरणी लईने बेठा दरजी तो दीनदयाळ,
वधे घटे तेने करे बराबर, सौनी ले सभाळ,
धणी तो धीरानो रे, हरि तो मारो हीडे हके. ॥ ४ ॥

[१-१२-१९३०]

२३९

(धीरा भगतनी काफी)

तरणा ओथे डुंगर रे, डुंगर कोई देखे नहीं;
अजाजूथ मांहे रे, समरथ गाजे सही. ॥ ध्रु० ॥

सिंह अजामां करे गर्जना, कस्तूरी मृग राजंन,
तलनी ओथे जेम तेल रह्युं छे, काष्ठमां हुताशन;
दधि ओथे घृत ज रे, वस्तु एम छूपी रही. ॥ १ ॥

कोने कहुं ने कोण सांभळशे, अगम खेल अपार,
अगम केरी गम नही रे, वाणी न पहोंचे विस्तार;
एक देश एवो रे, बुद्धि थाकी रहे तही. ॥ २ ॥

मन पवननी गति न पहोंचे, छे अविनाशी अखंड,
रह्यो सचराचर भर्यो ब्रह्म पूरण, तेणे रच्यां ब्रह्मांड;
ठाम नहीं को ठालो रे, एक अणुमात्र कहीं. ॥ ३ ॥

सदगुरुजीए कृपा करी त्यारे, आप थया रे प्रकाश,
शां शां दोडी साधन साधे, पोते पोतानी पास;
दास धीरो कहे छे रे, ज्यां जाउं त्यां तुंही तुंही. ॥ ४ ॥

१-१२-१९३०

२४०

खबरदार मनसूबाजी, खांडानी धारे चडवुं छे;
हिम्मत हथियार बांधी रे, सत्यनी लडाईए लडवुं छे ॥ टेक० ॥

एक उमराव ने वार पटावत, एक एक नीचे त्रीस त्रीस
एक धणी ने एक धणियाणी, एम विगते सातसें ने वीस
सो सरदारे गढ घेर्यो रे, तेने जीती पार पडवुं छे ॥ १ ॥

पांच प्यादल तारी पूठे फरे छे, ने वळी काम ने क्रोध
लोभ मोह माया ने ममता, एवा जुलमी जोरावर जोध
अति बलिष्ठ स्वारी रे, ते साथे आखडवुं छे ॥ २ ॥

प्रेम-पलाण करी, ज्ञान घोडे चडी, सद्‌गुरुशब्द लगाम
शील संतोष ने क्षमा खड्‌गधरी भजन भजके राम,
धर्म ढाल झाली रे, निर्भे निशाने चडवुं छे ॥ ३ ॥

सुरत नुरत नें इड़ा पिंगला सुखमणा गंगास्नान कीजे
मन पवनथी गगनमंडल चडी, धीरा सुधारस पीजे
राज घणुं रीझे रे, भजन वडे भडवुं छे ॥ ४ ॥

२-१२-१९३०

२४१

दुनिया तो दिवानी रे, ब्रह्मांड पाखंड पूजे
कर्ता वसे पाळे रे, मूरख ने नव सूझे टेक०
जीव नहि तेने शिव कही माने, पूजे काष्ठ पाषाण
चैतन्य पुरुषने पूछे रे मूळे, एवी अधी जग अजाण,
अरकने अजवाळे रे, पारसमणि नव सूझे — दुनिया०
पथ्थरनु नाव नीरमा मूको, सो वार पटको शीश
कोटि उपाये तो नहि तेतो, बूडे वसा वीश
वेळुमा तेल क्याथी रे, धातुनी धेनु केम दुझे — दुनिया०
अंतर मेल भर्यो अति पूरण, तितनिर्मळ जळमा नहाय
साप डसीने दरमा पेठा पछे, राफडो काप्ये शु थाय ?
घायल अति घायल रे, जाणे कोई ज्ञानी हृदे — दुनिया०
दूर नथी नाथ छे नजीक, निरजन प्रकट पिंडमा तु पेख
दिल सुधरी दिदार तारो, आपे रुदियामा देख,
धीरिश्वर धणी धीरानोरे, जगतमां जाहेर सूझे — दुनिया०

३-१२-१९३०

२४२

निश्चे करो रामनु नाम, नथी जोगी थईने जावु
नथी करवा भगवा काय, नथी भेगु करीने खावु टेक०
गमे तो तमे भगवा करजो, गमे तो उजळा राखो
नथी दूभवो सामा जीवने, सुख सामानु ताको ॥ १ ।
एक वाजवे माँ ममारी, बीजे जोगी लावो
कया जोगीने राम मळ्या ? एवो तो एक बताओ ॥ २ ।
महेतो, मीरा ने प्रह्लाद, सेनो नापिक नाती
धनो, पीपो, रोहिदास, कूवो, गोते कुभारनी जाती ॥ ३ ॥
बोडाणो जाते रजपूत, गगाबाई छे नारी
दास थईने जो रह्या तो घेर आव्या गिरिधारी ॥ ४ ॥
रका बका सजन कसाई, भज्या रातने दहाडो
कया जोगीने राम मळ्या ? एवो तो एक बतावो ॥ ५ ॥
नथी राम विभूति चोळ्ये, नथी ऊधे शिर झोळ्ये
नथी नारी तजी वन जाता, ज्या लगी आप न खोळे ॥ ६ ॥
जगलमा मगल करी जावो, मगल जगल जे ने
कडवु मीठु मीठुं कडवु, रामजी वश छे तेने ॥ ७ ॥

पय ओथे जेम घृत रह्युं छे, तल ओथे जेम तेल
कहे नरभो रघुवर छे सघळे, एवो ऐतो खेल ॥ ८ ॥

४-१२-१९३०

२४३

(राग प्रभात – ताल दीपचंदी)

हरिजन होय तेणे हेत घणुं राखवुं,
निज नाम ग्राही निर्मान रहेवुं;
त्रिविधना ताप ते जाप जरणा करी,
परहरी पाप रामनाम लेवुं. हरि०

सौने सरस कहेवु, पोताने नरस थवुं,
आप आधीन थई दान देवुं;
मन करम वचने करी निज धर्म आदरी,
दाता भोक्ता हरि एम रहेवुं. हरि०

अडग नव डोलवुं, अधिक नव बोलवुं,
खोलवी गूज ते पात्र खोळी;
दीनवचन दाखवुं, गंभीर मतुं राखवुं,
विवेकीने वात नव करवी पहोळी. हरि०

अनंत नाम उच्चारवुं, तरवुं ने तारवुं,
राखवी भक्ति ते रांक दावे;
भक्त भोजो कहे गुरु परतापथी,
त्रिविधना ताप त्यां निकट नावे. हरि०

५-१२-१९३०

२४४

भक्ति शूरवीरनी साची रे, लीधा पछी केम मेले पाछी ॥ ध्रु० ॥

मन तणो निश्चय मोरचो करीने, वधिया विश्वासी
काम क्रोध मद लोभ तणे जणे गळे दीधी फांसी ॥ १ ॥

शब्दना गोळा ज्यारे छूटवा लाग्या, ने मामलों रह्यो सौ मची;
कायर हता ते तो कंपवा लाग्या, ए तो निश्चे गया नासी ॥ २ ॥

साचा हता ते सन्मुख रह्या, नेहरि संगाथे रह्या राची;
पांच पचीसने अळगा मेल्या, पछी ब्रह्म रह्यो भासी ॥ ३ ॥

करमना पासला कापी नाख्या, भाई ओळख्या अविनाशी;
अष्टसिद्धिनी इच्छा न करे, एनी मुक्ति थाय दासी ॥ ४ ॥

तन मन धन जेणे तुच्छ करी जाण्यां, अहर्निश रह्या उदासी;
भोजो भगत कहे भक्त थया, ए तो वैकुंठना वासी ॥५॥

६-१२-१९३०

२४५

(राग धीरा भगतनी काफी)

गुरुजी तमे कहो छो रे, ब्रह्म तारी पासे वस्यो,
मने नव दीसे रे, क्या रसे ए रस्यो? ॥टेक॥

माथु ब्रह्म के ब्रह्ममा माथु, ब्रह्म आखमा के आंख ब्रह्म,
नाकमा ए वसियो के मुखमा, ए विषे थाय मने भ्रम,
संशय निवारो रे भ्रममाथी जाउ खस्यो ॥१॥

हाथमा के पगमा गुरु, हृदय छातीमाय,
पगमा होय तो पळु नहि वहेलो ब्रह्म बेठो क्याय,
वदो गुरु मोटा रे, शिष्य ज्यारे कसणी कस्यो. ॥२॥

गुरुजी कहे छे, तमे शिष्य साभळो, आमळो काढी आज,
एके अवयवे नव वहालो विराजे, पाणी पहेली बाधु पाज;
दृढ होये ध्याने रे, नथी ए तो जसोतस्यो. ॥३॥

जेटला ध्याने धसीने जाओ, तेटलो पासे एह,
रूपरंग विनानो तद्रूप थाशे, ज्यारे ध्याननो चडशे मेह,
बापु मह रूपे रे, जोशो जगदीश जशो. ॥४॥

७-१२-१९३०

२४६

(राग खमाज—ताल धुमाळी)

जीभलडी रे, तने हरिगुण गातां आवडु आळस क्याथी रे?
लवरी करता नवराई न मळे, बोली ऊठे मुखमाथी रे.
परनिंदा करवाने पूरी, शूरी खटरस खावा रे;
झघडो करवा झूझे वहेली, कायर हरिगुण गावा रे.
अंतकाल कोई काम न आवे, वहाला वेरीनी टोळी रे;
वजन धारीने सर्वस्व लेशे, रहेशो आखो चोळी रे.
तल मंगावो ने तुलसी मगावो, रामनाम संभळावो रे;
प्रथम तो मस्तक नहि नमतु, पछी शु नाम सुणावो रे?
घर लाग्या पछी कूप खोदावे, आग ए केम होलवाशे रे?
चोरो तो धन हरी गया, पछी दीपकथी शु थाशे रे?

मायाघेनमां ऊंघी रहे छे, जागीने जो तुं तपासी रे;
अंत समे रोवाने बेठो, पडी काळनी फांसी रे.
हरिगुण गातां दाम न बेसे, एके वाळ न खरशे रे;
सहेज पंथनो पार न आवे, भजन थकी भव तरशे रे.

८-१२-१९३०

२४७

भगवत भजजो, रामनाम रणुंकार
आ तन होडी, सत धर्म हृदामां धार —टेक
भवसागर तो भर्यो भयंकर तृष्णानीर अपार
कायाबेडी छे कादवनी, आडाझुड अहंकार
सद्गुरु संगे, तरी उतरो भवपार —भग०
नरदेह तो दुर्लभ देवने, ते पाम्यो तुं पिंड
सत्संग करजो, साधु पुरुषनो, लेजो लाभ अखंड
पछे पस्ताशो, वखत जाय आ वार —भग०
कीट ब्रह्मादिक सकळ देहने जमरायनो त्रास
क्षणभंग काया जाणजो, निश्चे एक काळनो ग्रास
अल्पनी बाजी, तेमां शुं करवो अहंकार? —भग०
कैंक जन्म तो मनुष्य जातमां धर्यो देह अपार
मद माया ने मोहजाळनो धर्यो सिर पर भार
प्रभु नव जाण्या, तेथी अंते थयो छे खुवार —भग०
कहे गवरी तुं सद्गुरु केरो राख विश्वास
भजन करो दृढ़ भावथी, तो मळे सुख अविनाश
मान कह्युं मारुं, नहि तो खाशे जमनो मार —भग०

९-१२-१९३०

२४८

(राग खमाज – ताल धुमाळी)

संतकृपाथी छूटे माया, काया निर्मळ थाय जोने;
श्वासोश्वासे स्मरण करतां, पांचे पातक जाय जोने.
केसरी केरे नादे नासे, कोटी कुंजर-जूथ जोने;
हिंमत होय तो पोते पामे, सघळी वाते सूथ जोने.
अग्निने उधेई न लागे, महामणिने मेल जोने;
अपार सिंधु महाजल ऊंडां, मरमीने मन सहेल जोने.

बाजीगरनी बाजी ते तो, जबूरो सौ जाणे जोने;
हरिनी माया बहु बळवती, सन्त नजरमा नाणे जोने.
सन्त सेवता सुकृत वाधे, सहेजे सीझे काज जोने;
प्रीतमना स्वामीने भजता, आवे अखड राज जोने.

१०-१२-१९३०

२४९

हरिने भजता हजी कोईनी लाज जती नथी जाणी रे,
जेनी सुरता शामळिया साथ, वदे वेदवाणी रे. टेक
वहाले उगार्यो प्रह्लाद, हरणाकंस मार्यो रे;
विभीषणने आप्यु राज्य, रावण सहार्यो रे. ॥ १ ॥
वहाले नरसिंह महेताने हार हाथोहाथ आप्यो रे,
ध्रुवने आप्यु अविचळ राज, पोतानो करी थाप्यो रे. ॥ २ ॥
वहाले मीरा ते बाईना झेर हळाहळ पीधा रे,
पचाळीना पूर्या चीर, पाडव काम कीधा रे. ॥ ३ ॥
आवो हरि भजवानो लहावो, भजन कोई करशे रे,
कर जोडी कहे प्रेमलदास, भक्तोनां दु:ख हरशे रे. ॥ ४ ॥

११-१२-१९३०

२५०

अनुभव एवो रे अतर जेने उदे थयो।
कृत टळधा तेना रे, तेने तेनो आत्मा लह्यो टेक०
आतमदरशी तेने कहीए, आवरण नहि लगार
सर्वातीत ने सर्वनो साक्षी खट विश्वमा निरधार
तेथी पर पोते रे, एकएकी आय रह्यो॥ अनु०
ए वात कोई विरला जाणे, कोटिकमा कोई एक
नाम विनानी वस्तु निरखे, ए अनुभवीनो विवेक
मुक्त पद माटे रे, द्वैत भाव तेनो गयो॥ अनु०
अद्वैतपदनी इच्छा नही, अणइच्छाये थाय
यथारथपद जेने कहीए, जेम उपजे तेम जाय
प्रौढ प्रव्हानो रे मसार जाये वह्यो॥ अनु०
जाग्रत स्वप्न सुपुप्ति तुरीया तुरीयातीत पद तेह
स्थूल सूक्ष्मने कारण कहीए, महा कारणथी पर जेह
परावर जे परखे रे, जेने नेति नेति वेदे कह्यो अनु०

हंस-हितारथ जे जन कहिए, ते जन सत्यस्वरूप
ते जननी जावुं वलिहारी, जे सद्गुरुनुं रूप
निरांत नाम नित्य रे, अनामी नामे भर्यो। अनु०

१२-१२-१९३०

२५१

दिलमां दीवो करो, रे दीवो करो,
कूडा काम क्रोधने परहरो, रे दिलमां दिवो करो.

दया दिवेल प्रेम परणायुं लावो, मांही सुरतानी दिवेट बनावो;
मही ब्रह्म-अग्निने चेतावो रे. दिलमां०

साचा दिलनो दीवो ज्यारे थाशे, त्यारे अंधारुं मटी जाशे;
पछी ब्रह्मलोक तो ओळखाशे रे. दिलमां०

दीवो अणभे प्रगटे एवो, टाळे तिमिरना जेवो;
एने नेणे तो नीरखीने लेवो रे. दिलमां०

दास रणछोड घर संभाळ्युं, जडी कूंची ने ऊघड्युं ताळुं;
थयुं भीमंडळमां अजवाळुं रे. दिलमां०

१३-१२-१९३०

२५२

(ढाळ – ओधवजीनो संदेशो)

अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे,
क्यारे थईशुं बाह्यांतर निर्ग्रंथ जो? ।। ध्रु० ।।

सर्व संबंधनुं बंधन तीक्षण छेदीने,
विचरीशुं कव महत्पुरुषने पंथ जो? ।। १ ।।

सर्व भावथी औदासीन्य वृत्ति करी,
मात्र देह ते संयमहेतु होय जो;
अन्य कारणे अन्य कशुं कल्पे नहि,
देह पण किंचित् मूर्छा नव जोय जो. ।। २ ।।

दर्शन-मोह व्यतीत थई ऊपज्यो बोध जो,
देह भिन्न केवळ चैतन्यनुं ज्ञान जो;
तेथी प्रक्षीण चारित्रमोह विलोकीए,
वर्ते एवुं शुद्ध स्वरूपनुं ध्यान जो. ।। ३ ।।

आत्म-स्थिरता त्रण संक्षिप्त योगनी
मुख्यपणे तो वर्ते देह पर्यंत जो;
घोर परिषहके उपसर्ग भये करी
आवी शके नहि ते स्थिरतानो अंत जो. ॥ ४ ॥

संयमना हेतुथी योग-प्रवर्तना,
स्वरूपलक्षे जिन-आज्ञा आधीन जो;
ते पण क्षण क्षण घटती जाती स्थितिमां
अंते थाये निज स्वरूपमा लीन जो. ॥ ५ ॥

पंच विषयमा राग-द्वेष-विरहितता,
पंच प्रमादे न मळे मननो क्षोभ जो;
द्रव्य, क्षेत्र ने काम भाव प्रतिबंध वण
विचरवुं उदयाधीन पण वीतलोभ जो. ॥ ६ ॥

क्रोध प्रत्ये तो वर्ते क्रोध-स्वभावता,
मान प्रत्ये तो दीनपणानु मान जो;
माया प्रत्ये माया साक्षी-भावनी,
लोभ प्रत्ये नहि लोभ समान जो. ॥ ७ ॥

बहु उपसर्ग-कर्ता प्रत्ये पण क्रोध नहि,
वंदे चक्री तथापि न मळे मान जो;
देह जाय पण माया थाय न रोममा,
लोभ नहि छो प्रबळ सिद्धि निदान जो. ॥ ८ ॥

शत्रु मित्र प्रत्ये वर्ते समदर्शिता,
मान अमाने वर्ते ते ज स्वभाव जो;
जीवित के मरणे नहि न्यूनाधिकता,
भव मोक्षे पण वर्ते शुद्ध स्वभाव जो. ॥ ९ ॥

मोह स्वयंभू-रमण समुद्र तरी करी,
स्थिति त्या ज्यां क्षीण-मोह-गुण-स्थान जो;
अंत समय त्या स्वरूप वीत-राग थई,
प्रगटावु निज केवलज्ञान निधान जो. ॥ १० ॥

वेदनीयादि चार कर्म वर्ते जहा,
वळी सींदरीवत् आकृतिमात्र जो;
ते देहायुष आधीन जेनी स्थिति छे,
आयुष पूर्ण मटीए दैहिक पात्र जो. ॥ ११ ॥

एक परमाणु-मात्रनी मळे न स्पर्शता,
पूर्ण कलंक-रहित अडोल स्वरूप जो;
शुद्ध निरंतर चैतन्यमूर्ति अनन्यमय,
अगुरुलघु अमूर्त सहजपदरूप जो. ॥ १२ ॥

पूर्व प्रयोगादि कारणना योगथी,
ऊर्ध्व गमन सिद्धालय प्राप्त सुस्थित जो;
सादि अनंत अनंत समाधि सुखमां,
अनंत दर्शन ज्ञान अनंत सहित जो. ॥ १३ ॥

जे पद श्री सर्वज्ञे दीठुं ज्ञानमां,
कही शक्या नहि पणते श्री भगवान जो;
तेह स्वरूपने अन्य वाणी ते शुं कहे?
अनुभव-गोचर मात्र रहे ते ज्ञान जो. ॥ १४ ॥

एह परम-पद-प्राप्तिनुं कर्युं ध्यान में,
गजा वगरनो हाल मनोरथ रूप जो;
तोपण निश्चय राजचन्द्र मनने रह्यो,
प्रभु-आज्ञाए थाशुं ते ज स्वरूप जो. ॥ १५ ॥

१४-१२-१९३०

२५३

(शीख सासुजी दे छे रे — ए ढाळ)

मारां नयणांनी आळस रे, न नीरख्या हरिने जरी;
एक मटकुं न मांड्युं रे, न ठरियां झांखी करी. ॥ १ ॥

शोक मोहना अग्नि रे, तपे तेमां तप्त थयां;
नथी देवनां दर्शन रे, कीधां तेमां रक्त रह्यां. ॥ २ ॥

प्रभु सघळे विराजे रे, सृजनमां सभर भर्या;
नथी अणु पण खाली रे, चराचर मांही मळ्या. ॥ ३ ॥

१५-१२-१९३०

सामग्रीके साधन-सूत्र

गांधी स्मारक संग्रहालय, नई दिल्ली: गांधी साहित्य और गांधीजीसे सम्बन्धित कागजपत्रोंका केन्द्रीय संग्रहालय तथा पुस्तकालय; देखिए खण्ड १, पृ० ३५९ (प्रथम संस्करण १५ अगस्त, १९५८) तथा पृ० ३५५ (द्वितीय संशोधित संस्करण जून, १९७०)।

साबरमती संग्रहालय: पुस्तकालय तथा संग्रहालय; जिसमें गांधीजीके दक्षिण आफ्रिकी काल तथा १९३३ तकके भारतीय कालसे सम्बन्धित कागजात रखे हैं; देखिए खण्ड १, पृ० ३६० (प्रथम संस्करण १५ अगस्त, १९५२) तथा पृ० ३५५ (द्वितीय संशोधित संस्करण जून, १९७०)।

'बॉम्बे क्रॉनिकल': बम्बईसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'हिन्दू': मद्राससे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्सट्रैक्ट्स, १९३०।

'कन्या आश्रम रजत जयन्ती स्मृतिग्रन्थ': प्रकाशक: भील सेवा मंडल, दोहाद, गुजरात।

'गीताबोध' (गुजराती): मो० क० गांधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९३०।

'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद': स० काका कालेलकर, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, १९५३।

'बापुना पत्रो – ६: गं० स्व० गंगाबहेनने' (गुजराती): स० काका कालेलकर, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६०।

'बापुना पत्रो–७: श्री छगनलाल जोशीने' (गुजराती): स० छगनलाल जोशी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६२।

'बापुना पत्रो – ९: श्री नारणदास गांधीने' (गुजराती): स० नारणदास गांधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६४।

'बापुना पत्रो – ४: मणिबहेन पटेलने' (गुजराती): स० मणिबहन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुनी प्रसादी' (गुजराती): मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापूकी विराट् वत्सलता': काशिनाथ त्रिवेदी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६४।

'महात्मा गांधी: सोर्स मैटीरियल फॉर ए हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया', खण्ड ३, भाग ३।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१ जुलाई, १९३० – १५ दिसम्बर, १९३० तक)

१ जुलाई: गांधीजी यरवडा जेलमें।

८ जुलाई: गांधीजीने अपने रिश्तेदारोंसे तबतक मिलनेसे इन्कार कर दिया जबतक कि सगे-सम्बन्धियों जितने ही प्रिय अन्य लोगोंको भी गांधीजीसे मिलनेकी इजाजत न दे दी जाये।

२३ जुलाई: मु० रा० जयकर और तेजबहादुर सप्रूसे भेंटकी तथा उनकी मार्फत मोतीलाल नेहरू और जवाहरलाल नेहरूको एक पत्र भिजवाया।

३१ जुलाई–२ अगस्त: मु० रा० जयकरसे बातचीत की।

१४ और १५ अगस्त: मु० रा० जयकर, तेजबहादुर सप्रूने यरवडा जेलमें गांधीजी तथा दूसरे कांग्रेसी नेताओं — मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, डा० सैयद महमूद, जयरामदास दौलतराम और सरोजिनी नायडू — के साथ बातचीत की।

३० और ३१ अगस्त: मु० रा० जयकर, तेज बहादुर सप्रूने नैनी जेलमें मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू तथा डा० सैयद महमूदसे भेंट की।

३–५ सितम्बर: तेजबहादुर सप्रू और मु० रा० जयकरने यरवडा जेलमें गांधीजी तथा दूसरे कांग्रेसी नेताओंके साथ बातचीत की तथा कांग्रेसी नेताओं द्वारा हस्ताक्षरित और गांधीजी द्वारा तैयार किया गया एक संयुक्त वक्तव्य प्राप्त किया।

१२ सितम्बर: गांधीजीकी अनुपस्थितिमें लंदनमें गोलमेज सम्मेलन आरम्भ हुआ।
गांधीजीने 'गीता' पर प्रवचन-माला लिखनी आरम्भ की।

शीर्षक-सांकेतिका

सांकेतिका

इ

ई

उ

ए

ऐ

ओ

औ

क

ख

घ

च

भ

म

य